

१. ॥ इह संखंडं संखंडं अना ब्रतदेह धरी सुदयाल
कदानेः आपनि रंजनं श्रीतरि आइजु संतन को सुख स
रूप ममाने जिहां जांतीरी रीरि निज अक सुदायी हट्योत
हां मंघ दिघानेः अमे दयालु निहाल करै मम गो ब्यददा स
वैदेह बंधाने ॥ ॥ हृदि निधे लखि नो कहै चारि पावे
साग गुण मुख तब कै सै गुन मे हो टेक

॥१॥ रामजी सो ते सदा ॥ दाह दयाल की दाह ॥ अगम ॥
दुरदेवता अंग लिखत ॥ सकल नाम ॥ जी सा ते सदा ॥ दाह
नये देव दिरे जने ॥ तस उकार दुरदेवत ॥ वेदन श्रवसाध
वा ॥ प्रणां मं पारंगत ॥ दाह गैब मां हि गुर देव मिल्या ॥ पाय
द मं परसा ॥ मसत कि मेरे कर धस्या ॥ दया अगम अगाध
॥ दाह सत गुर सहज मै ॥ कीया बज उपागार ॥ निरधन धन
वंत करि लीया ॥ गुर मिलिया दां तार ॥ दाह सत गुर सै सदा
जै मिल्या ॥ लीया के ठिल गा ॥ दया मई दयाल की ॥ तब द
पक दी पा जगा ॥ दाह देषु दयाल की ॥ गुर दिषाई बाट
ताला कं चीला ॥ करि घोले सबै कपाट ॥ दाह सत गुर
अंजन बाहिकरि ॥ नैन पटल सब घोले ॥ बहरे कानों सुन ग
लागे ॥ गूंगे मुख सौ बोले ॥ दाह सत गुर दाता जीव का ॥ अद
न सी स कर नैन ॥ तन मन सौ ज संवारि सब ॥ मुख रसना अ
रुबैन ॥ राम नाम उपदेश करि ॥ अगम गवन यज्ञ सैन ॥ दाह
सत गुर सब दीया ॥ आप मिली ऐ अैन ॥ दाह सत गुर कीया
फेरि करि ॥ मन का औरै रूप ॥ दाह पंचोपल टिकरि ॥
कैसे न ऐ अंद प ॥ साचा सत गुर जे मिले ॥ सब साज स
वारै ॥ दाह नाव चढा ॥ करि ले पारि न तरै ॥ दाह सत गुर
पसु मां गा स करै ॥ मां गा स पै सिध सो ॥ दाह सिध पै देवता
देव निरंजन हो ॥ दाह काटे काल मुखि ॥ अंधे लोच
न देख ॥ दाह अै सा गुर मिल्या ॥ जीव ब्रह्म करि ले ॥ दाह
काटे काल मुखि ॥ अच गां कं सब द सुगा ॥ दाह अै सा गु
र मिल्या ॥ मृत कली ऐ जिला ॥ दाह काटे काल मु
खि ॥ गूंगे लीये बुला ॥ दाह अै सा गुर मिल्या ॥ सुषमै र हे स
मा ॥ दाह काटे काल मुखि ॥ मिहर दया करि आ ॥ दाह
अै सा गुर मिल्या ॥ महि मां क दीन जा ॥ दाह सत गु
र काटे के संगे ॥ रुबत इहि संसार ॥ दाह नाव चढा ॥

की ऐपैलीपारा॥१॥ श्रीसागरमैरुबता॥ सतगुरकाटेआ
 ॥ दाहवेवदगुरमित्या॥ लीयेनावचटा॥ १६॥ दाहउस
 गुरदेवकी॥ मैबलिहारीजातु॥ जहांआसगाअमरअले
 षथा॥ लेरावेअसठातु॥ १७॥ आतममाहैऊपजै॥ दाहप
 गुलतानऊतमजाइउलंघिकरि॥ जहांनिरंजनथान॥
 १८॥ आत्मबोधबंऊकाबेटा॥ गुरमुखिउपजैआमदाहपंगु
 लपंचविन॥ जहारांमतहांजाइ॥ १९॥ साचासहजैलेमि
 लै॥ सबदगुरूकाज्ञान॥ दाहहमकंलेचल्या॥ जहांप्रा
 तमकाअसथान॥ २०॥ दाहसबदविचारिकरि॥ लागि
 रहैमनलाइ॥ ज्ञानगहैगुरदेवका॥ दाहसहजिसमाइ॥
 २१॥ दाहकहैसतगुरसबदसुणाइकरि॥ जावैजीव
 जगाइ॥ सावैअंतरिआपकहि॥ अपगौअंगिलगाइ
 २२॥ दाहबाहरिसारादेधिये॥ तीतरिकीयाचर॥ स
 तगुरसबदौमारिया॥ जागानपावैहरि॥ २३॥ दाहसतगु
 रमारैसबदसु॥ निराधिनिधिनिजठौर॥ रामअकेलार
 हिगया॥ धीतिनआवैऔरा॥ २४॥ दाहहमकंसुषतया
 साधसबदगुरज्ञान॥ सुधिवुधिसोधीसमझिकरि॥ पाया
 पदनिरबां॥ २५॥ दाहसबदबां॥ गुरसाधके॥ हरिदि
 संतरिजाइ॥ जिहिलागैसोऊबरे॥ सूतेलीऐजगाइ॥ २६॥
 ॥ सतगुरसबदमुखसंकटा॥ क्यानेडेक्याहरि॥ दाहसि
 षअवगाऊसुगाया॥ सुमिरालागासूरा॥ २७॥ सबदहध
 धतरांमरस॥ अधिकरिकाहैकोइ॥ दाहगुरगोबंदवि
 न॥ घटिघटिममकिनहोइ॥ २८॥ सबदहधधतरांमरस
 कोइसाधबिलोवाहा॥ दाहअमृतकाढिले॥ गुर
 मुखिगहैबिचारा॥ २९॥ धावहधमैरमिरसा॥ व्यापकस
 बहांठौरा॥ दाहबकनाबऊतहै॥ अधिकहैतेऔरा॥ ३०॥
 ॥ कामधेनघटिघावहै॥ दिनदिनडरबलहोइ॥ गो

ग्याननऊपजे। मथिनही छायालोइ। सावासेमय
गुरमिल्या। तिनितनदीयावताइ। दाहमोटासहावली
घटिघतमकरिछाइ। मथिकरिदापक। कीजि
ये। सबघटिसयाप्रकास। दाहदीवाहाथिकरि। गया
निरंजनपासा। दावेठ। वाकाजिये। गुरमुखिमारा।
गजाइ। दाहअपणोपीठका। दरसनदेखेआइ। दा
हदीवाहेनला। दावाकरौसबकोइ। घरमैक्षम्यानप
ईये। जेकरदीछनहोइ। निरमलगुरक्याग्यानग
हि। निरमलप्रगतिविचार। निरमलपायाउमरस
बूटेसकलविकार। निरमलतनमनआतमा। निरम
लमनसासार। निरमलप्राणीपंचकरि। दाहलघेपार
इ॥ परापरीपासेरहे। कोईनजागौताहि। सतगु
रदीयादिछाइकरि। दाहरद्याल्योलाइ। जिनिह
मसिरजेसौकहा। सतगुरदेऊदिछाइ। दाहदिलअ
रवाहका। सहोमालिकल्योलाइ। मुखहीमैमेरा
ध्या। पडवाधोलिदिछाइ। आतमसौअछादमा।
प्रगटआणिमिलाइ। मरिप्रियाऊउमरस। अपणो
हाथिपिलाइ। सतगुरकेसदिकैकाज्यो। दाहबलिव
लिजाइ। सरवरपरियादहदिसा। पेवाप्यासाजा
इ। दाहगुरप्रसाददिन। कांजलपावै। आइ। मान
सरोवरमाहिजल। प्यासापीवैआइ। दाहदोसनदी
जिये। धरिधरिकहाणनजाइ। दाहगुरगरवाभि
ल्या। ताथैसबगमिहोइ। लोहा। परसप्रसतो। स
हजसमानोसोइ। दीनगरीवीगहिरया। गरवा
गुरगोतीर। सूषिमसतलसुरतिमति। सहजदयागु
रधर। सोक्षीवातापलकमें। निरैतिरावणाजी
गा। दाहअसाप्रमगुर। पायाकिहिसंजीगा। दा

॥ सतगुरु औ साकी जिये ॥ रामरसिमाता ॥ पारिउतारे प
 लकमै ॥ दरसनका दाता ॥ ४४ ॥ देवै किरका दरदका ॥ टटा
 जोडै तारा ॥ दाहसाधे सुरतिकौ ॥ सो गुरपीरहमारा ॥ ४५ ॥
 दाहघाइ लक्षैरहे ॥ सतगुरके मारे ॥ दाहअंगि लगाइ करि
 जौ सागरतारे ॥ ४६ ॥ दाहसाचा गुरमित्या ॥ सा
 चादीया दिषा ॥ साचेकसाचा मित्या ॥ साचारहासमाइ
 ४७ ॥ साचासतगुरसो धिले ॥ साचे लीजीसाधा ॥ साचासा
 व ॥ सोधिकरि ॥ दाहनगतिअगाधा ॥ ४८ ॥ मनमुखसतगुर
 ध ॥ सो ॥ साईसूराता ॥ दाहप्याल्या प्रेमका ॥ महारसिमाता
 ४९ ॥ साईसोसाचारहे ॥ सतगुरसोसूरा ॥ साधोसोसनमु
 खरहे ॥ सोदाहपूरा ॥ ५० ॥ सतगुरमिलैतपाईये ॥ नगति
 मुकतिभे मारा ॥ दाहसहजैदेधिये ॥ साहिवकादीदारा ॥
 ५१ ॥ दाहसाईसतगुरसेदिये ॥ नगतिमुकतिफलहे
 ॥ अमरअत्रैपदपाईये ॥ कालनलागैकोइ ॥ ५२ ॥ इकल
 धवदाआगिधरि ॥ मूरजकोटिमिलाइ ॥ दाहगुरगोब
 द ॥ इबिना ॥ तौजातिमरनजाइ ॥ अनेकचंदउदैकरौ
 असंख ॥ मूरप्रकाश ॥ एकनिरंजननाउबिना ॥ दाहनहीउ
 जासो ॥ ५३ ॥ दाहकदियऊआपाजाइगा ॥ कदियऊबि
 सरैऔरा ॥ कदियऊसुषिमहोइगा ॥ कदियऊपावैगौर
 ५४ ॥ दाहबिषमडहेलाजीवका ॥ सतगुरपैआसान
 जबदरवैतबपाईये ॥ नेडादीअसधाना ॥ ५५ ॥ दाहनैन
 नदेधैनैक ॥ अंतरतीऊछनाहि ॥ सतगुरदरपनकरि
 दीया ॥ असप्रसमिलिमाहि ॥ ५६ ॥ घटिघटिरामरत
 नहे ॥ दाहलखैनकोइ ॥ सतगुरसबहंदाईये ॥ सहजैहो
 गमिहोइ ॥ ५७ ॥ जबहीकरदीपकदीया ॥ तब ॥ सबस
 कनलागा ॥ दाहगुरपांनप्ये ॥ रामकहतजनजागा ॥
 ५८ ॥ दाहमनमालातहाफेरिये ॥ जहादिवसनप्रसे

रात॥ तदागुरिवांनांदीया॥ सहजै जपिये तात॥ ४२॥ दाह
 मनमालात हांफेरिये॥ जहांप्रीतमवेवेपास॥ आगम
 गुरथेंगमितया॥ पायानूरतिदास॥ ४३॥ दाहमनमाला
 हांफेरिये॥ जहां आपेयेकअनत॥ सहजै सोसतगुरमि
 ल्या॥ जुगिजुगिफागबसंत॥ ४४॥ दाहसतगुरमालाम
 नंदीया॥ पवनसुरतिसौपोश॥ बिनहाथुनिसदिनज
 परमजापयंदोश॥ ४५॥ दाहमनफकीरमोहकुवाती
 तरिलीयातेषा॥ सबदगहैगुरदेवका॥ मांगै तीषअलेष
 ४६॥ दाहमनफकीरसतगुरकीया॥ कहिसमजाया
 ग्याननिद्वलआसणिबैसिकरि॥ अकलपुरिस
 काश्रमन॥ ४७॥ दाहमनफकीरजगथैरदा॥ सतगुरली
 यालाश॥ अहनिसलागायेकस॥ सहजसुनिरसषा
 ४८॥ दाहमनफकीरअसैतया॥ सतगुरकेप्रसाद
 जहांकाथालागतहो॥ बूढेबादबिबाद॥ ४९॥ नांघरि
 दानबनिगया॥ नांऊककीया॥ कलेस॥ दाहम
 नहीमनमित्या॥ सतगुरकेउपदेस॥ ५०॥ दाहय
 कमसतियदेकरा॥ सतगुरदीयादिषा॥ सीतरिसेवा
 बेदिगाबाहरिकाहेजा॥ ५१॥ दाहमकेचेलामंकिगु
 र॥ मकेहीउपदेस॥ बाहरितहैबाहरे॥ जटाबक्षयेके
 स॥ ५२॥ मनकामसतकमूडिये॥ कामकौक्षकेकेस
 दाहबिषैबिकारसब॥ सतगुरकेउपदेस॥ ५३॥ दाहप
 डवाभरमका॥ रदासकलघटिछा॥ गुरगोबंदक
 पाकरै॥ तौसहजैहामिटिजा॥ ५४॥ जिहिमति
 साक्षुधरे॥ सोमतलीयासो॥ ध॥ मतलैमारमूलगदि
 यऊसतगुकाप्रमोक्ष॥ ५५॥ दाहसोईमारगमनिग
 द्या॥ जिहिमरगमिलियेजा॥ वेदऊराभूनाक
 द्या॥ सोगुरिदीयादिषा॥ ५६॥ दाहमननवंगयबि

धनस्या॥ निरविषकं ह्रीं म हो ॥ दाहमिल्या गुरगारदी॥ नि
रविषकीया सो ॥ १॥ येता कीजे आपये॥ तन मन न मन
॥ पंचसमक्षी राधियो॥ हजा सदज सुता ॥ १॥ दाहजी वजं
जा लूपडि गया॥ उलका नौ मणसत॥ कोई येक सुलंके
सावधान॥ गुरवा इक श्रीधृत॥ चंचल चं कं दिस जात है
गुरवा इक सौं बंधि दाह संगतिसा धकी॥ पारब्रह्म संधि
१॥ गुरअं ऊस माने नदी॥ उदमदि माता अंधा॥ दाह मन
चे ते नदी॥ कालन देषे फंधा॥ १॥ दाहमो स्या विन माने नदी
य ऊमन हरिकी आं न॥ ग्यान षडु ग गुरदेवका॥ ता स
गिस दासु जा न॥ १॥ जहां थे मन उठि चले॥ फेरित हां ही
राधि॥ तहां दाह लै लीन करि॥ साधक है गुरसाधि॥ १॥
दाह मन ही सौं मल उपजे॥ मन ही सौं मल क्षी ॥ सीष व
ली गुरसाधकी॥ तौ चं निरमल हो ॥ १॥ दाहक च वच
पने करि लीये॥ मन इंद्री निज वीर॥ नां इति रंजनि ला गि
रऊ॥ प्राणां प्रहरि श्रीरा॥ १॥ मन के मते सब कोई घेले
गुरमुखि बिरला को ॥ दाह मन का माने ना ही॥ सत गुर
का सिष सो ॥ १॥ सब जी वीक मन तरे॥ मन के बिरला
को ॥ दाह गुर के ग्यान सौं सौं मन मुख हो ॥ १॥ दाहये
कसं लै लीन कं गां॥ सब मयां मय देह॥ सत गुरसाधक
हत है॥ परमत तज पिले हन॥ सत गुर सब दब मेक
बिन॥ संजमिर दान जा ॥ दाह तौ न बिचार बिन॥ बि
षे दला दल घा ॥ १॥ धरि घरि घटि को लूचले॥ अमा
महारस जा ॥ दाह गुर के ग्यान बिन॥ बिषे दला दल
वा ॥ १॥ सत गुर सब दनु लंघि करि॥ जिति कोई सि
ष जा ॥ दाह पग पग काल है॥ जहां जा इत दाह ॥ १॥
सत गुर बर जे सिष करे॥ कं करि बचे काल ॥ १॥
देवत बहि गया॥ पांणी फोड़ी पाला ॥ १॥ दाह सत गुर

कहै सुमिष करे सब सिधिका रिज होइ ॥ अमर अमरै प
 पाईये ॥ काल न लागे कोइ ॥ दाह जे साहिब को
 नही ॥ सो हम ये जिनि होइ सत गुर लाजे आपणा साध
 न माने कोइ ॥ दाह कं कीठा हर दे कहौ ॥ तन कीठा
 रं री कीठा हर जी कहौ ॥ ज्ञान गुरु काये ॥ दाह पं
 च सत्वा दीप च दिसि ॥ पै च पंच बाट ॥ तब लग क दान की
 जिये ॥ गहि गुर दिषाया पाट ॥ दाह पंच येक मत ॥ प
 च पूर्या साध ॥ पंच मिलि सन मुय सये ॥ तब पंच गुर की
 बात ॥ दाह ताता लोहा ति गोसूं ॥ कपरि कडु जाइ
 गहन गति सूजे नही ॥ गुर नही बूजे आइ ॥ दाह ओ ग
 रा गुरा करि माने गुर के सोई सिध सुजाणा ॥ सत गुर ओ
 रा करे सम के सोई सयाणा ॥ दाह सो ने से ती बेर क्य
 मारै घण कै घाइ ॥ दाह काटि कलंक सब राखे कंठि लग
 ॥ दाह पाणी मां दे राधिये ॥ कनक कलंक न जाइ ॥ दाह
 गुर के गान सें ॥ ताइ अगनि में बादि ॥ दाह मां दे म
 ठा हेत करि ॥ कपरि कडु चारा धि ॥ सत गुर सिध क सीध
 दे ॥ सब साध की साधि ॥ दाह कहै सिध सरो से आप
 गे ॥ कै बोली ऊ सियार ॥ कहै गा सो बहै गा ॥ हम पद ली
 करै पुकारा ॥ दाह कहै सत गुर कहै सुका जिये ॥ जे
 र सिध सुजाणा ॥ जहां लाया तहां लागे ॥ बूजे कहा
 अजाणा ॥ गुर पद ली मन सों कहै ॥ पीछे ने न का सें ना दा
 ह सिध सम के नही ॥ कहि सम के बें बें ॥ कहै लखे से
 मानवी ॥ सें लखे साध ॥ मन की लखे स देवता ॥ दाह अग
 अगाध ॥ दाह कहि कहि मेरी जीतरही ॥ सुणि सुणि
 तेरे कान ॥ सत गुर बडरा क्य करे ॥ जे चली मूढ अजाण
 ॥ येक सब दसब ऊछ क द्य ॥ सत गुर सिध सम काइ
 जहां लाया तहां लागे नही ॥ फिरि फिरि बूजे आइ ॥

गानलीयासबसाधसुति। मनकामैलनजाइ। गुरुबिवा
 राकाकरे। सिषबिषेदनादलघाइ। गुरुअपंगपंग
 पंघबिना। सिषसाधाकासा। दाहवेवटनादबिना। क
 उतरैगेपार। १०७। दाहसंसाजीवका। सिषसाधाकास
 ला। इन्कंसारपडी। कैमकीणदवाल। १०८ अंधेअ
 धमिलिचले। दाहबधिकतारा। कपपंडेदमदेघता। अ
 धेअंधालार। १०९ सोधीनहोसरीरकी। औरोकंनपदेस
 दाहअचिरजदेबिया। ऐजाहिंगेकिसदेस। ११० दाहसो
 धीनहोसरीरकी। कहैअगमकीबात। जानकहांवैबा
 वबे। आबधलीयांदाया। दाहमायामाहेंकाठिक
 रि। फिरिमायामैदीन्हा। दोऊजनसमजैनही। ऐको
 काजनकीन्हा। १११ दाहकहैसोगुरकिसकामका। गदि
 नरमावैअना। ततबतावैनिरमला। सोगुरसाधसुजा
 या। ११२ हमेराकतैरा। गुरसिषकीयामंत। इन्कतलेजा
 तहै। दाहबिसरुकाकंता। ११३ इहिइदिपावैगवालगु
 रा। सिषहैंछेलीगाइ। यऊऔसरदंगया। दाहकहि
 समकाइ। ११४ सिषगोरुगुरगवालहै। रषाकरिकरि
 लेशदाहराधे। तनकरि। आनिधणीकंदेइ। ११५ ऊठे
 अंधेगुरधगो। नरमदिहावैकाम। बंधेमायामोहसो
 दाहमुषसौराम। ११६ ऊठेअंधेगुरधगो। नटकैघरघ
 रवारा। करिजकोसीजैनही। दाहमाथैमारि। ११७ न
 गतिकहांवैआपको। सगतिनजानैनेव। सुपनेही
 समजैनही। कहांबसेगुरदेवा। ११८ नरमकरमजगब
 धिया। पंडितदीयासुलाइ। दाहसतगुरनामिले। मा
 रगदेइदिषाइ। ११९ दाहपंघबतावैपापका। नरम
 करमबेसासा। निकटिनिरजनजेरहै। कानबतावैता
 सा। १२० दाह

आपासुरकेसुरजिया यऊ गुरगणनविचार ॥
 धका अंगनिरमला तामैमलनसमाधि परमगुरु
 गटकदै ताथैदाहता ॥ १२४ ॥ मनांमगुरसबदसौ
 मनपेलिसरंम निहिंकरमीसौमनमित्या दाहकाटि
 रम दाहबिनपांइनकापंथदे ॥ कूकरिपऊंचैप्रा
 विकटघाटओघटषरे माहि सिधरअसमान मनत
 जीचेतनिचटे ॥ लोकीकरैलगांम सबदगुरुकाता
 नांकोईपऊंचैसाधसुजाणा ॥ साधौंसुमिरासोक
 दा जिहिंसुमिराआपातूल दाहगहिगंजीरगुराचे
 तनिआनदमूल ॥ १२५ ॥ आपसवारथसबसगे प्रांग
 नेदीनाहि प्रांगसनेदीरांमहै ॥ केसाधकलिमाहि
 ॥ १२६ ॥ जिहिंमतिसाधउधरे सोमतलीयासोध मनवे
 मारगमूलगहि सतगुरकाप्रमोधा ॥ सुषकासाथी
 जगतसब दुषकानांहीकोइ ॥ दुषकासाथीसांईय
 दाहसतगुरहीइ ॥ सगेहमारिसाधहै सिरपरिसिर
 जवहार दाहसतगुरसोसगा ॥ इजांधधविकारा ॥
 दाहकैहजानही ॥ ऐकैआतमरांम सतगुरसिरपरि
 साधसब प्रेमनगतिविश्राम ॥ दाहसुधबुधआत
 मां सतगुरप्रसेआइ ॥ दाहनुंगीकीटजू देवतही
 जाइ ॥ दाहनुंगीकीटजू सतगुरसेतीहोइ ॥ आ
 पस ॥ राधेकरिलीये ॥ इजानांहीकोइ ॥ दाहकछ
 बचाधैटुसिमै ॥ ऊंजौकैमनमाहि सतगुरराधे
 पणा ॥ इजाकोईनाहि ॥ १२७ ॥ बचौकैमातापिता ॥ इजा
 नांहीकोइ दाहनिपजैनादसौ सतगुरकेघट हो
 ॥ १२८ ॥ ऐकैसबदअनंतसिध ॥ जबसतगुरबोलै ॥ दा
 इजडेकपाटसब ॥ देकंचीषोलै ॥ १२९ ॥ बिनहीकीया
 होइसब ॥ मनमुषसिरजनहार ॥ दाहकरिकरिमी

॥ सिषसाषासिरिजारा ॥ ३३ ॥ सूरजसनमुषआरसी ॥
 पावकीयाप्रकास ॥ दाहसाईसाधविचि ॥ सदजैनि
 पजैदास ॥ ३४ ॥ दाहपंचौयेप्रमोक्षले ॥ इनहीकौनपदेस
 प्रऊमनअपनाहाथिकरि ॥ तौचैलासबदेस ॥ ३५ ॥ अ
 मंभयेगुर ॥ ग्यांनसौ ॥ कैतेइहिकलिमांहिं ॥ दाहगुर
 केग्यांनैबिन ॥ कैतेमरिमरिजांहिं ॥ ३६ ॥ औषदिषाह
 नपछिरहे ॥ विषमव्याधिकांजाइ ॥ दाहरोगीबादरा
 दोसबैदकौलाइ ॥ ३७ ॥ वैदविषाकहेदेधिकरि ॥ रो
 गीरहेरिसाइ ॥ मनमांहेलोयैरहे ॥ इव्याधिनजाइ ॥ ३८ ॥
 दाहवैदविषाकाकरै ॥ रोगीरहेनसाच ॥ पाटामीठा
 चरपरा ॥ मागैमेराबाछा ॥ ३९ ॥ दाहडलनदरसनंधका
 डलनगुरउपदेस ॥ डलनकरिबाकतिमहे ॥ डलन
 प्रसअलषा ॥ ४० ॥ दाहअविचलमंत्रा ॥ अमरमंत्रा ॥ अ
 धैमंत्रा ॥ अन्नैमंत्रा ॥ राममंत्रा ॥ निजमारा ॥ सजीवनिमंत्रा ॥
 सबीरजमंत्रा ॥ सुंदरमंत्रा ॥ सिरोवै ॥ निमंत्रा ॥ निरमलमं
 त्रनिराकारा ॥ अलषमंत्रा ॥ अकल्मंत्रा ॥ अगाधमंत्रा ॥ अण
 रमंत्रा ॥ अनंतमंत्रा ॥ नूरमंत्रा ॥ तेजमंत्रा ॥ जोतिमंत्रा ॥
 प्रकासमंत्रा ॥ धर्ममंत्रा ॥ पायाउपदेस दक्षा ॥ ४१ ॥ दाहस
 बहीगुरकीये ॥ पसुपंषीबनराइ ॥ तीनिलोकगुनपंच
 सौ ॥ सबहीमाहिषुदाइ ॥ ४२ ॥ जेपहलीसतगुरिकदा
 सोमैनऊं देषाआइ ॥ असपमिलियेकरसा ॥ दाहर
 देसमाइ ॥ ४३ ॥ ॥ सुमिराकाअमलिषतं ॥
 दाहनमोनमोनिरंजनं ॥ नमसकारगुरदेवतह ॥ बंद
 नंअबैसाधवा ॥ प्रणामंपारंगतह ॥ ४४ ॥ येकैअधिरपीव
 का ॥ सोईसुतिकरिजांति ॥ रामनामसतगुरिकदा ॥
 ॥ ४५ ॥

हनीकानां उद्दे आपकहैसमजाइ॥ और आरंजसबछादिद रामनाम
लाइ॥ ६॥ दाहनीकानां उद्दे तीनिलोकततसारा
देवसरटिबोकरीरमंतयहैविचार॥ दाहनीकानां
है॥ हरिहरदेवविसारे मूरतिमंनमां हैं बसै सांसे सांय
संतारि॥ दाहसासैसासमं लालता॥ इकदिनमिलिहै
आइ मुमिरागपैनासदजका॥ सतगुरिदीयाबताइ
॥ ६॥ दाहनीकानां उद्दे मोहं हिरदैरुषि पाषंडपर
पंचहरिकरि मुनिसाधुजनको साधि॥ रांमंनजनका
मोचक्या॥ करतां होइ मुहोइ दाहरांमसंतालिये॥ फि
रिबुझियेनकोइ॥ दाहकहैरांमडुमारेनां उद्दे बिना
जेमुषिनिहसै और॥ तौइसअपराधीजीवको तीनि
लोककतवौरा॥ दाहछिनरांमसंतालता जेजीव
जाइतजाइ॥ आत्मकेआधारकं नांहीअनउपाइ
॥ १०॥ एकमकरतमनरहै नांउनिंजनपास दाइत
बहीदेवता॥ सकलकरमकानास॥ सहजेहीस
व होइगा गुनइंहीकानास॥ दाहरांमसंतालता कटे
करमकेपास॥ १२॥ ऐकरांमकेनां उद्दे बिना जीवकीजल
गिनजाइ॥ दाहकेतेपचिमये॥ करिकरिबंजतउपा
॥ १३॥ दाहऐकरांमकीटेकगहि॥ सजासदजमुना
इरांमनांमछाडैंनही॥ इजाआवैजाइ॥ दाहरां
मअगाधहै परमतिनांहीपार॥ अबरनबमनजानिये
दाहनांइअक्षर॥ दाहरांमअगाधहै॥ अविगतल
धेनकोइ॥ निरगुनअगुनकाकहै नांइबिलंबनहोइ
॥ १६॥ दाहरांमअगाधहै॥ बेहदलघ्यानजाइ॥ अ
दिअतिनहींजांशिये॥ नांउनिंरतगाइ॥ दाहरां
मअगाधहै॥ अकलअगोचरयेक॥ दाहनांइबिल
निये साधकहै अनेक॥ दाहयेकैअलारांम
जैनेदेवकतांनसब पात

हो

॥ १० ॥ दाहश्रुनमिरगुनदैरहे जैसा है तेसा
नोन हरिसुमिरनलो लाईये काजानो काकीन ॥ १० ॥
॥ ११ ॥ दाहमिरजनहारको केतेनां उन्नत ॥ चिति आदिसो
नीजिये ॥ यसाधुसुमिरसंत ॥ ११ ॥ दाहजिनि प्राणप
॥ १२ ॥ दाहमको दीया ॥ अतिसेवताहि ॥ जे आदिसो सांगा
॥ १३ ॥ मरि सोई नां नुसंवांदि ॥ १३ ॥ दाहश्रीसाको न अनामि
॥ १४ ॥ काहुदितावे और ॥ नां उबिनां पगधरनको ॥ कादीक
॥ १५ ॥ दाहै वीर ॥ १५ ॥ दाहनिमषनन्याराकीजिये ॥ अंतरये उ
॥ १६ ॥ रनांम कोटि पतित पावन नये ॥ केवल कदतां रंम ॥ १६ ॥
॥ १७ ॥ दाहजेतै इबजाणानही ॥ रंमनां मनिजसार ॥ फिरि पा
॥ १८ ॥ छै पछिताहि गा ॥ रंमन मूढगवार ॥ १८ ॥ दाहरंम संभालि
॥ १९ ॥ ले ॥ जब लग सुषी सरीर ॥ फिरि पीछे पछिताहि गा ॥ जबत
॥ २० ॥ नमन धरे न धीर ॥ २० ॥ उष दरिया संसार है ॥ सुषका साग
॥ २१ ॥ रंम ॥ सुषसागर चलि जाइये ॥ दाहजिबे काम ॥ २१ ॥ दाह
॥ २२ ॥ दरियाय ऊसं सर है ॥ तांमै रंमनां मनिजनाउ ॥ दाहटील
॥ २३ ॥ नकीजिये ॥ यऊ औ सरय ऊडाव ॥ २३ ॥ दाहमेरे संसाको
॥ २४ ॥ नही ॥ जीवन मरन कारांम ॥ सुपिनै ही जिनि बीसरे ॥ सुषहि
॥ २५ ॥ रदै हरिनांम ॥ २५ ॥ दाह उघिया तब लगौ ॥ जब लगनां उन्न
॥ २६ ॥ लेह ॥ तब ही पाउ न परम सुष ॥ मेरा जीव नियेह ॥ २६ ॥ क
॥ २७ ॥ हन कदावे आपको ॥ साईको सेवै ॥ दाह जा छाडि स
॥ २८ ॥ ब ॥ नां उनिज लेवे ॥ २८ ॥ जेचित चऊटै रंमसो ॥ सुमिर
॥ २९ ॥ नमन लागे ॥ दाह आतम जीवका ॥ संसा सब नागे ॥ २९ ॥
॥ ३० ॥ दाह पावका नां उले ॥ तोमिटे सिरि साल ॥ घड़ी मरु
॥ ३१ ॥ रत चालणां ॥ कैसी आदिसो कालि ॥ ३१ ॥ दाह औ सरजी
॥ ३२ ॥ वतै ॥ कद्यान केवल रंम ॥ अंत कालि दमक देंगे ॥ जंमवे
॥ ३३ ॥ रीसो काम ॥ ३३ ॥ दाहश्रीमे मद्गो मोलका ॥ एकसा स
॥ ३४ ॥ जे जाय ॥ चौदह लोक समान सो ॥ काहेरे नमिलाइ ॥

मोईसाससुजांनर सांईसेतीलाइ करिमाटासरज
 हारसो जमदगेमोलिबिकाइ जतनकरैनहीजा
 वका तनमनपवनाफेरि दाइमदगेमोलका दोइदो
 वटीयेकसेर दाइरावतराजारांमका कदेनबिसा
 रानां अतमरांमसंतालियो तोसूबसकायागांन
 दाइअदनिमसदासरीरमें हरिचिततदिनजाइ प्रेम
 गनलैलीनमन अंतरिगतिल्योलाइ निमघयेकन्यारा
 नही तनमनमफिसमाइ येकअंगिलागारहै ताकोका
 लनषाइ दाइपिंजरपिंडुसरारका सूवटासह
 जिसमाइ रमितासेतीरमिरहै बिमलिबिमलिजसगाइ
 अविनासीसौऐककै निमघनइतनुतजाइ बजतबिला
 ईकाकरै जेहरिहरिसबदसुणाइ दाइजहारहो
 तदारांमसो जावैकंदलिजाइ सावैगिरप्रवतरहो ना
 जाइ वैगेहबसाइ जावैजलदरिरहो जावैसीसनवाइ
 है जहांतहारिनांनुसो हिरदेहेतलोगाइ दाइरांमकहै
 सबरहतहै नषसिषसकलसरीर रांमकहैबिनजातहै सम
 कामनवांवीर दाइरांमकहैसबरहतहै लाहामूल
 सहैत रांमकहैबिनजातहै मूरघमनवांचैत दाइरांम
 कहैसबरहतहै आदिअंतिलोसोइ रांमकहैबिनजातहै
 यजमनबजरिनहोइ दाइरांमकहैसबरहतहै जीव
 ब्रह्मकीलार रांमकहैबिनजातहै मेमनहोऊसियार
 हरिप्रजिसाफिलजीवणां परनुपगारसमाइ दाइ
 मरणांतहांनला जहांपसुपंधीषाइ दाइरांमसबद
 मुषिलेरहै पीछैलागाजाइ मनसाबावाकरमनो ति
 ततिसहजिसमाइ दाइरविमदिलगोनांनुसो राते
 तेहोइ देवैगेदीदारको सुषपादैगेसोइ दाइरां
 ईसेवै सबजले बुरानकहियेकोइ सारोमोहैसोबु

जिस घटि नांवन हो ॥ १ ॥ दाह जी य रांम बिनु ॥ ३ ॥ धिया
 हृदि संसार ॥ उपजै बिन सैष पिमरै ॥ सुष डव वार वार ॥ ४ ॥
 रांम नांम रुचि उपजै ॥ ले वै दित चित लाइ ॥ दाह सोई जी य
 रा ॥ काहे जम पुरि जाइ ॥ ५ ॥ दाह नीकी वरियां आइ करि
 रांम ज पिलीको ॥ आतम साधन सोधिकरि ॥ करि ज सलक
 को ॥ ६ ॥ दाह अंगम बसत पो नै पडी ॥ राखी मंकि छिपा
 इ ॥ छिन छिन सोई संता लिये ॥ भेति वै बीसरि जाइ ॥ ७ ॥ दा
 ह जल निरमला ॥ हरि रंग रांता होइ ॥ काहे दाह पचि मरै
 पांणी सेती क्षे ॥ ८ ॥ सरार सरोवर रांम जेला ॥ मां है संजम
 सार ॥ दाह सहजै सब गये ॥ मन के मैल बिकार ॥ दाह रां
 म नांम जलें कृता ॥ सनां न संदाजि कृ ॥ तन मन आत्म निरम
 ल ॥ पंच रूप पांग कृ ॥ ९ ॥ दाह नति मइंद्रा निग्रह ॥ मुचि
 ते माया मनह ॥ परम पुरष पुरातन ॥ चंत ते सदा तनह ॥ १० ॥
 दाह सब जग बिष तस्या ॥ निर बिष बिरला कोइ सोई
 निर बिष होइ ग ॥ जाकै नांउ निर जन होइ ॥ ११ ॥ दाह निर
 बिष नांउ सो ॥ तन मन सहजै होइ ॥ रांम निरोगा करै गा ॥ इजा
 नां हो कोइ ॥ १२ ॥ ब्रह्म न गति जब उपजै ॥ तब माया तग
 ति बिलाइ ॥ दाह निरमल मल गया ॥ अर विति मरन साइ
 म ॥ दाह बिषे बिकार सो ॥ जब लग मन राता ॥ तब लग
 चीति न आवडी ॥ त्रि सुवन पति दाता ॥ १३ ॥ दाह का जानै
 कब होइ गा ॥ हरि सुमिरन इकतार ॥ का जानै कब छाडि
 दे ॥ यज मन बिषे बिकार ॥ १४ ॥ हे सो सुमिरन होतान ही
 न ही सुकीजै काम ॥ दाह यज तन दूंगया ॥ कं करि पाई
 ये रांम ॥ १५ ॥ दाह रांम न मनि ज ओषदी ॥ काटै कोटि बिका
 रा ॥ बिष प्रव्याधि ये ऊवरै ॥ काया कंचन सार ॥ १६ ॥ दाह रां
 म नांम निज मोहनी ॥ जिनि मोहे करतार ॥ सुरनर संकर मुनि
 जना ॥ ब्रह्मा सिद्धि बिचार ॥ १७ ॥ दाह निर बिकार निज नांउ

ले जीवनिइहेनुपाइ दाइकितमकालहे ताकेनिकटि
नजाइ ॥६४॥ मनपवनोगहिसुरतिसौ दाइपावेस्वाद सुमि
रनमांहेसुषधगां ॥ छोडिदेऊबकबद ॥६५॥ नांउसपीड
लाजिये ॥ प्रेमसगतिगुन्गाइ ॥ दाइसुमिरनप्रातिसौ ॥ हेतस
दितल्यौल्य ॥६६॥ प्रांनकवलमुषिरांमकहि ॥ मनपवन
मुषिरांम ॥ दाइसुरतिमुषिरांमकहि ॥ बुद्धसुनिनिजवांम
॥६७॥ दाइकहतसुनतांमकहि ॥ लेतांलेतांम ॥ घात
पीवतांमकहि ॥ आतमकवलबिसरांम ॥६८॥ दाइरांम
नांममेपैसिकरि ॥ रांमनांमल्यौलाइ ॥ यऊइकंतवीयलोव
में ॥ अनंतकाहेकोजाइ ॥६९॥ दाइजुंजलपैसैइधमें ॥ जूपा ॥
रांमैलूरा ॥ अैसेआतंरांमसौ ॥ मनहवसाधे ॥ कौरा ॥७०॥ ना
घरतलानबनसलाजहांनहीनिजनांउ ॥ दाइउनमनमन
रहे ॥ तलातसोईगांवा ॥७१॥ निरगुणनांममई ॥ रिदेसावप
रवरततं ॥ नरमंकरमंकलिबिष ॥ मायांमोइकपितं ॥ काह
जालंसोचितं ॥ स्यांनंकजमकाकरे ॥ हरिषमुदितंसतगुर
दाइअविगतदरसन ॥७२॥ दाइसबसुषअंगपयालके ॥ तो
लितराजवाहि ॥ हरिसुषयेकपलकंकां ॥ तासमिकद्यानजा
इ ॥७३॥ दाइरांमनांमसकोकहे ॥ कहिबेबऊतबमेक ॥
येकअनेकोफिरिमिले ॥ ऐकसमानांयेक ॥७४॥ दाइअपनी
अपनीइदिमें ॥ सबकोलेवेनांउ ॥ जेलागेवेददसौ ॥ तिनकी
मैंबलिजाव ॥७५॥ दाइकोनपटेतरदीजिये ॥ इजानांहीको
इ ॥ रांमसरीषारांमहे ॥ सुमिस्याहीसुषहोइ ॥७६॥ अपनी
जानैआपगति ॥ औरनजानैकोइ ॥ सुमिरिभुरिसपीजिये
दाइआनंदहोइ ॥७७॥ दाइसबहीबेदपुरांनपहि ॥ निठिन
वनिंरक्षार ॥ सबऊछइसहोमांदिहे ॥ क्याकरियेबिस्तार
॥७८॥ पटिपटियाकेपंडिता ॥ किनहुनपायांपार ॥ क
थिकथियाकेमुनिजनां ॥ दाइनांइअक्षार ॥७९॥ दाइ

नगमदीअगमविचारिये तऊ पारन आवै ताथैमेवगव
करै सुमिरन ल्यो लाखै ॥ ८० ॥ दाह अलिफयेक अलाहका
जपटिजानैकोइ ॥ ऊरागाकतेबाइलमसब ॥ पटिकरिपूरा
होइ ॥ ८१ ॥ दाहयऊतनपि जरा ॥ मांहेमनसदा ॥ येकेना
उअलाहका ॥ पटिदाफिजहूवा ॥ ८२ ॥ दाहनाउलीयातबज
गिये ॥ जेतनमनरहैसमाइ ॥ आदिअंतिमधियेकरस ॥ कब
हूतूलिनजाइ ॥ ८३ ॥ दाहयेकेहसाअनिनका ॥ हजीदसानजा
इ ॥ आपाभू लैआनसब ॥ येकेरहैसमाइ ॥ ८४ ॥ दाहपीछैयेकर
स ॥ बिसरिजाइसबओर ॥ अबिगतियऊगतिकीजिये ॥ मन
राखौहिंदोर ॥ ८५ ॥ आतमचेतनिकाजिये ॥ घेमरसपीवै ॥ दा
हलू लैदेहगुन ॥ अैसेजनजीवै ॥ ८६ ॥ कहिकहिकेतथाके
ह ॥ सुगिंसुगिकहिकालेइ ॥ लूगामिलैगलिपागियाता
सनिधितयदेइ ॥ ८७ ॥ दाहहरिसपीवतांरतीबिलंबनला
इ ॥ बारंबारसेजालिये ॥ मतिदेवीसरिजाइ ॥ ८८ ॥ नाउंनआवै
तबडुषी ॥ आबैसुषसंतोष ॥ दाहसेवगरांमका ॥ हजाहरि
षनसोगा ॥ ८९ ॥ दाहजागतसुपिनोकैगया ॥ चिंतांमणिजब
जबजाइ ॥ तबटीसांचाहोतहै ॥ आदिअंतिनुरलाइ ॥ ९० ॥
मिलैतबसुषपाईये ॥ बिचुरेवऊडघहोइ ॥ दाहसुषडघरा
मका ॥ हजांनांहीकोइ ॥ ९१ ॥ दाहहरिकानाउजलमैमानत
मांहिंसगिसदाआनदकरै ॥ बिचुरतहीमरिजाहि ॥ दा
हरांमबिसारिकरि ॥ जीवैकिहिआधार ॥ ज्येचाहगजलबू
दकौ ॥ करैपुकारपुकार ॥ ९२ ॥ हेमजीवैइहिआसिरे ॥ सुमि
रनकेआधार ॥ दाहछिटकैहाथये ॥ तौहमकौवारनपरि
इ ॥ ९३ ॥ दाहनावनिमतिरांमहिंनजै ॥ तगतिनिमतिनजिसो
इ ॥ सेवानिमतिसाईनजै ॥ सदासजीवनिहोइ ॥ ९४ ॥ दाह
रांमरसांगानितचवै ॥ हरिदेहीरासाधि ॥ सोधनमेरेसाईये ॥
अलषषजीतादाधि ॥ ९५ ॥ हरिदेरांमरहैजाननकै ॥ ता

के ऊपर कौन कहै अथ सिद्धि नौ निमित्त कहे ॥ १ ॥
द्वार है बंदित तो नि लोक बाधुरा कैसे दरस लहे नाउ नि
सोन सकल जगन परि दाह देवत है ॥ २ ॥ दाह सब जगन
धन धन वतान ही को ॥ ३ ॥ सोधन वतान जगिये जा के राम
प द्वार यह है ॥ ४ ॥ दाह जगन दयातमो अविनासी के
साथ प्राननाथ दि रदैव से तो सकल पदार्थ दाधि
दाह संग ही लागा सब कैरे राम नाम के साथ चिता
मणि दि रदैव से तो सकल पदार्थ दाधि ॥ ५ ॥ दाह ता
देत हां छिपाईये सावन छां नां होई से सर सात लज्जन
धू प्रगट कहि ये सो ॥ ६ ॥ दाह कदा था नारद मुनि ज
नां कहां संग त प्रहलाद ॥ प्रगट ती नृ लोक में सकल
पुकारै साध ॥ ७ ॥ दाह कदा सो बैवा ध्यान धरि कहां
कबीरा नाम सो कहां नां होई गा जेर कहै गाराम ॥ ८ ॥
दाह कहां लोन सुख देव था कदपी पारै दास दाह सा
चा कछि प्रे सकल लोक प्रकास ॥ ९ ॥ दाह कहां था
रखन रथरी ॥ अंनंत सिधे का मत प्रगट गोपी चंद है
कहै सब संत ॥ १० ॥ अगम अगोचर राधिये करि क
कोटि जतन दाह छां नां कर है जिस प्रे टिरां मरत न
॥ ११ ॥ दाह अग प्रया ल मैं साचा लेवै नां उ सकल लोक
सिरि देखिये प्रगट सब ही वाव ॥ १२ ॥ सु निरन का स
रखा पछिता वामन मां हि दाह मो ठाराम रस स
पीया ना हि ॥ १३ ॥ दाह जे मानां उ था ते सली यानां
हो सर ही यज जीव मैं पछिता वामन मां हि ॥ १४ ॥
हसि रिकर वत बहै बिसरै आत्म राम मां हि क
काटिये जीवन ही बिश्राम ॥ १५ ॥ दाह सिरि कर
राम रिदै ये जा ॥ मां हि क ले जा काटिये काल
॥ १६ ॥ दाह सिरि कर वत बहै अगम संग

ॐ हिकले जाकाटिरो। यऊ बिशान जानैको ॥ ११ ॥ दा ॥
 करिकरवतवदे। निनहु निरखेनाहि। माहिकले जाका
 टये। सालरद्यामनमोहि। ॥ १२ ॥ जेतापापसबजगकरे
 भतानाउं बिसारेहो ॥ दाहरांमसंतालिये। तोयेताडारे
 मो ॥ १३ ॥ दा ॥ जबहीरांमबिसारिये। तबहीमोटीमारा।
 षडषडकरिनाधिये। बीजपडैतिहिंवार। ॥ १४ ॥ दा ॥ जब
 हीरांमबिसारिये। तबहीकंधेकाल। सिरऊपरिकरउ
 तबहे। आइपडेजमजाल। ॥ १५ ॥ दा ॥ जबहीरांमबिसा
 रिये। तबहीकंधबिनास। पगिपगिपरलेपिंडपडे। प्रा
 णीजाइनिरास। ॥ १६ ॥ दा ॥ जबहीरांमबिसारिये। तबहीहां
 नाहो ॥ प्राणपिंडश्रवसगया। सुधीनदेष्वांको ॥ १७ ॥ दा ॥
 साहिबजीकेनाउमां। बिरहापीडपुकार। तालाबेलीरो
 दगां। ॥ १८ ॥ दा ॥ साहिबजीकेनाउमां। जावमगति
 बेसास। लैसमाधिलागारहे। दाइसाईपास ॥ १९ ॥ साहिब
 जीकेनाउमां। मतिबुधिशानबिचार। प्रेमघातिसनेदसु
 ष। दाइजोतिअपार ॥ २० ॥ साहिबजीकेनाउमां। सबऊछ
 तरेसंडार। नूरतेजअनंतहे। दाइसिरजेनहार ॥ २१ ॥ जि
 समैसबऊछसौलीया। निरजनकानांवा। दाइहिरदेराव
 ये। मैबलिहारीजांत। ॥ २२ ॥ साघाअंगा ॥ २३ ॥ बिरहका
 गलिघत। दाइनमोनमोनिरजनं नमसकारगुरदेवत
 ह। बंदनश्रवसांधवा। प्रणामंपारंगतह। रतिवतीअपार
 निकरै। रांमसनेहीआवे। दाइओपरिअबमिले। यऊ
 बिरहनिकासाव। ॥ २४ ॥ पावपुकारैबिरहनी। निसदिनर
 हेउदास। रांमरांमदाइकहै। तालाबेलीपास। ॥ २५ ॥ म
 नचितचाहगजूरटे। पावपावलागायो। दाइदरसनका
 रमै। पुरवऊमेगआस। ॥ २६ ॥ सबदउमाराउजला। चि
 रियासुंकार। तुहीउहीनिसदिनकरै।

तन मन तु मपरिवारणो करिदजेकै बार जे जे सी बि
प्राईये तोला जे सिरजन दार ॥ १ ॥ दाह दान डनी सदके
करो ॥ दुक देखन देदी दार ॥ तन मन सी छिन छिन करों नि
सदो जग सी दार ॥ २ ॥ दाह दम ड विद्या दी दार के त्रदिलये
हरिन होइ ॥ जावै दम कौ जालि दे ॥ रूणां है सो दोह ॥ ३ ॥ दाह
क है जे ऊछ दीया मुक कौ ॥ सो सब डम दीले ऊ ॥ डम बिन मन मा
नैन ही ॥ दर स आ पाणां देऊ ॥ ४ ॥ दाह क लु मा रौ न ही ॥ दम कौ
दे दी दार ॥ नृ है त बल गये कटग ॥ दाह के दिल दार ॥ ५ ॥ दा
ह क है नृ है तै सी भगति दे ॥ नृ है तै सा प्रेम ॥ नृ है तै सी सुरति दे ॥
नृ है तै सा प्रेम ॥ ६ ॥ दाह स दि कै करों मरीर कौ ॥ खर खर ब ऊ स
त ॥ नाव स गति हित प्रेम लो ॥ घरा प्रियारा कंत ॥ ७ ॥ दाह द
र सन की रली ॥ दम कौ ब जत अपार ॥ क्या जानौ क बरु मि
ले मेरा प्रान अक्षर ॥ ८ ॥ दाह कार निकंत के ॥ घरा ड घा बि
हाल ॥ मीरां मेरा मि ॥ दर करि ॥ दे दर सन दर्हा ल ॥ ९ ॥ दाह द
ला बे ली प्यास बिन ॥ कर स पीया जाइ ॥ निरहा दर सन दर द
सौ ॥ दम कौ दे ऊ छुदाइ ॥ १० ॥ ता ला बे ली पी ड सौ ॥ निरहा प्रे
म प्रियास ॥ दर सन से ती दी जिये ॥ बिल से दाह दास ॥ ११ ॥ दाह क
हे दम कौ अपनो आप दे ॥ सक म ह ब ति दर द ॥ से ज मु हो ग सु प
प्रेम र स ॥ मिलि घे लै ला प्र द ॥ १२ ॥ दाह प्रेम भगति मा तार है
ता ला बे ली अंग ॥ सदा स पी ड म नर है ॥ रां मर मै मन संग ॥
१३ ॥ दाह प्रेम भगन स पाई ॥ भगति हेत रुचि साव ॥ विर
ह बि सा स निज नानं सौ ॥ देव दया करि आव ॥ १४ ॥ ग ई द सा
स ब ब ऊ डै ॥ जे डम प्र ग ऊ आइ ॥ दाह ऊ ज डु स ब ब से ॥ द
र सन दे व दिषाइ ॥ १५ ॥ दाह क है दम क सिये क्या होइ मा
बि ड द डु म्भारा जाइ ॥ पी छै दी प छिता ऊ गे ॥ ता छै प्र ग ट आ
॥ १६ ॥ दाह तो पी व पाईये ॥ करि मं ऊ बिलाप ॥ सु नि हे क
नृ नि न श रि ॥ प्र ग ट हो वै आप ॥ १७ ॥ दाह तो पी व पाये

भावे प्रीति लगाव ॥ हे जे हेरी बुलाइये ॥ मोहन मंदिर आव
 ५५ ॥ दाह तो पीव पाइये ॥ करि साई की सेवा ॥ काया मोहि
 लषाईसी ॥ घट ही नीतरि देव ॥ ५६ ॥ दाह तो पीव पाइये ॥
 ऊसमल दे सो जाइ ॥ निरमल मन करि आरसी ॥ मूरति मोहि
 लषाई ५७ ॥ मीयां में आव घरि ॥ वांटी वतां लोइ ॥ दुष्टे डे
 मुष्टि डे गहि ॥ मरा बिछो दे रों ॥ ५८ ॥ हे सो निक्षि न हो पाई
 ॥ नदी सुंदे जर पूरा ॥ दाह मन मां में न हो ॥ तार्थे मरिये ऊरि
 ५९ ॥ जिस घटि सक अलाह का ॥ तिस घटि लोही न मांस
 दाह जिये जक न हो ॥ सस कै सो सै सास ॥ ६० ॥ रतीर बुन बि
 सरे ॥ मरै सना लि सना लि ॥ दाह सुहदा थीर दे ॥ आसिक अ
 लह नां छि ॥ ६१ ॥ दाह आसिक रबदा ॥ सिर सी डे वे लाहि
 अलह कारनि आप को सा डे अंदरि साहि ॥ ६२ ॥ नोर
 नोरें तन करे ॥ बडे करि ऊर बाणा ॥ मिठा को डाना लगे
 दाह ते हंसाणा ॥ ६३ ॥ दाह जब लग सीसन सो पिये ॥ तब लग
 सक न होइ ॥ आसिक मरणो नां डरे ॥ पीया पिया ला सोइ
 ६४ ॥ ते डी नोई सत्ता ॥ जे डी ये दी दार के ॥ उजल हं दी असु
 प साई ॥ दो पाण के ॥ ६५ ॥ बिचो सत्ता ॥ डुरि करि ॥ अंदरि
 बिया न पाइ ॥ दाहर ताहि कदा ॥ मन मंदे बतिलाइ ॥
 ६६ ॥ दाह सक मंदे बति मसमना ॥ तालि बंद रि दी दार
 दो सत दिल दरद मंद जरि ॥ आदि गार ऊ सियारा ॥ ६७ ॥
 आसिक ऐक अलाह के ॥ फारिक डनीयां दी ना ॥ तारि
 कइ सज्जो जू दये ॥ दाह पाक अको ना ॥ ६८ ॥ आसिकार
 दक बज कर दा ॥ दिल नू जोर फंद दा ॥ अलह आले न
 र दी दमा ॥ दिल हं दाह बंद ॥ ६९ ॥ दाह सक अवाज
 सो ॥ असे कहे न को ॥ दाह दमंदे बति पाईयो साहि
 अहा सिल होइ ॥ ७० ॥
 मारे अपनै हाथ ॥ कदा आलम अ

बांकी बात ॥१॥ दाह संक अंला दका ॥ जेक बल प्र
दे आइ ॥ तौ तन मन दिल अरवा दका सब पड दा जलि
जाइ ॥२॥ अरवा दे सि जदा कुन द ॥ औ जूटरा चिका
र ॥ दाहन र दादनी ॥ आसिको दादर ॥३॥ बिरह अ
गितन जारिये ॥ गान अनि दो लाइ ॥ दाहन घसिष प्रज
ले ॥ तवराम बुजा वै आइ ॥४॥ बिरह अगनि में जा
लिवा ॥ दरसन कै ताई ॥ दाह आतुर से इवा ॥ इजाक
हुना दी ॥५॥ सादिव सौ क बुबल न हो ॥ जिनि दह
सौ धे कोइ ॥ दाह पीड पुकारिये ॥ रोवता होइ सु होइ
॥६॥ जान क्षम सब का डि दे ॥ जपत प्रसाधन जाग ॥ दा
ह बिरहा ले रहे ॥ छाडि सकल रस तो ग ॥७॥ जदा बि
रहांत हो औ रक्षा ॥ सुधि बुधि नाचे गान ॥ लोक बेद मार
गत जे ॥ दाह ये कै क्षम ॥८॥ बिरहा जन जावे न हो ॥ जे
कोटि कहैं सम जाइ ॥ दाह गदिला कै रहे कै तल फितल
फिमरि जाइ ॥९॥ दाह तल कै पीड सौ ॥ बिरहा जन तेरा
सस कै साई कार नै ॥ मिलि सादिव मेरा ॥१०॥ दाह बिरहा
पीड सौ ॥ पड्या पुकारे मोत ॥ राम बिना जीवे न हो ॥ पीव मि
लन की चीत ॥ पड्या पुकारे पीड सौ ॥ दाह बिरहा जन
राम सने दा चिति बसे ॥ और न नाचे मेन ॥११॥ जिस घटि
बिरहा राम का ॥ नमनी दन आवे ॥ दाह तल कै बिदेनी
नम पीड जगावे ॥१२॥ सारा सूरानी द नरि ॥ सब कोइ
सोवे ॥ दाह घाइल दरद वेद ॥ जागे अररोवे ॥१३॥ पीड
पुराणा ना पडे ॥ जे अंतरि बेषा होइ ॥ दाह जीवन मरन
लो ॥ पड्या पुकारे सोइ ॥१४॥ जेक बल बिरह निमरे ॥ तो
सुरति बिरहनी होइ ॥ दाह पीव पीव जीवता ॥ मूवा नी
टेरे सोइ ॥१५॥ दाह अणी पीड पुकारिये ॥ पीड पराई
नांदि ॥ पीड पुकारे सो तला ॥ जाके कर क कलेजे ॥ मादि

८८ ॥ अंजीवतमतककारनै॥ गतकरिनाथेआप॥ यंदा
 हकारनिशंभको॥ बिरहीकरैबिलाप॥ ८८ ॥ दाहतलफित
 लफिबिरहनिमेरे॥ करिकरिबहुतबिलाप॥ बिरह
 अगनिमैंजलिगई॥ पीवनपूछैबात॥ ८९ ॥ दाहकहांजाऊ
 कौनयेपुकारौ॥ पीवनपूछैबात॥ पीवबिनचैननआव
 ई॥ कंसरींदिनरात॥ ९० ॥ दाहबिरहबिदोगनसहिसको
 मोपैसद्यानजाइ॥ कोईकहौमेरेपीवको॥ दरसदियावैअ
 ॥ ९१ ॥ दाहबिरहबिदोगनसहिसको॥ निसदिनसाले
 मोहि॥ कोईकहौमेरेपीवको॥ कबमुषदेखोतोहि॥ ९२
 दाहबिरहबिदोगनसहिसको॥ तनमनधरेनक्षीर॥ कोई
 कहौमेरेपीवको॥ मेरेमेरीपार॥ ९३ ॥ दाहकहेसाधुध्या
 ससारमै॥ सुमबिनरद्यानजाइ॥ औरोंकेआनंददे॥
 सुषसौरेनिबिदाइ॥ ९४ ॥ दाहलाइकहमनही॥ हरि
 केदरसनजोग॥ बिनदेखेपरिजाहिगे॥ पीवकेबिरहबि
 दोग॥ ९५ ॥ दाहसुषसाईसौ॥ औरसबेहीडुष॥ देखो
 दरसनपीवको॥ निसहीलागेसुष॥ ९६ ॥ दाहसुषसाई
 सौ॥ औरसबेहीडुष॥ देखोदरसनपीवका॥ निसही
 लागेसुष॥ ९७ ॥ चंदनसीतलचेदमा॥ जलसीतलसब
 कोइ॥ दाहबिरहीरांमका॥ इनसोंकदेनहोइ॥ ९८ ॥ दाह
 इलदरदवंद॥ अंतरिकरैपुकार॥ साईसुगौंसबलोकमें
 दाहयहुअधिकार॥ ९९ ॥ दाहजागैजगतगुरा॥ जगसग
 लासोवै॥ बिरहीजागैपीडुसौ॥ जेघाइलहोवै॥ १०० ॥
 बिरहअगनिकाहागदे॥ जीवतमतकगोर॥ दाहप
 हलीघरकीया॥ आदिहमारीगौर॥ १०१ ॥ दाहदेखेकाअ
 बिरजनही॥ अगदेखेकाहोइ॥ देखेकपरिदिलनही॥
 अगदेखेकोरोइ॥ १०२ ॥ दाहपहलीआगमबिरहका
 पीछेप्रीतिप्रकास॥ प्रेममगनले

नकी आस ॥ १८ ॥ बिरह बिधोगी मन नला साई का बैरा
सह जसे तोषी पाईये ॥ दाह मोटे साग ॥ १९ ॥ दाह चुषा बि
नांत निंघीत ननु पजे ॥ सीतल निकटि जल क्षरिया ॥ जं
नमल गै जीव पुण गन पीचे ॥ निरमल दह दिस तरिया
॥ २० ॥ दाह बुध्म बिनांत निंघीति ननु पजे ॥ बह बिधि
तो जननेरा ॥ जनमल गै जीवरती नचाषे ॥ पाक पूरि बड
तेरा ॥ २१ ॥ दाह तपत्त बिनांत निंघीति ननु पजे ॥ संग
ही सीतल छाया ॥ जनमल गै जीव जां लौ नाही ॥ तर चरत
नवन राया ॥ २२ ॥ दाह चोट बिनांत निंघीति ननु पजे
ओषद अंगर हंत ॥ जनमल गै जीव पलकन प्रसे ॥ बूटी
अमर अनंत ॥ २३ ॥ दाह चोट नलागी बिरह की पीड
ननु पजी आइ ॥ जागिन रोवै क्षह दे ॥ सोवत गई बिहाइ
॥ २४ ॥ दाह पीड नरुप जी ॥ नांद म करी पुकार ॥ ता
थे सादिव न मिल्या ॥ दाह बीती बार ॥ २५ ॥ अ दरिपी
डननु नरे ॥ बाहरि करै पुकार ॥ दाह सो को करि लहे
सादिव का दीवार ॥ २६ ॥ मन ही मां है ऊरणा ॥ रोवै म
न ही मां हि ॥ मन ही मां है क्षह दे ॥ दाह बी हरि नाहि ॥
२७ ॥ बिन ही नैन डरो वणा ॥ बिन मुख पीड पुकार ॥
बिन ही हाथों पीटणा ॥ दाह बारं बार ॥ २८ ॥ प्रीति ननु प
जे बिर बिन ॥ प्रेम न गति को होइ ॥ सब ऊती दाह भाव
बिन ॥ कोटि करै जे कोइ ॥ २९ ॥ दाह बातों बिरह न ऊ
पजे ॥ बातों प्रीति न होइ ॥ बातों प्रेम न पाईये ॥ जिनि
रूप ता जे कोइ ॥ ३० ॥ दाह जा के जे सी पीड है ॥ सो ते स
करै पुकार ॥ को सु प्रिम को सह जमै ॥ को मृत कति दि
वार ॥ ३१ ॥ दरद हिं बूझै दरद वंद ॥ जा की दिल ही
वै ॥ का जां गौ दाह दरद की ॥ नोद सरि सोवै ॥ ३२ ॥ दा
ह कर बिन मर बिन कमाण बिन ॥ मरि धै चिक सी

लागी चोट सरीर मे ॥ नष सिधं साले सो ॥ ११८ ॥ दाइत
 लका मोरे नेद सो ॥ साले मे कि पंरा ॥ मारण दारा जाणि
 है ॥ किं हिं लागे बाण ॥ ११९ ॥ दाइ सो सरद मको मारि ले
 जिं हिं सरि मिलिये जाइ ॥ निस दिन मार गदे बिये ॥ कब
 हूँ लागे आइ ॥ १२० ॥ जिं हिं लागा सो जाणि है ॥ वेध सक
 रे पुकार ॥ दाइ पंजर पी डहे ॥ साले बार बार ॥ १२१ ॥ बिर
 हो सस कै पी डु सो ॥ जू घाइ लरणा मां हिं ॥ घात म मारे बा
 ण नरि ॥ दाइ जीवै नां हिं ॥ १२२ ॥ दाइ बिरह जगावै दरद को
 दारद जगावै जीव ॥ जीव जगावै सुरतिको ॥ पंच पुकारे
 पीव ॥ १२३ ॥ दाइ सह जै मन सो मन सधे ॥ सह जै पवन
 सोइ ॥ सह जै पंचो धिर नये ॥ चोट बिरह की होइ ॥ १२४ ॥
 दाइ मारे प्रेम सो ॥ वेधे साध सु जाणा ॥ मारण दारे को मि
 ले ॥ दाइ बिरही बाण ॥ १२५ ॥ दाइ मारण दारा र हिं ग
 या ॥ जिं हिं लागी सो नां हिं ॥ कब हूँ सो दिन होइ गा ॥ यज
 मेरे मन मां हिं ॥ १२६ ॥ घात म मारे प्रेम सो ॥ तिन को का मा
 रे ॥ दाइ जारे बिरह के ॥ तिन को का जारे ॥ १२७ ॥ काया मा
 है कर दया ॥ बिन देखे दी दारा ॥ दाइ बिरही बा वरा ॥ मरे
 न ही तिं हिं बार ॥ १२८ ॥ बिन देखे जीवै न हो ॥ बिरह का स
 हिनां ॥ दाइ जीवै ज बल गे ॥ तब लग बिरह न जाणा
 ॥ १२९ ॥ रोम रोम संध्या सहे ॥ दाइ कर हे पुकार ॥ रां म
 घटा दल न मंगि करि ॥ बरसा ऊ सिर जन दारा ॥ १३० ॥ प्र
 ति जु मेरे पीव की ॥ पैठ पंजर मां हिं ॥ रोम रोम पीव पी
 व करे ॥ दाइ सर नां हिं ॥ १३१ ॥ सब घटि श्रवनां सुर
 सो ॥ सब घटि रस नां वै न ॥ सब घटि नै नां कै र हे ॥ दा
 इ बिरहा ज्यै न ॥ १३२ ॥ तिं हिं वस का रो वणां ॥ पद
 पलक का नां हिं ॥ रोवत रोवत मिलि गया ॥ दाइ स
 दिख मां हिं ॥ १३३ ॥ दाइ नैन द मारे बा वरे ॥ रोवै न ही

नरातः साईसंगिन जागदी ॥ पीवकां पूछे वात ॥ १२५ ॥
 हुनेन ऊनीरन आइया ॥ क्यो जाँ लौं ये रोइ ॥ तेमैं हो का
 रोइये ॥ साहिबनेन ऊजोइ ॥ १२६ ॥ दाइनेन दमार हीव
 हैं ॥ नालेनीरन जाहिं ॥ सकै सरांसहेतवे ॥ करंकनये
 गलिमाहिं ॥ १२७ ॥ दाइबिरधेमकीलहरिमें ॥ एकमे
 नपंगुलहोइ ॥ रामनाममें गलिगया ॥ बकै बिरलाकोइ
 ॥ १२८ ॥ बिरहअगनिमें जलिगये ॥ मनकेमैलबिका
 र ॥ दाइबिरहीपीवका ॥ देखैगादीद्वार ॥ १२९ ॥ बिरहअग
 निमें जलिगये ॥ मनकेविषैबिकार ॥ ताथेंपंगुलकैर
 हा ॥ दाइदरिदीद्वार ॥ १३० ॥ दाइजबबिरहआयादर
 दसो ॥ तबमोवालागारांम ॥ कायालागीकालके ॥ ऊ
 डवेलागेकाम ॥ १३१ ॥ जबरांमअकेलारहिगया ॥ त
 नमनगयाबिलाइ ॥ दाइबिरहीजबसुषी ॥ जबदर
 सप्रसमिजाइ ॥ १३२ ॥ दाइपडदापलकका ॥ येताअंत
 रहोइ ॥ दाइबिरहीरांमबिन ॥ करंकरिजीवैसोइ ॥ १३३ ॥
 जेहमछाडैरांमको ॥ तोरांमनछाडै ॥ दाइअमली
 अमलथे ॥ मनकाकरिकाटे ॥ १३४ ॥ बिरहापारसज
 बलहै ॥ तबबिरहनिबिरहाहोइ ॥ दाइपरमैबिरह
 नी ॥ पीवपीवटेरैसोइ ॥ १३५ ॥ आसिकमासककैगया
 इसक ॥ कहांवैसोइ ॥ दाइनुसमासकका ॥ अलह
 आसिकहोइ ॥ १३६ ॥ रांमबिरनीकैरहा ॥ बिरहनि
 कैगईरांम ॥ दाइबिरहाबाउडा ॥ अैसेकरिगयाकां
 म ॥ १३७ ॥ बिरहबिचारलेगया ॥ दाइहमकंआइ
 जहाअगमअगोचरांमथा ॥ तहाबिरहबिनाको
 इ ॥ १३८ ॥ बिरहाबपुराआइकरि ॥ सोवतजगावैजी
 व ॥ दाइअगिलगाइकरि ॥ लेपऊंचावैपीव ॥ १३९ ॥
 बिरहामेरांमीतहै ॥ बिरहाबैरीनाहि ॥ बिरहमे

बेरी कहै सोदाइ किस भांदि ॥ १५० ॥ दाइ सक अ
 लह की जानि है ॥ इस क अल ह का अंग ॥ इस क अ - ल
 ह श्री जूट है ॥ इस क अल ह करंग ॥ १५१ ॥ दाइ प्रीत म के
 पग प्रसियें ॥ मुज देखन का ताव ॥ तहां ले सी स न वाई ये
 जहां धरे थे पाव ॥ १५२ ॥ दाइ बांट बिरह की सो धि करि
 पंथ प्रेम काले ॥ ले कै मार गि जाई ये ॥ इस र पावन दे ॥
 १५३ ॥ बिरहा बेगान ग तिस ह ज में ॥ आगें पीछे जाइ
 थोरि मां हें बजत है ॥ दाइ र क ल्यो लाइ ॥ १५४ ॥ बिरहा बे
 गाले मिले ॥ ता ला बे ली पीर ॥ दाइ मन घाइ ल च या सा
 ले सक ल स रीर ॥ १५५ ॥ आ पा अ प रं पा र की ॥ ब सि अं
 ब र स तार ॥ ह रे पं ट ब र प ॥ हरि करि ॥ ध र ती करे सिं
 गार ॥ ब सु धा स ब फ लै फ लै ॥ पृ थ्वी अ न त अ पार ॥
 ग न ग न गर जि ज ल थ ल न रे ॥ दाइ जै जै कार ॥ १५६ ॥ दाइ
 काला मुह करि काल का ॥ सोई सदा सु काल ॥ मेघ बुझ
 रे धरि घणा ॥ ब र स ऊ दी न द या ल ॥ १५७ ॥ बिरह का
 अंग स पूर्ण ॥ सीधी ॥ १५८ ॥ अंग ॥ ती ॥ ३ ॥ पर च
 को अंग लिखत ॥ दाइ न मो न मो नि रं ज न ॥ न म स कार गु
 र देव त ॥ बंदन अब साधवा ॥ अण मं पा रं ग त ॥ १५९ ॥ दाइ निरं
 तर पी व पा ड या ॥ तहां पं धी नु न म न जाइ ॥ स प तौ मंड ल ने दी
 या अष्टै र द्या स मा ॥ १६० ॥ दाइ निरंतर पी व पा ड या ॥ जहां नि
 ग म न पुं जं चै बे द ॥ ते ज स रू पी पा व ब सै ॥ कोई बिर ला जां ती
 ने द ॥ १६१ ॥ दाइ निरंतर पी व पा ड या ॥ ती निलोक न र पू रि ॥
 सब से जो सोई ब सै ॥ लो ग ब ता दै इ रि ॥ १६२ ॥ दाइ निरंतर पी व
 पा ड या ॥ जहां अं न द वार द म्मा स ॥ द स सौं प्र म द स बं ले ॥
 तहां सै व ग स्वां मी पा स ॥ १६३ ॥ दाइ रंग स रिषे लौ पी व सौं ॥
 तहां वा जै बे न र सालं ॥ अ क ल पा ट प रि बै वा स्वां मी ॥ प्रे म पि
 ला दै लाल ॥ १६४ ॥ दाइ रंग स रिषे लौ पी व सौं ॥ से ती दी न द य

ल निसवा सुरन द्वां तद्वां वसे ॥ मानस राव रपाल ॥ १ ॥
रंग न रिषे लो पी व से ॥ तद्वां क व क न दो इ वि दोग ॥ आदि पु
रिस अंतरि मित्या ॥ क बु पुर व ले सं जोग ॥ २ ॥ दा हरंग न
रिषे लो पी व से ॥ तद्वां वार मा म व सं त ॥ से व ग स द आ ने द
हे ॥ जु गि जु गि दे वों कं त ॥ ३ ॥ दा ह का या अंतरि पा इ या ॥ ४ ॥
ऊ टी के रे ती र ॥ स द जै आप ल षा इ या ॥ बा णा ॥ सक ल स री र
॥ ५ ॥ दा ह का या अंतरि पा इ या ॥ नि रं त र नि र क्ष र ॥ स द जै
आ प ल षा इ या ॥ ऐ सा सं म थ सा र ॥ ६ ॥ दा ह का या अंतरि
पा इ या ॥ अ न द द वे न व जा इ ॥ स द जै आप ल षा इ या ॥ सु नि
मं ड ल मे जा इ ॥ ७ ॥ दा ह का या अंतरि पा इ या ॥ स व दे व नी का
दे व ॥ स द जै आप ल षा इ या ॥ ऐ सा अ ल ष अ ने इ ॥ ८ ॥
दा ह न व र क व ल र स वे धि या ॥ सु ष स र व र स पी व ॥ त द्वां सा
मो ती चु लो ॥ पी व दे वें सु ष जी व ॥ ९ ॥ दा ह न व र क व र स वे
धि या ॥ ग द्दे च गों क र दे त ॥ पी व जी व स त द्वां न य ॥ रो म रो म
स व से त ॥ १० ॥ दा ह न व र क व ल र स वे धि या ॥ अ न त न न
र में जा इ ॥ त द्वां बा स विलं बि या ॥ म ग न न यो र स षा इ ॥ ११ ॥
दा ह न व र क व ल र स वे धि या ॥ ग द्वां जु पी व की द्वां टा ॥ त द्वां द
लि न व र र हे ॥ को ण क रे स र चो ट ॥ १२ ॥ दा ह षो जि त द्वां पी
व पा इ ये ॥ स व न पं ने पा स ॥ त द्वां ये क इ कां त हे ॥ त द्वां जो
नि प्र कां सा ॥ १३ ॥ दा ह षो जि त द्वां पी व पा इ ये ॥ ज द्वां चं द न क
गो मूर ॥ नि रं त र नि र क्ष र हे ॥ ते ज र द्या न र पू र ॥ १४ ॥ दा ह
षो जि त द्वां पी व पा इ ये ॥ ज द्वां बि न जि न्या गु न गा इ ॥ त द्वां
आ दि पु रि स अं ले ष हे ॥ स द जै र द्या स मो इ ॥ १५ ॥ दा ह षो
जि त द्वां पी व पा इ ये ॥ ज द्वां अ न रा अ र नु मं ग ॥ जु रा म र रा
नो ता ज सी ॥ रा षे अ प लो सं ग ॥ १६ ॥ दा ह ग फिल छो व
ते ॥ आ दे मं कि अ ला द ॥ पि री पा ण जो पा ण से ॥ ल दे स
नो इ सा व ॥ १७ ॥ दा ह ग फिल छो व ते ॥ आ दे मं कि मु का

सु ५ ग कि न को व ते मं क र व नि र र

हरिगहमें दीवाराततः पसेनबेगीपांणरः॥ दाइगाफि
 लछोवते॥ अंदरिपिरापसु॥ तघतरबांनीबिचमें॥ पेर
 तिनीवसु॥ २४॥ हरिचंतामणिचिंततां॥ चंताचितकी
 जाइ॥ चिंतामणिचिंतमेंमिल्या॥ तहांदाइरयालुजाइ
 २५॥ अपनेनैनदोआपको॥ जब आतमदेवे॥ त
 हांदाइप्रआतमां॥ ताहांकोपेवे॥ २६॥ दाइबिनरसना
 जदाबोलिये॥ तहांअंतरजांमीआप॥ बिनअवगाऊं
 साईसुरी॥ जेकलुकीजेजाप॥ २७॥ ज्ञानलहरिजहांपे
 ऊंते॥ बाणीकाप्रकास॥ अनचैजहांपेऊपजे॥ सबदे
 कीयानिवास॥ सोघरदाबिचारका॥ तहांनिरंजनवास
 तहांइदइखोजिले॥ बयजीवकेपास॥ २८॥ जहांतनम
 नकामूलहै॥ उपजेऊंकार॥ अनददसेजीसबदका॥ आ
 तमकरबिचार॥ तावजगतिलेऊपजे॥ सोठाहरनिज
 सार॥ तहांदाइनिधिपाई॥ निरंतरनिरक्षर॥ २९॥ एक
 ठौरसूजेसदा॥ निकटनिरंतरवांनु॥ तहांनिरंजनपूरि
 ले॥ अंजरांवरनिहिनांउ॥ सांधूजनकीलाकरे॥ सदा
 सुधीतिदिगांउ॥ चखुदाइउसठोरकी॥ मेंबलिहारीजाव
 ३०॥ दाइपसुपिरनिके॥ पेटीमंकिंकलूब॥ बेठीआ
 देबिचमें॥ पांणजोमहबूब॥ नैनऊंचालानिरधिकरि
 दाइघालेदाया॥ तबहीपावेयंमधन॥ निकटनिरंजनना
 थ॥ इरनैनऊंबिनसूजेनही॥ तलाकतकजाइ॥
 दाइधनपावेनही॥ आयामूलगवाइ॥ ३३॥ जहांआत
 मतहांरांमहै॥ सकलरयाजरपूर॥ अंतरगतिलोला
 इरऊ॥ दाइसेवगसूर॥ ३४॥ पहलीलोचनदीजिये॥ पी
 वेबदादिगाइ॥ दाइसूजेसारसब॥ सुधमैरहेसमाइ
 ३५॥ दाइ
 ३॥ तासोमनलागारहे॥ मेंबलिहारी

ल्लाचोदेप्रेमरस॥ आलमअंगिलगाइ॥ हजेकौठाहरन
हो॥ पऊपनगंधसमाइ॥ नाहीकैकरिनाउले॥ ऊछन
कहांईरे॥ साद्विजतीकीसेजपरि॥ दाहजाईरे॥ जहार
मतहांमेंनहीं॥ मैतहांनाहीराम॥ दाहमहलबारीकदे
देकौनाहीराम॥ मैनाहीतहांमेंगया॥ येकैइसरना
हिं॥ नाहीकौठाहरघणा॥ दाहनिजघरमाहिं॥ मैनाही
तहांमेंगया॥ आगेऐकअलाव॥ दाहऐसीबंदगी॥ हज
नाहीआव॥ दाहआपाजबलगै॥ तबलगहजाहो
इ॥ जबयऊआपामिटिगया॥ तबहजानाहीकोइ॥
दाहदेकौनैघणा॥ नाहीकोऊछनाहिं॥ दाहनाहीहोइ
रऊ॥ अपणैसाद्विजमाहिं॥ दाहतीनिसुनिआकार
की॥ चौथीनिरगुणानां॥ सहजसुनिमैरमिरया॥ जहां
तहांसबठांउं॥ पांचततकेपांचहै॥ आठततकेआठ
आठततकायेकहै॥ तहांनिरंजनदाट॥ दाहजहांमें
नमायाब्रह्मणा॥ गुणइंडीआकार॥ तहांमनविश्वेसब
निघै॥ रचिरऊसिरजनहार॥ कायासुनिपंच
कावासा॥ आतमसुनिप्राणप्रकासा॥ प्रमसुनिब्रह्मसो
मैला॥ आगेदाहआपअकेला॥ जहांयेसबऊप
जे॥ ब्रह्मसूरआकास॥ पाणापवनपाककीये॥ धरतीका
प्रकास॥ कालकरंमजीवऊपजे॥ मायाभनघटसास
तहारहितारमतारांमहै॥ सहजसुनिसबप्रास
सहजसुनिसबेठौरहै॥ सबघटसबहोमाहिं॥ तहांनिरं
जनरमिरया॥ कोईगुणबापैनाहिं॥ दाहतिससर
वरकेतीर॥ सोहंसामोतीबुणै॥ तहांप्राद्वैनीऊरनीरसे
देहंसामोसुणै॥ दाहतिससरवरकेतीर॥ जपतप
संजमकीजिये॥ तहांसनमुखसिरजनहार॥ प्रेमपिल
सेमनिगे॥ दाहतिससरवरकेतीर॥ समीसबैसुह

वृणोत तद्वा विनकरवा जैवेन जिष्वाही गोणवृणोः॥
 ॥५॥ दहति स सरवरकेतीर॥ वरणकवलचित
 लांया तद्वा त्रिनिरंजनपीव॥ सागिहमारे त्रिदया
 ॥६॥ दहसहजसरोवरआत्मा॥ हंसाकरैकलो
 ल॥ सुषसागरसूतनस्या॥ मुकतादलमनमोल॥
 ॥७॥ दहहरिसरवरपूरणसंबे॥ जिततितपोणीपी
 व॥ जहोतद्वा जलत्रंचता॥ गार्दृषासुषजीव॥
 सुषसागरसूतनस्यान॥ जलनिरमलनीर॥
 सविनापीवेनही॥ दहसागरतीर॥ सुनिसरो
 वरहंसमन॥ मोतीआपन्ननंत॥ दहचुगिचुगिचं
 चनरि॥ यंजनजीवेसंत॥ सुनिसरोवरमीनमंन
 नीरनिरंजनदेव॥ दहयऊरसविलसिधे॥ त्रैसात्र
 लषत्रसेव॥ सुनिसरोवरमननवर॥ तद्वाक
 वलकरतार॥ दहपरिमलपाजिये॥ मनमुषसिरज
 नहार॥ सुनिसरोवरसहजका॥ तद्वांमरजीवा
 मंन॥ दहचुगिचुगिलेगाभीतरिरांमरतंन॥
 दहमंसिसरोवरविमलजल॥ हंसाकेलिकरांदि॥
 मुकतादलमुकताचुगै॥ तिदिहंसाहरनांदि॥
 वंदुसरोवरअथप्रजल॥ हंसासरवरनांदि॥ निरभे
 पायाआपधरा॥ इवनुद्विन्नतनजांदि॥ दहहरि
 याप्रेमका॥ नामैकलेदो॥ येकआत्मप्रआत्मा॥ ये
 कमेकरसदो॥ दहद्विणादरियाव॥ मांणिक
 मंकेरी॥ दुबीटुईपाणामै॥ दिवोदकेई॥ परआ
 तमसौआतमां॥ जहंससरोवरमांदि॥ मिमिमिलि
 वेलेपीवसौ॥ दहहरनांदि॥ दहसरवरसहज
 का॥ तामैप्रेमतरंग॥ तद्वांमेनकलेआतमां॥ अपणो
 मांईसंग॥ दहदेवोनिजपीवकौ॥ हरिदेवोना

सवेदिसासो सोधिकरि पायाघट ही मांदि ॥ दाहदे
षो निजपीवको और न देखो कोइ पूरा देखो पीवको
बाहरि नीतरिसो ॥ दाहदे षो निजपीवको देखत
ही डख जाइ हो तो देखो पीवको सब में रखा समाइ
॥ दाहदे षो निजपीवको सोई देखण जोग प्रगट दे
षो पीवको कहां बतवै लोक ॥ दाहदे षु दयालको
सकल रक्षा नरपूर रोम रोम में रमिरखा वंजि निजा
तों हरि ॥ दाहदे षु दयालको बाहरि नीतरिसो
इ ॥ सब दिसि देखो पीवको इस रनां ही कोइ ॥ दा
हदे षु दयालको सनमुख सोई सार जीधर देखो नैन स
रि तीक्ष्ण रिसि रज नहार ॥ दाहदे षु दयालको रो
किरदा सब तीर घटि घटि मेरा सोईया वंजि निजा गो
और ॥ तन मन नां ही मेना ही नही माया न ही जी
व दाहये कै देखिये दाह दिसि मेरा पीव ॥ सदा ली
न आनंद में सद ज रूप सतीर दाह देखे ऐक कोइ हजा
नां ही और ॥ दाह जहां तहां साथी संगी हे मेरे स
दा आनंद नैन बैन हिर देखे पूरा प्रमानंद ॥ दा
जागत जग प्रति देखिये पूर्ण प्रमानंद सो वत नी सांई
मिले दाह अति आनंद ॥ दाह दिस दीपक तेज के
बिन बाती बिन तेल चंड दिसि सूरि ज देखिये ॥ दाह
अदभुत खेल ॥ सूरि ज कोटि प्रकास हे रोम रोम
की लार दाह जोति जग दीसको अतन आनंद पार
॥ जूर दि ऐक प्रकास हे अैसे सकल नरपूर
दाह तेज अनंत हे अला आले नूर ॥ सूरि ज नंद
तहां सूरि ज देखा चंदन ही तहां चंद तारे न ही तहां
किलि मिलि देखे दाह अति आनंद ॥ दाह ल
न ही तहां वरिषत देखे सब दून ही गरजंद नीज

नदीतदांचमकतदेष्वादाइप्रमानंदा॥८२॥ दाइजोति
चमके किलिमिले तेजपुंजप्रकास॥ अमृतऊरैरस
पोजिये अमरबेलिआकास॥८३॥ दाइअबिनासी
अंगतेजका॥ ऐसाततअनूपसोहमदेष्वाभेननरि
सुंदरसहजसरूपा॥ प्रमतेजप्रगटतया॥ तहांमनह
समाइ दाइबेलेपीवसो॥ नहीआवेनजाइ॥ निरा
धारनिजदेषिये नेनऊंलागाबंद॥ तहांमनबेलेपीव
सो॥ दाइसदाआनंदा॥८४॥ ऐसायेकअनूपफल
बीजबाकुलानाहिं मीठानिरमलयेकरस॥ दाइनेन
ऊंमाहिं॥८५॥ हारेहारेतेजके सोनिरबेहयलोइ
कोईयेकदेवेसंतजेन॥ औरनदेवेकोइ॥८६॥ नेनह
पारेनूरमा॥ तहारहेलोलाइ॥ दाइसदादारको॥ नि
सदिननिरवतजाइ॥८७॥ नेनऊंअंगेदेषिये आ
तमअंतरिमोशतेजपुंजसबनरिरया किलिमिलि
किलिमिलिहोइ॥८८॥ अनददवाजेवाजिये अ
मरापुरिबांस जोतिसरूपीजगमगे॥ निरबेनिजदा
स॥८९॥ परमतेजतहांमनरहे परमनूरनिजदेवे प
रमजोतितहांआतमबेले दाइजीवनिलेये॥ जरे
सुजोतिसरूपहै जरेसुतेजअनंत जरेसुकिलिमि
लिनूरहै जरेसुपुंजरहेत॥९०॥ दाइअनूपअलाद
का कऊकेसाहेनूर दाइबेहदददनही सकलर
द्यानरपरा॥९१॥ चारपारनहीनूरका दाइजअनंत
त कीमतिनहीकरतारकी ऐसाहेनगदंत
निरसंधअपारहै तेजपुंजसबमाहिं दाइजोतिअ
नंत है आगोपीहोनाहिं॥९२॥ बंधबद्धनिजनांन
इकलसयेकेनूर॥ जहातुंहीनेने
रपूर॥ परमतेजप्रकासहै ॥

मजोतिश्रानंदमोहसादाहदास॥२३॥ नूरसरीषानूर
है तेजसरीषातेजजोतिसरीषीजोतिहै दाहधेलेसेज
॥२४॥ तेजपुंजकीसुंदरी तेजपुंजकाकेत तेजपुंजकीसे
जपरि दाहबन्याबसंत॥२५॥ पदपद्मेमखरिषेसदा
हरिजनधेलेफाग॥ ॥२६॥ औसाकोतिगदेधिया दाहमोटेभा
ग॥२७॥ अमृतक्षरादेधिये पारब्रह्मवरिषेत तेजपुं
जकिलिमिलिऊरे कोसाधूजनपीवंत॥२८॥ रसहीमै
रसब रविहै क्षराकोटिअनंत तहांमननिहचलरा
धिये दाहसदाबसंत॥२९॥ घनबादलबिनबरविहै नी
ऊरनिरमलक्षर दाहरीजैआतमांकोसाधूपीचण
दार॥३०॥ औसाअचिरजदेधिया बिनबादलवरिषे
मैह तहांचितंदागुंकेरया दाहअधिकमनेद॥३१॥
महारसमीवापीजिये अबिगतअलषअनंत दाह
निरमलदेधिये सहजैसदाऊरंत॥३२॥ कामधेनउ
दिपीजिये अकलअनूपमयेक दाहपीवैपेमसोनि
रमलक्षरअनेक॥३३॥ कामधेनउदिपीजिये ताकोल
धेनकोइ दाहपीवैप्यासमो महारसमीवासोइ॥३४॥
कामधेनउदिपीजिये अलषरूपश्रानंद दाह
पीवैहेतसो सुषमंनलागाबंद॥३५॥ कामधेनउदिपी
जिये अगमअगोचरजाइ दाहपीवैप्रीतिसो तेज
पुंजकीगाइ॥३६॥ कामधेनकरतारहै अमृतसरवै
सोइ दाहब बराहको पीवैतोसुषदोइ॥३७॥ औसी
येकेगाइहै हूँबाराहमास सोसदाहमारसंगहै
दाहआतमपास॥३८॥ तरवरसाषामूलबिनधर
तापरनाही अबिचलअमरअनंतफल सोदाह
षोही॥३९॥ तरवरसाषामूलबिनधरअंबरन्यारा
अबिनासीश्रानंदफल दाहकाप्यारा॥४०॥ तरव

साधामूलविनरजबीरजरहता॥ अजराअमरअती
तफल॥ सोदाहगहता॥ ११६ तरवरसाधामूलविन
उतपतिपरलेनाहि॥ रहितारमतारामफल॥ दाहने
नऊमाहि॥ ११७ प्राणतरवरसुरतिजड॥ ब्रह्मसोमि
तामाहि॥ रसप्राद्वैफलैफले॥ दाहसूकेनाहि॥
११८ ब्रह्मसुनितहाकारहे॥ आतमकेअसथांन
कायाअसथलिकाबसे॥ सतगुरकहेसुजाण॥
११९ कायाकेअसथलिरहे॥ मनराजापंचप्रधानप
चीसप्रकारतितानिगुण॥ आंगबगुमाना॥ १२० आ
तमकेअसथानिहे॥ ज्ञानध्यानबिसवास॥ सहजसी
लसंक्षेपसत॥ भावर्तगतिनिक्षिपास॥ १२१ ब्रह्मसु
नितहाब्रह्महे॥ निरंजननिराकार॥ नृतेजतहा
जातिहे॥ दाहदेषणहार॥ १२२ मौजूदषवरमाब्रह्म
षवर॥ अरवाहषवरऔजूद॥ मुकामेचचीजहसि
दाद॥ नोसजूद॥ १२३ औजूदमुकामेहसि॥ नफसगा
लिब॥ किबरकाबिज॥ गुसामनीपेस॥ हईदरोगहि
रसऊजित॥ नावनेकीनेस॥ १२४ अरवाहमुका
मेहसि॥ इसकइबाबतिबंदिगी॥ इगानोबलास॥ मि
हरमहनिषेरषुबी॥ नावनेकीपास॥ १२५ माब्रह्म
कामेहसि॥ इकेनूरखबषुबा॥ दीदनीहेरांन॥ अज
बचीजधुरदनी॥ प्यालेमसतांन॥ १२६ देवांनआ
लमगुमराहगाफिला॥ अवलिसरीयतपद॥ हला
लहरामनेकीबदी॥ डर॥ सदांनसवद॥ १२७ कुलि
फारिकतरकडनियां॥ दरोजहर्दमयाद॥ अलहया
लेइसकआसिक॥ १२८ वरुंनेफिरिया॥ दा
१२९ आबसंगतसअरसऊरसी॥ मूरतेसुब
दांन॥ सिरसेफताकरदब्रह्म॥

दहदासिलनूरदीदमा॥ करारमकसूदादीदरदरिया
 अरवाहआमदा॥ मोजूदेमोजूदा॥ १२१॥ च॥ दारमजल
 बयांनगुफतम॥ दसतकरदाबूदा॥ पीरांमुरीदांषबक
 रदा॥ राहेमाबूदा॥ १२२॥ पहलीपाणापसूनरकीजे॥ सा
 चकतससार॥ नातिअनातिनलाबुरा॥ सुनअसुननि
 रक्षार॥ १२३॥ सबतजिदेबिबिचारिकरि॥ मेरांनादीको
 ५॥ अनदिनरातारांमसौ॥ तावत्तगतिरतहोइ॥ १२४॥
 अंबरधरतीसूरससि॥ साईसबलेलावैअंगि॥ जसुकी
 रतिकरुणाकरै॥ तनमनलागारंग॥ १२५॥ प्रमतेजतदा
 गया॥ नैनकुंदेष्वाआइ॥ सुषसंतोषपायाघणां॥ जोति
 हिंजोतिसमाइ॥ १२६॥ अरथचारिअसथांनका॥ पुरसि
 षकदासमकाइ॥ मारगसिरजेनद्वारका॥ सागबनेसो
 जाइ॥ १२७॥ अरवाहेसिजदाकुनंदा॥ ओजूदराचिकार
 दाइनूरदादनी॥ आसिकांदीद्वार॥ १२८॥ आसिकारह
 कबजकरदा॥ दिलवजोरफतदा॥ अलहआलेनूरदी
 दम॥ दिलददाइबंदा॥ १२९॥ आसिकामसतानआल
 मा॥ पुरदनींदीद्वार॥ चंदददचिकारदाइ॥ यारमादिल
 दार॥ १३०॥ दाइदयादयालकी॥ सोकांकांनीहोइ॥ प्रेमपु
 लकमुकतरहे॥ सदासुदागनिसोइ॥ १३१॥ दाइबिग
 सिबिगसिदरसनकरै॥ पुलेकिपुलकिरसपांनाम
 गनगलितमातारहे॥ अरसप्रसमिलिषोइ॥ १३२॥
 दाइदेविदेविसुमिराकरै॥ देविदेविलेनीना॥ देविदे
 वितनमनबिले॥ देविदेविचितदीन्दा॥ १३३॥ दाइनिर
 विनिरविनिजनांउले॥ निरविनिरविरसपीदा॥ निरवि
 निरविपीचकोमिले॥ निरविसुषजीवा॥ १३४॥ तनसौंसु
 मिरासबकरै॥ आतमसुमिरायेका॥ आतमअ
 गैयेकरस॥ दाइबनाबडाबमेका॥ १३५॥ दाइमांटी

निरवि

के सुकामका॥ सब को जायें जाय॥ ऐक आध अरवाहक
 बिरला आपें आप॥ १४॥ दाह जब लग अस्थल देह
 का॥ तब लग सब व्यापे॥ निरनै अस्थल आतमा॥ आ
 गेर स आपें॥ १५॥ जब नाही सुरतिसरीरकी॥ बिसरै
 सब संसार॥ आतमन जाणें आपको॥ तब ये करया
 निरक्षर॥ १६॥ तन सौं सुमिरण की जिये॥ तब लग त
 ननीका॥ आतम सुमिरण ऊप जै॥ तब लागे फीका॥
 आगे आपें आपे॥ तहां का जीवका॥ १७॥ बम डिही
 देषे बजत करि॥ आतम डिही येका॥ बुझा डिष्टि प्रवे
 तया॥ तब दाह बेठा देषा॥ १८॥ आंधी के आनं कंवा
 न न डंसू ऊण लाग॥ दरसन देषे पीवका॥ दाह मो
 टे सागर॥ १९॥ ये ई नैनो टे टुके॥ ये ई आतम होइ॥ ये
 ई नैना बुझाके॥ दाह पलटे दोइ॥ २०॥ घट प्रचे सब
 घट लघे॥ प्राण प्रचे प्राण॥ बुझ प्रचे पाइये दाह दे
 रान॥ २१॥ दाह जल पाछाण जू॥ सेवै सब संसार॥
 दाह पाणी लूण जू॥ कोई बिरला पूजण दार॥ २
 २॥ अलख नाउ अंतरिक हो॥ सब घटि हरि हरि हो
 दाह पाणी लूण जू॥ नाउ कही जियोइ॥ २३॥ छांडे सु
 रतिसरीरको॥ तिज पुंज में आइ॥ दाह असे मिलिर है
 जू॥ जल जालहि समाइ॥ २४॥ सुरति रूप सरीरका
 पीवके प्रसे होइ॥ दाह तन मन ये करस॥ सुमिरण क
 हिये सोइ॥ २५॥ राम कहतरां म हिरया॥ आप बिसर
 ज न होइ॥ मन पवना पंचो बिले॥ दाह सुमिरण सोइ
 २६॥ जहां आतम राम संजालिये॥ तहां जाना
 ही ओर॥ तेही आगे अगम दे॥ दाह सूषिम ठौर॥
 २७॥ प्रआतम सौं आतमा॥ जू पाणी में लूण॥ दाह
 तन

मनबिलेयुंकीजिये॥ जंघतलागोधाम॥ आतमकवल
जहांबदगी॥ तहांदाहप्रगटराम॥ दाहस्तनमनबि
लेयुंकीजिये॥ जंघाणीमैलुं॥ जीवस्ययेकैतया॥ ब्र
तबहजाकटियेकौण॥ १२५॥ कोमलकवलतदापैसि
करि॥ जहांनदेषैकोइ॥ मनधिरसुमिराकीजिये॥ तब
दाहदरसनहोइ॥ १२६॥ नषसिषसंत॥ सुप्रणाकरै॥ असा
कदिरजाप॥ १२७॥ अंतरि॥ बिगसैआतमा॥ तबद
इप्रगटैआप॥ १२८॥ अंतरिगतिहरिदरिकरै॥ तबमुष
कीदाजतिनाहि॥ सहजैधुमिलागीरहे॥ दाहमनहीम
हि॥ १२९॥ दाहसहजैसुमिरा॥ दोतहै॥ रोमरोमरमि
राम॥ चितवजंटरा॥ चितसौ॥ यंलीजेहरिनाम॥ १३०॥ दा
हसुमिरासहजका॥ दीनंआपअनंत॥ अरसप्र
सनसयेकसौ॥ धिलैसदाबसंत॥ १३१॥ दाहसबदअ
नाहदहमैसुणां॥ नषसिषसकलसरीर॥ सबघटि
हरिहरि॥ दोतहै॥ सहजैदीमनधीर॥ १३२॥ ऊण
दिललगदिंकसा॥ मेकौयेदाता॥ तिदाहकमिषु
दाहदे॥ बिठाहीहैरानि॥ १३३॥ दाहमालासबआका
रकी॥ कोसाधसुमिरैराम॥ करणीगरतैक्याकी
या॥ असातेरानाम॥ १३४॥ सबघटमुषरसनांकरै
रहैरामकानाम॥ दाहपावैरामरस॥ अगमअगो
चरठाम॥ १३५॥ दाहमनचितअसधिरकीजिये॥
तोनषसिषसुमिराहोइ॥ अचणनेत्रमुषनासिक
पंचौपूरेसोइ॥ १३६॥ रामजयैरुचिसाधकौ॥ साधन
येरुचिराम॥ दाहहनुंयेकटग॥ यजआरंभयज
कोम॥ १३७॥ आत्मआसणरामको॥ तहांबसेनगव
न॥ दाहहनुंप्रसप॥ हरिआतमकाशान॥ १३८॥ जहां
रामतहांसंतजन॥ जहांसाधतहाराम॥ दाहहनुंये

कठे॥ अरसप्रसविश्राम॥ १७२॥ दाहहरिसाधूसं पाइये
 अविगतके आराध॥ साधुसंगतिहरिमिले॥ हरिसंग
 तिथे साधु॥ १७४॥ दाहरांमनांमसोंमिलिरहे॥ मनके
 छाडिबिकारातोदिलहीमांहेदेखिये॥ दोनूंकटी
 दार॥ १७५॥ साधुसमाणांममै॥ रांमरदातरपूर॥ दाह
 हनूँयेकरस॥ कंकरिकजैहरि॥ १७६॥ दाहसेवगसा
 ईकासया॥ तबसेवगकासबकोइ॥ सेवगसाईकोमि
 ल्या॥ तबसाईसरीषाहोइ॥ १७७॥ मिसरीमांहेमेलिक
 शिमोलिबिकानांबसा॥ दाहमहिगाभया॥ पारबु
 द्यमिलिहंस॥ १७८॥ मीठेमांहेराखियो॥ सोकाहेनमी
 ठाहोइ॥ दाहमीठांदाथिले॥ रसपीवैसबकोइ॥ १७९॥
 मीठेसोमीठातया॥ घारेसोघारा॥ दाहअैसाजीवहै॥
 यऊरंगदमारा॥ १८०॥ मीठेमीठेकरिलीये॥ मीठामांहे
 बाहि॥ दाहमीठांकेरया॥ मीठेमांहेसमाइ॥ रांमवि
 नांकि सकामका॥ नहीकोडीकाजीव॥ साईसरीषा
 कैगया॥ दाहपरसेपीव॥ १८१॥ मारांकीयामि॥ हरसों॥ प्र
 रदेथेनापरद॥ राखिलीयादीदामै॥ दाहचूलाहरद॥ १८२॥
 दाहनैनबिनदेखिबा॥ अंगबिनपेखिबा॥ रसनबिन
 बोलिबाबुहसेती॥ अवरगबिनसुनिबा॥ चरगबिनचा
 लिबा॥ चितबिनचितबा॥ सहजयेती॥ १८३॥ दाहदेखाये
 कमना॥ सोमनसबहीमांहे॥ तिहिंमनसोमनमांनियां॥ ह
 जाभावेनांहे॥ १८४॥ दाहजिहिंघटिदीपकरांमका॥ ति
 हिंघटितिमरनहोइ॥ तसउजियारेजोतिके॥ सबजगदेखे
 सोइ॥ १८५॥ दाहदिलअरवाटका॥ सोअपराणईमान॥
 सोईस्यावतिराखियो॥ जहांदेखैरहिमान॥ १८६॥ अलाअ
 पईमानहै॥ दाहकेदिलमांहे॥ सोईस्यावतिराखिये॥ ह
 जाकोईनांहे॥ १८७॥ प्राणपवनजूपतना॥ कायाकरे

कमाइ दाह सब संसार में कहां गया न जाइ ॥ नर
ने जन्म जोति है ॥ प्राण पंड्य होइ ॥ छिष्टि मुष्टि आये नही सा
दिव के बसि सोइ ॥ काया सुषिम करि मिले ॥ ऐसे को
ईयै क ॥ दाह आतम ले मिले ॥ ऐसे ब्रह्म तत्र नेक ॥ आ
दा आतम तन धरे ॥ आपर है तामां हि ॥ आपरा धे ले आपसे
जीवनि सेती नां हि ॥ दाह अनन्ये पैं आनंद भया ॥ पाया
निरनै नां जु ॥ निहंवल निरमल निरबां रा पद ॥ अगम अगो
चर वां म ॥ दाह अनन्ये बां रा ॥ अगम को ॥ ले गई संगिल
इ ॥ अगद ग है अकद क है ॥ अने दने दल हाइ ॥ जे कु छ
बेद करान थै ॥ अगम अगो चर बात ॥ सो अनन्ये सावा क है
यऊ दाह अकद क हात ॥ दाह जब घट अनन्ये कय जे
तब कीया करम काना स ॥ ते भ्रम तागे सबे ॥ पूर्ण बुद्धि प्र
कास ॥ दाह अनन्ये काटै रोग को ॥ अनहद उपजे आ
इ ॥ सेजे काजल निरमला ॥ पीवे रुचिल्यो लाइ ॥ दाह बा
रा ॥ बुद्धि की ॥ अनन्ये घटि प्रकास ॥ रांम अकेलार हि गया
सबद निरंजन पास ॥ जे कबहुं सम के आतमां ॥ तो दि
दग हि राघे मूल ॥ दाह से जारां मरस ॥ अमृत काया कल
॥ दाह मुऊ ही मां है मेर हो ॥ मे मेरा घर बार ॥ मुऊ ही मा
है मे बसो ॥ आप कहै करतार ॥ दाह मे ही मेरा अरस
मे ॥ मे ही मेरा आन ॥ मे ही मेरी गौर मे ॥ आप कहै रहि मान
॥ दाह मे ही मेरे आसिरे ॥ मे मेरे आक्षर ॥ मेरे तकिए मे
र हो ॥ कहै सिरजन दार ॥ दाह मे ही मेरी जाति मे ॥ मे ही
मेरा अंग ॥ मे ही मेरा जीव मे ॥ आप कहै प्रसंग ॥ दाह
सबै दसा सो सारिषा ॥ सबै दसा मुख बेन ॥ सबै दस प्रवण ऊ
सुगो ॥ सबै दसा करनैन ॥ सबै दसा पग सी सहे ॥ सबै दसा म
न छैन ॥ सबै दसा मन मुख रहे ॥ सबै दसा अंग त्रैन ॥ विन
अवण ऊ सब ऊच सुगो ॥ विन नैन ऊ सब देखे ॥ विन रस

नामधसबकुछबोले। यहुदाहअधिरजपेधे२०॥ सबअंग
सबदीठोरसब। सरसंगीसबसार। कहैगहेदेधेसुरों। दा
हसबदीदार२०॥ कहैसबठोरगहेसबठोर। रहेसबठो
र। जोतिप्रदाने। नैनसबठोरबैनसबठोर। अैनसबठोर।
सोईनलजाने। सीससबठोर। अवरणसबठोर। चरनसब
ठोर। कोईयहुमाने। अंगसबठोरसंगसबठोर। सबेसब
ठोरदाहध्यानै२०॥ तेजहीकदणां। तेजहीगदणां। तेज
हीरदणांसारें। तेजहीबैनां। तेजहीनैनानां। तेजहीअैनहम
रा। तेजहीमेला। तेजहीषेला। तेजअकेला। तेजहीतेजस
वारें। तेजहीलेवै। तेजहीदेवै। तेजहीषेवै। तेजहीदाहता
रा॥ २०॥ नूरहीकाधु। नूरहीकाधुरा। नूरहीकाबरु। मरा
नूरहीमेला। नूरहीषेला। नूरअकेला। नूरहीमंफिबसे
रा। नूरहीकाअंग। नूरहीकासंग। नूरहीकारंगनेरा। नूर
हीराता। नूरहीमाता। नूरहीषाता। दाहतेरा२०॥ दाह
नूरीदिलअरवाहका। तहांबसेमा। बूट। तहांबंदेकाब
दगी। जहांरहेमौजूद॥ २१॥ दाहनूरीदिलअरवाहका।
तहांबालिकनरपूर। आलेनूरअलाहका। धिजमतिगा
रहजूर२१॥ दाहनूरीदिलअरवाहका। तहांदेष्पाक
रतारें। तहांसेवगसेवाकरै। अनंतकलारविसारें॥ २१२
दाहनूरीदिलअरवाहका। तहांनिरंजनबासैं। तहांजन
तेराएकपग। तेजपुंजधकासं२१३॥ दाहतेजकवलदिल
नूरका। तहांरांमरहिंमानैं। तहांकरिसेवाबंदिगी। जिह
बहुसयांनैं॥ २१४॥ तहांहजूरिबंदिगी। नूरीदिलमेंहो
या। तहांदाहसिजदाकरै। जहांनदेधेकोइ॥ २१५॥ दाहदेही
मांहेदोइदिल। इकषाकीइकनूर। षाकीदिलसूजेनही
नूरीमंफिहजूर॥ २१६॥ दाहहोवहजूरिदिलहीतीतरि
गुमलहमारासारें।

वाजमुजारे ॥ २१ ॥ दाहकायां मसीतिकरि पंचजमाती म
नहीमुलां इमां म आपत्रलेखइलाही आगे तहांसिज
दाकरैसलां मे ॥ २२ ॥ दाहसबतन तमबीकहै करी मे ॥ २३ ॥
करिले जापे रो जाये कहरि करिइ जा कलभां आपे आपे
२४ ॥ अठेपहर अलहके आगे इकटगरहि बाध्यां न
आपे आप अरसके ऊपरि जहारहेरहि मान ॥ २५ ॥ अठे
पहर इबावती जीवनमर्ग निबाहि साहिब दरिसे वैषड
दाहछाडिन जाइ ॥ २६ ॥ अठेपहर अरसमें तनोई आदे
दाहपसेतिनके ॥ २७ ॥ आगा लूये ॥ २८ ॥ अठेपहर अर
समें बैठा पिरा पसनि ॥ दाहपसेतिनके ॥ जेदीद्वार लहनि
२९ ॥ अठेपहर अरसमें जिन्हीरु हरहनि ॥ दाह
पसेतिनके ॥ ३० ॥ आगा लूी कनि ॥ ३१ ॥ अठेपहर अरसमें
लुडदा आहीन ॥ दाहपसेतिनके ॥ असाधवरि डीन् ॥ ३२ ॥
अठेपहर अरसके वंजी जेगाहीन ॥ दाहपसेतिनके कि
तेई आहीन ॥ ३३ ॥ प्रेमपेया लानूरका ॥ आसिक तरिद
या ॥ दाहदरिदीद्वारमें मतिवाला किया ॥ ३४ ॥ इमक
सलोनां आसिकां ॥ दरगहयै दीया ॥ दरदमदबति प्रेम
रस ॥ पाला भरिपीया ॥ दाहदिलदीद्वारमें मतिवाला
किया ॥ जहां अरसइलाही आपथा ॥ अपगां करिली
या ॥ ३५ ॥ दाहपाला नूरदा ॥ आसिक अरसिपीवनि ॥ अ
ठेपहर अलाहदा मुंऊदिठेजीवनि ॥ ३६ ॥ आसिक
अमलीसाधसब ॥ अलखदरीवैजाइ ॥ साहिबदरदीदा
रमें सन्नमिलिबैठे आइ ॥ रातेमाते प्रेमरस ॥ तरितरिदे
धुदाइ ॥ मसतानमालिक करिलीये ॥ दाहरहेल्योलाइ
३७ ॥ दाहतगति निरंजनरां मकी ॥ अबिचलअबि
नासी ॥ सदासजीवनि आतमां ॥ सहजै प्रकासी ॥ ३८ ॥ दाह
जेभारां मअपारहै ॥ तेसीनगति आगाध ॥ इनहनुं कीमति

नदीः सकल पुकारै साध॥ २३२ ॥ दाह जैसा अविगतिरां
महे तैसी नगति अलेख॥ इन हन्यु मिति नदी॥ सहस्र मुख
कहे सेवा॥ २३३ ॥ दाह जैसा निरगुणारां महे तैसी नगति निर
जन जांणि॥ इन हन्यु की मिति नदी॥ सत कहे प्रवांणि॥ २३४
दाह जैसा पूरां महे तैसी पूरा नगति समान॥ इन हन्यु
की मिति नदी॥ दाह नां ही आन॥ २३५ ॥ दाह जब लगारां महे त
ब लग सेवग होइ॥ अषट् तसेवाये कर सा॥ दाह सेवग सोइ
२३६ ॥ दाह जैसां महे तैसी सेवा जांणि॥ पावै गात बकरै गा
॥ दाह सो प्रवांणि॥ २३७ ॥ दाह सां ई सरीषा सुमिरा की जै सां
ई सरीषा नावै॥ सां ई सरीषा सेवा की जै तब सेवग सुष पावै॥
२३८ ॥ दाह सेवग सेवा करि नरै॥ हं मथै कछु न होइ॥ तू देतै
सां बंदिगी॥ करि नही जांणो कोइ॥ २३९ ॥ दाह जैसा दिव मनि
नही॥ तऊ न छाडौ सेवा॥ इहि अवलंब निजी जियो साहिब
अलख असेव॥ २४० ॥ आदि अति आगे रहै॥ येक अन्त म
देव॥ निराकार निज निरमला॥ कोन जांणो तैव॥ अविनासी
अपरंपरा॥ वार पार नही छेव॥ सो हं दाह देविले॥ अर अंतरि
करि सेव॥ २४१ ॥ दाह सीत रिपै सिकरि घट के जडे कपाट॥ सां
ई की सेवा करै॥ दाह अविगत घाट॥ २४२ ॥ घट प्रचै सेवा क
रै॥ प्रतषिष्टे चै देव॥ अविनासी दरसन करै॥ दाह पूरी सेवा॥
२४३ ॥ पूजाण हारे पासि है॥ देही मां है दे॥ दाह ता को
छाडि करि॥ बाह मांड सेव॥ २४४ ॥ दाह रमितारां मसो॥ छेले
अंतरि मां हि॥ तुलटि समानां आपमे॥ सो सुषकत रुनादि
२४५ ॥ ॥ घट छेले पीवसो॥ अगम अगोचर॥ तां॥ येक
पलंक का देषाणां॥ जीवण मर्णा कानां॥ २४६ ॥ आतम मां
म देसां महे॥ पूजा ता की होइ॥ सेवा बंदन आरती॥ साध करै
सब की॥ २४७ ॥

इउ सप्रसाद की॥ मदि मां कहै

जनदेवदे माहेसेवाहोइ माहिंउतारैआरती दाहसेवगसो
५॥२४॥ संतउतारैआरती तनमनमंगलचार दाहबलिब
लिवारगो तुम्हपरिसिरजनहार दाहअबिचलआर
ती जुगिजुगिदेवअनंत सदाअषंडतयेकरस सकलउता
रैसंत २०॥ दाहमाहेकीजेआरती माहेपूजाहोइ माहेसंत
गुरसेवियो बूकैबिरलाकोइ २१॥ सतिरामआतमावैसनों
सुबुधिनौमि संतोषथान मूलमंत्र मनमाला गुरतिलक
सतिसंजम सीलसुच्या ध्यानधेवती कायाकलस प्रेमज
लमनसामंदिर निरंजनदेव आतमापाती पुऊपप्रीति
चेतनाचदन नवधानांव नावपूजा मतिपात्र सदजसम
पन सबदघटा आनंदआरती दयाप्रसाद अन्यन
येकदसा तीरथसतसंग दानउपदेस बुतसुमिरण षटगु
णगणन अजपाजाप अनसैआचार मुजादारांम फलदर
सन अतिअंतरि सदानिरंतर सतिसौज दाहबुतते अ
तमाउपदेस अंतरगतिपूजा २५॥ पीवसोषेलेप्रेमरसतौ
जीयरेजकहोइ दाहपावैसेजसुष पदानाहीकोइ २६॥
सेवगबिमरेआपको सेवाबिसरिनजाइ दाहपूछैरामको
सोततकहिसमकाइ २७॥ जूरसियारसपीवता आपा
नूलेओर योदाहरदिगयायेकरस पीवतपीवतवोर
२८॥ जहासेवगतदासाहिबवेवा सेवगसेवामाहिं दाह
साईसबकरै कोईजोगौनाहिं २९॥ दाहसेवगसाईबसिकी
या स्योयासबपरिवार तबसाहिबसेवाकरै सेवगकेदर
बार ३०॥ तेजपुंजकोबिलसना मिलिषेलेइकठाउ सरि
नरिपीवैरामरस सेवाइसकानाउ ३१॥ अरसप्रसमिलि
षेलिये तबसुष आनंदहोइ तनमनमंगलचक्रदिसि
ये दाहदेषेसोइ ३२॥ मसतकिमेरेपावधरि मदिशमाहे
आव सईयांमोवैसेजपरि दाहचपेपाव ३३॥ येचक्रप

द्यपलिंगके साईकी सुषसे जा ॥ दाइइनपरिवेसिकरि साई
 सेतीहेम २६२ ॥ येमलहरिकी पालकी ॥ आतमबैसै आइ ॥ दा
 इधेलेपीवसो ॥ य ऊ सुषक दान जाइ २६३ ॥ दाइदेवनिरंज
 न पूजिये ॥ पातीपंचचटाइ ॥ तनमनचंदनचरचिये ॥ सेवा
 सुरतिलंगाइ ॥ २६३ ॥ नगतिनगति सबको कहे ॥ नगतिन
 जांरौकोइ ॥ दाइनगतिनगवंतकी ॥ देहनिरंतरहोइ ॥ २६४
 ॥ देहीमांहेदेवहै ॥ सबगुणथेन्यारा ॥ सकलनिरंतरनरिरह्या
 दाइकाप्यारा २६५ ॥ जीवपियारेरामको ॥ पातीपंचचटाइ ॥
 तनमनमनसासौपिसब ॥ दाइबिलंबनलाइ ॥ २६६ ॥ सबदसु
 रतिलेसांनिचित ॥ तनमनमनसामाहिं ॥ मतिबुधिपंचो ॥ आ
 तमा ॥ दाइअनतनजाहिं २६७ ॥ दाइतनमनपवनांपंचग
 हि ॥ स्नेराधैनिजठोर ॥ जहाअकेलाआपहे ॥ हजानाहीओ
 रा ॥ २६८ ॥ दाइयऊमनसुरतिसमेटिकरि ॥ पंचअपूठेआंति
 निकटिनिरंजनलागिरऊ ॥ संगिसनेहोतांति ॥ २६९ ॥ मनचि
 तमनसाआतमा ॥ सहजसुरतितामाहिं ॥ दाइपंचोपूरिले
 जहांधरतीअंबरनाहिं २७० ॥ दाइतीगैपेमरस ॥ मनपंचो
 कासाथ ॥ मगनतथेरसमैरहे ॥ तबसनमुखतवननाथ
 २७१ ॥ दाइसबदेसबदसमाइले ॥ आतमसौंआंता ॥ य
 ऊमनमनसौंबंधिले ॥ चितैचितसमान २७२ ॥ दाइसदजैस
 दजसमाइले ॥ आनैबंधाआंन ॥ सुत्रैसुत्रसमाइले ॥ ध्यानै
 बंधाध्यान २७३ ॥ दाइदिष्टेदिष्टसमाइले ॥ सुरतैसुरतिस
 माइ ॥ समजैसमजैसमाइले ॥ लैसौलैलेलाइ २७४ ॥ दाइ
 जावैतावसमाइले ॥ नगतैनगतिसमान ॥ धैमैधैमसमाइले
 धीतैधीतिरसपान २७५ ॥ दाइसुरतैसुरतिसमाइ ॥ अरु
 बैनऊसौबैन ॥ मनहीसौमनलाइरऊ ॥ अरुबैनऊसौनै
 न २७६ ॥ जहांरामतहांमनगया ॥ मनतहांनैनांजाइ ॥

जहानेना तहां आतमा दाइसदजसमाइ ॥ १० ॥ प्राणनधे
 ले प्राणसो मननधे ले मन सबदनधे ले सबदसो दाइरांम
 रतन ॥ चितनधे ले चितसो तेननधे ले तेन नेननधे ले
 नेनसो दाइप्रगत ॥ न ॥ पाकनधे ले पाकसो सारनधे
 ले सार सबनधे ले सबसो दाइअंगअपार ॥ नूरनधे
 ले नूरसो तेजनधे ले तेज जोतिनधे ले जोतिसो दाइयेकै
 सेज ॥ पंचपदारथ मनरतन ॥ वनांमागिक दोइ आ
 तमही रासुरतिसो मनसामोतीपोइ ॥ अजबअनूपमदा
 रहै साईसरीयासो दाइआतमरांमगलि जहानदेये
 कोइ ॥ दाइपंचोसंगीसंगिले आयेआकासो आसा
 अमरअलेखका निरागुणानितबासा प्राणपवनमनम
 गनकै संगिसदानिवासा प्रचाप्रमदयालसो सहजैसुख
 दासा ॥ दाइप्राणपवनमनमंगिबसे ॥ कुटीके स
 धि ॥ पंचोइदीपावसो लेचरनोबधि ॥ प्राणहमाराया
 वसो ॥ लागासहिये ॥ पुहपवासयतइधमें ॥ अबकासो
 कहिये पाहगलोदबिचिबासदेव ॥ अमैमिलिरहिये
 दाइदीनदयालसो ॥ संगहीसुखलहिये ॥ दाइ
 असाबडा अगाधहै ॥ सुखिमजैसा अंग ॥ पुहपुवासयेपत
 ला सोसदाहमारेमंग ॥ दाइजबदिलमिलीदयालसो
 तबअंतरकुछनाहि ॥ ज्यपालापाणीकोमिल्या ॥ हरिज
 नहरिमाहि ॥ दाइजबदिलमिलीदयालसो ॥ तबसब
 पदुदाहरि ॥ अमैमिलियेकैतया ॥ बकुटीपकपावकपू
 रि ॥ दाइजबदिलमिलीदयालसो ॥ तबअंतरनाही
 रेष ॥ नानाविधिवकुछपना ॥ कनक ॥ कसौटीयेक ॥
 दाइजबदिलमिलीदयालसो ॥ तबपलकनपंडलाकी
 ॥ जालमूलफलबीजमै ॥ सबमिलियेकैदो ॥

कलपाकाबेलीतजी॥ छिटकाया मुषमांदि॥ साईं अंपन
 करिलीया॥ सोफिरिकुगैनांदि॥ २६२॥ दाहकाया
 कटोराइंधमना॥ प्रेमप्रातिसौपाइ॥ दरिसाहिबइदि
 बिधिअंवे॥ बेगाबारनलाइ॥ २६३॥ टगाटगीजीवनम
 रणा॥ ब्रह्मबरावरिहोइ॥ प्रगतपेलेपीवसो॥ दाहबिर
 लाकोइ॥ २६४॥ दाहनिवरानारहे॥ ब्रह्मसरीषाहोइ
 लैसमाधिरसपीजिये॥ दाहजबलगहोइ॥ २६५॥ दाह
 वेषुदषवरकुसियांरवासद॥ शुदषवरपैमाल॥ वे
 कीमतेमसतानगलतां॥ नूरप्यालेष्याल॥ २६६॥ दा
 हमाताप्रेमका॥ रसमैरयासमाइ॥ अंतनआवेजब
 लगे॥ तबलगपीवताजाइ॥ २६७॥ पीयातेतासुषल
 या॥ बाकीबऊबैराग॥ अैसेजनयाकैनही॥ दाहउ
 नमनलाग॥ २६८॥ निकटिनिरंजनलागिरडा॥ जबल
 गअलषअनेव॥ दाहपीवैरामरस॥ निदिकांमीनि
 जसेव॥ २६९॥ रामरटणिछांडे॥ नही॥ हरिलेलागाजा
 ई॥ बीचैहीअटकेनही॥ कलाकोटिदिषलाइ॥ २७०॥
 दाहदरिरसपीवता॥ कबलंअरुचिनहोइ॥ पीव
 तप्यासीनिमनवा॥ पीवगाहारासोइ॥ २७१॥ दाहजैसे
 अवागहोइहै॥ अैसेकहिअपार॥ रामकथारसपी
 जिये॥ दाहबारंबारा॥ २७२॥ दाहजैसेनेनाहोइहै॥ अै
 सेकहिअनत॥ दाहचदवकीरजुं॥ रसपीवैभगवत
 ॥ २७३॥ जुरसनांमुषयेकहै॥ अैसेकहिअनेका॥ तौर
 सपीवैसैसजुं॥ सुमुखमीवायेक॥ २७४॥ जुरघटआत
 मयेकहै॥ अैसेकहिअसंघ॥ तरिसरिरावैरामरस
 दाहयेकैअंग॥ २७५॥ जुरजुंपीवैरामरस॥ तुरतुद
 टैपियास॥ अैसाकोईयेकहै॥

राता माता रामका मतिवाला मैमन दाइपी
वता कूरहे जे जुग जांदि नमन दाइ निरमल जो
तिजल बरिषा बारह मास तिदि रसिराता प्राणिया
माता प्रेम पिद्यास रोमरो मरसपी जिये येतीर
समा होइ दाइ प्यासा प्रेमका ह्ये विनटपति न होइ
तनग दछाडे लाजपति जब रसिमाता होइ
जब लगदाइ सावधन कटेन छाडे कोइ आग
गिये ककलाल के मतिवाला रस मांदि दाइ देखा मै
ननरि ताके हु बिष्मनांदि दाइ अंतरि अ
तमा पीवे हरिजल नीर सौजस कलले उधरे निरम
ल होइ सरीर पीवत घेत निज बल गौ तब लगले
वे आइ जब माता दाइ प्रेम रस तब काटे को जाइ
दाइ सीवारा मरस येक घट करि जांउ पुण
गनपी छे कौरहे सब हिरदा मांदि रद चिढी चंचन
रिले गई नीर निघटि नही जाइ असा बास गाना की
या सब दरिया मांदि समाइ दाइ अमलारा मैक
रस बिधर दान जाइ पलक येक पीवे नही तो तब हो
तिल फिमरि जाइ दाइ राता रामका पीवे प्रेम
अघाइ मतिवाला दीदारका मांगे मुकति बलाइ
उजल नवरा हरिकवल रसरुचि बारह मास
पीवे निरमल बासना सो दाइ निज दासा नेन
ऊमोर सपी जिये दाइ सुरतिस देत तन मन मंगल
होत हे हरि मोला गाहेत पीवे पिलावे रा म
रस माता है ऊमिया रा दाइ पीवे रस घागा औरो
कोउ पगार दाइ नाना विधि पीयारा मरस केही न
ति अनेक दाइ बकुत सिमेक सौ आतम अविगाति

[illegible]

बदनश्रवसाधवा ॥ प्रणामपारगत ॥ १॥ कोसाधुराधे
रामधन ॥ गुरबाइकचनविचार ॥ गदित्तादाइकरदे
मकटहाथिगचार ॥ २॥ दाइमनहीमाहैसमकि करि
मनहीमाहिसमाइ ॥ मनहीमाहैराधिये ॥ बाहरिकदि
नजणाइ ॥ ३॥ जिनिषोवैइरामधन ॥ रिटैराधिजिनि
जाइ ॥ रतनजतनकरिराधिये ॥ चिंतामणिचिनजाइ ॥
४॥ दाइसमकिसमाइरजे ॥ बाहरिकदिनजणाइ
दाइअटतुतदेधिया ॥ तहानाकोआवैजाइ ॥ ५॥ क
दिकदिकादिषलाइये ॥ सोईसबजानै ॥ दाइप्रगटका
कहै ॥ ऊछसमकिसथानै ॥ ६॥ दाइमनहीमाहैकप
जे ॥ मनहीमाहिसमाइ ॥ मनहीमाहैराधिये ॥ बाहरिक
दिनजणाइ ॥ ७॥ लैविचारलागारहे ॥ दाइजरताजा
इ ॥ कबकपेटनआफरे ॥ तावैतेताषाइ ॥ ८॥ सोई
सेवगसबजरे ॥ जेतीउपजेआइ ॥ कहिनजणावैओर
कौ ॥ दाइमाहिसमाइ ॥ ९॥ सोईसेवगसबजरे ॥
जेतारसपीया ॥ दाइगुगनीरका ॥ प्रकासनकीया ॥
१०॥ सोईसेवगसबजरे ॥ जेअलष ॥ लषाव
दाइराधेरामधन ॥ जेताऊछपावा ॥ ११॥ सोईसेवग
सबजरे ॥ प्रेमरसधेला ॥ दाइसोसुषकसकहै ॥ जहो
आपअकेला ॥ १२॥ सोईसेवगसबजरे ॥ जेताघटि
प्रकास ॥ दाइसेवगसबलये ॥ कहिनजणावैदास ॥
१३॥ अजरजरेरसनाकरै ॥ घटमाहिसमावै ॥ दाइ
सेवगसोनला ॥ जेकहिनजणावै ॥ १४॥ अजरजरे
रसनाकरै ॥ घटअपणानरिलेइ ॥ दाइसेवगसोनला ॥
जारैजागनदेइ ॥ १५॥ अजरजरेरसनाकरै ॥ जेतास
बपावै ॥ दाइसेवग ॥ सोनला ॥ गंधोसजीवै ॥ १६॥

अजरजरैरसनां ऊरैः पावनथाकैनां हिंसादमेव गमी
नला॥ जरिराधेघटमाहि॥ ११॥ जरणां जोगी जगिं गुमी
जीटे जरणां नरि नरे जाड जाड जोगी गुरगुमी गह जाड
सहाड जरणां जंगी जरि रंटे जरणां पंनं तं जाड जाड
गी गुरमुषी सहजिसमानां सोड॥ १८॥ जरणां जोगी थ
ररहे जरणां घट फट्टे जाड जोगी गुरमुषी कानथे सु
टो १२॥ जरणां जोगी जगयती अविनासी आधन जा
ड जोगी गुरमुषी निरंजनकापुन जाड जरसुनाथ
निरंजनवावा जरसुअनयअनेवा जरसु जोगी यनकी
जीवनिं जरसु जरमिदेवा ११॥ जाड जरसुअप्रनुगान
नयांग जरसुजगयनिनाड जरसुअनयअनेवा जरसु
मरणनदी १२ जरसुअविद्वनगमंटे जरसुअनय
अनेव जरसुअविद्वनगमंटे जरसुअनयअनेव १२ जाड
जरसुअविद्वनगमंटे जरसुअनयअनेव जरसुअनयअनेव
गाधे जरसुअनयअनेव १२ जाड जरसुअनयअनेव
ही जरसुअनयअनेव जरसुअनयअनेव जरसुअनयअनेव
जततना १२ जरसुअनयअनेव जरसुअनयअनेव जरसुअनयअनेव
सुप्रतिउत्तर जरसुअनयअनेव १२ जाड जरसुअनयअनेव
ही जरसुअनयअनेव जरसुअनयअनेव जरसुअनयअनेव
हंत १२ जरसुअनयअनेव जरसुअनयअनेव जरसुअनयअनेव
रेसुअनयअनेव जरसुअनयअनेव १२ जाड जरसुअनयअनेव
यमाने जरसुअनयअनेव जरसुअनयअनेव जरसुअनयअनेव
मुनिवाने जरसुअनयअनेव जरसुअनयअनेव जरसुअनयअनेव
प्राणां जरसुअनयअनेव जरसुअनयअनेव जरसुअनयअनेव
रा १२ जरसुअनयअनेव जरसुअनयअनेव जरसुअनयअनेव
कोणाअनयअनेव जरसुअनयअनेव जरसुअनयअनेव

यवनापाणीसवपीपा धरतीअरुआकास चंद्रसूर्यादिक
मिले पंचोयैकगरास चौदहती नृ लोकसब वंशेसास
सास दाइसाक्षसबजरे सतगुरकेवेसास ॥२॥

दाइनमोनमोनिरंजन नम
सकारगुरदेवतद बदनअबसाधवा प्रणामपरगतद
अतनयेकबडुपारिष सबमिलिकरबिचार गंगेग
हिलेबा ॥३॥ दाइचारनपार ॥४॥ केतेपारिषजोहरी प
डितसाताध्यान जाणयाजाइनजाणिये काकदि कथि
येज्ञान ॥५॥ केतेपारिषपदिमये कीमतिकहीनजाइ
दाइसजिदे रातहे गंगेकागुडघाइ ॥६॥ सबहीग्या
नी यदिता सुरमरदेउरजाइ दाइगतिगोब्यदकी
कही लषीनजाइ जेसाहेतेसानाउंउमारा जूदेस
कहिसाई ॥७॥ अथापैजाणोआपको तहांमेरागमिनार
ही ॥८॥ केतेपारिषअतनपावे अगमअगोचरमांही
दाइकीमतिकोइनजाणो धीरनीरकीनाई ॥९॥ जीव
ब्रह्मसेवाकरे ब्रह्मबराबरिहोइ दाइजाणो ब्रह्मको
ब्रह्मसरीषासोइ ॥१०॥ वारपारकोनातहे कीमति
लेषानादि दाइयेकेनूरहे तेजपुजसबमादि ॥११॥ द
सपावनहीसीसमुष श्रवणानेउकडाकेसा दाइ
सबदेपैमुणो कहेगहेजैसा ॥१२॥ पायायायासबक
हे केतकदेऊदिषाइ कीमतिकेनहीनाकही दाइ
रकुल्योलाइ ॥१३॥ अणानजननरिलीया उहांउ
ताहीजाणि अणणीअणणीसबकहे दाइबिडुत्व
याणि ॥१४॥ पारनदेवेआपणा गोधिगू कमनमांदि
दाइकोईनाहे ॥ केतआवाइजांदि ॥१५॥ गंगेकागुड
काकहं मंनजाणतहेषाअ चंरांमंरमांइनपीवता

॥ सुषक दान जा ॥ १४ ॥ दाहये क जीत के ता कहें ॥ १५ ॥
 ॥ बुद्ध अगाध ॥ वेद क ते बा मिति न ही ॥ य कि त न ये सब
 ॥ १६ ॥ १७ ॥ दाह मे रा ये क मुषा ॥ की र ति अ न त अ पार ॥ गुरा
 ॥ ते प्र मि ति न ही ॥ त हे वि ना रि रि ॥ १८ ॥ स क ल मि रो म गि
 ॥ ग व हे ॥ त हे ते सा ना हि ॥ दाह को ई ना ल हे ॥ के ते आ वे जा
 ॥ १९ ॥ दाह के ते क दि ग ये ॥ अ न त न आ वे ओ रा ॥ ह म रुं
 ॥ ह ते जा न हे ॥ कि ते क हि से हो रा ॥ २० ॥ दाह मे का जा गो
 ॥ का क रुं ॥ उ म ब लि ये की बा त ॥ क्या जा गो क र ही र हे ॥ मो
 ॥ ये ल घा न जा ता ॥ २१ ॥ दाह कि ते ब लि ग ये ॥ थ के ब ऊ सु
 ॥ जा गा ॥ वा तौ ना व न नि क ले ॥ दाह स नि हे रा ना ॥ २२ ॥ ना क
 ॥ ही दि वा ना सु रा पा ॥ ना को आ ष रा हा रा ॥ ना को उ तो थ
 ॥ फि स् या ॥ ना उ र वार न पार ॥ २३ ॥ न ही म त क न ही जी व ता
 ॥ न ही आ वे ॥ न ही जा ॥ न ही सू ता न ही जा ग ता
 ॥ न ही स्र षा न ही षा ॥ २४ ॥ अ न त दा चु प न बो ल गा ॥ ते ते ना
 ॥ ही को ॥ दाह आ पा प न ही ॥ न त हा थै क न दो ॥ २५ ॥ ये
 ॥ क क रुं तो दो ॥ दाह के रुं तो ऐ क ॥ दाह हे रा न ही
 ॥ जे हे त ही दे ॥ २६ ॥ दे वि दि वा ने कै ग ये ॥ दाह व रे स आ
 ॥ ना वार पार को ना ल हे ॥ दाह हे हे रा ना ॥ २७ ॥ दाह कर रा
 ॥ हा र जे ऊ ल की या ॥ सो ई हो करि जां गि ॥ जे च व उ र स
 ॥ या ना जा न रा ॥ तो या ही प्र वां गि ॥ २८ ॥ दाह जि नि मो
 ॥ ह नि वा जी र ची ॥ सो उ म पू लो जा ॥ अ ने क ऐ क ते क
 ॥ किये सा दि ब क हि स म जा ॥ २९ ॥ घ ट प्र चै स ब घ ट ल घे
 ॥ प्रां ता प्र चै प्रां ता ॥ बु द्ध प्र चै या ई यो ॥ दाह हे हे रा ना ॥ ३० ॥
 ॥ चं म दि ही दे घे ब त क रि ॥ आ त म दि सी ये क बु द्ध दि ष्टि प्र
 ॥ चै न या ॥ त व ॥ ३१ ॥ ये ई आ
 ॥ त न हो ॥ ३२ ॥

जन्म नमसकार गुरदेव तद्वन्दनं अवसाधवा प्रणामो
रगतद... दाइ लैलागी नवजा शिये जेक वक्त छटि
जाइ जीवत दूलागी रहे मंवां मंजि समाइ... दाइ जे
रघां लैगता सोई ग तदोइ जाइ जे नर प्राणी लैरता
सो सह जे रहे समाइ... सबत जिगुया आकार के निदि
वल मन ल्यो लाइ आतम चेतनि प्रेम रस दाइ रहे समा
इ... तन मन पवनां पव गदि निरज न ल्यो लाइ जह
आतम न ह्य प्रआतमा दाइ सहज समाइ...
अरु अरु न्यम आपदे और नर थ नाई दाइ असी जा
शिक रिता सो ल्यो लाई... ग्यान न गति मन मूल ग
हि सहज प्रेम ल्यो लाइ दाइ सब आरत न जि जिनि का
कंस गि जाइ... दाइ जोग समाधि सुख सुर नि सो सह जे
सह जे आव मुकता धार महल का इहे त गलिका त
दाइ सह जे सुनि मन राखिये इन हनु के माहि
ले समाधि रस पीजिये तहा काल नै नाहि... दाइ बिज
गहन काय पदे कूकरि पड वै प्राणा बिकट घाट ओ
ट घरे माहि सिधर असमान... मन ता जीवत नि
हे ल्यो की करै लगाम सब दगुरु का ता ज राणा कोइ य
वै साध सुजा रा... किहि मारग के आइया किहि
ग के जाइ दाइ कोई ना जहे केने करै उपाइ... सुन
गारग आइया सुन हि मारग जाइ चेतनि ये डा सुर
दाइ रऊ ल्यो लाइ... दाइ यार ब्रह्म ये डा दीया
न सुनि ले सार मन का मारग माहि घर संगी सिरज
र... राम कहै जिस गण नियो अमर सदावे दा ता
छाडि सब लैलागी जावै... राम रसाइन

वनां जीव बुद्ध के जाइ दाइ आत मरां मसौ सदा रहे लो
 लाइ ॥ १६ ॥ सुरति समाइसन मुख रहे ॥ जु गि जु गि जम
 पूरा दाइया साधे मका ॥ मया वै सूर ॥ १७ ॥ दाइ जहां
 जगत छरहत दे ॥ तहां जे सुरति समाइ ॥ तौ इन ही नैन
 ऊजल टिकरि ॥ कोति गदे वै आइ ॥ १८ ॥ अंधा सगा के
 पिरा ॥ निरे उलथौ मंजि ॥ जिते बेठो मा पिरा ॥ निहारी दो
 देका ॥ १९ ॥ दाइ उलटि अ प्रवा आ पमै ॥ अंतरि सोधि सु
 जाग सो टिगतेरी बावरो न जिबा हरिकी बाणि ॥ २० ॥ सुर
 ति अ पूठी फेरिकरि ॥ आत म मां है आं रा ॥ ला गिर है गुर
 देव सो ॥ दाइ सोई सयां न ॥ २१ ॥ जहां आत मत दां रा म है
 सकल रसा भर पूरा ॥ अंतर गति ल्यो लाइ रऊ ॥ दाइ सेवा
 सूर ॥ २२ ॥ दाइ अंतर गति ल्यो लाइ रऊ ॥ सदा सुरति सो
 गाइ ॥ य ऊ मन नां वै मगन को ॥ ना वै ताल बजाइ ॥ २३ ॥ दा
 इ गां वै सुरति सो ॥ बांणी बां जै ताल ॥ य ऊ मन नां वै प्रेम सो
 आ गै दीन दया ला ॥ २४ ॥ दाइ सब बातें कीये कहै ॥ उनी
 थां सो दिल हरि सांई सेती संग करि ॥ सद ज सुरति ले पू
 रि ॥ २५ ॥ दाइ येक सुरति सो सब रहे ॥ यवौ उन मन ला
 गा ॥ य ऊ अ न ते उपदेस य ऊ ॥ य ऊ प्रम जो ग बैरा गा ॥ २६
 ॥ दाइ सद जै सुरति समाइ ले ॥ पार बुद्ध के अंगा ॥ अर स
 प्रम मिलिये क के सन मुख रहि बा संग ॥ २७ ॥ सुरति स
 माइसन मुख रहे ॥ जहां तहां लै लीन ॥ सह जरूय ॥ सु
 मिर गा करे ॥ नि ह कर मी दाइ दीन ॥ २८ ॥ सुरति सदा स्या
 व नि रहे ॥ तिन के मोटे नाग दाइ पीवै रा मर सा ॥ रहे नि
 रजन ला गा ॥ २९ ॥ दाइ सेवा सुरति सो ॥ प्रेम प्राति सो ला
 इ जहां अ बिना सी देव ॥ तहां सुरति बिना को जाइ
 ॥ ३० ॥ दाइ ज्ये वै भग गनथे ॥

दा ॥ कदां मां लागी सुरति अंग पैं छूटै सो कनजी
वेरां म ॥ २४ ॥ सद ज जोग मुघ मै रहै दाह निरगुण जाणि
गंगा नलटी फेरि करि ज मन मां है आनि ॥ २५ ॥ अत्र आतम
सौ आतमो जू जल जल हि समा न ॥ तन मन पांशो लूटा
जू पावे पद निरबाण ॥ २६ ॥ मन ही सो मन से विवे ॥ जू ज
ल जल हि समा ॥ आतम चेत नि प्रेम रस दाहर कुल्यो
ला ॥ २७ ॥ छाड़े सुरति सरीर को ॥ तेज पुज मै आइ दा
ह अत्रै मै मिलि रहै ॥ जू जल जल हि समा ॥ २८ ॥ य मन त जै
सरीर को ॥ जू जागत सो जाइ दाह बि सरे दैषता सह
ज सदा ल्यो ला ॥ २९ ॥ जिहि आस ति पद ली आण थ
तिहि आस ति ल्यो ला ॥ जे ऊठ शा मोई त्या कहू न
बापे आइ ॥ ३० ॥ तन मन अणों दाधिक रि तादी सो
ल्यो ला ॥ दाह निरगुणाराम सो ॥ जू जल जल हि समा
॥ ३१ ॥ ये कमना लाग रहै ॥ अति मिलै गा सो ॥ दाह ज
कै मन बिब सै ॥ ता कौं दर संन दो ॥ ३२ ॥ दाह निब दै तू च
ले ॥ क्षीर क्षीर ज मां हि ॥ प्रसे गा पावै एक दिन ॥ दाह थक
ना हि ॥ ३३ ॥ जब मन मृत क कै रहै ॥ इंडी बल नागा का
या के सब गुण त जै ॥ निरंजन लागा ॥ आदि अति मधि
ये कर सा दू टैन ही क्ष गा ॥ दाह ये कै रहि गया ॥ तब जा
णी जागा ॥ ३४ ॥ जब लग से वगत न क्षै ॥ तब लग ह सर अ
हि ॥ ये कम के कै मिलि रहै ॥ तोर स पावन थै जाइ ये ह न
अ ॥ सी कहै ॥ की जै कोण उपाइ ॥ नां मै ये कम ह सरा
दाहर कुल्यो ला ॥ ३५ ॥ ॥ अत्र ॥ ३६ ॥
स कर गुर देव तदा बदन अर्ध साधवा प्रणाम पारंग
तदा ॥ ३७ ॥ ये कम उ मारे आसि ॥ दाह इ हि बेसा स सी

न रोसा तो रहे नही करणी की आसा ॥ २ ॥ रदणी राज
 सकय जे करणी आया हो ॥ ३ ॥ दाह मन अया तो लेनी न करि
 करणी सब जंजाल ॥ दाह सह जे निरमला ॥ आपा मेदि
 सनालि ॥ ७ ॥ दाह सिद्धि हमारे साईया ॥ करामातिकर
 तारा ॥ सिद्धि हमारे सोमदे ॥ आगम अलंख अपारा ॥ गेखा
 दगु साई ॥ उमे अचा गुरु ॥ तुमे अम चापाना ॥ तुमे
 अम चादेवा ॥ तुमे अम चाधान ॥ १० ॥ तुमे अम चीपूजा
 तुमे अचीपाती ॥ तुमे अचा तीरथा ॥ तुमे अचा जानी ॥
 ॥ १० ॥ तुमे अम चानादा ॥ तुमे अम चातेदा ॥ तुमे अ
 म चापुगा ॥ तुमे अम चावेदा ॥ ११ ॥ तुमे अम चीजु
 गति ॥ तुमे अम चाजोगा ॥ तुमे अचा बैरागा ॥ तुमे
 अम चाभोगा ॥ १२ ॥ तुमे अम चीजीवनि ॥ तुमे अम
 चाजप ॥ तुमे अम चासाधना ॥ तुमे अम चातया ॥ १३ ॥ तु
 मे अम चासीला ॥ तुमे अम चासंतोषा ॥ तुमे अम
 चीमुकति ॥ तुमे अम चामोषा ॥ १४ ॥ तुमे अम सिव
 तुमे अम चीसकति ॥ तुमे अम चाआगम ॥ तुमे अ
 म चीउकति ॥ १५ ॥ तसति तं अविगता ॥ तं अपरपार
 अनिराकारा ॥ तुमे अचानाम ॥ दाहवा विआम ॥ देऊ देऊ
 अवलंबनराम ॥ १६ ॥ दाहराम कहुते जो दिवा ॥ राम क
 हुते सोधि ॥ राम कहुते गाइवा ॥ राम कहुते राधि ॥ १७
 ॥ दाह ॥ कुल हमारे के सवा ॥ सगात सिरजनदार जा
 निहमारी जगत गुरा ॥ हमे सरपरिवारा ॥ १८ ॥ दाह्येक
 सगासमारमै ॥ जिनिहम सिरजे सोइ ॥ मनसावाचा
 कमना ॥ औरन हजाके ॥ १९ ॥ सा
 मरतां सन मुख होइ ॥ दाह जीव

निंकोइ साहिब मिल्यांत सब मिले। सेटैते दाइह
साहिबर या तो सब रहे नही तो नांही कोइ साहिबर
हतां सब रहे साहिब जाता जाइ दाइ साहिब राखिये
हजा सहज सुजाइ सब सुख मेरे साईया मंगल
अति आनंद दाइ सजन सब मिले जब तेटे प्रमानंद
दाइ राजै रां मयारि अनंत नरी कै मन माता जावे
ये करस दाइ सोई जन दाइ मेरे हिरदै हरिब से
हजा नांही और कदौ कदा धौरा धिये नही आन को
तौर दाइ नारां इगाने नांव मै मन ही मोहन राइ
दिरदा माहै हरिब से आतम ये कस माइ धूम कथ
उस ये ककी हजा नांही आन दाइ तन मन लाइ करि
सदा सुरति रस यांन दाइ तन मन मेरा यीव सो दिक
मेज सुख सोइ गहिला लोक न जान ही पचिये दिआ
योइ दाइ ये कदरे उरिब से हजामे ल्याइ हरि हजा
वत जाइ गाये करे यांतर पूर नि दचल कानि दच
जर है चंचल काचलि जाइ दाइ चंचल छाटि
सब नि दचल सौ ल्यो लाइ मन चित मन सा
जिक मै सोई हरि न होइ नि दकां मो निरखै सदा दा
जीव नि सोइ जहां ना वतहां नीति चाहिये स
रां मकाराज निरबिकार तन मन जया दाइ सी के क
जिस की खबीर सब सोई बस नारि द
दरिब बसौ लया सख साज सवारि दाइ ये च न
याव करि सोलह सब दीठां उ सुंदरिय डस गार
लै लै यीव कानां उ य डबत सुंदर ले रहे ते
सुहाग नि होइ दाइ तावे यीव को ता म मि और
साहिब जी कानां वता कोई करे कलि

मनसा बाचा क्रमना॥ दाह घटि घटि नाहि॥ दाह अग्य
मां देवै सै ऊँ॥ आग्या आवै जाइ॥ आग्या मां देवै देवै॥
आग्या महरे बाइ॥ आग्या मां देवै हरि तीतरि॥ आग्या
रहे समाइ॥ आग्या मां देवै तन मन राखै॥ दाहरै ल्यो लाइ॥
॥३१॥ पतिव्रता गृह आग्य रौ॥ करै धर्म समकी से वा॥ अंतरा
धैतुं दीरहै॥ आग्या काराटेवा॥ इत्यादी हनी चउंच कुल
सुंदरी सेवा सारी होइ॥ सोई सुहागनिका जिये रूप नयी
जेकीइ॥ दाह जब तन मन सौं प्यारं मकी॥ तां सनिका बि
न चारा सट जसी लस तोष सता॥ प्रेम तगति ले सारा॥ पपु
रिषा सब पंदरै॥ सुंदरि देखै जागि॥ अथ गां पीव पिबां गि
करि दाहर दिये लागि॥ ॥३२॥ आन पुरिष हो बदन डी
धम पुरिष तरतारा॥ दो अ बला सम जौ नदी॥ इंजारी
करतारा॥ ॥३३॥ जिस का तिस को दी जिये सोई सन मुख अ
इ॥ दाह मय सिख सौं पिसव॥ जिनि य ऊ बट्या जाइ॥ ॥३४॥
सारा दिल सोई सौं राखै॥ दाह सोई सया न जे दिल बटे अ
परा॥ सो सब मूठ अ याना॥ ॥३५॥ दाह सारी सौं दिल तोरि क
रि सोई सौं जोरी॥ सोई सै ती जोरि करि काहे को तोरी॥ ॥३६॥
साहिब देवै राखरां॥ सेव ग दिल चोरी॥ दाह सब धन साह
का॥ जू जाम न थोरी॥ ॥३७॥ दाह मन सा बाचा क्रमना॥ अंत
रि आवै येका ता को प्रत धिरा मजी॥ बातें और अनेका॥
॥३८॥ दाह मन सा बाचा क्रमना॥ जि देह रिका ताव अल
ष पुरम आगै बडा ता के हन वन रावा॥ ॥३९॥ दाह मन सा
बाचा क्रमना॥ हरि जी सौं हित होइ॥ साहिब सन मुख स
गि है॥ आदि निरंजन सोइ॥ ॥४०॥ दाह मन सा बाचा क्रम
ना॥ आचर कारि
रै॥ पुन पु

सतिकरिजांणि दाइइ जाकरे ॥ जिनि येकलीया
चाणि ॥ ८१ ॥ दाइकोई बाछे मुकतिफल कोई अमर
पुरिवास ॥ कोई बाछे परमाति ॥ दाइरांम मिलनकी
प्यास ॥ ८२ ॥ उरु हरि हिरदेहेतसौ ॥ प्रगट ऊप्रमान
दाइ देवेने नतरि ॥ तब केता होइ आनंद ॥ ८३ ॥ प्रेम
पियालारा मरस ॥ हमको जावे ये हरि सिधिमार्गे मुक्
तिफल ॥ चाहै तिनको देइ ॥ ८४ ॥ कोटि वरसक्या जीव
गा ॥ अमर तथे कहा होइ ॥ प्रेम नगति रसरा मविन को
दाइ जीवन सोइ ॥ ८५ ॥ कलून की जे कामना ॥ अगु
गानु गुण होइ ॥ पलटि जीवये ब्रह्म गति ॥ सब मिलि
माने मोहि ॥ घट अजरावर होइ रहै ॥ बधन नाही कोइ
मुकता चौरा सा मिटे ॥ दाइ संसै सोइ ॥ ८६ ॥ निकटि नि
रजन लागिर ऊ ॥ जब लग अलख असेव ॥ दाइ पावेरा
मरस ॥ निहिका मीनि जसेव ॥ ८७ ॥ दाइ सालोक संग
तिरहे ॥ सामीपसन मुख सोइ ॥ सा रूप सारीया तया ॥
सा जो जये कै होइ ॥ ८८ ॥ राम रसिक बांछे नही ॥ प्रमद
षट्पद चार ॥ अठसि सिनो निधिका करे ॥ राता सिर
जनहार ॥ ८९ ॥ स्वारथि सेवा की जिये ॥ ताथै भलान हो
इ ॥ दाइ ऊ सरवाहिकरि ॥ कोठा तरेन कोइ ॥ ९० ॥ सुत
वित मांगहि बावरे ॥ साहिब मीनि धिमेलि ॥ दाइ ये नि
रफ गये ॥ जे सै नांगर बेलि ॥ ९१ ॥ फलकारणि सेवा
करे ॥ जाचे ह तवन राव ॥ दाइ सो सै वगन ही बले ॥
पणा डाव ॥ ९२ ॥ सह कामी सेवा करे ॥ मां गै शुद्ध
मवार ॥ दाइ असेव ऊत है ॥ फल कै नूच राहार ॥
॥ ९३ ॥ तन मन लेला गारहे ॥ राता सिर जनहार ॥ दाइ
ऊछ मांगे नही ॥ ते बिरला संसार ॥ ९४ ॥ रांम नाम गुर

साचरासबिताभरिमरिउधनसुनमित्त
 सोसाचाराननजोनैरेसबजुठवषातेरे
 जेदेदेवाजुठीसेवाजुठाकरैमसारा
 पूजाजुगपाती॥जुठाभूजगहारा॥जुठा
 ककरैरेषांती॥जुठासोगलगावे॥जुठा
 प्रदुदादेवे॥जुठापालवजावे॥जुठेनक
 जूठेसुरता॥जुठीकथासुनावे॥जुठाक
 जुगसबकोमांनै॥जुठाभर्मदिटावे॥था
 रजगमजलथलमहियल॥घटिघटितेज
 मांता॥दाइआतमरांमहमारा॥आदियुरि
 पहिचांता॥३०॥मैंपेपिऐकअपारके॥म
 औरनसावे॥सोईपंपपावेपीवका॥जिस
 पलषावे॥कोपेपिहिंदुतुरकके॥को
 रुराता॥कोपेपिसोफीसेवडे॥कोसंन्या
 माता॥कोपेपिजोगीजंगमां॥कोसकति
 ध्यावे॥कोपेपिकमडेकापडी॥कोबहु
 नावे॥कोपेपिकाहूकेचले॥मैंऔरन
 नौ॥दाइजितिजगसिरजिया॥ताहीकंमा
 ॥३१॥आजहमारेरामजीसाधधरिआ
 गलचारचहुंदिसितरे॥आनंदबध
 चौकपुरांकंमोतिया॥धसिचंदन
 ॥पंचपदरपणोकरि॥यहुमालच
 ॥तनमनधतकरुवारगौ॥परदधिग
 ॥मीसहसाराजीवले॥नौकावरिकीजे
 विभगतिकरौप्रातिमौ॥पेमरसपीजे॥को
 चंदनआरती॥पहुनाह्य

प्रातिपद्यासो जो डि १२॥ आधा प्रसव ह रिकरि रामः
मरस जाग दाह ओ सर जात है जागि सकै तो जागि
बाबीरय कुत न नदी नर नारां इगा दाह व कुरि
पाईये जनम ओलिक येह १३॥ डव दरिया संसार है
सुषका सागर राम सुष सागर चलि जाई ए दाह त जि
बेकांम १४॥ एका ये की राम सो कै साधु का संग दाह
अनत न जाईये और काल का अंग १५॥ दाह त नम
न के गुण बाढ सब जब हो इनि नारा त ब अ पने
नैन ऊ देखि ऐ प्रगट पावण्या रा दाह जांती पा ए प सु
पिरी अद रि सो आ है होणी पाणे बिच मै मिहर न ल
हो दाह जांती पाये व सुपिरी हां गों लाइ म बेर साथ
सोई हलियो पोइ प सं हो कै रा १६॥ ॥ जंग ॥
॥ ॥ ॥ ॥ दाह न मो न मो निरं ज न न म सका
र गुर देव त ह बंदन अब साधु जा प्रणां मं पारंगत ह
॥ ॥ दाह य कुम न बर जा बावरे घट मै राखी धरि म
न द सी मा ना व है अ ऊ स दे दे फेरि द स ती बुटा म
न फिरे कूदी ब ध्म न जाइ बहत म दा वत प चि गये
दाह क छुन ब साइ १७॥ ज दां धे मन उठि चलै फेरि न
दाही राखि त हां दाह लै ली न करि साधु कहै गुर साधि
१८॥ थोरै थोरै हट कीये रहे गा लो लाइ जब तागा
उम मन हो तब मन क ही न जाइ १९॥ आता दे दे रां म
कौ दाह राये मं न साधी देख स्थिर करे सोई साधु ज
न २०॥ सोई सर जे मन ग है निमष न चल नै देख जब ही
दाह प गत रे तब ही पा क डिले २१॥ दाह जे ती ल हो
रि स मंद की ते ते मन हि मनोरण्य मारि बैसै सब संतोष
करि गहि आत म एक बिचारि २२॥ दाह जे मुख मा

८॥ अब मन अविगत नाथ सौं सुख दिखी इवां ॥ २० ॥ दाह
 मन सुख स्यावति आपणा ॥ निह चल हो वै हाथि नौ इहां ॥
 दी आनंद हे सदा निरंजन साधि ॥ २१ ॥ जब मन लागे राम
 सौं तब अननक हे कौं जाइ ॥ दाह पांगो लूंगा जूं ॥ अं सैर
 हे समा ॥ २२ ॥ जूं जल पे सेइ धमें ॥ जूं पांगी में लूंगा ॥ अं सै
 आत मरां मसौं मन हठ साधे कौं ॥ २३ ॥ मन काम सतक
 नृ निह काम क्रोध के केस दाह विषे बिकार सब सत गुरक
 उदरेस ॥ २४ ॥ सो ऊछ हयें नां नया ॥ जापरि री कै राम दाह
 इस से सार में हम आये वे काम ॥ २५ ॥ क्या मुह लेह से बो
 लिए दाह दी जेरो ॥ जनम अनोलिक आपणा ॥ चले अक
 रण्य ॥ २६ ॥ जाकार निज गीजी निह ॥ सो पद हिर दै ना
 हि दाह हरिकी सगति विन ॥ धग जीवन कलि मां हि ॥ २७ ॥
 कोया मन का नां नुता ॥ मेटी आजा कार ॥ क्या ले मुख दिष
 लाई ऐ दाह उस सर नार ॥ २८ ॥ ईं दी स्वारथ सब कीया
 मन मांगे सो दीन ॥ जाकारिण जग सिर जि ॥ सो दाह कसू न
 कीन ॥ २९ ॥ कोया आइस कोम ॥ कौं सेवा कारिण सा
 जा दाह सला बंदेगा ॥ सखान ये कौं काज ॥ ३० ॥ दाह वि
 षे बिकार सौं ॥ जब लग मन राता ॥ तब लग चीतिन आव
 ई ॥ हस वन पति दाता ॥ ३१ ॥ दाह का जाणौ कब होइ
 गा ॥ हरि भुमिर गा कतार ॥ का जाणौ कब छाडि है यक
 मन विषे बिकार ॥ ३२ ॥ बादि हि जनम गवाइया ॥ की
 ये वन बिकार ॥ यक मन अ सिधर नां नया ॥ जहां दाह नि
 ज सार ॥ ३३ ॥ दाह जिनि विष पीवै वावरो ॥ दिन दिन का
 ठे रोग देषत हो ॥ परि जाइगा ॥ तजि विषियार सभोग ॥ ३४ ॥
 ॥ आपा प्रसव हरि करि गं मनो मर सलाग ॥ दाह औ
 सर जान है ॥ जा गि सके तो जा गि ॥ ३५ ॥ दाह सब ऊछ

बिलसतां यातां पीतां होइ दाहमनका तावतां कहिस
 मऊवैकोइ ॥ ३८ ॥ दाहमनका तावतां मेरी कहै बलाइ
 साचरामका तावतां दाहकहै सुगिआइ ॥ ३९ ॥ ये
 सब मनका तावतां जे ऊँछकी जे आन मनगदिराधे
 येकसौ दाहसाधसुजोरा ॥ ४० ॥ जे ऊँछभावेरामकों सो
 तत कहिस मऊइ दाहमनका तावतां सबको कहै ब
 राइ ॥ ४१ ॥ ये डैयगचालेन ही ॥ होइ रद्यागलियाररा
 मरणनिवहैन ही ॥ बेबेकों ऊँसियार ॥ ४२ ॥ दाहका प्र
 मोधे आनको ॥ आयनबहिया जाता ॥ औरों कं अमृत
 कहे ॥ आयगा ही बिषयात ॥ ४३ ॥ दाहपंचो ये प्रमोक्षले
 इन्हकी कौ उपदेस ॥ यऊमन अपणां हाथिकरि तो वै
 लासबदेस ॥ ४४ ॥ दाहपंचो कामुषमूल है ॥ मुषकामन
 वाहोइ यऊमन राखै जतन करि साधकहावै सोइ
 ॥ ४५ ॥ दाहजबलगमनके दोइ गुणा ॥ तबलगनिप
 नां नाहि ॥ दोइ गुणमनके भिटिगये ॥ तबनिपनां मिलि
 माहि ॥ ४६ ॥ काचापाका जबलगें ॥ तबलगअंतरहो
 ॥ काचापाकोइ रिकरि तबदाइये कै सोइ ॥ ४७ ॥ सह
 जरूपमनका सया ॥ तबदे दै मिटी तरंग ताता सीला
 समितया ॥ तबदाइये कै अंग ॥ ४८ ॥ बऊरूपी मनज
 बलगें ॥ तबलगमायारांग ॥ जबमनलागारांमसौ ॥ तब
 दाइये कै अंग ॥ ४९ ॥ हीरामनपरिराधियो ॥ तबइजाच
 है नरंग ॥ दाहयूमनथिरतया ॥ अविनासी के संग ॥ ५० ॥
 मुषडषसबकों इपडै ॥ तबलगकाचामन ॥ दाहऊँछ
 व्यापेन ही ॥ जबमनजयारतन ॥ ५१ ॥ पाकामडोलै न
 ही ॥ निहचलरहै समां ॥ काचामनददि ॥ त
 वलचऊदिसिजाइ ॥ ५२ ॥ सीपधु

नवरात्री मां है मोती नीपजे दाहवदसरी दाह
मनपंगुलनया सबगुणगयेबिलाइ है कायानो जोव
नी मनबूटाकेजाइ दाहबअपनेकरलीये कं
मनइंजीनिजठोर नाइनिरेजमलागिरइ प्राणीपद
रिऔर मनइंजीआधाकीया घटमेलहरिउठ
इ साइंसतगुरछाडिकरि देखिदिवोनांजाइ दा
इकहेरांमबिनांमनरकहे जाचैतीनूलोक जबम
नलागारांमसौ तबभागदालिइदोष इंजीका
आधीनमन जीवजंतसबजाचै तियोतिरोकेआगे
दाह तिकलोकफिरिनाचै इंजीअपरोबसि
करे सोकाहेजाचराजाइ दाहअस्थिरआतमा
आसणिवैठेआइ मनमनसाइन्यु मिलेतबजा
वकीयाभांड पंचौकाफेसाफिरे मायानचावैरां
हुं नकटीआगेनकटानाचै नकटीतालबजा
वै नकटीआगेनकटागाचै नकटीनकटानाचै
पंचौइंजीसूतहै मनवांघेतरयाल मनसादे
वीप्रजियेदाहतीनूलाल जीवतलूटेजगत
सब मृतकबूटेदेव दाहकहापुकारिये करिकरि
मृयेसेव अगनिधोमजुं नीकले देवत
सबबिलाइ न्युमनबिलुट्यारांमसौ दहदिसिबी
घरिजाइ घरछाहैजबकमाया मनवरिनआ
या दाहअगनिकेधमजुं पुरखोजनपाया सब
वकाहकेहोतहै तनमनपसरेजाइ औसाकोइये
कहै उलटासांइसमाइ कूकरिनुलटा
आगिये पसरिगया मनफेरि दाहडोरीसहज
की घूंआगेधरिधरे दाहसाधसबदसौमि

रह मनराधावल माझ साध सब दाखिन करत बह
 बीध रिजा ॥ ६८ ॥ एक निरंजन नां न लो साध संगति मा
 दि दाह मन बिलंबा ॥ ६९ ॥ जा को ईनां दि ॥ ७० ॥ वंचल
 वंजु दि सिजा त दे ॥ गुरु बाइक सौं बंधि दाह संगति साध
 की पारबुस सौं संधि ॥ ७१ ॥ तन में मन आवे न ही नि स
 दिन बाहरि जाइ ॥ दाह मेरा जीव दुषी ॥ रहै न ही लो ला
 ॥ ७२ ॥ तन में मन आवे न ही ॥ वंचल वंजु दि सिजा ॥ द
 ह मेरा जीव दुषी ॥ रहै न रां म समा ॥ ७३ ॥ दाह को टिजत
 न करि करि मूये ॥ यऊ मन दह दि सिजा रां म नां इरो
 क्यारहे नां ही आन नुपा ॥ ७४ ॥ यऊ मन बंजु बक
 चाद सौं बाइक त कै जाइ ॥ दाह बंजु न न बो लिये ॥ स
 ह जै रहै समा ॥ ७५ ॥ मूला त ह के रिमन ॥ मूरिष मुंगध
 गवार ॥ सुमरि सने ही आयाणां ॥ आतम का आधार ॥
 ॥ ७६ ॥ मन मोरि क मूरवरा धिरे ॥ जंन जंन हाथ न देऊ
 दाह पारिष जोहरा ॥ रां म साध दोइ लेऊ ॥ ७७ ॥ दाह मा
 स्या बिन मानै न ही ॥ यऊ मन हरि की आना ॥ पान बड
 ग मुरदेव का ता स गि सदा सुजाणा ॥ ७८ ॥ मन म गा मा
 रै सदा ॥ ता का मीठा मास ॥ दाह बाइबे को हिल्या ताथे
 आन नुदासा ॥ ७९ ॥ कसाह मारा मानि मन ॥ पापी प्र
 हरि काम ॥ बिषिया का संग छाहि दे ॥ दाह क हिरै रां म
 ॥ ८० ॥ के ता क हि सम काईये ॥ मानै न ही निलज ॥ मूरि
 ष मन सम जैन ही ॥ कीये काज अ कजा ॥ ८१ ॥ मन ही म
 जन की जिये ॥ दाह ५ पन देह ॥ मां हे मूर नि दे धिये ॥ इ
 हि ओ मरि करि लेऊ ॥ ८२ ॥ तब ही कारा होत दे ॥ हरि
 बिन चित तत आन ॥ कां क हिये सम जैन ही ॥ दाह सिष
 वेत पां न ॥ ८३ ॥ दाह पांणी धोवै बाइ ॥ मन का मैल न

नाइ मननिरमलतबहोइगा जबहरिकगुणागाइ ॥ ८६ ॥
 दाइध्यानधरैकाहोतहै ॥ जेमननहीनिरमलहोइ ॥ तोव
 गसबहीउधरै ॥ जेविधिसीऊँकोइ ॥ ८७ ॥ दाइध्यानधरै
 काहोतहै ॥ जेमनकामैलनजाइ ॥ बगमीनीकाध्यानधरि
 पसबिचारेषाइ ॥ ८८ ॥ दाइकालेयैक्षेलाभया ॥ दिलद
 रियामैक्षेइ ॥ मालिकसेतामिलिरया ॥ सहजैनिरमल
 होइ ॥ ८९ ॥ दाइजिसकाइपनउजला ॥ सोदरसनदेखे
 मोहि ॥ जिसकीमैलीआरसी ॥ सोमुखदेखेनाहि ॥ ९० ॥ दा
 इनिरमलसुधमन ॥ हरिरगराताहोइ ॥ दाइकंचनक
 रिलीया ॥ काचकहेनहीकोइ ॥ ९१ ॥ यऊमनअपना
 थिरनही ॥ करिनहीजाँणैकोइ ॥ दाइनिरमलदेवकी
 सेवाकूकरिहोइ ॥ ९२ ॥ दाइयऊमनतीनूलोकमै
 अरमपसबहोइ ॥ देहीकीरषाकरे ॥ हमजिनितातेको
 इ ॥ ९३ ॥ दाइदेहजतनकरिराधिये ॥ मनराधानहीजा
 इ ॥ उलिममंभिमवासना ॥ तलाबुरासबषाइ ॥ ९४ ॥ दा
 इहोतौमुखनसा ॥ चामरयालपटाइ ॥ मोहैजित्याम
 सकी ॥ ताहीसेतीषाइ ॥ नऊँउवारेनरकके ॥ निमदि
 नबदेवलाइ ॥ सुचिकदाँलौकीजिये ॥ रामसु म रि
 गुणागाइ ॥ ९५ ॥ प्राणीतनमनमिलिरया ॥ इंडीस
 कलबिकार ॥ दाइब्रह्मासुइधरि ॥ कहोरहेआचार
 - ॥ ९६ ॥ दाइजीवैपलकमै ॥ मरताकलपविहाइ ॥ दा
 इयऊमनमसकरा ॥ जिनिकोइपतिपाइ ॥ ९७ ॥ दाइ
 मृतामनहमजीवतदेखा ॥ जेसैमडहटनून ॥ ह
 वापीबैनुठिउठिनागे ॥ अैसामैरापूत ॥ ९८ ॥ निह
 लकरताजुगगये ॥ चंचलतबहोइहोइ ॥ दाइपंसरे
 पलकमै ॥ यऊमनमारैमोहि ॥ ९९ ॥ दाइयऊ

नमो इका॥ जलमो जीवै सोइ॥ दाइय कमन रिंद है॥ जि
 निरु पती जे कोइ॥ १००॥ मां है सुखिम कैर है॥ बाहरि प
 सारे अंग॥ पवन लागि पवटा नया॥ कालानागत वंग
 १०१॥ मनमं वंग यं बिष तस्या॥ नृ बिष कूं ही न होइ
 दाइमिल्या गुरगार डी॥ निर बिष कीया सोइ॥ १०२॥ सु
 पिनांत बल गदे धिये॥ जब लग चंचल होइ॥ जब नि ह
 चल लागारां मसौ॥ तब सुपिनां नो हो कोइ॥ १०३॥ जा
 गत जहां जहां मन र है वतत होत हो जाइ॥ दाइ जे जे सो
 मनि बसे॥ सोइ सोइ देवै आइ॥ १०४॥ दाइ जे जे चित
 बसे॥ सोइ सोइ आवै वाति॥ बाहरि नातरि दे धिये॥ जा
 ही सेती प्राति॥ १०५॥ सावणि हरिया दे धिये॥ मन चि
 त धमन लगाइ॥ दाइ के ते जुग गय॥ तो सीहं स्नान ज
 १०६॥ जिसकी सुरति जहार है॥ तिसका तहां बिआ
 म॥ सावै माया मोह मे॥ सावै आतम राम॥ १०७॥ जहां
 मन राखे जीवतां॥ मरतां तिस घरि जाइ॥ दाइ बासा
 प्राणका॥ जहां पद लीरया समाइ॥ १०८॥ जहां सुर
 तित हो जीव है॥ जहां नो ही तहां नो हिं॥ गुरा निरगु
 रा जहार धिये॥ दाइ घर बन माहिं॥ १०९॥ जहां सुर
 तित हो जीव है॥ आदि अति अ स थान॥ माया ब
 स जहार धिये॥ दाइ तहां बिआमि॥ ११०॥ जहां सुर
 तित हो जीव है॥ जीवण मरण जिस वोर॥ बिष अम
 त जहार धिये॥ दाइ नाही औरा॥ १११॥ जहां सुर
 तित हो जीव है॥ जहां जो तो त हो जाइ॥ गम अगम
 जहार धिये॥ दाइ तहां समाइ॥ ११२॥ मन मन सा
 का ताव है॥ अति फलेगा सोइ॥
 बरापा॥ तब आसै आस रा होइ॥
 बरापा॥ किराये॥ आपकते जाय

ना॥ वक्रियदेफिरिआइ॥२६॥ पाकाकाचाकेगया
जीताहारेनाव॥ अतिकालिगाफिलनया॥ दाइफिस
लेपाव॥२७॥ यऊमनपेमुलपंचदिन॥ सबकाकका
दाइ॥ दाइउ॥ तरिआकासथे॥ धरतीआयासोइ॥
॥२८॥ असाकोइयेकमेनमरेसुजावेनाहिं॥ दाइ
असेबकतहे॥ फिरिआवेकलिमाहिं॥२९॥ देषादे
धीसबचलेपारिनपुऊयाजाइ॥ दाइआसगिपह
लके॥ फिरिफिरिबैवेआइ॥३०॥ बरतणिपेकेना
तिसब॥ दाइसंतअसंत॥ सिनसावअंतरधया॥ म
नसातहोगाउत॥३१॥ दाइयऊमनमारैमोमिना
यऊमनमारैमीर॥ यऊमनमारैसाधिका॥ यऊमन
मारैपीर॥३२॥ दाइमनमारैमुनियरमूये॥ सुरनरक
येसिधार॥ बुआबिसनमहेससबाराधेसिरजन
होर॥३३॥ मनवाहेमुनियरबळे॥ बुआदिसनमहेस
सिधसाधिकजोगीजती॥ दाइदेसबदेस॥३४॥ पूजा
मानिवडाइया॥ आदरमांगेमेन॥ रामगहेसबप्रह
सोइसाधजन॥३५॥ दाइजहाजहाआदरपाइए
तहातहाजीवजाइ॥ बिनआदरहीजेराभरसाछ
डिहलाहजवाइ॥३६॥ करणीकिरकाकोनही
कथणीअनंतअधार॥ दाइयऊपाइये॥ रेमेनमूत
गवार॥३७॥ दाइमेनमूतकनया॥ इजीअपणोह
थ॥ तोनीकदेनकीजिये॥ कनककामणीसाया॥३८॥
॥ दाइअबमननरसेपरिनही॥ नेमैवैठाआ
निरसेसंगथेबा॥ बुआ॥ तकाइरकेजाइ॥३९॥ ज
मेनमूतककेरहे॥ इजीबलनागा॥ कायाकेसबमु
तजे॥ निरजनकागा॥ आदिअतिमधियकरसात
॥ दाइगेकेगदिगागा॥ तल॥ जगाजी

१२६ ॥ दाहमनके सोम सुषः संसपावहे जीव ॥ अ
 वणनेत्ररसनारहे दाहपायापीव ॥ १२७ ॥ दाहजहा
 केनवायेसवनवै सोईसिरंकरिजाणि ॥ जहाकेबुला
 येबोलिये सोईसुषप्रवाणि ॥ जहाकेसुनायेसब
 सुगो सोईअवणसयाणि ॥ जहाकेदेवदियो सोई
 नेनसुजान ॥ १२८ ॥ जमुषमादेबोलतो अवणजसु
 णताआइ नेनहुमादेदेवता सोअंतरिउरजाइ ॥
 १२९ ॥ दाहमनहीसोमलऊजे मनहीसोमलक्षीइ
 सीषचलीगुरसाधकी तोहंनिरमलहोइ १३० दा
 हमनहीमायाऊपजे मनहीमायाजाइ मनहीरा
 नाराससो ॥ मनहीरयासमाइ ॥ १३१ ॥ मनहीमरणा
 उपजे मनहीमरणाषाइ ॥ मनअबिनासीकेरया
 सादिवसो लोलाइ ॥ १३२ ॥ मनहीसंनमुषनूरहो
 मनहीसंनमुषतेज मनहीसंनमुषजोतिहो ॥ मनही
 संनमुषसेजा ॥ १३३ ॥ मनहीसोमनपिरनया ॥ मनही
 सोमनलाइ ॥ मनहीसोमनमिलिरया ॥ दाहअनन
 नजाइ ॥ १३४ ॥ ॥ अविमजनेमका

॥ दाहमोनमोनिरंजने नमसुकारगु
 रदेवतह ॥ वेदनअवसाधवा प्रणमनगामह ॥
 दाहचौरासीलघजीवकी ॥ प्रकमलिहमादि ॥
 नेकजनमदिनकेकरा ॥ कोइजेनेदि ॥ १३५ ॥
 तेगुणव्यापेजीवकी तेनेहीअनन ॥ आदर
 यइरिंकरि ॥ समप्रसिरजनद ॥ १३६ ॥
 हीजीवके दाहव्यापेआइ ॥ १३७ ॥
 नजाणेताहि ॥ १३८ ॥ जीवनेनन ॥
 लकमेहोइ ॥ चौरासीलघजीवकी ॥

अनेकसंपदितकेकरे यहुमनआवेजाइ आ
गगनमनकामिटे तबदाहरहेसमाइ निमवा
रियऊमनचले सखिमजीवसिंधार दाहमनथर
जिये आतमलेऊउबारि कवरुपावककवर
पाणी धरअवरगुणबाइ कवरुकुजरकवरुर्क
नरपसुवाकेजाइ सकरखानसेवालसि
अपरदेघटमांदि ऊजरकीडीजीवसब पांडेजा
नोनादि

दाहनमोनमोनिरंजन नमसंकारगुरदेवत
ह बदनेश्वरसाधवा प्र रामपारंगत साहि
बदेपरिहमनही सबजगआवेजाइ दाहसुपिना
देधिये जागतगयादिलाइ दाहमायाकासुष
पंचदिन गव्योकादागवार सुपिनैपाथोराजधन जा
तनलागेवार दाहसुपिनैसुताघाणीयां कीये
भोगविलास जागतऊवाकेगया ताकीकैसा
स मायाकासुषमनकरे सेज्यासुंदरिपास
अतिकालआयागया दाहहोऊउदास जेनाही
सोदेधिये सुतासुपिनैमांदि दाहऊवाकेगया जागे
नोऊठनाहि यऊसबमायामगजलऊठा
जिलिमिलिहोइ दाहचिलकादेधिकर सतिकरि
जानोसोइ ऊवाकिमिलिगजलपाणीकरि
लीया दाहजगपासामरे पसुघाणीपीया छल
वाबलिजाइगा सुपिनाबजीसोइ दाहदेविनधी
यऊनिजरूपमहोइ सुपिनैसबऊठदेधि
ये जागेनोऊठनाहि असायऊसंसारहे समजि
धिमनमांदि दाहऊऊठसुपिनैदेधिये तेस

यकुसंसारः अस्मै आया जाणिये फल्यो कदागवारः ॥
 ॥१॥ दाहजतन जतन करि राखिये दिहगदि अंतम
 मूल इज दिहिन देविये सबही सेबल फल ॥१॥ दाह
 नैन कुंभरिन ही देविये सब माया का रूप तहा लेने
 नाराखिये जहा है तत अनूप ॥१॥ दाह हस्ती है वर
 धन देविकरि फल्यो अंगन माइ नेरद मा माये कदि
 ना सब ही छा डे जाइ ॥१॥ दाह माया बिहटे देवता
 काया संगीन जाइ कृतम बिहटे बावरे अजर वर
 ल्यो जाइ ॥१॥ दाह माया का बल देविकरि आया अ
 ति अरेकार अंधन या मूजेन ही का करि है सिरज
 नहार ॥१॥ मन मन सा माया रती पंचतत प्रकास
 होत हती नृ लोक सवा दाह हो कुन दास ॥१॥ माया
 देव मन सु सी दिर दे हो इ बिगास दाह्य कु गति
 जावकी अति न हू गो आस ॥१॥ मन को मूठिन
 मा डिये माया के नी सोण पीछे ही पछिता कु गो
 दाह्यो टे बाणा ॥१॥ कु छ पाता कु छ प्रेतता कु छ
 सो वत दिन जाइ कु छ बिषियार सबिल सता दाह
 गये बिजाइ ॥१॥ मायरा मन पां हण नया मायार
 सपीया पां हण मन मां घण नया रां मर सलीया ॥
 ॥१॥ दाह माया सौ मन बीग डया जू को जी करि इध
 है को ई संसार मै मन करि देवे सुधा ॥१॥ माया सौ
 मन रत नया बिधैर सिमाता दाह साचा छा डिकरि
 कु वर गिराता ॥१॥ गंदा सौ गंदा नया सुगंदा सब
 को दाह ला गे बूब सौ तोर ॥१॥ दाह ॥१॥
 माया के सगिजे गया तेब कु डि
 डाकणी इन के तेयाये ॥१॥ दाह

की कोईनमकई डारि। बहवदिमयै बाबुरे गये
बहुतपविहारि। दाहपरागपुण्यअणमरे ज
हामाथानही जाइ विद्याअधिर पंडिता तहारदे
परवाइ॥२॥ साधनकोईपगतरे कबकराजउवा
रि दाहउलटाआपमेवेगाबुझाविचारि॥ दाह
अपणोअपणोपरिगये॥ आपाअगविचारि सहका
मीमाया॥ मिले निदकामीबुझ संतारि॥ दाहमा
यामगनजुकेरदे हमसेजीवअपार मायामादेले
ही॥ बडेकालीधर॥ दाहविषैकेकारनेरूपरति
है नैननापाकयोकीरुनाई बहीकीवानहसुण
तसारादिन अवरानापाकयकीरुजाई॥ खादके
कारनेबुवधिलागीरदे जिसानापाकयोकीरुषाई
नोगकेकारनेसुखलागीरदे अगनापाकयोकीरु
लाई॥ दाहनगरीचैनतबजबइकराजीही
इ॥ दोइराजी डषउदमे सुधीनदेयाकोइ॥ दरइक
राजीआनंदकरै नगरीनिहिचलबासराजाउज
सुखबसे॥ दाहजोतिप्रकास॥ जैसेऊंजरका
मरस आपबधेनाआइ॥ ऐसेदाहहमतये कू
करिनिकस्याजाइ॥ जैसेमकटजीतरसाआ
पबधेनाअ॥ ऐसेदाहहमतये कूकरिबूटे
फूध॥ जसुखासुषकारनेबधमहरिषमाहि
ऐसेदाहहमतये कूहीनिकसेनाहि॥ जैसे
अधअणानगदे बधमहरिषमादि॥ ऐसेदाहह
मतये जनमगवायावादि॥ दाहसुडिरसारब
पुरे मायागहककप मोहाकनकरुकामाणी
नानाविधैकेरूप॥ दाहसादिलागिससारह

ब. देवत प्रलेजाइ ॥ इंसी स्वारथ साचतजि ॥ सबेबंधा
 ने आइ ॥ बिष सुष मोहै ॥ रमिरहे माया हित दि
 न लाइ ॥ सोई संत जन ऊबरे ॥ स्वाद छाडि गुण गाइ ॥
 ३॥ दाइ ऊठि ताया ऊठ घर ॥ ऊठा य ऊ परिवार ऊ
 ठीया द्वेष करि ॥ फल्यो क हाग वार ॥ दाइ ऊठा स
 सार ॥ ऊठा परिवार ॥ ऊठा घर बार ॥ ऊठा नर नार ॥ त
 हा मन मोने ॥ ऊठा कुल जात ॥ ऊठा पित मात ॥
 ऊठा बंधनान ॥ ऊठा तन गान ॥ सति करि जने ॥ ऊठा
 सबंध ॥ ऊठा सबंध ॥ ऊठा सबंध ॥ ऊठा जा बंध
 कही मघ छाने ॥ दाइ तागि ऊठ सब त्यागि ॥ जागिर जा
 गिद विदिवने ॥ ४॥ दाइ जन मगया सब देवता ॥ ऊठ
 के सगिलागि ॥ साचे प्रीत मको मिले ॥ तागि सकेनी भा
 गि ॥ ५॥ दाइ ऊठे त के कारने ॥ कीये बजत बिकार ॥
 गृह दारा धन संपदा ॥ पूत कुटुंब परिवार ॥ ताकारणि
 हति आतमा ॥ ऊठ कपट अहंकार ॥ सोमाटी मिलि
 जाइगा ॥ बिसर्या सिर जन दार ॥ ६॥ दाइ गत गृह
 त धन ॥ गत दा रा सुत जो बने ॥ गत माता गत पिता ॥ गत
 बंधु सजन ॥ गत आपा गत पद ॥ गत संसार कतर जन
 तज सिस ज सिर मने ॥ पार बुद्ध निरंजन ॥ ७॥ जीवो
 मोहै जीवदे ॥ असामाया मोह ॥ साई सुख सब गया
 दाइ नही अदोह ॥ प्राया मग देर घेत घर ॥ सदा गतिक
 दिन होइ ॥ जेब घेत देवता ॥ राम सरीष सोइ ॥ ८॥ काजर
 घेत न नीप जे ॥ जेबाहै सो वार ॥ दाइ होना बीज का ॥ क्या
 यचि मरे गवार ॥ ९॥ दाइ संसार मो ॥ निमघ्न की र
 जेनेह ॥ जा मरण मरण आवटणी ॥ १०॥ दाइ मोह संसार को
 दाइ छै ॥ न करि को साधु संत ॥

सीमायाहस नीसवनवनयेसार तामेनिरनेके
दाहमुगधवार दाहकामकठिनघटिचो
घरफाडेदिनरात सोवतसाहनजाग ईततव
सलेजात कामकठिनघटिचारहे मूमेनरेनडार
सोवतहीलजाइगा चेतनिपहरचार ज्युधुग
लागेकाठको लोहेलागेकाट कोमकीयाघटजाज
रा दाहबारवाट राहगिलेजुचंदको गहण
गिलेजुसर कमगिलेजुजीवको नवसिधलागे
पूर दाहचंदगिलेजुबरहको गहणगिलेजुव
सर जीवगिलेजुवकमको रामरहानरर
कमकुदाडाअंगवन काटनबारबार अपनेदापो
आपको काटनदेससार आपेमायेआपको
यकुजीवविचारा सादिवराषणहारहे सोदिरहम
रा आपेमायेआपको आपआपकोषाड अ
पैअयनाकालहे दाहकदेसमकाइ दाहमरेव
कीसबऊपजे जीवकीकुछनाहि जीवकीजागेन
ही मरिखेकीमनमांदि वंधावकुतविकार
अवपापकामूल ठाहैसबआकारको दाहयकुअ
स्थल दाहयकुनोदोजगदेविये कामको
अहंकार रातिदिवसजरिबोकरे आपाअगनि
कार विधेहनाहलषाडक सबजगमरि
रिजाइ दाहमुद्वरामोउले रिदेराधेत्योलाइ
जेतीविषियाबिलसियेतेतीहत्याहोइ परनविम
समारिये संकलसिरोमणिंसे विषियाक
समहसया नरनारीकामास मायामातेमदयी
कीयाजनमकातास दाहनावेसाधतनग

नजडा ॥ १ ॥ पातावजीनगतिहै ॥ लोहरबाडा मांदि ॥ प्रगत
पेडाइतबसे ॥ तहांसंतकाहेकोजाहि ॥ ६० ॥ सापयायेकस
सबजीवको ॥ आगिपीछेपाइ ॥ दाहकहेउपगारकरिकोईजं
नऊवरिजाइ ॥ ६१ ॥ दाहघायेसापणी ॥ कूकरिजीवेलोग
राममंत्रजनगारही ॥ जीवैइहिंमंजोग ॥ ६२ ॥ दाहमायाकार
णिजगमरे ॥ पावकेकारणिंकोइ ॥ देवौजंजगप्रजले ॥ नि
मषनन्याराहोइ ॥ ६३ ॥ कालकनकअरुकांमणी ॥ प्रहरि
इतकासग ॥ दाहसबजगजलिमूवा ॥ जूंदापकजोतिपतं
गा ॥ ६४ ॥ दाहजहांकनकअरुकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा
हिं ॥ आगिअनंतसूऊनहां ॥ जरिजरिमूयेमांदि ॥ ६५ ॥ घट
मांहेमायाघणां ॥ बाहरिन्यागीहोइ ॥ फाटीकंथापहरिक
रिचिह्नकरेसबकोइ ॥ ६६ ॥ कायाराधेबंदहे ॥ मनदहदि
मि ॥ ६७ ॥ दाहजनकरुकांमणी ॥ मांजनकोमेलै ॥ ६८ ॥ दा

॥ ६९ ॥ दाहजीवका ताप ॥ पाताव ॥ यक्षतयादंतनही ॥ न ।
॥ ७० ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा ॥ ७१ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा
॥ ७२ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा ॥ ७३ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा
॥ ७४ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा ॥ ७५ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा
॥ ७६ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा ॥ ७७ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा
॥ ७८ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा ॥ ७९ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा
॥ ८० ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा ॥ ८१ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा
॥ ८२ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा ॥ ८३ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा
॥ ८४ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा ॥ ८५ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा
॥ ८६ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा ॥ ८७ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा
॥ ८८ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा ॥ ८९ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा
॥ ९० ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा ॥ ९१ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा
॥ ९२ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा ॥ ९३ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा
॥ ९४ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा ॥ ९५ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा
॥ ९६ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा ॥ ९७ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा
॥ ९८ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा ॥ ९९ ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा
॥ १०० ॥ दाहकांमणी ॥ तहांजीवपतंगेजा ॥

ना १५
प्राश दाहजीव जतदे नांनारांगअपार
सोनामिले औरव जतराआदि दाहमेनमानैवही
ताआवेजाइ बाजीमोदेजीवसब हमकोसुरकी
गादि दाहकेसीकरिगया आप गारद्याविपाइ
दाहसोईसतिदे इजासरमविकार नाउनिरजननिवम
ला इजाघोरअक्षर दाहसोधनलाजिये जेनुमसे
तोहोइ मायाकेबांधकेईमूये पूरापड्यानकोइ
दाहकदेजेहमछोडेदापये सोनुमलीयांसारि जे
हमलीवै प्रातिशो सोनुमदायाडावि दाहहीरा
पगसोवलिदारि ककरकोकशलीक पारबसकोछा
डिकारिजीवनिसोहितकीक दाहसबकोबनेजे
पारबलि होराकोईनलेइहीरलेगाजोदृश जेमांगे
देइ दडीदोटजूमारियेतिहलोकमेंफेरिधुरि
पंजेसंतोषदे दाहचटि बांमेहि अनलपक्षि
कासको मायामेरुनलधि दाहनुलटपघचटि जा
बिलेवेकंगि दाहऊसासारंवेठाबिचार संस
रजागतसूता तानिसवनततजाताबि दारया त
जाइगाइता दाहमायाआगेजीवसब गा
करजोडि जिनिसिरजे जतबूदसों तासौवेठे
दाहपुरनरमुनियर बिसनबसिबह
देठेठ सकललोककेसिरिषडी साधुकेपग
दाहमायाचेरीसतकी दासीनसदरबा
राणीसबजगतकी तीनुलोकमेंकारि
इमायादासीसंतकी साकतकीसिरताज
तयेतताइणी सतोयेतीलाज दाह
गारपमुकतिवापुरी अठसिधनोनिधिच
नदांतगतिनिरंजन

दाहकद्वैजं श्रावैतां जं द्विविचारी बिलसी बितडी
नैमांथे मारी ॥ १०॥ दाहमाया सबमदलकी ऐ ॥ चौरा
सीलषजीव ताका चैरी क्यकरै जेरंगरा तेपीव ॥
॥ ११॥ दाहमाया बैरशिंजीवकी ॥ जिनि को लावै धी
मा ति ॥ या देवै नरक कशि ॥ यं ऊ सतनि की रति ॥ १२॥ मार
या मत चकचा लकारि चैवलकी ये जीव ॥ माया माते
में डपीया ॥ दाह बि सखा पीव ॥ १३॥ जरां जरां की रां मकी
घर घर की नारी ॥ पति बुतान ही पीवकी ॥ सो माथे मा
रा ॥ १४॥ जरा जरा के उठ पीवै लागे ॥ घर घर लमंत डो
ले ॥ ताथे दाह घा इत माचे ॥ मादल दऊं मुखि बोले ॥
॥ १५॥ जे नर काम शिं प्रहरै ॥ ते छटे गत चास ॥ दाह ऊं धे
मुखि नदी रदे निरंजन पास ॥ १६॥ शोक न राखे ऊठन
साँष ॥ दाह घर चैषा इ नदी पुरष वाह जू ॥ माया आ
वै जाइ ॥ १७॥ सटिका मिरजनदार का ॥ केता आवै जा
इ दाह धन सचै नही ॥ बैठा पुलावैषा इ ॥ १८॥ जे गशिं
कै जोगी गदे ॥ सो फणि कै करि सेषा ॥ नगन शिं कै नग
ता गदे ॥ करि करि नां नो नेषा ॥ १९॥ बुधिव मे कबल
दरशिं ॥ हुन ताप न पावनि ॥ अगिअ नल परजाति
जीव घर बारि न चांउनि ॥ नां नो बिधिके रूप धरि सब
बंधे नां मनि ॥ जग बिटे बिपरले कीया ॥ दरि नो वसुला
वनि ॥ २०॥ बाजीगर की फूतली ॥ जू संकट मोह्या दा
ह माया रा मकी ॥ सब जगत बिगोया ॥ २१॥ मौरा मौरा
देखि कशिनां चै पंष पसारि ॥ यो दाह घर आ गनै ॥ दम
ना चै कै बारि ॥ २२॥ जिस घटि दीप करामका ॥ ति
स घटि ति मर न होइ ॥ नसि उजियारै जोति के ॥ सब ज
ग देषे सोइ ॥ २३॥ जिहिं घटि बुझन पग दो ॥ तदा मा
या मे गवताइ ॥ दाह जागे जोति जब ॥ २४॥ माया धम बि

दाहजीव जत देनां नारांग अपार ॥ १ ॥ दमचा
है सो ना मिले और बजते रा आदि दाहमन मो नदी
के ता आवे जाइ बाजी मो दे जीव सब दम को सुर की
बादि दाह के सी करि गया आप रा र द्या वि पाइ ॥ २ ॥
दाह सो ई सति दे इजा त्र म बिकार ना उ नि रं जन नि र म
ला इजा घोर अक्षर ॥ ३ ॥ दाह सो धन ली जिये जे तु म स
ती होइ माया के बांधे के ई मू ये पूरा प ड्या न कोइ ॥ ४ ॥
दाह के जे दम छो डे दा प ये सो तु म ली यां सा रि जे
दम ली वै प्रा ति सो सो तु म दी या दा रि ॥ ५ ॥ दाह ही र
प ग सो तेलि करि कं कर को क र ली नू पार ब्र ह्म को ब
डि करि जीव नि सो दित की नू ॥ ६ ॥ दाह सब को बने जे
षार बलि हो रा को ई न लेइ ही रा ले गा जो दरी जे मां गे
देइ ॥ ७ ॥ द डी दो ट जू मा रि य ति नू लोक में फेरि धु रि
प ऊंचे स तोष दे दाह च टि बा मे रि ॥ ८ ॥ अन ल प रि
का स को मा या मे र उ लं घि दाह न ले प थ द टि जा
बिल बे अ गि ॥ ९ ॥ दाह ऊ ता सा र बै ठा वि चार स र
र जा ग त सू ता ती नि स व न त त जा ल बि दा र गा त
जाइ गा पू ता ॥ १० ॥ दाह मा या आगे जीव सब गा
दे कर जो डि जि नि सि र जे ज ल बू द सो तां सो बै ठे
॥ ११ ॥ दाह सुर न र मु नि य र बि स न ब सि ब द्या
दे टे ग सक ल लोक के सि रि ष डी सा धू के प ग व
॥ १२ ॥ दाह मा या चे रा स त की दा सी न स द र बा र
राणी सब ज ग त की ती नू लोक में का रि ॥ १३ ॥
ह मा या दा सी स त की सा क त की सि र ता ज ॥
त से तां ता ड णी स तो ये ती ला ज ॥ १४ ॥ दाह च
दा र प मु क ति बा पु रा अ व सि धि नो नि धि चे रा
न दां प्र ग ति नि रं ज न ले

दाहकद्वैजं आयेतां ज्ञा द्बिचारी बिलसी बिलडी
 नैमाथे मारी ॥ दाहमाया सबमदलेकी ऐ ॥ चौरा
 सीलषजीव ताकाचेरीक्याकरै जेरगरातेपीव ॥
 ॥ दाहमाया बैरणिं जीवकी ॥ जिनि को लावेथी
 ॥ ति या देवेन रक कशि ॥ ज संत नि की री ति ॥ मा ०
 या मत चकचा ल करि चंचल की ये जीव ॥ माया माते
 में डपीया ॥ दाह बि सखा पीव ॥ ॥ ज रों ज रों की रा म की
 घर घर की नारी ॥ पति छुतान ही पीव की ॥ सो माथे मा
 रा ॥ ॥ ज रा ज रा के री ठी पीवें लागे ॥ घर घर स्व मंत डे
 ले ताथे दाह्या इत माचे ॥ माद ल द ज मुषि बोले ॥
 ॥ जे नर कामणि प्रदरे ते छटे ग्रन वास ॥ दाह रुंधे
 मुषे न ही र दे नि रं जन पा स ॥ ॥ शोक न राषे ऊठ न
 साषे ॥ दाह खर चे षा इ न दी पृथु वा द ज ॥ माया अ
 वे जा इ ॥ ॥ स दिका मिर जन दार का के ता आ वे जा
 इ ॥ दाह धन सचे न ही बै ग पु ला चे षा इ ॥ ॥ जे गणि
 कै जोगी गदे ॥ मो फणि कै करि से षा ॥ न गतणि कै न ग
 ता गदे ॥ करि करि ना ना ने षा ॥ ॥ बुधि ब मे क बल
 द रणि ॥ ट न ता प न पा व नि ॥ अ गि अ न ल पर जा ति
 जी व घर बा रि न चा उ नि ॥ ना ना बि धि के रूप ध रि स व
 ब धे ना म नि ॥ ज ग बि टे बि पर ले की या ॥ द रि ना व लु ला
 व नि ॥ ॥ बा जी गर की पृ त ली ॥ ज सं क ट मो द्या दा
 इ मा या रा म की ॥ सब ज ग त बि गो या ॥ ॥ मो रा मो रा
 दे धि क रि नां चै पं ष प सा रि ॥ यों दा ह घर आ ग ने ॥ द म
 ना चै के बा रि ॥ ॥ जि स घ टि दी प क रा म का ॥ ति
 स घ टि ति म र न हो ॥ न सि उ जि य रै जो ति के सब ज
 ग दे षे सो इ ॥ ॥
 या मे ग ज या इ

माइ दाहजोतिचमकेनिरचरी दीपकदेधेताइ चंद
काचोदगा प गारबुलावाहोइ दाहदीपकदे
का मायाप्रगटहोइ चौरासालवपाधिया तहापर सब
कोइ य ऊघट दीपाकसाधका बुद्धजोतिप्रका
म दाहपपीसंतजन तहापर निजदास घरबनम
दुशधिये दीपकजोतिजगाइ दाहप्राणपतंगसब ज
होदीपकतहाजाइ घरबनमाहेराधिये दीपक
जलताहोइ दाहप्राणपतंगसब जाइमिलेसबकोइ
घरबनमाहेराधिये दीपकप्रगटप्रकास दाह
प्राणपतंगसब आइमिलेउसपास घरबनमा
हेराधिये दीपकजोतिसहेत दाहप्राणपतंगसब
इमिलेउसहेत दाहमनहतकमया अदीअ
गोहाय तोलीकदेनकीजिये कनककापणीसाप
जोहोबूजेजीवसब इयाधुरिषकाअगा आ
पुस्तलानही दाहकैसासग मायाकघटसा
वे इयाधुरिषधरिनाउ इन्हुसुंदारबेलेंदाह रा
ऊबलिजाउ बहणाबीरसबदेधियेनारी
सरतार प्रमेसुरकेपेटके दाहसबपरिचार
रपंदरिआपणी सबकेउतहार पमुयाणीस
नही दाहमुगधगवार पुरिषपलटिबेट
नारीनाताहोइ दाहकोसमकेनही बडाअच
हि मातानारीपुर्षकी सुखनारिका
क इयाधुरिषादिगयेअवधूत
लाजीवबावला जीवदिवानाहोइ दाह
करि बिषपीवेसबकोइ मायामेलीगुर
नारीनाताहोइ दाहमोहेसबनिको सुरन
नारीनाताहोइ दाहमोहेसबनिको सुरन

रानांकदैं यं ऊँ अचिरजआवै ॥ १॥ दाहजेविषजारैवा
 इकरि। जिनिमुषमैमेलै आदिअतिप्रलेगए। जेविषसौषे
 ले। ॥ २॥ जिनिविषघायातेमूये। क्यामेरातेरा। आभिपरा
 इअपरा। सबकरैनंदेरा ॥ ३॥ दाहमायाकाजलपाव
 तो। व्याधीहोइबिकार। सेजेकोजलपीवतां। प्राणमुषीमु
 धमारा ॥ ४॥ दाहकदैंजिनिविषपीवेबावरे। दिनदिनबा
 ढेरोग। देषतहीमरिजाइगा। तजिबिषियारससोग। ॥ ५॥
 ॥ अपरांपरायायाइबिषादेषतहीमरिजाइ। दाहको
 जीवैनही। इहिसोरैजिनिपाइ ॥ ६॥ बुद्धसरीषाकैकरि
 मांयासौषेले। दाहदिनदिनदेषता। अपरांगुणामेले। ॥ ७॥
 ॥ ॥ दाहबुद्धाबिसनमहैसलौ। सुरनरनुरउजाया। वि
 षकाअमृतनाउंधरि। सबकिनहीपाया ॥ ८॥ दाहजन
 मगयासबदेषता। ऊँतीकेसंगिलागि। सावेप्रातमकौमि
 ले। लागिसकैतौसागि। ॥ ९॥ आयामारैलातसौ। हरिको
 घालेहाया। संगतजेसबऊँठका। गहैसाचकासीया ॥
 १०॥ दाहघरकेमारैवनकेमारे। मारेसरगपयाला।
 साविममोटागंधिकरि। मांडयामायाजाल ॥ ११॥ मूयेसरी
 षेकैरहे। जीवनकीक्याआस। दाहरामबिसारिकरि।
 बाहुँसोगबिलास ॥ १२॥ मायासूयीरामकौ। सबकोई
 क्षवै। अलषआदिअनादिहै। सोदाहगावै ॥ १३॥ दाह
 बुद्धाकाबेदाबिसनकीमूरति। पूजेसबसंसार। मह
 देवकीसेवालागि। कहोहैसिरजनदारा ॥ १४॥ माया
 कांठाऊँरकीया। मायाकीमहिमाइ। ऐसेदेवअनंत
 करि। सबजगपूजणजाइ ॥ १५॥ मायाबेठीरामकौ।
 कदैंमैंहीमोहनराइ। बुद्धाबिसनमहैसलौ। जोनीअ
 वैजाइ ॥ १६॥ मायाबेठीरामकौ। नाकौलयेनकोइ ॥

लाइ राहोति चमकेति रवर दीपक देध जोइ चंद म
रका चो तराणी प राखु लावा होइ दाइ दीपक देह
का माया धराट होइ चौरा सीज वप विद्या तहां पर सब
कोइ य ऊठ दीपा क साधका वंद्य जोति धका
म दाइ पपी संत जेन तहां परै निज दास घर बन म
हैं राखिये दीपक जोति जगाइ दाइ प्राण पतंग सब ज
हो दीपक तहां जाइ घर बन मो हैं राखिये दीपक
जलता होइ दाइ प्राण पतंग सब जाइ मिले सब कोइ
घर बन मो हैं राखिये दीपक उगट प्रकास दाइ
प्राण पतंग सब आइ मिले न सपास घर बन मो
हैं राखिये दीपक जोति सहेत दाइ प्राण पतंग सब अ
इ मिले न सहेत दाइ मन मृतक जया अंश चप
गोंदाय तो सीक देन कीजिये कनक कामणी साथ
जायौ ब्रज जीव सब दया धुरिष काइंग आपा
र पुस्तकान ही दाइ के सा संग माया कष्ट साजि
वै दया धुरिष धरिना न हन्य सुंदर खेले दाइ राखिले
ऊब लिजां न बहना दीर सब देखिये नारी अ
सरनार यम सुर के पेट के दाइ सब परिवार
र रपें हरि आपणी सब के नत नार पमु प्राणी सम के
नही दाइ मुगध गंधार धुरिष पलटि वेटा सय
नारी नता होइ दाइ को सम के नही बडा अचेली
हि माता नारी धुरिष की धुरिष नारिका पूत व
क हयान बिचारि रिछा डिगये अदभुत जीवन
लाजी ववावला जीव दिवाता होइ दाइ अमृत द्या
करि बिष पीवै सब कोइ माया मैली गुण मई ध
धरि न जलनाइ दाइ मोहे सब निको सुरनर सब ह

राना कहै यह अचिर ज आवै ॥ दाह जे बिष जारै या
 इकरि ॥ जिनि मुषमै मेलै ॥ आदि अति प्रलेग ऐ ॥ जे बिष सौं धे
 ले ॥ १२ ॥ जिनि बिष पाया ते मूये ॥ क्या मेरा तेरा ॥ आगि परा
 इ आपरा ॥ सब करै न देरा ॥ १३ ॥ दाह माया का जल पाव
 ना ॥ बाधी होइ बिकार ॥ सके को जल पावता ॥ प्राण सुधी सु
 धसार ॥ १४ ॥ दाह कहै जिनि बिष पीवे वा वरे ॥ दिन दिन बा
 ढे रोग ॥ देखत ही मरि जाइगा ॥ तजि बिषियार सत्सोग ॥ १५ ॥
 ३॥ अपरां परायाषा इ बिष देखत ही मरि जाइ ॥ दाह को
 जीव न ही ॥ इहि सोरै जिनि पाइ ॥ ३४ ॥ बुद्ध सरीषा कै करि
 माया सौं धेले ॥ दाह दिन दिन देखता ॥ अपरां गुणि मेले ॥ ३५ ॥
 ॥ ॥ दाह बुद्धा बिसन महे सलौ ॥ सुर नर नर उजाया ॥ बि
 ष का अमृत ना उंधरि ॥ सब किन ही पाया ॥ ३६ ॥ दाह जन
 मगया सब देखता ॥ ऊती के संगिलागि ॥ सावे प्रात मकौं मि
 ले ॥ सागि सकै तो सागि ॥ ३७ ॥ माया मारे लात सौ ॥ हरि को
 घाले हाथ ॥ संगत जे सब ऊठका ॥ गद्दे सा चका सीया ॥
 ३८ ॥ दाह घर के मारे बन के मारे ॥ मारे सरग पयाला ॥
 सावि ममोटा गंधिकरि ॥ मांड्या माया जाला ॥ ३९ ॥ मूये सरी
 ष कै रहे ॥ जीवन की क्या आस ॥ दाहरा म बिसारि करि ॥
 बाह्ये सो गबिला स ॥ ४० ॥ माया रूपी रांम को ॥ सब को ई
 क्षवे ॥ अलष आदि अनादि हो ॥ सो दाह गावे ॥ ४१ ॥ दाह
 बुद्धा का बेदा बिसन की मूरति ॥ पूजे सब संसारा ॥ महा
 देव की सेवा लागे ॥ कहो हे सिरजन हारा ॥ ४२ ॥ माया
 का गऊर कीया ॥ माया की महिमा ॥ ऐसे देव अनंत
 करि ॥ सब जग पूजा जाइ ॥ ४३ ॥ माया बैठी रांम को ॥
 कहै मै ही मोहन रा ॥ बुद्धा बिसन महे सलौ ॥ जोनी आ
 वे जाइ ॥ ४४ ॥

सब जगमानैसतिकरि बडाअवेतामोहें अजन
कीयानिरंजना गुणनिरगुणजगो धस्यादिबादेअ
करि कैसैमनमानै निरंजनकीवातकाहेअव
अंजनमाहि दाइमनमानैनही अगारसातलिजादि
दाइकदणीअोरऊठ करणीकरेऊठअोर
तिनयैमेरामनहरे जिनकैविकनठोर एकांमधे
नकेपटतरे करेकाठकीगाइ दाइहधहेजेनही म
रिषदेइबदाइएहे चंतामणिंककरलीया मोगेक
हुनदेइ दाइकेकरडाहिदे चंतामणिकरलेइ पार
मकीयापवाणका कंचनकटेनहोइ दाइअतरामहि
न ललियड्यासबकोइ सुखरिजफटपवाणका
तासैतिमरनजाइसावासूरिजप्रगटे दाइतेमरनसा
इ सुखरिघडीपवाणकी कीयासिरजनहार दा
इसावसूजेनही लूहवांसंसार सुखवदेसका
मणिकीया उसहीकेनुनहार कारिजेकोरफेनही
दाइमायैमारि कागदकामोणसकीया छत्रपती
सिरभोर राजपाटसाधेनही दाइअहरिअोर
कलसुवनलानैघडे चउरबलावणहार दाइसोसूके
नही जिसकावारनहार दाइपहलीआयउ पा
इकरि न्यारापदनिरवाण बुढ्याबिस्रहदेसमिलि
बाधमसकबंधणानां नीतिअनीतिसबपहलीबा
ंधबंध यसूनजोगीकी दाइरोयकंध दाइबंधे
चविधि तरमकरमठरजाइ मरजादामोहैरदो सु
मिराकीयानजाइ दाइमायामीठाबोलणी
नइनइलामोयाइ दाइयैसैयेहमेकाठिकाले जाया
इ ०५ नारीनागणिजेडुसे तेनरमुखेलिहोनादाइ

[illegible]

राजको अंगति छते ॥५॥

॥दाह

नमो नमो नमो नमो नमसकार मुरदेवतहा विद नं अ व स
धवा प्रणो मं पार गत ह ॥ ॥ दाह दया जे नौ के देल नही
व ऊरि क होवे साधाने मुब उन का दे विवे मौ लगे व
ऊं य रंधा ॥ दाह मिहर म द व ति म नि न ही ॥ दिन
के व ज क गो ल काले का किर ते क दि ये ॥ मो भिन मालि
क थो रा ॥ ॥ दाह को ई का क जीव को करे आत मा या
ता सा च क क सं सान ही ॥ सो प्राणी दो ज ग जात ॥ ॥ दा
ह ना हर सिंध सिया ल सवा ॥ के ते मु स ल मां ना मा स वा
इ मो भिन स ए व डे मी या का हो न ॥ ॥ दाह मा स अ हा
र जे न रा ॥ ते न र सिंध सिया ल ॥ ब ग मं जार मु न हा स ही
ये ता प्र त थि का ला ॥ दाह म ई मा र मा रा स घ र ॥ ते
प्र त थि ज म का ला ॥ मि हरि द या न ही ॥ सिंध दि ल कू क र का
ग सिया ॥ ल ॥ मा स अ हा र ॥ म डु पी दो ॥ वि वे वि कारी
सो ह ॥ दाह आत म रां म बि न द या क हां पी दो रा ॥ ॥
दो ह लं ग र लो ग लो स दो ला गो ॥ बोलै सदा नु कौ की सी र
जोर जु ल म बै त ॥ ब ट पा रे आ दि अं ति उ न ही सो सी रा
त न म न मा रि र ह स ई सौ ॥ ति न को दे वि करे ता जी रा ॥ ए व डी
र क क हां ये आ ई ॥ अ सी क जा ओ लिया पी रा ॥ ॥ बे मि
हर गु म रा द ग फि ला गो स त घु र द नी ॥ बे दि ल व द कार
आ ल म द या त मुर द नी ॥ ॥ ॥ छ लि क रि ब लि क रि घा ड
क रि मा रे जि हिं ति दि फे रि ॥ दाह ना हि न धी जे ये ध ने स
ग ये ते रा ॥ ॥ दाह डु नि यां सौ दि ल वं धि क रि बे व ही
न ग व ॥ इ नि की न नं बि सारि क रि क र द क मा या घा ड
॥ ॥ दाह ग ल का टे क ल मां स रे ॥ अ या बि चा रा ही
न प दौ ब घ त नि मा ज मु जा रे ॥ अ व ति न ही अ की न ड

॥ इनियां के पीछे पड़ा। द्यो डरा द्यो डरा जाइ दा
 इजिनि पेदा कीया। नासाहिब कौ छिटकाइ ॥ १६ ॥ कुफ
 र जे के मन में। मीयां मुसलमाना। दाइ येया जंग में बिसा
 र र हिमांन ॥ १७ ॥ आपस कौ मारे नही। सब कौ मारण जा
 हि। दाइ आपा मारे बिना। कै सैं मिले बुदाइ ॥ १८ ॥ तीत
 रिंदर लरि रहे। तिन कौ मारे नोहि। साहिब की अरदाह
 कौ। ता कौ मारण जाहि ॥ १९ ॥ दाइ मूए कौ क्य मारि ये
 मीयां मूई मार आपस कौ मारे नही। और कौ कसिया
 रा ॥ २० ॥ जिस काया तिस का कवा। तो काहे का दोसा। दा
 इ बंदा बंदगी। मीयां न करि रोसा ॥ २१ ॥ सेवग सिरजन
 हार का। साहिब का बंदा। दाइ सेवा बंदगी। हजा क्य धंध
 ॥ २२ ॥ सो का फिर जे बोले काफा। दिल अयणी नही राखे।
 साफ ॥ साई कौ पहिचाने नोही। कड कपट सब उनही मा
 ही ॥ २३ ॥ साई का कुरमान न माने। कदा पीव असे करि
 जाने। मन अयणी मै समझे नोही ॥ निरबत चाले अतां हो
 ही ॥ २४ ॥ जोर करै मसकी न सेतावे। दिल उस की में दरद
 न आवे। साई सेती नाही नेह। गरब करै अति अयणी देह
 ॥ २५ ॥ इन बातं निकू पईये पीवा पधन ऊपरि राखे जाव। र
 जोर जुलम करि कुतब सौं घाई। सो का फिर दो जग में जाइ
 ॥ २६ ॥ दाइ जा कौ मारण जाइये। सोई फिरि मारे। जा कौ
 तारण जाइये। सोई फिरि तारे ॥ २७ ॥ दाइ नफस नाउ सौं
 मारि ये। गोसमाल दे पंदा। इई है सोइ करि। तब घट में आ
 नंद ॥ २८ ॥ मुसलमान जु राखे मान। साई का माने कुरमान
 सारो कौ सुष दाई होश। मुसलमान करि जाने सोइ ॥ २
 ७ ॥ दाइ मुसलमान मिदरग हिर हो। सब कौ स्वयं किन्
 ही नही देह ॥ मू. . . । ज . . .

संवारै। सो मोमिन मनमें करि जांशि। सति सवरी
सै अंशि। चले माघ सवारै वात। निन को डले निरत को पा
ता। सो मोमिन तो मिदिल होइ। सोई को पटि चाने
सोइ जोरन करै हरामन घाइ। सो मोमिन तिसमें जाइ
॥ ३० ॥ जोह मन ही गुजारते। डरु को व्यासाई सीरन
ही कछ बंदगी कल कि निधुर माई। अपनो अ
मलो छटिये काहू के नाई। सोई पीड पुकार सी जाइ
वे मोही। कोई बाइ अथाइ करि। हरे कंस रिए
बटी पगी अंन की। आपण कं मरि वा। फटी नाउ
समंद में सब डवरा जागे। अपणा अंणा जीव ले सब को
ईतागे। दाह सिर सिर लागी अपणों क ऊको
राबु जाइ। अपणा अपणा सावदे। सोई को सो दो। अ
सा जानां अलाह का। सोई सति करि जांशि। निह चल
करि ले बंदगी। दाह सो प्रवांशि। आवट कटा होत
दे ओ भरबी ता जाइ। दाह करि ले बंदगी। राषण हार सु
दाइ। इस कलिके ते कै गये। हिंसु मल मान दा
इसा ची बंदगी। फूटा सब अति मान। पोथी अप
णां पिंड करि। हरि जस मोह लेष। पंक्ति अंणा प्राण क
रि दाइ कथो अलेष। दाइ काया हमारी कते ब
बोलियो लिष राषों रदि मोल। मन हमारा हुला बो लिये
सुरता है सुबहान। दाइ अलि फरे क अलाह का
जपटि जांशो कोइ। करान कते बाइल मसवा पटि करि
पूरा होइ। दाइ कायाम हल में निमाज गुजरी।
तहां ओरन अंवा रा पावे। मन मन को करित सबी फेरी
तब साहिब के मेनि सावे। दाइ दिल दरियो मे
गुमल हमारा। ऊज्ज्वल रचित लाल। साहिब ओग क

रोषं दंगी। बेबर बलि जाऊं॥४॥ दाह पंचौ सगि ससा लो
 सांई। तन मन तो सुषपाऊं। प्रेम प्रिया लापी वजी देवो क
 लमाये लेलाऊं॥५॥ सो साकार गिं सब करों। रो जाव
 गनि मां जा। मूवान एके आदि सों॥ जे उऊ साहिब सेती का
 जा॥६॥ दाह हरो जह जूरी होइर ऊ। काहे करै कलाप
 मुलां तहां पुकारिये। जहां अर सइ लाही आप॥७॥ हर
 द महा जिर कणा बाबा। जब लग जीवे बंदा। दाह म दिल सां
 ई सो स्या बति। पंच वषत कथा धंधा॥८॥ दाह हिं हमारु गव
 दं हमारु। उर कक देर ह मेरी। कलाप पहे क हो अलका
 उरु तो असी हेरी॥९॥ दाह उई दरो गलोक कौ सावे। सा
 ई साच प्रियारा। कौण पंथि ह मचलै क हो धो। साक्षे क हो
 बिचारा॥१०॥ षे ड षंड करि बुझ को। यधि पधिली या बाहि
 दाह पूर्ण बुझत जि। बंधे त्रम की गो गि॥११॥ जीवत ही से
 रोगिया। कहे मूं वाणी छे जाइ। दाह उ ऊ के पाठ में। असी
 दाहू लाइ॥१२॥ सो दाह किस का मकी। जा सो दरद न जा
 श। दाह काटे रोग को। सो दाहू लेलाइ॥१३॥ दाह अन से
 काटे रोग को। अन ह द न पजे आश। से जे का जल निर मला
 पोवे रुखिल्यो जाइ॥१४॥ दाह सोई अन से सोई ऊ य जी
 सोई सब द तत सारा। सुणाता ही साहि मिले। मन के जाहि
 बिकार॥१५॥ औषधि घाइन पछि रहे। बिष म व्याधिक
 जाइ दाह रोगी बावरा। दो से बेद को लाइ॥१६॥ एक स
 काठा उडा कूही सस्या। न जाइ। नूषन सागी जीव की
 दाह के तायाइ॥१७॥ पसुवा की नाई सरि सरि घाश व्या
 धि घोर। बधती जाइ। पसुवा की नाई करै अहार। दाह
 शोठे रोग अपारा। रां मर सइ रां सरि सरि पोवे। दाह जो गी
 सुगि सुगि जीवे॥१८॥

॥१॥ जनमममोलिकजातहै वैवेमांकीफल ॥१॥
 ॥२॥ श्रीअधोडीचावरीवेवे पेटफुलाइ दाइसकरस्वान
 ॥३॥ पुंजुआवेतुधाइ ॥४॥ दाइपाटापीठादाइकरि
 ॥५॥ कादिचितरीयाइनमेंजीवविलविद्या हरिनाउनली
 ॥६॥ गतिनजानैरामकी ॥७॥ इंदीकाअधीन दाइब
 ॥८॥ मासादसोतापेनाउनलीन ॥९॥ दाइअपनानीका
 ॥१०॥ राधेये मेंमेरादीयाबदाइ ॥११॥ उफअपणेसेतीकाज
 ॥१२॥ हेमेंमेरासावेतीधरिजाइ ॥१३॥ दाइजेदमजारापा
 ॥१४॥ येककरितोकाहेलोकरिसाहामेरायासामेंलीया
 ॥१५॥ लोगोकाकाजाइ ॥१६॥ दाइवैपदकीयेसाधीनी
 ॥१७॥ धेवारादमकौअनसेकपजी ॥१८॥ दमहानीसंसार ॥१९॥
 ॥२०॥ दाइसुणिमुणिप्रचेज्ञानके साधीगवदीहोरातबही
 ॥२१॥ आपानुपजे ॥२२॥ दमसाये ॥२३॥ इनकीसाइका ॥२४॥ दाइसेनुपजी
 ॥२५॥ किसकामकी ॥२६॥ जेजगजगकरैकवसासाधीमुणिसम
 ॥२७॥ जेसावकी ॥२८॥ जुरमनांरसमेस ॥२९॥ दाइपदजोडेसाधी
 ॥३०॥ कहे ॥३१॥ बिषेनजोडेजीवायाणीघालिबिलोईयेतोकांतरि
 ॥३२॥ निकसेधीव ॥३३॥ दाइपदजोडेकायाईये ॥३४॥ साधीकहे
 ॥३५॥ काहोइ ॥३६॥ सतिसिरेमणिसाईयां ॥३७॥ ततनचाम्हासेइ ॥३८॥
 ॥३९॥ कहिवेमुणिधेमनधुसी ॥४०॥ करिवाअरेवेवबातो
 ॥४१॥ निमरनसाजईदीवावातीतेन ॥४२॥ दाइकरिवेवा
 ॥४३॥ जेदमनही ॥४४॥ कहिवेकौदमसुराकदिवाहमपेनिकदि
 ॥४५॥ हेकरिवाहमपेइरि ॥४६॥ दाइकहेकहेकाहोतहे
 ॥४७॥ कहेवसीजेकाम ॥४८॥ कहेकहेकापाइये ॥४९॥ जबलगरिदेन
 ॥५०॥ आदिराम ॥५१॥ दाइकहेरामकरुतोजोडिवा ॥५२॥ राम
 ॥५३॥ करुतेसाधि ॥५४॥ रामकरुतेगाइवा ॥५५॥ रामकरुतेराधि
 ॥५६॥ दाइसुरताघरिनही ॥५७॥ बकताबकेसुवादि ॥५८॥ बकत

सुरतायेकरस कथाकहोवे आदि॥७२॥ बकतासुरता
 घरिनही कहेसुणैकोरांम॥ दाइयऊमनधिरनही॥ वा
 दिवकैवेकाम॥७३॥ देषादेषीसबचलोपारिनपऊच्या
 जाइदाइआं सणिपहलकोफिरिफेरिवेवेआइ॥७४॥
 बाहरिसुरजेदेषतांबऊरिअरुजेआइ॥ अंतरिसुर
 जेसमझिकरि॥ फिरिनअरुजेजाइ॥७५॥ आतमजा
 वेआपमो॥ साहिवसेतीनाहि॥ दाइकोनिपजेनही॥ इन्
 निरफलजाहि॥७६॥ हुंमुऊकौमोटाकहे॥ दौउऊव
 डाईमोन॥ साहिवकौसमजेनही॥ दाइऊगजान॥७७॥
 दाइसगतकहोवेआपकौ॥ नगतिनजाणैसेवा॥ सुधिने
 हीसमजेनही॥ कहांबसेगरदेव॥७८॥ दाइसेवगनाउं
 बुनाईये॥ सेवासुधिनेनाहि॥ नाउंधरायेकासया॥ जेय
 कनहीमनमाहि॥७९॥ नाउंधरावेदासका॥ दासातनये
 हरि॥ दाइकारिजकूसरे॥ हरिमोनही॥ दज्जुरि॥८०॥ नगत
 नहोवेसगतिबिन॥ दासातनबिनदास॥ बिनसेवासेवग
 नही॥ दाइऊगीआसा॥८१॥ दाइरामसगतिसावेनही
 अपणीसगतिकासावा॥ रामसगतिमुषमोकहे॥ बेलैअ
 यणांडाव॥८२॥ नगतिनिराली॥ रहिगई॥ हमसूख
 परेबेनमाहि॥ सगतिनिरजतरामकी॥ दाइपावेनाहि
 ॥८३॥ सगतिनजानैरामकी॥ इंडीकेआधीना॥ दाइव
 धेखादसो॥ ताथैनाउनलीक॥८४॥ सोद साकतकरह
 जिहिदिसिपऊंचेसाध॥ मैतैमूरिगगहिरहे॥ लोसबडा
 ईबा॥८५॥ दाइरामविसारिकारि॥ कीयेवऊअपर
 धा॥ लाजोमारेसेतसब॥ नाउहमारासाध॥८६॥ मनसा
 केपकवानसो॥ येदसरदो॥ जेकहियतुंकीजिये॥ तब
 हीवणिआये॥८७॥ दाइमिसरीमिसरीकीजिये॥

३४मीवानोही मीवानतली होइगा छिटकावैमांही
॥१०॥ दाइतीतोही पडवेनही ॥ घरहरिपयांना मास
पंथीउठिचले सोईसयांना ॥ ११॥ दाइतीसबकुळकी
जिये श्रितिकलूनहेषे मनसावाचाकमना तवजोगेनेषे
॥१२॥ दाइकासोकाहेसमजाईये मवकाचतुरसुजांन
कीडीऊजरआदिवे नोहेनकोईअयांन ॥ १३॥ दाइहूर
रखेनमेयालायघा श्रपरहेघटमाहि ऊजरकीडीजीव
सब पाडेजरीनोही ॥ १४॥ दाइसुनाघटसोक्षीनही पंढ
तबुलापूत आगमनिगमसबकपेघरमेनोचेंचत ॥ १५॥
पडेनपादप्रमगात पडेनलघपार पडेनहु जेचेंप्राणोया
दाइदीडुकारा ॥ १६॥ दाइनिवरेनोडविनाकहाकपे
मियोन बठेसरखालीकरे पंडितवेदपुरांन ॥ १७॥ दाइ
केतेडसकपटिमूये पंडितवेदपुरांन केत बुलाकथि
गवे नोहिनरांमसमान ॥ १८॥ दाइसबहमदेयासोहि
कांरवेदउरानोमाहि जहांनिरंजनपाईये सोदेसहरि
इतनाहि ॥ १९॥ पटिपटियाकेपडिता किनकनपाय
पार कथिकथिधाके निजना दाइनाईश्रधारा ॥ २०॥
दाइकाजीकजानजानही कागदहाधिकतेदाघटता
हतादिनगये सीतारनाहीसेव ॥ २१॥ मसिकागदकेश
सिरै कूंलुहेसंसाररांमविनाबुहेनही ॥ दाइसरमदि
रा ॥ २२॥ कागदकालेकरिमूये केतेवेदपुरांन येवे
धिरपीवका दाइपडेसुजांन ॥ २३॥ दाइअधिरपेमव
कोईपडेगायेका दाइउस्तदापेमविन केतेपडेअने
॥ २४॥ दाइपातीप्रेमकीविरलाबोचेकोइविवडु
सुस्तकपडेप्रेमविनोक्याहोइ ॥ २५॥ दाइकदताव
दिनगये सुगतांसुगतांजाइ दाइअसाकोनही ॥

सुगिरांमसमा॥१०॥मौनिगहैतेबावरे।बोलेंवरेअपान स
 दहैरातेरांमसौ॥दाहसोईसयांना॥१०॥क हतासुगतादि
 गयेकेकछनआया।दाहहरिकीसगतिबिन।पाणीपवि
 ताया॥१०॥दाहकथणीऔरऊछ।करणीकरैऊछऔ
 र तिनथैमेराजीवडरे।जिनकेतिकनठोर॥१०७॥अंतरगा
 तिऔरैकछ।पुषरसनाऊछऔर।दाहकथणीऔरऊछ
 तिनकोनाहीठोर॥१०८॥दाहरांममिलनकीकहतहै।कर
 नऊछऔर।ऐसेपावकापाईये।समझिमनबोर॥११०॥
 दाहबगनीसंगाघाइकरिमतिवालेमांज।पैकानांहीगांठ
 डी।यतिसाहीघाजो॥१११॥दाहटोटादालदी।लाषोका
 बोझारापैकानांहीगांठडी।सिरेसाककार॥११२॥दाहयेस
 बकिसके पथमै।धरतीअरुअसमान।पाणीपवनादन
 रातिका।चंदसररदिमोन॥११३॥दाहबस्याविअमदेस
 का।कोणपथगुरदेव।साईसिरजनहारहू।कहियेअल
 पअसेव॥११४॥दाहमदमंदकिसकेदीनमै।जबरइल
 किसराह॥इनकेमुखसिंदपीरकी।कहियेयेकअलाह॥
 ॥११५॥दाहयेसबकिसकेकौरहे।यऊमेरेमनमांदि अल
 पइलाहीजगतगुर॥इजाकोईनांदि॥११६॥दाहऔरैही
 ओलातकौ।पीयांसदेबियनि।सोहंमीयांनाधुरे।जोमीया
 मीयनि॥११७॥आईरोजीजंगडी।साहिबकादीदार गदि
 लालोगोकारने।देखेनहीगंदार॥११८॥फलकारणिसेवा
 रे।जोचैटवनराव।दाहसोसेवगनही।बोलेंअपणाडाव
 ॥११९॥सहकांमीसेवाकरै।मोगीमुगधगद्वार।दाहऐसेब
 डतेहै।फलकेसूचराहार॥१२०॥तनमनलेलागारहै।रा
 ना।सिरजनद्वारा।दाहऊछमोगेनही।तिविरलाससार॥
 दाहमोईसेवगरांमका॥

को सावेनही येका राया मोत ॥ १२० ॥ अथानी अथानी जा
 तिसो तब कौबे से पाति दाह से दग राम का ता के नही सर
 ति ॥ १२१ ॥ चौर अन्याई म सक रा सब मिलिबे से पाति दाह
 से दग राम का तिन सौ करै सराति ॥ १२२ ॥ साध गया सहिना
 ता कौ सब मिलि मोरै लोक दाह असा देखि ऐ कलका डग
 रा को क ॥ १२३ ॥ दाह हनु मर महे दिह डर कग चोर जे डक
 वा धेर दन दे सो ग दिन त बिचार ॥ १२४ ॥ दाह सब जाये
 कटले घर मै बडी बलाइ काल जाल इम जीव का बात
 निही कहे जाइ ॥ १२५ ॥ अथानी अथानी करि लीया तं जन्म
 है बाहि दाह ये के कप जल मेन का सर मनुकाइ ॥ १२६ ॥ दा
 ह पोरी के बजना उधरि नाना बिधिकी जाति बोल गदा
 र कौ राहे कदौ कौ कदौ समात ॥ १२७ ॥ दाह जब पूर्ण ब
 बिचारिये तब सकल आतमां ये का काया के गुण देखि
 ये तो नाना बरान अनेक ॥ १२८ ॥ दाह लीला राजा राम की
 २ घेलै सब ही संत आपा पये के सया बूटी सबे सर त ॥ १२९ ॥
 अथानी पराया दाह बिष देखत ही परि जाइ दाह को जी
 न ही इहि सौ रै जिनिषाइ ॥ १३० ॥ दाह सो वे साधत न गहे
 बिषे हला हलसाइ तहां जे न ते रा राम जी सुधि नै कटेन
 जाइ ॥ १३१ ॥ दाह साव न गति उपजे न ही साहिब नम
 ग बिषे बिकार लूटे न ही सो कै सा संत संग ॥ १३२ ॥
 वासना बिषे बिकार के तिन कौ आहर मान संग
 नहार के तिन सौ बब गुमान ॥ १३३ ॥ दाह अंधे कौ
 लीया तो सीति मरन जाइ सो क्षी न ही सर रक
 निकास मजाइ ॥ १३४ ॥ दाह कहिये ऊछ उपग
 नै औ गुण देख अंधे कप बतारिया सतिन मान
 काल बिषे तन पीजे जेवा है सो वार दा

दाहसाचा अंगन ठेलिये साहिव मांनै नाहि साचा
सिरपरिराविये मिलिरहियेता मांनै दाहसाचेसा
हिव कौमिले साचि मारग जाइ साचेसौ साचा सया तब
साचेली पाहुलाइ दाहसाचा साहिव सेविये साची
सेवा होइ साचा दरसन पाईये साचा सेवग सोइ
साचेका साहिव धणी संमंथ सिरजेनहार पाषं
कीय ऊप्रियमी प्रपंचका संसार ऊठा प्रगतसा
चाछांनै तिनकी दाहरो मनमन मांनै दाहकहा
आसिक आलाह के मारे अपनैहा य कहा आन
म औजदसौ कदै जवा की बात दाह पाषं दुपाठ
न पाईये जे अंतरि साचन होइ ऊपर ये कूंदीर हो
नीतरि के मत होइ साच अमर गुणि गुनिरे दे
दाह बिरला कोइ ऊठ बजत संसार मै उतपति प्रले
होइ दाह ऊठा बटलिये साचन बटल्या जाइ
साचा सिरपरिराविये साधक है समजाइ साचन
सुजे जब लगे तब लगलोचन अध दाह मुकता छाडि
करि गलेमै घाल्या फंध साचन सुजे जब लगे
तब लगलोचन नाहि दाह न बंध छाडि करि बंधाधे
पषमाहि करम फिरावै जीव को करमों कंकर
रतार करतार कों कोई नही दाह फेरगा दार जे
साहिव सिरजेन ही तो आपे कंकरि होइ जे आपे
ऊपजे तो मरि करि जीवो कोइ जेय ऊकरत
जीवया संकटे कूं आया करमों के वसि कूं सया
कूं आप बंधाया कूं सब जोनी जगत मै घरबारि
चाया कूं य ऊकरता जीव के प्रहाधि बिकाया
येक साच सगद गही जीवग मरी निबादि दा
ह साचा साचन साचन साचन साचन दाह सा

तहां विपाईये साचनछोनां दोइ सो सरसातलिगगनध
प्रगटकर्ये सोइ ॥ १७ ॥ दाइकहां थानारदमुनिजनां कां
होसगतप्रदवाइ प्रगटती नुं लोकमें सकलप्रकारे
साध ॥ १८ ॥ दाइकहां सिवबैठाधानधरि कहां कली
गनां सो कहां नां दोइ गां जेरुवां हे गारां ॥ १९ ॥ दा
इकहां लीन सुषट्टे वया कहां पीपारे दारा दाइसाचा
कूनिपे सकललोकप्रकासा ॥ २० ॥ अगगजगोत्तरय
धिये करिकरि कोटिजतन ॥ दाइछानां कां रहे जि सध
दिरां मरतन ॥ २१ ॥ दाइ अगपयाजमें माचा धें विनां
सकललोकसिरी देधिये प्रगटसवही गोमुं ॥ २२ ॥ छोने
छोने कीजिये चौडे प्रगटहोइ दाइपे सिपयाजमें
बुराकरे जिनि कोइ ॥ २३ ॥ अगकां याजामें नही कां
याजागे आइ सादिव के टरियावदे जेऊ बरां मरजा
इ ॥ २४ ॥ सोई जेन साधु सिध सो सोई मतवाटी सूर सो
ई मुनियर दाइ वढे सन सुषरहणि हजरि ॥ २५ ॥ दाइ सो
ई जेन साधे सो सती सोई साठिक सुजारा सोई गानी
सोई पंडितां जेरते लगवान ॥ २६ ॥ दाइ सोई जेनां सोई
अयमां सोई सोफी सोई मय सोई मया सो सेवडे दा
इयेक अलेषा ॥ २७ ॥ दाइ सोई काज सोई मुलां सोई
मोनिन मुसलमान सोई सदां नें मलन जेरते रहिमां
न ॥ रामनां नको बराजगावै देतापें मांडया हाट
सोई सो दाकरें दाइ कोलिकपाट ॥ २८ ॥ विटके
रखकरें पूरे ॥ २९ ॥ चानसां न
नदी जे दाइ ॥ ३० ॥ दाइ दाइये वि
जिनि कोइ न ॥ ३१ ॥

रामको तो कोरा गेदेगा दाइ ह म न हो उ च रे तो कोरा
कहे गा ॥ १७ ॥ ये कर राम चामै न हो छोडे सकल बिकार
इजा सह जे होइ सब दाइ काम न पार ॥ १८ ॥ जे चू चहे
रामको तो एक मेना आराध दाइ इजा हरि करि मन
इं डी करि साध ॥ १९ ॥ कबीर बिचार कहि गया बड
त सांति समजाइ दाइ इ नियां तावरी ताके संग न जा
इ ॥ २० ॥ पाद दिगे उ सवार को लघै गये ऊ घाट दाइ
क्या कहि बोलिये अज कुं बिच ही बाट ॥ २१ ॥ सावारा
सा च सौ दाइ राता ऊत दाइ न्यावन बेरिये सब साक्षे
एछे ॥ २२ ॥ जे पऊ चेतै एछिये तिन कीये कै बात सब सा
क्षे काये कमत ऐ बिच के वार हवाट ॥ २३ ॥ जे पऊ चेतै
कहि गये तिन कीये कै बात सबे सयां ने ये कमत उन
कीये कै जात ॥ २४ ॥ सब सयां ने कहि गये पऊ चे का धर
एक दाइ मारग मां हिके तिन की बात अनेक ॥ २५ ॥ सूरि
ज मन मुठ आर सी पाव की या प्रकास दाइ साई साध
बिच सह जे निप जे दास ॥ २६ ॥ सूरि ज साधी तत दे सा
च करै प्रकास चोर करै चोरी करै ऐति मर कानास
॥ २७ ॥ चोर न सावे चांदरां जिनि उजियारा होइ सते
का सब धन हडौ मुजै न देवे कोइ ॥ २८ ॥ छल करि बलि
करि घाइ करि मारे जिदि तिहि फेरि दाइ ताहि न क्षी जिये
प्रणो सगी पतेरि ॥ २९ ॥ घटि घटि दाइ कहि समजावे जे
सा करै सुते सा पावे को काहु का सीरी नाही साहि बदे
ये सब घट मांही ॥ ३० ॥
दाइ न मोन मो निरंजन नम सकार गुर देव तह बदन अ
ब साधवा प्रणाम पार गतह ॥ ३१ ॥ दाइ बडे सांन सब च
उराई जलि जाइ अजनमं जन फकिदे र दोराम ल्यो न
इ ॥ ३२ ॥ राम जिनो सब सी को नामो करे कृपा गिरां

सकल अथवा कोटिकरि दाह जो अधियां न ॥ सोनी पंक्ति
न ब्रजत है दाता सूर अनेका दाह सेष अने तहे लागिरिया
सो एक ॥ ४ ॥ कोरा कल स अवाहका कपरि चित्र अने
का कया की जे दाह वस्तु बिना ॥ ऐसे नाना सेष ॥ ५ ॥ बाहरि
दाह सेष बिना ॥ सीत रिबस्त अगाध ॥ सो लेहिरि रेशा दिय
दाह सन मुख साध ॥ ६ ॥ दाह सांडा तरि धरि वस्तु सौ ॥ अंम
हो मोलि बिकाइ ॥ घाली सांडा वस्तु बिना ॥ कोडी बटलै ज
॥ ७ ॥ दाह कनक कल स बिष सौ सस्या ॥ सो किम अवा
कांम सोधनिकूटा चांमका ॥ जा में अंम तरांम ॥ ८ ॥ दाह
देधे वस्तु कौ ॥ बास गदेधे नाहि ॥ दाह लातरि तरि धस्या ॥ सो
मेरे मन मां हि ॥ ९ ॥ दाह जे हंस म जै तो कही ॥ साचा एक अ
लेष ॥ डाल पांन तजि मूल गहि ॥ क्या दिष लावे सेष ॥ १० ॥
दाह सब दिष लावे आप कौ ॥ नाना सेष वरा ॥ जहां आ
पामे दगा हरि न जेन ॥ तिहिं दिसि कोई न जाइ ॥ ११ ॥ दाह सा
कत कर है ॥ जिहिं दिसि पऊ चे साध ॥ मै तें मरिष गहिरि दे
लो सब डारि बादा ॥ १२ ॥ दाह सेष ब्रजत संसार में ॥ हरि जे न
बिरला कोइ ॥ हरि जे न रातारांम सौ ॥ दाह ऐकै सोइ ॥ १३ ॥ ही
रेशा जै जो दरी ॥ धलेरा जै संसार ॥ स्वांगि साध ब्रज अंतरा
दाह सति बिचार ॥ १४ ॥ स्वांगि साध ब्रज अंतरा ॥ जेता ध
रणिं अकासा साध रातारांम सौ ॥ स्वांग जगत की आस
॥ १५ ॥ दाह स्वांगि सब संसार है ॥ साध बिरला कोइ ॥ जे से
चंदन बावना ॥ बने बने कही न होइ ॥ १६ ॥ दाह स्वांगि सब
संसार है ॥ साध कोई ऐक ॥ हीरा हरि दिस तरांम कंकर अ
र अनेक ॥ १७ ॥ दाह स्वांगि सब संसार है ॥ साध समंदा पा
र ॥ अनल पंथ कही पाईये ॥ पंथी कोटि देजार ॥ १८ ॥ दाह
स्वांगि सब संसार है ॥ साध सोधि सुजाण
दाह ब्रजत वंशला ॥ १९ ॥ दाह चंद

नाह सकल समदहीरानही तूंसाधुजगमोहिं ॥ १० ॥ जेसा
ईकाकैरदे साईतिसकाहोइ दाइइजीबातसब नेछिन
पावैकोइ ॥ ११ ॥ दाइखांगसगाईकुछनही रामसगाई
माच दाइनातानांनका इजेअंगनराच ॥ १२ ॥ दाइएके
आतमा सादिवहेसबमोहिं सादिवकैनांतेमिले ने
षपंथकैनाहि ॥ १३ ॥ दाइमालातिलकसौकुछनही
काकसैतीकाम अंतरिमेरेयेकदे अहनिमनुसकानां
म ॥ १४ ॥ दाइसंतुसेषधरिण्याबोलै निद्याप्रनुपवाद सा
चेकौऊठाकहे लागैबहुअपराध ॥ १५ ॥ दाइकबहु
कोईजिनिमिले सगुनेषसौजाइ जीवजनमकानास
हे कअमृतविषषाइ ॥ १६ ॥ दाइपहुंचेपुतबटाऊकेक
रि नटजुंकाकुपासेषषवरनपाईबोजकी हमकौमि
ल्याअलेष ॥ १७ ॥ दाइमायाकारणमममुडाया एकतो
जोगनहोई पारब्रह्मसौपचानाहो कपटिनसीकैकोई
॥ १८ ॥ पीवनपावैबांवरी रचिरचिकरैसिंगार दाइफि
रिफिरिजगतसौ करैगीबिभचार ॥ १९ ॥ धेमप्रीतिसने
हनिन सबऊठेसिंगार दाइआतमरतनही कमां
नेनरतार ॥ २० ॥ दाइजगदिषलावैबांवरी छोडसक
रैसिंगार तहांनसवारे आपकौ जहांसीतरिसरता
॥ २१ ॥ सुधबुधजावधिजाइकरि मालासंकलबाहि
दाइमायाज्ञानसौ त्वामीवैगवाइ ॥ २२ ॥ जोगीजंगमसेवडे
बोधसंन्यासीसेषषट्ठरसनदाइरामबिम सबैकपटकेसे
ष ॥ २३ ॥ दाइसेषममाइकअवलिया पिकवरअरुपीर
दरसनसौपरसननही अजकूवेलीतार ॥ २४ ॥ नांनसेष
बणाइकरि आपादेबिदिषाइ ॥ २५ ॥ दाइइजाइरि करि स
दिवसौल्योलाइ ॥ २६ ॥ दाइदेषादेषीलोकसब कैतेश्र
व दिजाहि रामधनेहीनांमिले जेनिजदेवैमोहिं ॥ २७ ॥

दाह सब देखै अस पलकों ॥ यज्ञ त्रैसा आकार ॥ सविम सह
 जेनसु ऊई ॥ निराकार निरक्षरा ॥ ३० ॥ दाह बाहर का सब दे
 त्रिये ॥ सीतरि नृषाम ॥ बाहरि दिषावा लोक का ॥ सीतरि
 रांम दिषा ॥ ३१ ॥ दाह यज्ञ परषसराफी ऊपली ॥ सीतरि
 की यज्ञ नोहि ॥ अंतर की जां रों नही ताथें घोटा घोहि ॥ ३२ ॥
 दाह सचु बिन साई नो मिले ॥ भावै सेष बगगा ॥ सावै करव
 त उध मुख ॥ सावै तीरथ जा ॥ ३३ ॥ दाह साचा हरिकानो न
 दे सोले हिरदै राषि पावें रूप च हरिकशि ॥ सब साधों की
 साधि ॥ ३४ ॥ हिरदै की हरिले ॥ अंतर जां मीरा ॥ साच
 दिया रांम को ॥ कोटिक करि दिष ॥ ३५ ॥ दाह मुख की ना
 गहै ॥ हिरदै की हरिले ॥ अंतर मुख एक सौ तो बोल्या दे
 संन दे ॥ ३६ ॥ सब चउराई देषियो ॥ जे ऊछ की जे आन में
 नग हिराषे एक सौ ॥ दाह साधु जु जान ॥ ३७ ॥ सब सुई सु
 रति धगा ॥ काया कं पाला ॥ दाह जोगी जु गि जु गि पहरै
 कबलंका टिन जा ॥ ३८ ॥ ग्यान गुरु का गुरु डी ॥ सब दग
 रुका सेष ॥ अतीत हमारी आतमा ॥ दाह पथ अलेष ॥
 ३९ ॥ दाह सक अजब अब दाल दे ॥ दरदवंद दरवे स ॥ दाह सिका
 सब रहे ॥ अकलि पीर उपदेस ॥ ४० ॥ दाह सत गुरि माता में
 न दीया ॥ पवन मुरति सौ पो ॥ बिन दायों निस दिन जपै ॥
 प्रम जाप्यौ दे ॥ ४१ ॥ दाह ऊजारा ता ऊठ सौ ॥ साचारात
 साच येता अंधन जां राही ॥ कहां कंचन कहां काव ॥ ४२ ॥
 अंग ॥ ४३ ॥ साधु १५ ॥ ४४ ॥ साधु लो अंगति ॥ ४५ ॥
 दाह नमो नमो निरंजन ॥ नम सकार गुर देव तह ॥ बदन शब
 साधवा ॥ उगां मे पारंगत ॥ ४६ ॥ दाह निराकार में न मुरति
 सौ ॥ प्रेम प्रीति सौ से ॥ जे पूजे आर को ॥ तो साधु पत बिदे
 ॥ ४७ ॥ दाह सो जन दी जे देह को ॥ लीया में न

मुखमे लता पाया आतम रांम ॥ ११ ॥ जंय काया जीवकी तं
 साई के साध दाइ सब संतोषिये मां दें आप आगाध ॥ १२ ॥ साध
 जंन संसार में सौ जल बोहिय अंग ॥ दाइ के ते उधरे जे ते बेठे
 संग ॥ १३ ॥ साध जंन संसार में सीतल चंदन बास दाइ के ते उध
 रे जे आये नुन पास ॥ १४ ॥ साध जंन संसार में दोरे जे साढो
 इ दाइ के ते उधरे संगति आये सोइ ॥ १५ ॥ साध जंन संसार में
 पारम प्रगट गाइ दाइ के ते उधरे जे ते प्रसे आइ ॥ १६ ॥ सुख व
 वं न राइ सब चंदन पासै दोइ ॥ दाइ बास लगाइ करि
 कीये सुगंधे सोइ ॥ १७ ॥ जहां अरंडु अरु अक पे तहां चंद
 न कुणामां दिं दाइ चंदन करि लीये ॥ आक कंदे कोना दिं
 ॥ १८ ॥ साधन दी जल रांम रस तहां पषाले अंग ॥ दाइ नम
 लम लगये साध जंन के संग ॥ १९ ॥ साध बरवै रांम रस अंग
 त बांणी आइ दाइ दरसन देखतां ॥ रब धिता पतनि जाइ
 ॥ २० ॥ संसार बिचारा जात दे ॥ बहिया लहरि नरंग सेरे
 बैठा कुबरे ॥ मति साध के संग ॥ २१ ॥ दाइ ने डाय प्रपद सा
 ध संगति मां दिं दाइ सहजै पाईये ॥ कबहुं निरफल मां दिं
 ॥ २२ ॥ दाइ ने डाय प्रपद करि साध का संग ॥ दाइ सहजै
 पाईये ॥ तन मन लागै रंग ॥ दाइ ने डाय प्रपद साध संगति व
 ॥ २३ ॥ दाइ सहजै पाईये ॥ स्यावति मन मुख सोइ ॥ २४ ॥ दाइ ने
 प्रपद साध जंन के साध दाइ सहजै पाईये ॥ प्रपद रप
 दाया ॥ २५ ॥ साध मिलै तब ऊपजे ॥ दिरदै हरिका सात द
 इ संगति साध की ॥ जब हरि कोरे पमाव ॥ २६ ॥ साध मिलै त
 ऊपजे ॥ दिरदै हरिका देत ॥ दाइ संगति साध की ॥ किर पाव
 रैत बदेत ॥ २७ ॥ साध मिलै तब ऊपजे ॥ प्रेम संगति रुचि व
 दाइ संगति साध की ॥ दया करि देवे सोइ ॥ २८ ॥ साध मिलै त
 ब ऊपजे ॥ दिरदै हरि की पास ॥ दाइ संगति साध की ॥ अति

गतपुरवे आस ॥ २॥ साधमिलेन बहरिमिले स बसुध आ
 नेद मूर दाइ संगति साधकी ॥ रां मर दासर पर ॥ २॥ अ
 कथा उमये ककी ॥ जानां ही आन दाइ तन मन लाइ
 करि सदा मुरति रम पोना ॥ २॥ येम कथा हरिकी कहे क
 रे संगति लोलाइ ॥ पीवे पिलावे रां मर स ॥ सो जे नमि लंवा
 आइ ॥ २॥ दाइ पावे पिलावे रां मर स ॥ येम न गति गुणागा
 इ नित प्रतिकथा हरिकी करै ॥ देत सदन लोलाइ ॥ २॥
 आन कथा ते करी ॥ द गति सुणाते आइ ॥ तिसका मुख
 न कहे दई न दिवाई ताहि ॥ २॥ दाइ मुख दिख लाई सा
 धका ॥ जे उम्ह मिलावै आइ ॥ उम्ह मांही अंतर करै
 दई न दिवाई ताहि ॥ २॥ जब दरबोन बदी जियो ॥ उम्ह पे
 मां गौये द ॥ दिन प्रति दर सन साधका ॥ येम संगति दिठ दे ज
 ॥ २॥ साधम पीडा मन करै ॥ सत गुर सब द सुणाइ ॥ मीरा
 मेरा भिदर करि ॥ अंतर बिबरव उपाइ ॥ २॥ जे जे होवै त
 कहे कटि बक्षि कहे न जाइ ॥ दाइ सो मुख आतमा साध
 प्रसे आइ ॥ साद्वि सौ मन मुखरे दै ॥ सत संगति भे आ
 इ ॥ दाइ साध सब कहे ॥ सो निरफल करे जाइ ॥ २॥ बुद्धागा
 इ टप लोक मै ॥ साध असथ न पोना ॥ मुख मारग अमृत करै
 कत हटै दाइ आन ॥ २॥ दाइ पाया ये मर स ॥ साध संगति
 मोहि ॥ फिरि फिरि देखे लोक सब ॥ एकर सकत हं नाहि
 ॥ २॥ जिसर सकौ मुने पर मरे ॥ मुर नर करै कलाप सोर स
 सह जे पाईये ॥ साध संगति आया ॥ संगति बिन सीके
 नदी कोटि करै जे कोइ ॥ दाइ सत गुर साध बिन कबल
 सुध न होइ ॥ २॥ दाइ ने दाइ रिपे ॥ अ
 मं म बावा कमना ॥ दाइ संगति साध ॥ २॥
 होइ मन ॥ वेदन वेदन पाय ॥ नीक न संगति ॥ २॥

एकला सेवगसांभीदोइ जगतइहागीरामबिन साधसुद
गीसोइ दाइजेनसुधियातये ॥ इनियांकोबकुदद
इनीइषी ॥ दमदेषता साधनिंमदाआनंद ॥ दा
इदेषतदससुषी सोईकेसंगिलागि योंसोसुधियादोइग
जाकेपूरेसाग ॥ मीठापीतैरामरस सोभीमीठादोइ स
दजैकडु।तामितिगया दाइनिरविषसोइ ॥ दाइअंत
रियेकअ नेतसौ सदा निरंतरधाति जिहिंघाणीधीतमब
से सोबेताटसवनजीति ॥ दाइमेंदासातिदिदासव
जिहिंसंगेलेपीव बकुतजातिकरिदारो।तापरिदी
जेजीव ॥ दाइलीलाराजारांमकी धेलेसबहीसंत ॥
आपांघयेकेसया कुटीसेबे भरंति ॥ दाइआनंदसव
अडोलसौ रांमसनेहीसाध धेमीधीतमकोमिले यऊसु
षअगमअगाध ॥ दाइसदलीनआनंदमें सदजरूपस
बवोर दाइदेधेयेककोइ जानांदीओर ॥ दाइयऊघट
दीपकसाधका बुद्धजोतिप्रकास दाइपषीमंतजन त
दापरैनिजदास ॥ दाइघरबनमोदेंराधिये दीपकजोति
जगाइ दाइघाणपतंगसब जहादीपकतहाजाइ ॥ दाइघ
रबनमोदेंराधिये दीपकजलताहोइ दाइघाणपतंगस
बजाइमिलेसबकोइ ॥ दाइघरबनमोदेंराधिये दीपकध
गटप्रकास दाइघाणपतंगस ब ॥ आइमिलेउसपास
॥ दाइघरबनमोदेंराधिये दीपकजोतिसहेत दाइघा
णपतंगसब ॥ आइमिलेउसहेत ॥ जिहिंघटिप्रगटरा
महे सोघटतज्यानजाइ नेनौमोदेंराधिये दाइआपन
साइ ॥ दाइजिहिंघटिदीपकरामका निहिंघटनिम
रनहोइ उचिउजियारेजोतिके सबजगदेधेसोइ ॥ दाइ
कबहुनबिदुदेसोसला साधुदितमंतहोइ दाइ

नदीनारां मानेह मनःसी अस्थिरतर लाहसकल
गुणद्वे निगकारसामितिरद अतःसगतिदरिले
ह दाहक्यकरिपाइये उमचरनोकीवेद साध
महामजामिरद मलाकदनलोह दाहपकषमनदी
कमनलोकोलाह साधमहामजामिरद मेलकदनलो
ह मुनिसरोवरदमना दाहविरलाकाह साध
कानागद्वारसत मेवासादेदाह दाहगवयसाधता
इजानादीकोह दाहजललगांनेननदीएय साध
कदेतेअंगतबलमक्यकरिमानिये साहबकापस
ग ॥८८॥ दाहसोईजनसाधसिधसो ॥ सोईसकलसिरिमे
राजिदिकेदिरदेहरिबसे इजानादीओरा ॥८९॥ साधसि
रोमणिंसाधिले नदीपरिपरिआइ सजीवनिशाम्नाचेहे
इजाबदियाजाइ ॥९०॥ दाहओगुणछांडेगुणगोहे सो
ईसिरोमणिंसाध गुणओगुणधैरहितेहे सोनिजबुदा
अगाध ॥९१॥ दाहसीधवफटकपषाणका ऊपरियेके
रागाणीमोदेदेधिये आरान्यारा अंगा ॥९२॥ दाहसीधव
केआपानही नीरधीरधसंग आपाफटकपषाणके ॥
मिलेनजलकेसंग ॥९३॥ दाहसवजगफटकपषाण देसा
धसीधवहोइ साधवयेकेकेरहा पाणीपथरदोइ ॥९४॥
अवेपहरअरसमें उसोईआहे दाहपसेतिनके अलागा
लाये ॥९५॥ अवेपहरअरसमेंवेवापिरीपसंनि ॥ दाह
पसेतिनिके जेदीदारलहनि ॥९६॥ अवेपहरअरसमेंजि
न्दीरुहरहनि दाहपसेतिनके गुंजीगालीकेनि ॥९७॥ अ
वेपहरअरसमें लुडंदाआहीन दाहपसेतिनिके असो
पुतरिहीन ॥९८॥ अवेपहरअरसके
सोहपसेननिके किनेईआहीन ॥९९॥

का आसिक अरसदिवनि अठपदर अलाद दा सुदद
व जीवनि ॥ १०१ ॥ आतम आसण रां मका तदा बसे नगवा
न दाइ इ नू प स पा हरि आतम का थान ॥ १०२ ॥ नदाय
मनदा संत जेन जदा साधु तदा रां म दाइ इ नू ये कवे
अरस प्रस वि श्राम ॥ १०३ ॥ हरि साधु पाईये अविगत
के अर र्ध साधु संगति हरि मिले ॥ हरि संगति ये साध
॥ १०४ ॥ रां मनां म सौ मिलि रदै मन के छाडि बिकार ॥ तो
दिल ही मो दै देषिये ॥ इ नू का दी दार ॥ १०५ ॥ साधु जन
उस दे सका ॥ को आया इ हिं ससार दाइ उस को पूछि ए
प्रातम के समाचार ॥ १०६ ॥ समाचार सति पीव के को सा
धु के देगा आइ दाइ सीतल आतम ॥ सुख में रहे समाइ
॥ १०७ ॥ साधु सब द सुख रिषि दे ॥ सीतल हो इ सरीरा दाइ
अंतरि आतम पीवे हरि जल नीर ॥ १०८ ॥ दाइ दत द
रबार का को साधु बोटे आइ तदा रां म र स पाईये ॥ ज
दां सां धु तदा जाइ ॥ १०९ ॥ दाइ सुरता सने ही रां म का मो
मुळ मिलवो आणि ॥ तिस आगे हरि गुण कथो ॥ सुगत
न कर ई कोणि ॥ ११० ॥ सब ही म त क समान दे ॥ जीयात
बही जाणि दाइ छाटा अमी का ॥ को साधु बोटे आणि
॥ १११ ॥ सब ही मिरत क कैर दे ॥ जीवे को न पाइ ॥ दाइ अर
त रां म र स ॥ को साधु सीचे आइ ॥ ११२ ॥ सब ही मिरत क मा
हि दे ॥ कं करि जीवे सोइ ॥ दाइ साधु प्रेम र स ॥ आणि पि
लावे कोइ ॥ ११३ ॥ सब ही म त क देषिये ॥ कि दि बि धि ज
वे जीव ॥ साधु सुधार स आणिक रि ॥ दाइ हरि षे पीव
॥ ११४ ॥ हरि जल बरिषे बाहिरा ॥ स के काया धेत दाइ इ
रिया होइ गा ॥ सी चण दा र स चेत ॥ ११५ ॥ गंगा जमना र
र सती ॥ मिले जब सागर मां हि ॥ घारा पाणी के गया
इमी वना दि ॥ दाइ रां म न छां डिये ॥ गहि ले

जिसंसार साधसंगति सोधिले कुसंगति संगति वार ॥ ११९ ॥
जपतप करणी करि गये अगपहुं ते जाइ ॥ दाइ मन की
वासना न कपडे फिरि आइ ॥ १२० ॥ दाइ कुसंगति सब
पदरी मात पिता कुल कोइ ॥ सजेन सनेही बंधवा सादे
आपा होइ ॥ १२१ ॥ अग्र्यांन मूरिषदितो कारी ॥ संजने स
मोरि पद ॥ ग्यात वात जंतने निरामई मनो जित द ॥ १२२ ॥
कुसंगतिके ते गये ॥ जिन कानां उंन गंउं ॥ दाइ ते कं नु धरे ॥
साधन ही जिय गां व ॥ १२० ॥ भावत गति का संग करि ॥ ब
ट पारे मोरै बाट ॥ दाइ वारा मुकं तिका ॥ खोले जडै कपाट
॥ १२१ ॥ दाइ साध संगति अंतर पडे ॥ तो सागे गाकि सगे र
पेम संगति सावे नही ॥ यजु मन का मत और ॥ १२२ ॥ बेरा
गी बन में बसे ॥ घर बारी घर मांदि ॥ रांम निराधार दिगया
दाइ इन में नांदि ॥ १२३ ॥ दाइ रांम मिलन के कारण ॥ जे नू
षरा नुदास ॥ साध संगति सोधिले रांम नु नंऊ के पास ॥ १२४ ॥
दाइ रांम मिलन की कहत है ॥ करत कुठ और ॥ ये से पी
व कर पाईये ॥ सम कि मन बोरे ॥ १२५ ॥ दाइ सोई सो वगारा
मंका ॥ जिसे नइ जी चीत ॥ इजा को नावे नही ॥ ये कपियारा
पीत ॥ १२६ ॥ मृनि गहे ते वाचरे ॥ बोले घेर अयांन ॥ सदे जे
राते रांम सो ॥ दाइ सोई सयांन ॥ १२७ ॥ ब्रह्मा संकर से समु
नि नाश दूष सुष देव ॥ सकल साध दाइ सही ॥ जे लागे हरि
सेव ॥ १२८ ॥ साधक वल हरि बासना ॥ संत सवर संगि आ
इ ॥ दाइ परिमल ले चले ॥ मिले रांम को जाइ ॥ १२९ ॥ दाइ सह
जे मेला होइ गा ॥ दम नु म्हरि के दास ॥ अंतरि गति तो मि
लिरहे ॥ फुनि प्रगत पकास ॥ १३० ॥ आनम मोदें रांम दे
पूजा ताकी दोइ ॥ सेवा बदन आरती ॥ साध करै सब कोइ
॥ १३१ ॥ संत उतारै आरती ॥ तन मन मंगल चार ॥ दाइ बलि
॥ लि वारण ॥ उम्ह परि सिर जंत दार ॥ १३२ ॥

रिमोटेभाग साधुकादरसनकीया कदाकरजमकालराम
 सादरासशिष्याया ॥१३॥ दाहयेताअविगतआपये साधु
 कौअधिकारचौरमीलष जीवका तनमनफेरिसवा ॥
 ॥१४॥ विषकाअमृतकरिलीया पावककापाणी बाका
 स्रक्षकरिलीया सोसाधविनांनी ॥१५॥ दाहकरापूरक
 रिलीया धारामीगहोइ फटासागकरिलीया साधव
 मेकीसोइ ॥१६॥ बधममुकताकरिलीया अरज्यासुरकि
 समान बेरीमीताकरिलीया दाहनुतमसान ॥१७॥ ऊठा
 साचाकरिलीया काचाकंचनसारमेलातु मलकरिली
 या दाहसानविचार ॥१८॥ कोटिवरसलौराधिये वंस
 चंदनपास दाहगुणलीयेरहे कटेनलागेवास ॥१९॥ को
 टिवरसलौराधिये पथरपाणीमाहि दाहआनाअगडे
 नीतरिसेटेनाहि ॥२०॥ कोटिवरसलौराधिये लोहापा
 रससंग दाहरोमकाअंतरा पलटेनाहोअंग ॥२१॥ को
 टिवरसलौराधिये जीवबुलसंगितोइ दाहमाहवास
 ना कटेनमेलाहोइ ॥२२॥ सतगुरचंदनबावना लागेर
 देसुवंग दाहविषछाहेनही तोकदाकरेसतसंग ॥
 ॥२३॥ सतगुरसाधसुजाणोहे सिषकागुणनहीजाइ दा
 हअमृतछाडिकरि विषेदलादलघाइ ॥२४॥ कायाअ
 मलगाइकरि तीरथध्वजेआइ तीरथमाहकीजिये सो
 कैसैकरिजाइ ॥२५॥ जहांतिरियेतहांडुलिये मनमैमे
 लाहोइ जहाबुटेतहांवधिये कपटिनसोऊकोइ ॥
 ॥२६॥ दाहजबलगजीतिये सुभिरणमेगनिसाध दाहसा
 धुरांमविन ॥२७॥ जहासबअपराध ॥२८॥
 ॥अध्यायशिक्षोअंग॥ दाहनमोनमोभिरंजन
 नमसकारगुरदेवद बंदनअवसाधदा प्रणामपा
 गतद ॥ दाहैषपरदितासंजसो सुष दुषयेकसक

मैन जीवै सद् जसो ॥ रापद निरं बां ॥ २॥ सद् जसु
 मंनका मया ॥ तब देवै मिरी तरंग ॥ ताता सीला समितया
 तब दाइये कै अंग ॥ ३॥ सुषडुषमनमोनै नही ॥ रामरंगि
 राता ॥ दाइ नृकाडि सब ॥ धे मर सिमाता ॥ ४॥ मति मोटा
 नुससाधकी ॥ दे पधर दित समान ॥ दाइ आपा मे टिक रि
 सेवा करै सुजाण ॥ ५॥ कबुन कदावै आपकौ ॥ काहू सं
 गिन जाइ ॥ दाइ नृपष के रहे ॥ साद्विब सो ल्यो लाइ ॥ ६॥
 सुषडुषमनमोनै नही ॥ आपा प्रसमि लाइ ॥ सो मन मन
 करि सेविये ॥ सब पूर्ण ल्यो लाइ ॥ ७॥ नाद मछाडै ॥ ना
 दे ॥ असाग्यो न द्वि चार ॥ मधिसाइ सेवै सदा ॥ दाइ मुक
 ति डवार ॥ ८॥ सद् जसु निमन राधिये ॥ इनह नृके मां
 दि ॥ लै समाधिर सपी जिये ॥ तदा काल सौ नादि ॥ ९॥ अ
 पा मे टे मृतका ॥ आपा धरे आकास ॥ दाइ जहां जहां है
 नही ॥ मधि निरंतर वास ॥ १०॥ नही मृतक नही जीवता
 नही आवै नही जाइ ॥ नही सतान ही जागता ॥ नही भू
 षान ही पाइ ॥ ११॥ न तहां सुपन बोलना ॥ मैतै ना ही कोइ
 दाइ आपा प्रनही ॥ न तहां ये कन दोइ ॥ १२॥ दाइ इस आ
 कार ॥ इजा सुधिम लोक ॥ ताये आगे ओर है ॥ जदवा
 दशधन सोक ॥ १३॥ दाइ ददछाडि बेदद मै ॥ नृसै नृपष हो
 इ ॥ लागिर है नुसयेक सौ ॥ जहां नह जा कोइ ॥ १४॥ दाइ इ
 जे अंतर दो त है ॥ जिनि आगे मन मां दि ॥ तहां लै मन को
 राधिये ॥ जहां ऊबुइ जाना दि ॥ १५॥ जब निराधार मन
 दिंगया ॥ आत्म के आनंद ॥ दाइ पीवै रामरस लेटे प्र
 मां नंद ॥ १६॥ निराधार घर की जिये ॥ जहां ना ही धारणि
 आकास ॥ दाइ निदि चल मन रहे ॥ नृगुण के बेसाध
 मन चित मन सा आत्म ॥ सद् जसुरति
 धे जो पुरिले ॥ जहां धरती अ

लकबीरकी॥ आसंघानही जाइ॥ दाइ हाके मृगज्या॥ न
लटिपहै सुवआइ॥ दाइ रदणि कबीरकी॥ कवि
न बिषमय कुचाल॥ अधरयेक सौ मिलिरहा॥ जहां
न ऊपे काल॥ २०॥ निराक्षरनि जस रातै करि॥ निराक्ष
रनि जसार॥ निराक्षरनि जनां उले॥ निराक्षर निरकार॥
निराक्षरनि जरां मरस॥ को साक्ष पीवण द्वार॥ निरा
क्षर नृम बहै॥ दाइ ग्यान बिचार॥ २१॥ इद बिचरां मत्र
केला आपे॥ आवण जाण न देई॥ जहां के तहां सबरा
षे दाइ॥ पार पकते सेई॥ २२॥ चतुदाइ तहां जाइये॥
जहां मरे न जीवै कोइ॥ आवागवन से को नही॥ जहां
सदा ये कर सहोइ॥ २३॥ चतुदाइ तहां जाइये॥ जहां
चंद सूर नही जाइ॥ एति दिवस कागमि नही॥ सहै
रदा समाइ॥ २४॥ चतुदाइ तहां जाइये॥ माया मोह
धेइ रि॥ सुषडष को व्यापे नही॥ अविनासी घर पूरि
॥ २५॥ चतुदाइ तहां जाइये॥ जहां जम जोरा को ना
हि॥ काल मोच लागे नही॥ मिलिर दिये नामां हि॥ २६॥
॥ येक देस हम देषिया॥ तहां रुति नही पलटे कोइ॥
हम दाइ उ सदे सके॥ जहां सदा ये कर सहोइ॥ २७॥
येक देस हम देषिया॥ तहां बसी कुज डुनां हि॥ हम
दाइ उ सदे सके॥ सहै ज रूप नामां हि॥ २८॥ येक देस
हम देषिया॥ तहां निस दिन नांही घाम॥ हम दाइ उ
सदे सके॥ जहां निकटि निरंजन राम॥ २९॥ बारह मा
सी नीपजे॥ तहां कीया प्रवेस॥ दाइ सुकाना पड़े
हम आये उ सदे स॥ ३०॥ जहां वेद कुंराण कागमि
नही॥ तहां कीया प्रवेस॥ तहां ऊठ अचिर जदे
षिया॥ यऊ ऊठ औ रै देस॥ ३१॥ नाघ र सलान ब
सला॥ जहां उही निजनां उ॥ दाइ उ नमनी मन रद

सलात सोई वांउं ॥ ३३ ॥ नांघरि रद्या न बन गया नांऊ
 लुकीया कलेस ॥ दाह मंन ही मंन मित्या ॥ सत गुर
 के उपदेस ॥ ३४ ॥ काहे दाह घरि रहे ॥ काहे बन बंदु जाइ ॥ घ
 र बन रहितारा मदै ॥ नाही सो लोलाइ ॥ ३५ ॥ दाह जिनि
 प्राणी करि जाणियां ॥ घर बन येक समांन घर मादै ब
 न जूर रहे ॥ सोई साध सुजाणा ॥ ३६ ॥ सब जग मादै ये कला
 देह निरंतर बास ॥ दाह कारणि रांम के ॥ घर बन मांदि न
 दास ॥ ३७ ॥ घर बन मांदि सुष नदी ॥ सुष दे सोई पास ॥ दा
 ह ता सो मंन मित्या ॥ इन ये सया उदास ॥ ३८ ॥ नांघर च
 जान बन सला ॥ जहां नही निज नांउं ॥ दाह न मनी म
 र न रहे ॥ सलात सोई वांउं ॥ ३९ ॥ बैरागी बन मै बसे ॥ घर
 बारी घर्मादि ॥ रांम निरातार दिगया ॥ दाह इन मै नाहि
 ॥ ४० ॥ दीन डुनी सदिकै करौ ॥ टुक देषण दे दार ॥ तन
 मन सी छिन छिन करौ ॥ निस्त हो जग सी वा ॥ ४१ ॥ दा
 ह जीवण मरण का ॥ मुक्ति पठिता वांनांदि ॥ सुक पछि
 ता वापी वकार द्या नैन न डमांदि ॥ ४२ ॥ अग नुक सुष
 डष न जे ॥ जीवण मरण न साइ ॥ दाह लो तीरांम का
 को आवै को जाइ ॥ ४३ ॥ अग नुक संसे नदी ॥ जीव
 ण मरण नैन नांदि ॥ रांम बिमुष जे दिन गये ॥ सो साले
 मन मांदि ॥ ४४ ॥ दाह दिह डुर क न होइ छा ॥ साहि
 ब सेती कांम ॥ घट दर संन के संगिन जाइ छा ॥ नृप
 क दिबारांम ॥ ४५ ॥ घट दर संन हनुं नदी ॥ निरा लंस
 निज बाट ॥ दाह ये कै आसि रो लघे औ घट घाट ॥
 दाह नाह मदि ह दोहि रो नाह म सु सज मान ॥ घट द
 र संन मै द मन ही ॥ द मर तेर ॥ ४६ ॥ न न न न
 ह दे कर ॥ नत हो उक म सीति

सिनासीसेषः षट्दशसंनः द्वाहंमविनः सर्वेकपट्ठे
॥१॥ द्वाहंमविनः सर्वेकपट्ठे
न्याकारकाः सोगुरुद्वाराः ॥२॥ द्वाहंमविनः सर्वेकपट्ठे
मैतैकीतजिवाणि ॥ जिनिद्युजसबकुठसिरजिया ॥
करितांहीकाजाणि ॥३॥ द्वाहंमविनः सर्वेकपट्ठे
अपणीअणीवोर ॥ इकुंविचिमारगसाधकायकुंम
नौकीरहंओर ॥४॥ द्वाहंमविनः सर्वेकपट्ठे
निवारि ॥ संगतिसात्तेसाधका ॥ साईकोसमारि ॥
॥५॥ द्वाहंमविनः सर्वेकपट्ठे
लागेएकअलेषसौ ॥ सदाभिरंतरयाति ॥६॥ यकुंम
सीनियकुदेकरासतगुरिदीयादिषाइ ॥ भीतरिसे
वाबंदगी ॥ बाहरिकादेजाइ ॥७॥ इन्द्रदायीकर
हं ॥ मिलिरसपीयानजाइ ॥ द्वाहंमविनः सर्वेकपट्ठे
नृरहसमाइ ॥८॥ मैनातसयोनककेरहं ॥ देष्या
निरयषअंग ॥ द्वाहंमविनः सर्वेकपट्ठे
॥९॥ जागैबुकेसाचहं ॥ सबकोदेषणाधाइ ॥ चलन
हीसंसारकी ॥ द्वाहंमविनः सर्वेकपट्ठे
कुंकेनामिले ॥ निरियष ॥ निरमलनांव ॥ साईसौ
सनमुखसदा ॥ मुकतासबहीगानुं ॥१०॥ द्वाहंमविनः सर्वेकपट्ठे
हमनिरयषमय ॥ सवेरिसांनलोग ॥ सतगुरकेपसा
दये ॥ मेरेदूरधनसोक ॥११॥ नृपयकेकरियषग
हं ॥ नरकयडेगासोइ ॥ हमनिरयषलागेनावसो
करताकरेसुहोइ ॥१२॥ द्वाहंमविनः सर्वेकपट्ठे
निहकामीनिरयषसाधयेकसरोसैरामके ॥ येले
बेलअगाध ॥१३॥ द्वाहंमविनः सर्वेकपट्ठे
मलनांव ॥ आयामेटेहरिमजे ॥ ताकीमैबलिजा
व ॥१४॥ द्वाहंमविनः सर्वेकपट्ठे

कोइ सोई निरयय होइगा ॥ जाके नांव निरंजन है
 ॥ ५३ ॥ अयणें अयणें यंयकी सब को कहे बहाइ
 ताथे दाहयेक सो ॥ अंतरि गति लोला ॥ ५४ ॥ दाह
 तजि संसार सब रहै निराला होइ ॥ अविनासी के
 आसिरे काल न लागे कोइ ॥ ५५ ॥ कलि जुग कक
 र कल मुहा ॥ अति लागे क्षाइ ॥ दाह करि ब्रुटिये क
 लि जुग बड़ी बलाइ ॥ ५६ ॥ काला मुह संसार को नी
 ले कोये पाव ॥ दाह तीनि तलाक दे ॥ नावे तीधर जाइ
 ॥ ५७ ॥ दाह भाव ही न जे प्रथमो दया बिरुणां दे स
 त गति न ही भंगवत की ॥ तहां के साधवे स ॥ ५८ ॥
 जे बो लो तो चुप कहे ॥ चुप तो कहे पुकार दाह
 कं करि ब्रुटिये त्रै सो दे संसार ॥ ५९ ॥ यंयि चले
 ते पाणि यो ॥ ते ता कल बो दाह ॥ नृपय साध सो
 सदा जिन के येक अक्षर ॥ ६० ॥ दाह यंयों परिग
 ये ॥ बपुरे बार हवा ॥ इन के संगिन जाइये ॥ अलह
 अविगत घाट ॥ ६१ ॥ दाह जागे को आया कहे ॥ स
 ते को को है जाइ ॥ आवण जाणां भूत है ॥ जहां
 का तहां समाइ ॥ ६२ ॥ ॥ अथ साधना की ॥
 ॥ ६३ ॥ दाह न मोन मो निरंजन ॥ नमसकार गुरु देव
 तह ॥ बंदन अथ साधवा ॥ प्रणाम पांशु तह ॥ दा
 ह साध गुण गे ॥ ओ गुण तजे बिकार ॥ मोन स
 रो बह संज ॥ छुटि नीर गहिसार ॥ देस गियां नी
 सो सला ॥ अंतरि राखे येक बिष मे ॥ अमृत का दिले
 दाह बडा बमेक ॥ ६४ ॥ पद लीन्याराम न करे ॥ यी छे
 सहज मरीर ॥ दाह देस बिचार सो ॥ न्यारा की या
 नीर ॥ ६५ ॥ ॥ अथे अथ प्रकासिया ॥
 ॥ ६६ ॥ ॥ अथ अथ अथ अथ अथ ॥

॥ धारनारकासंतजन न्यात्रमवेरै आइ दाइ
साध हंसविन मेलसमेले जाइ ॥ दाइमहंसा
मोती चुंगी ककरदीया डारि सतगुर कहि सैम
जाइया पाया सदा बिचा ॥ २॥ दाइहंसमोती
चुंगी मानसरोवर जाइ बगला लील रिवा पुड़ा
चुंगी चुंगी मबलीयाइ ॥ ३॥ दाइहंसमोती चुंगी
मानसरोवर जाइ फिरी फिरी सैबा पुड़ा का
गकरका आइ ॥ ४॥ दाइहंसप्रधिये उतिमकर
णी चाल बगुला सै ध्यान धरि प्रतधिक दिये
काल ॥ ५॥ उजल करणी हंसदे मेली करणी का
ग मधिम करणी छाडि सब दाइ उतिम साग ॥ ६॥
॥ दाइहंसमल करणी साधकी मेली सब संसार
मेली मधिम के गये निरमल सिरजन दाइ ॥ ७॥ दाइक
रण ऊपरि जाति है इजा सो चनिवार मेली मधिम
के गये उजल ऊर्च बिचार ॥ ८॥ उजल करणी रा
म है दाइ इजा धंध का कहिये सम के नही चासो
लोचलन अंध ॥ ९॥ दाइगऊ बबुका गान गहि
इधर है ज्यो लाइ सी गये बुध गप हरे अस्थि न
लागे सदा ॥ १०॥ दाइका मगाइ के इधर सौ दाइ चाम
सो नाहि इह बिधि अमृत यो जिये साधनिके सु
ख माहि ॥ ११॥ दाइमधरणी के नांव सौ लोग नि सौ ऊ
ठ नाहि लोग नि सौ मन ऊयली मन की मन ही
माहि ॥ १२॥ दाइजा के हिरदे जैसा होइगी सो ते
स ले जाइ दाइहंस निरदोष रज नांव निरंतरा
॥ १३॥ दाइसाध सब करि देखेया असाधन दीप
कोइ जिहि के हिरदे हरि नही तिहित निदोष
होइ ॥ १४॥ जब साध संगतियाइ जब हंटर इहि

नसाइ॥ दाहबोदियबेसिकरि॥ मूडेनिकदिन॥
जाइ॥ २०॥ जबप्रमयदारणयाइये॥ तबककर
दीयाहारि॥ दाहसाचासोमिले॥ तबकडाकाव
निवारि॥ २१॥ जबजीवनमूरायाइ॥ तबमरिवा
कौणबिसाइ॥ दाहअमंतबाडिकरि॥ कौणहला
दलयाइ॥ २२॥ जबमानसरोवरयाइये॥ तबछील
रकौछिटकाइ॥ दाहहंसादरिमिले॥ तबकगाग
येबिलाइ॥ २३॥ जहादिनकरतहानिसनही॥ नि
सतदादिनकरनाहि॥ दाहयेकैधनही॥ साधनके
मतमाहि॥ २४॥ येकैघोडेचढिचले॥ हजाकोतिल
होइ॥ उकैघोडेचढिचालता॥ पारिनपुऊंच्याको
इ॥ २५॥ ॥अथविचारकोअंग॥ दाह
मानमोनिरंजन॥ नमसकारपुरदेवत॥ बदनअ
बसाधवा॥ पु॥ रागमयारगतह॥ १॥ दाहजलमेंगा
नगनमेंजलहो॥ फुनिवेगननिराल॥ बुद्धजीवाइ
हिबिधिरहो॥ ऐसेमंदविचार॥ २॥ जरुअपनमेंमु
खदेखिये॥ यांगीमेंधितवाब॥ ऐसेआतमरांमहो॥
दाहसबहीसंग॥ ३॥ जबदरयनमेंमुखदेखिये॥
तबअपनासूकेआप॥ अयनंविनसूकेनही॥ दा
हउनिरपाय॥ ४॥ दाहजीयेतेलतिलनिमें॥ जी
येगंधफुलनि॥ जीयेमंथराधारमें॥ इयेरबुसहनि
॥ ५॥ इयेरबुसहनिमें॥ जीयेरुहरगनि॥ जी
येजेरोसरमें॥ ठहोचंदबंसनि॥ ६॥ दाहजिनिय
ऊदिलमंदिरकीया॥ दिलमंदिरमेंसोइ॥ दिलमां
देदिलदारहो॥ औरनहजाकोइ॥ ७॥ मीतउम्हा
राउम्हकने॥ उम्हहोलेऊयिछां

द्विधे प्रति बंध जू जाणि ॥ ८ ॥ दाहनालकवलजल
 ऊयजे कं जुदा जलमाहि ॥ चंददि दिन चित्त प्रीत
 डी ये जलसे तीनाहि ॥ ९ ॥ दाहये कविचारसो स
 वये न्या राहो ॥ मां हे देयरि मन नही ॥ सहज निर
 जन सो ॥ १० ॥ दाह गुण ॥ न गुण मन मिलिरहा ॥ क
 वे गर के जा ॥ जहां मन नाही सो नही ॥ जहां चेत नि
 सो आ ॥ ११ ॥ दाह सब हो व्याधिका ॥ अष्टदशेक
 विचार ॥ समजे ये सुषया ॥ ये को ई कुल क हो ग
 वार ॥ १२ ॥ दाह इक निरगुण ॥ इक गुण मई ॥ सब घ
 टिये दे ग्यान ॥ काया कामा यामिले ॥ आतम ब्रह्म
 समान ॥ १३ ॥ दाह कोटि आचारी नये कविचारी ॥ त
 ऊन सरन रिहो ॥ आचारी सब जग स र्या ॥ विचा
 री बिरला को ॥ १४ ॥ दाह घट में सुष आनंद दे ॥ त
 व सब गहर हो ॥ घट में सुष आनंद विन सुषी
 न देखा को ॥ १५ ॥ काया लोक अनंत सब घट में भा
 री सीर ॥ जहां जा इतहां संगि सब दरिया ये लीती
 र ॥ १६ ॥ काया माया कै रही ॥ जो धाव कु बलित ॥ दा
 ह इतर कंतिरे ॥ काया लोक अनंत ॥ १७ ॥ मोटी माया
 न जिगरे ॥ सुधिम लीये जा ॥ दाह को छूटे नही ॥
 माया बड़ी बला ॥ १८ ॥ दाह सुधिम मां दिले ॥ तिन
 का की जे त्याग ॥ सब तजिरा तारां मसो ॥ दाह यक
 वे राग ॥ १९ ॥ गुण अतीत सो दरसनी ॥ आधा धरे क ता
 ॥ दाह निरगुण रां मगहि ॥ डोरी लागा जा ॥ २० ॥ पं
 ड मुकति सब को करे ॥ पाण मुकति नही हो ॥ पाण
 मुकति सत गुर करे ॥ दाह बिरला को ॥ २१ ॥ दाह बु
 धस हठा कं सुलिये ॥ सीत तयति कू जा ॥ कंस व

ब्रह्मेदेहगुण सतगुरुकहिसमजाइ॥२७॥ मांहीथे
 मानकाहिकरि लेराधेनिजठोर॥ दाहसलेदेहगु
 रा बिसरिजाइसबओर॥२८॥ तांनुलावेदेहगु
 रा॥ जातदसासबजाइ॥ दाहबाडेनांवको॥ तोफि
 रिलोगेआइ॥२९॥ दाहदिनदिनरातांमसों दि
 नदिनअधिकसनेह॥ दिनदिनयोवेरांमरस दि
 नदिनइयनदेह॥३०॥ दाहदिनदिनसलेदेहगुण
 दिनदिनइंडीनांस दिनदिनमंनमनसामरे दिन
 दिनहोइप्रकास॥३१॥ दाहदेह रहेसंसारमें जीवरा
 मकेयास॥ दाहकुबुआयेनही कालकालदुखरा
 स॥३२॥ कायाकीसंगनितजेबेगहृदयदमाहिं
 दाहनिरसेकैरहे कोईगुणबायेनाहिं॥३३॥ का
 यामादेसैधरा॥ सबगुणबायेआइ॥ दाहनिरभे
 यकीयारहेनूरमेंजाइ॥३४॥ छडगुधरविषनांम
 रे कोईगुणबायेनाहिं रांमरहेतुंजनरहे काल
 कालजलमाहिं॥३५॥ सदजबिचारसुधमेंरहे दा
 हबडाबमेक मंनइंडीयसरेनही अंतरिराधेये
 क॥३६॥ मंनइंडीयसरेनही अहनि सयेकेध्यान
 प्रउपगारीयांशिंयां दाहउतिमग्यांन॥३७॥ दाहमे
 नांहीतबनांवका॥ कहाकहावेयासाधेकहे
 बिचारिकरिमेहोतकीताय॥३८॥ दाहआयाउर
 जेंउरकिया॥ दीसेसबसंसार आयासुरजेंसुरकि
 या यहुगुरग्यांनबिचार॥३९॥ जबसमज्यातब
 सुरकिया॥ नलटिसमांनसोइ कहुकहावेजब
 लगेतबलगसमजिनहोइ॥४०॥ जबसमज्या
 तबसुरकिया गुरमुखिग्यांनअलेखनरक्षकव

लमे आरसाफिरिकरिआपादेया॥३॥वेमसंगति
 दिनदिनबधे सोईग्यानविचार दाहआतमसो
 धिकरि मधिकरिकाढ्यासार॥३॥दाहजिहिवरि
 यावृक्षसबकुष्ठसया सोकुष्ठकरौविचार काज
 पंडितबावरे क्यालिखिबधेनार॥३॥दाहजबय
 ऊमनहीमनमिल्या तबकुष्ठयायासेह दाह
 लेक रिलाईये क्यापढिमरियेबेह॥३॥याणीया
 वकपावकपाणी जाणैनहीअजाण आदिअति
 विचारिकरि दाहजाणसुजाण॥३॥सुखमाहैडुख
 वजनहैडुखमाहैसुखदाह दाहदेखिविचारिक
 रि आदिअतिफलदाह॥३॥मीठायारायागमी
 वा जाणैनहीगतार आदिअतिगुणदेखकरि
 दाहकीयाविचार॥३॥कोमलकठिनकठिनहै
 कोमिल मूरिखमरमनहै आदिअतिविचार
 करि दाहसबकुष्ठसहै॥३॥यहलाप्राणविचारि
 करि पाछेचलियेसाथ आदिअतिगुणदेखिकरि
 दाहधालाहाथ॥३॥यहलाप्राणविचारिकरि पाछे
 कुष्ठकहिये आदिअतिगुणदेखिकरि दाहनिजा
 हिये॥३॥यहलाप्राणविचारिकरि पाछे आदेजा
 इ आदिअतिगुणदेखिकरि दाहरहैसमा॥३॥
 जेमनियीछैऊयजे सोमनियहलीहोइ कबहन
 होवैजीवडुखी दाहसुखियासोइ॥३॥आदिअति
 गाहनकीया मायाबुद्धविचार जहांकातहांलेख
 दे दाहननवार॥३॥
 दाहनमोतमोनिरंजन नमसकारगुरदेवतह बंद
 नअबसाधवां प्राणमंयारंगतह दाहसहजे
 ॥३॥

सिद्ध जे दाइगा ज कुंभरा चयाराम कायका
 कलयेमरै उघी होत बेकांम ॥ १ ॥ दाइसाई कीया सु
 कैरदा जे कुंभ करै सु होइ करना करै सु होत है
 काहे कलये कोइ ॥ ३ ॥ दाइक है जे तै कीया सु कैर
 दा जे हं करै सु होइ ॥ करण करण ये कहं ॥ ह जाना
 हो कोइ ॥ ४ ॥ सोई हमारा साईया जे सब कायरी दा
 र ॥ दाइजी वण मरण का जा के दा ॥ य विचार ॥ ५ ॥
 दाइ अग सुवन या ताल मधि ॥ आदि अति सबधि ॥ सि
 सिरजि सब नि को देत है ॥ सोई हमारा इष्ट ॥ ६ ॥ कर
 रा दार कर्ता पुरिष ॥ हम को कै सी चीत सब का
 की करत है ॥ सो दाइ का मीत ॥ ७ ॥ दाइ मन सा बाचा
 कमना ॥ सा दिव का बेसास ॥ सेव ग सि रजन हार
 का करै को रा की आस ॥ ८ ॥ सुरमन आवे जीव को
 अण कीया सब होइ ॥ दाइ मार ग मिहर का ॥ बू के
 बिरता कोइ ॥ ९ ॥ दाइ ठंठ मन्त्रो गुंरा को नही जिक
 रि जां ऐं कोइ ॥ उदिम मै आनंद है ॥ जे साई सेता हो
 ॥ १० ॥ दरग द्वारा पूर सी ॥ जो चित रह सी ठाम ॥ अंतर ये
 उमंग सी ॥ सकल निरंतर राम ॥ ११ ॥ एरि क दरग्या सि
 दे जां हो हरि ग वार ॥ सब जां रात है बावरे देवे को कु
 सियार ॥ १२ ॥ दाइ चिंता राम को संमृष्ट सब जां ऐं ॥ दा
 हराम संसालिये ॥ चंता जिनि आं ऐं ॥ १३ ॥ दाइ चिंता
 कीयां कुंभ नही ॥ चंता जीव को याइ ॥ कृणां है सो कै
 रदा ॥ जां रां है सो जाइ ॥ १४ ॥ दाइ जिनि य कुंदाया
 प्राण को ॥ उदर उरध मुख धारा ॥ जग अग्नि में राधि
 या को मल काया सरीर ॥ सो संमृष्ट संगी संगिर है ॥
 बिकट घाट घट नीर ॥

लेमनवीर ॥ गोबिंदके गुण चातिकरि नैनवैनयास
 स जिनिमुष्टदीयाकांतकर प्राणनाथ जगदीस तनम
 नमौ जसवारिसंव राखेबिसवाहीस सोसाहिबसुमि
 रेनही दाहसांनिहदीस ॥ दाहसोसाहिबजिनिवा
 सरे जिनिमुष्टदीयाजीव प्रसवासमैराधिया पोलेपोषे
 पाव ॥ दिरेदेरांमसंतालिले मनराखेबेसांस दाहस
 म्रथसाईयां सबकीपूरेआस ॥ दाहराजिकरिज
 कलीयेबडा देवेदायोदाय धरिकधूरापासिदे सदा
 हमारेसथ ॥ दाहसाईसबनिकौ सवगकेसुखदेइ
 अया मूढमतिजीवकी तोलीनावनलेइ ॥ दाहसि
 रजनदासबनिका ओसादेसम्रथ सोईसेवगकेरदा
 जहांसकलपसारेदण ॥ धनिधनिसाहिबबूबडा
 कौणान्ननूपमरीति सकललोकसिरिसाईया केकरि
 रदाअतीत ॥ दाहदौबलिहारीसुरतिकी सबकी
 करेसंभाल कीडीऊंजरपलमै करतादेडितपाल ॥
 दाहसाजनसोजनसहजमे सईयादेसुलेइ ता
 येअधिकाओरकुछ सोहंकाईकरेइ ॥ दाहदका
 सहजका संतोषीजनघाइ मृतकनोजनगुरमुखी
 काहेकलपेजाइ ॥ प्रमेखरकेसावका येककण
 कायाइ दाहजेतापापेष्टा नर्मकरमसबजाइ ॥
 दाहकौणपकावेकौपसि जहांतहांसीक्षहीदीसे
 दाहसांदादेहका तेतासहजविचार जेताहरिबि
 अंतरा तेतासबैनिवार ॥ दाहजलदतरांमकां
 मलेवैप्रसाद संसारकासमजैनही ॥ अविगतसाव
 गाध ॥ दाहजेकुछसुसीधुदाइका दोवेगासोई
 चिप्रचिकोईजिनिमरे सुणिताजेतोई ॥ दाह

बुदाइकही कोनां हो॥ फिरिहो पृथी सारी॥ हजीदह
 गिंहरिक रिहोर॥ साधुसबद बिचारा॥ ३१॥ दाह बिना
 रामकही कोनां हो॥ फिरिहो देस बिदेसा॥ हजीदह
 गिंहरिक रिहोर॥ सुणिंय कसाधु संदेसा॥ ३२॥ दाह
 सिदक सबरी साचगहि॥ स्थावति राखि अकीन सा
 द्विब सौदिल लाइरज॥ मुरदा केम सकीन॥ ३३॥ दा
 ह अणबंछाट काया तेहें॥ मरम हिलाग मंन नाउ
 निरजन लेत है॥ ऐन मल साधु जन॥ ३४॥ अणबंछा
 आगे पड़े॥ पीछे लेऊगाइ॥ दाह के सिरिहो सय कु॥
 जेऊ सरामर जाइ॥ ३५॥ अणबंछा आगे पड़े॥
 बिद्या बिचारि रखाइ॥ दाह फिरेन तोहुता मरवर
 ताकिन जाइ॥ ३६॥ मीठे का सब मीठा लागे॥ तावो ब
 स रिहोइ॥ दाह कहुवाना कहे॥ अमृत करिक रि
 लेइ॥ ३७॥ बिपति सली हरिनां उमों॥ काया कसो
 टीडुषां मबिनां कि सका मका॥ दाह संपति सुख
 ॥ ३८॥ दाह एक बेसा सबिन जीयरा हांवा डोल॥
 निकटि निध दुख पाईये॥ चाना मणो अमोल॥ ३९॥ दा
 ह बेन बेसा मी जीयरा॥ चंचल नां हो गोर॥ निहरे
 निहि चलनार है कछु ओर की ओर॥ ४०॥ दाह रू
 णां पा सो करे दया॥ जिनि बांछे सुख दुख॥ सुख माहे
 दुख आइसी पिपावन बिसारी सुख॥ ४१॥ दाह रू
 णां पा सो करे दया॥ अगन बांछी क्षण॥ न कहे थी क
 नां डी कवा सुहो सी आइ॥ ४२॥ दाह रू णां पा सो
 करे दया॥ जे कछु कीया पीव यल बधेन छिन घटे
 ऐसी जांणी जीव॥ ४३॥
 रमोरन होवै आइ लेणां पा सो

लीयाजाइ॥४४॥ जूरचियातुं होइगा॥ काहेको॥ सेर
 लेइ॥ साहिबकपडिराखिये॥ देवतमासाइइ॥४५॥
 ॥ जूरजाणेतूरारिखो॥ तुमसिरिहालीराइ॥ इजा
 कोदेखो॥ नही॥ दाइअनतनजाइ॥४६॥ जूरतुमसा
 वेतुंषुसी॥ हमराजीउसबात॥ दाइकेदिलसिदक
 सों॥ सावेदिनकोरात॥४७॥ दाइकरणाहारजेकठ
 कीया॥ सोबुरानकदहणाजाइ॥ सोईसेवगसंतजन
 रहिबारांमरजाइ॥४८॥ दाइकरणाहारजेकठकी
 या॥ सोईलंकरिजाणि॥ जेहंचतुरसयानो॥ जानरा
 इ॥ तोयाहीप्रवांणि॥ दाइकरताहमनही॥ करता
 औरैकोइ॥ करताहैसोकैरेगा॥ इजिनिकरताहोइ
 ॥४९॥ कासीतजिमगहरगया॥ कबीरसरोसैराम॥
 सेदेहीसाईमित्या॥ दाइपूरेकोम॥५०॥ दाइरोजीरं
 महे॥ राजिकरिअकहमार॥ दाइउसप्रसादसों॥ पो
 रियासंबपंवार॥५१॥ पंचसंतोषेयेकसों॥ मनमतिव
 लामांदि॥ दाइसामीहवसब॥ इजानावेनांदि॥५२॥
 ॥ येकसेरकाठावडा॥ काहीनरुथानजाइ॥ सुषन
 नागाजीवकी॥ दाइकेताषाइ॥५३॥ दाइसाहिबमे
 रेकपडे॥ साहिबनेराधांण॥ साहिबसिरकाताजदे
 साहिबपंडुपरंग॥५४॥ साईसनसंतोषदे॥ नावस
 गतिबेसाम॥ दकसबुरीसाचदे॥ मांगैदाइदास॥
 ५५॥ दाइनमोनमोनिरंजन॥ नमसकारगुरदे
 तह॥ बदनंअबसाधवा॥ प्रणामंपारंगह॥५६॥ सा
 रोकैसिरिदेखिये॥ उसपरिकोईनांदि॥ दाइगणन
 चारिकरि॥ सोराध्यामनमांदि॥५७॥ सबलालोंसि
 रिलालदे॥ सबपूबोंसिरिखल॥ सबपाकोंसिरि

कहै॥ दाइका महबूब॥ ३ ॥ प्रबुद्ध परापर सोम
 मदेव निरंजन॥ निराकार निरमल॥ तसि दाइ बंदन
 ॥ ४ ॥ येक न तता ऊपरि इतनी॥ तानि लोक बुद्ध
 धरती गगन पवन अरु पांणी॥ सपत दीप नौ बडा॥ प
 चंद सूर चौरासी लष दिन अरु रैणी॥ रचिले सपत
 समेदा॥ संवाला वमेर गिर परबत॥ अ गारा नार
 तीर एबुत॥ ता ऊपरि मना॥ चोद दलो कर है सब
 चना॥ दाइ दासता सघरि बंद॥ दाइ जिनि यहु ये
 ती करि धरी॥ ए सविन राखी॥ सो ह म कौ कंबी मरे॥
 सेत जेन साखी॥ ५ ॥ दाइ जिनि प्राण पिम ह म कौ
 दीया॥ अंतरि सेवे ताहि॥ जे आवे ओ सांरा सिरि॥
 साईनां नुं संबाहि॥ ६ ॥ दाइ जिनि मुक कौ पेदा
 कीया॥ मेरा साहिब सोई मै बंदानु सरां मका॥ जि
 नि सिर ज्वा सब कौ ॥ ७ ॥ दाइ येक सगा संसार
 में॥ जिनि ह म सिर जे सोई॥ मन साबाचा कर मना॥
 और न जा को ॥ ८ ॥ जे एा कंत कबीर का सोई
 बर बरि हो॥ मन साबाचा कमना॥ मै और न करि हो
 ॥ ९ ॥ सब का साहिब येक है॥ जाका प्रगटनां उ
 दाइ साई सो धिले ताकी मै बलि जांउ॥ १० ॥ साचा
 साई सो धिक रि साचा राखी ताव॥ दाइ साचाना
 उले॥ साचे मारग आव॥ ११ ॥ साचा सत गुर सो धि
 ले साचे लीजा साध॥ साचा साहिब सो धिक रि दा
 इ भगति अगाध॥ जां मै मरे सुजीव दे॥ र मितारां म
 न होइ॥ जां मग मणी ये रहित दे॥ मै ग साहिब सो
 ॥ १२ ॥ उठे न बैठे ये कर स॥
 रैन जीवै जगत गुर॥

१६ नांव कुजा मैं नांमरे नां आवे गन दास दाइज
 प्रेम प्रनही नक कुंमद समास १७ कृतमन ही सो
 बुद्ध है घटे ब्रह्म नही जाइ धरणी दक्षलये करस
 जगति न नाचे आइ १८ उपजे विनसे गुण धरे यकु
 माया के रूप दाइ देषत धिर नही धिया हो ही धिया ध
 य १९ जेनां ही सो ऊय जे हे सो उपजे नाहि अत
 य आदि अनादि हे उपजे माया माहि २० जे यकु
 कता जीवया संजट कां आया कर मो के वसि क
 नया कां आप वं क्षया कां सब जोनी जगत में धर
 बार न चाया कां यकु करता जीव के परदा धि वि
 काया २१ दाइ कृतम काल वसि बंधा गुण मा
 ही उपजे विनसे देषतां यकु करता नाही २२ जा
 ती नूर अलाह का सफाती अरवाह सफाती मि
 ज दा करे जाती विप्र वाह २३ दाइ प्रमद न जना
 नया इक ले सये के नूर जूणा तू ही ते जहे जो
 तिर ही नूर पुर २४ नृसंघ नूर अपार हे ते जउ
 ज सब माहि दाइ जोति अने तहे आगोपी हो ना
 हि २५ वार पार नही नूर का दाइ ते ज अने त क
 मति नही करता रकी आसा हे सग वत २६ प्रम
 ते ज प्रका सहे प्रम नूर निवास प्रम जोति आन व
 में हे सा दाइ दास २७ प्रम ते ज परा पर प्रम जो
 ति प्रमे सुर सुयं ब्रह्म सदई सदा दाइ अविचल
 अ म धिर २८ आदि अति आगे रहे यक अन
 म देव निराकार ने ज निरमला को ई न जा गौ ने व
 अविनासी अपर परा वार पार नही छेव सो ह
 दाइ देहिले उर अंतर करि सेव २९ अविनासी

दिवसंतिहे जेउपजे बिन सैनांदि॥ जेता कहिये का
 लमुषि॥ सोसा दिव कि समांदि॥ ३७॥ सांई मेरा सतिहे
 निरंजन निरकार॥ दाइ बिन से देषतां॥ ऊता सब आका
 र॥ ३८॥ रांमरट गिंछा मै नही॥ हरिले लागा जाइ॥ बी
 चेंही अट के नही॥ कला कोटि दिषलाइ॥ ३९॥ उरेंही
 अट के नही॥ जहां रांमत हां जाइ॥ दाइ पावे प्रम सुष
 बिल से बस अघाइ॥ ४०॥ दाइ उरेंही उर के धरो मू
 ये गल दे पास॥ अंन अंग जहां आपघा॥ तहां गये नि
 ज दास॥ ४१॥ सेवा का सुष प्रेम रस॥ सेज सुहा गन दे
 दाइ बाहे दास को॥ कहे जा सब लेइ॥ ४२॥ प्रपु रिषा
 सब प्रहरे॥ सुंदर देषे जागि॥ अपरां पी वधि छांशिक
 रि दाइ रहिये लागि॥ ४३॥ आन पु रिष हो ब दन डी॥
 प्रम पु रिष न रता॥ हो अ बला सम जो नही॥ हूं जां
 गी करतार॥ ४४॥ लोहा माटी मिलि रह्या॥ दिन दि
 न काई बाइ॥ दाइ पार सरांम बिन॥ कंत हंग या बि
 लाइ॥ ४५॥ लोहा पार म प्रसि करि॥ चलते अपरां अ
 ग॥ दाइ कंचन के रदे॥ अपरां सांई संग॥ ४६॥ दाइ
 जिहि प्रसे चलते प्रांशियां॥ सोई निज करिले द॥ लो
 हा कंचन के गया॥ पारस का गुण ये द॥ ४७॥ आया न
 ही बल मिटे॥ उ बिधिति मर नही होइ॥ दाइ य कु गु
 रा बुद्ध का॥ सुनि समांन सोइ॥ ४८॥ माया का गुण व
 ल करे॥ आपा उपजे आइ॥ राज सनाम स सात गा
 मन चंचल के जाइ॥ ४९॥ ददिस फिरै सु मन हे॥ आ
 वे जाइ सु प्रवन॥ राखण द्वारा॥ प्राण दे देषण द्वारा
 वृ द् ॥ ४३॥ ॥ अध सं स पाई को नंग॥ ४५॥
 नमो नमो निरंजन॥ नम सकार गुर दे

वैष्णवपुत्रिं इति विधिजोगरसोग ॥ ६ ॥ कंकारथैकपजे ॥ ७ ॥
 नसैवजुतविकार सावसगतिलेथिरदे ॥ ८ ॥ आतमस
 रा ॥ ९ ॥ पहलीकीयाआपथै ॥ १० ॥ उतिपतिकंकार ॥ ११ ॥ कंकार
 ऊपजे ॥ १२ ॥ पंचतनआकार ॥ १३ ॥ पंचतनथैषटसया ॥ १४ ॥ बजुविधि
 सबदेसतार ॥ १५ ॥ घटथैऊपजे ॥ १६ ॥ तैवरणविचार ॥ १७ ॥ ये
 सबदसबकुछकीया ॥ १८ ॥ आसंमणसो ॥ १९ ॥ आगेपीछेतो
 जेबलहीगांहे ॥ २० ॥ निरंजननिराकारहे ॥ २१ ॥ कंकारअ
 रा ॥ २२ ॥ सवरंगरूपसबसबविधिसबविसार ॥ २३ ॥
 सबदकंकारहे ॥ २४ ॥ बोलैसबघटमांहे ॥ २५ ॥ मायाविस्तरी
 प्रमत्ततयजुनांहे ॥ २६ ॥ पेदाकीयाघाटघडि ॥ २७ ॥ आपेआप
 उपा ॥ २८ ॥ दिकमतिजुतरकारीगरी ॥ २९ ॥ इत्योनजा ॥ ३० ॥
 जेवजायासाजिकरिकारीगरकरतार ॥ ३१ ॥ पथैकारमना
 दै ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥
 ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥
 ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥
 ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥
 ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥
 ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥
 ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

बलविगमैहोइ साधसबदमाताकहे तिनसबदौमौ
 प्रामोहि दाइहरिबाणीसाधकी सोपरियोमेरेसीस
 हैमायामोहऐ प्रेमसजनजगदीस दाइबाणीबु
 मकी अनैघटप्रकास रामअकेलारहिगया सबद
 मरंजनप्राप्त दाइसुरकीरामहे सबदकहेगुरग्या
 तिनसबदौमनमोदिया ननमनिलागाध्यान साव
 जेलेमिले सबदगुरुकाग्यान दाइदमकौलेचल्या
 प्राप्तिमकाअसथान दाइदमकौसुखसया
 साधसबदगुरग्यान सुखिबुधिसोधीसमफिकरि पायाप
 दनिरबाण दाइसबदबिचारिकरि लागिरेहेमन
 लाइ ग्यानगहेगुरदेवका दाइसदजसमाइ सब
 दौमोहैरामधन जेकोइलेइबिचारि दाइससंसारमैक
 बझनआवेहारि दाहरामरसोइरासरिधस्या
 साधनिसबदमंजारि कोइपारिषपीवैप्रतिमौ समकै
 सबदबिचारि सबदमरोवरससरनस्या दरिज
 लनिरमलनीर दाइपीवैप्रतिमौ तिनकेअधिलसगर
 सबदौमोहैरामरस साधौतरिदीया आदिअति
 सब संतमिलि सुंदाइपीया पाणीमोहैरापिबे
 कनककलकनजाइ दाइगुरकेग्यानसौ ताइअगति
 मैबाहि कारिजकोसाकैनही मोताबोलेबौर
 दाइसाधेसबदबिन कटेनतनकीपार सबदेव
 धांनोसाहके ताथैदाइआया इनिग्याजीवीबापु
 डी सुषदरमंनपाया दाइगुंतजिनूरगुणबो
 लिये तेताबोलअबोल गुणगहिआपाबोलिये
 तेताकहिघेबोल दाइसकअवाजसौ असे
 कोइ नगपनननिमई मानिनन

३८॥ सब एक बीर का मीठा लगे मोहि दाइ सुगतां प्रम सु
 ४॥ केता आनंद होइ ॥ ३९ ॥ जीव ॥
 दाइ को ॥ दाइ न मोन मो निरंजन नम सकार देवत
 द बंदनं श्रव साधवा प्रणामं पारंगत द ॥ धरती मत
 श्री का सका चंद सर कालेइ दाइ पाणी पवन का रा
 मतां म क दि देइ ॥ दाइ धरती क्षिर दे तजि कंड कपट
 अहंकार साईं कारतो सिरि सहे ता कौ प्रत वि सिर जेन
 दार ॥ ३॥ जीवत मांटी मिलि रेहे साईं संन मुष होइ ॥
 दाइ पद लाम सिहे पाछै तो सब कोइ ॥ माटी मांहे
 तोर करि मांटी मांटी मांदि दाइ समि करि राखिये पैषष
 डव ध्यानाहि ॥ आपा गव गुमान न तजि म द म छ
 र अहंकार गद्दे गरीबी बंदगी सेवा सिर जेन दार ॥
 दा ॥ म द म छ र आपा न ही कै सा गव गुमान सुपि नै हो
 सम केन ही दाइ क्या अति मान ॥ ऊता गव गुमा
 न तजि तजि आपा अति मान दाइ दान गरीब के ॥
 पाया पद निरबांरा ॥ दा ॥ दाइ ताव न गति दीनता
 अंग प्रेम प्रीति सदा तिहि संग ॥ दाइ सिक सखरी
 सा च गदि स्थावति राखि अकीन साहिब सौ दल
 लाइ रजु मुरदा के म सकीन ॥ ११ ॥ तब साहिब कौ सि
 ज दा कीया जब सिर धर्या उतारि यं दाइ जीवत मेरे
 हिर सहवा कौ मारि ॥ रावर क सब म रहिगे जी
 वेनां ही कोइ साईं क दि ये जीवता जे जीवत मृत क हो
 ५ ॥ १२ ॥ दाइ मेरा बैरी मै मूवा मुकैन मोरे कोइ मेहा
 मुऊ कौ मारता मै म र जीवा होइ ॥ १३ ॥ दाइ आपा जब
 लगे तब लग जा होइ जब यजु आपा मिटि गया
 तब जाता ही ॥ १४ ॥ बैरी मोरे मारि गये चित ऐं बिस

रेनाहि दाइअ जऊं सालदे समकिदेधिमतमाहि दा
 इतो तूं पावे पीवकों जे जीवत मृतक होइ आपगवाये
 पीवमिले जानत हे सब कोइ दाइ तो तूं पावे पी
 वकों आपा कबून जाणि आपाजि सधै कबजे सेइ
 सहज पिछाणि दाइ तो तूं पावे पीवकों मै मेरा सब
 होइ मै मेरा सहजै गया तब निरमल दरसन होइ
 मै ही मेरे पोट सिर मरि खेता के नारी दाइ गुर प्रसादये सि
 रये धरी उतारि मेरे आगे मै बडा ताथेर द्या लुकाइ
 दाइ प्रगट पीवदे जेय ऊ आपा जाइ दाइ जी
 वत मृतक के करि मा भग मां हे आव पहली सीस
 उतारि करि पीछे धरिये पाव दाइ मारग साधका परा
 डहे ला जाणि जीवत मृतक के चले राम नाम नै सांरा दा
 इ मृतक तब ही जाणि ये जब गुण इं डे नाहि जब मन आ
 पा मिटि गया तब ब्रह्म समां नां मां हि दाइ मारग क
 विन दे जवित चलै न कोइ सोई चलि हे बाधुरा जे जीवत
 मृतक होइ मृतक होवे सो चले निरजन की बाट दा
 इ पावे पीव को लये ओघट घाट दाइ जीवत ही मरि
 जाइये मरि मां हे मिलि जाइ सांई का संग बाहु करि को
 रा सहे दुष आइ दाइ कदिय ऊ आपा जाइ गा कदि
 य ऊ बि सरे और कदिय ऊ सूष म होइ गा कदिय ऊ प
 वे और दाइ आपा कदा दिषाईये जे ऊ छ आपा हो
 इ य ऊ तो जाता देखिये रहता चीनो सोइ दाइ अ
 पछि पाईये जहां न देखे कोइ पीवकों देखे दिषाईये तूं
 तूं आने द होइ अंतर गते आपा न ही मुख मो
 मै न होइ दाइ हे सुनि निषे लै होइ
 जे जन आपा मे ह सख ही

टंघनां साद्विबसो लोला ॥ ३१ ॥ गरीब गरीबी गदि रक्षा
 मसकीनी मसकीनी दाह आपा मे टिक रि दो इर द्या लेली
 न ॥ ३२ ॥ मै हों मेरी जब लगे तब लग बिल से वाइ मै ना
 ही मेरी मिटे तब दाह निकटिन जाइ ॥ ३३ ॥ दाह मनां मनी
 सब ले रहे मनी न मेटी जाइ मनां मनी जब मिटि गई त
 ब ही मिले बुदाइ ॥ ३४ ॥ दाह मै मै जालि दे मेरे लागो आ
 गि मै मै मेरी इरि करि साद्विब के संगि लागि ॥ ३५ ॥ दाह घो
 ई आपरां ॥ ३६ ॥ लज्या डल की कार मां निब द्याई पति गई
 तब मन मुष मिरजंन दार ॥ ३७ ॥ दाह मै ना ही तब ये क
 हे मै आइ तब दोइ मै तै पड दा मिटि गया तब जूथा
 तू ही होइ ॥ ३८ ॥ दूर सराषा करि लीया बिदों का बंदा
 दाह जा को नदी सुक सरीषा गंदा ॥ ३९ ॥ दाह सी धूँध
 मन पाईये साधु पीति न होइ साधु दरदन ऊप जै ज
 ब लग आपन घोइ कहि बा सुखि बाग न सया आपा
 प्रकास दाह मै तै मिटि गया तब पूरां बुदा प्रकास
 ॥ ४० ॥ दाह स्वधिम मां हिले तिन का की जै त्याग सब
 तजिरा तय मसो दाह य ऊँ बेराग गुण अतीत सो ॥ ४१ ॥
 वर सनी आपा धरे उगइ दाह निरगुण रां मगदि मोरा
 लाग जाइ ॥ ४२ ॥ साईं कार शिं मास का लोहा पाणी
 होइ सूके आटा अस्त का दाह पोवे सोइ ॥ ४३ ॥ तन म
 न मे दा पा सि करि बांशिं बांशिं लोलाइ यो बिन दा
 इ जीव की कबहुं मालन जाइ ॥ ४४ ॥ पीसं करि पी ॥ ४५ ॥
 साधे बांशिं ऊरि बांशिं तो आतम कन बरे दाह्ये
 सी जांशिं ॥ ४६ ॥ पहली तन मन मारिये इन काम रहे
 मान दाह को टेजुं मे पीछे सहज समान ॥ ४७ ॥ कोट
 ऊरि काटिये दाधे कोटो लाइ दाह नारन सी चिये

तोतरवरवधताजाइ। दाइसबकोसकुटथकाइ
नकालगहेगाआइ। जीवतमृतककैरहे। ताकेनिकहि
नजाइ। दाइसागहिलाकैरहे। अंतरजामीजा
शि। तोबूटेसंसारथे। रसपीतेसारगप्राणि। गूग।
गहिलाबावला। माईका। शिगहोइ। दाइदिवानोके
रहे। ताकोलेखनकोइ। दाइजीवतमृतककैरहे।
सबकोबिकतहोइ। काढोकाढोसबकहे। नानुनलेव
कोइ। मृतककाहिमसागथे। ककुकोणचलावे
अविगतगतिनहीजागिथे। जगिआगिदिघोवे।
जीवतमृतकसाधकी। बाणीकाप्रकास। दाइमोहेरां
मजी। लीननयेसबदास। दाइजेहोमोतामीरहे।
सबजीतोमैजीव। आपादेबिनमूलिये। घराडहेला
पीव। आपामेटिसमाइरकु। इजाधंधाबादि
काहेप्रचिमरे। सबजेसुमिरणसाधि। दाइआप।
मेटयेकरसे। मनअ। सणरलेलीन। अरसपसआ
नदकरे। सदासुखीसोदीन। नहीतहाथेसबकी
या। फिरिनाहीकेजाइ। दाइनाहीहोइरकु। साहिव
सो। लो। त्याइ। दाइहेकंतेघण। नाहीको। ऊष्ठमा
हि। दाइनाहीहोइरकु। अपणेसाहिवमाहि। दा
इमैनाहीतमैगया। ऐकैइसरनाहि। नाहीको। गहरघ
णी। दाइनिजघरमाहि। जहांगमतहोमैनही।
मैतहांनाही। राम। दाइमहतबारीकहे। पैको। नाही
तांम। जीवतमाटीमिलिरहे। साईसनसुखहो
इ। दाइपहलीमरिहै। प्रबैतोसबकोइ। विर
हअगनिकादागदे। जीवतमृतकगोर। दाइपहली
घरकीया। आदिहमारीगोर। दमोदमाराकी।

रलीया जीवत करणी सार पीछे रुका को नही द्युष्ट
 गम अथार ॥ ६३ ॥ अगा ॥ २३ ॥ साधो ॥ २०८२ ॥ सूरत न
 को चो द्युष्ट न मोन मो निरंजन नम सकार गुर देव तद
 वेदन श्रव साधवा प्रणामे प्रणगत ह ॥ साचा मिर सो
 घेले हे यऊ साध जन का काम द्युष्ट मरण आसंघे
 सोई कहै गारांम ॥ रांम कहै ते मरि कहै जीवत कद
 न जाइ द्युष्ट ऐसै रांम कहि सती सूर सम साइ ॥
 ८ ॥ जब द्युष्ट मरि बाग हेत बलोगों की काला जस
 तीरांम साचा कहै सब न जि प्रति सों का ज ॥ ९ ॥ द्युष्ट
 हम का इर कहुं बाक रिह दे सर निराला होइ निक
 सिध होमैं दाने मी ता मभि और न कोइ ॥ १० ॥ मडान ज
 दे तो संगि जले जीवे तो घरि आंणि जीवण मरण रां
 म सो सोई सती करि जांणि ॥ ११ ॥ जनम लगे बिच च
 रां निष सिध सरी कलेक पलक येक सन मुख ज
 ली द्युष्ट क्षेये अंक ॥ १२ ॥ स्वाग सती काये हरि करि
 करै ऊट बका सोच बाहरि सूर दधि ये द्युष्ट सो तर
 पोच ॥ १३ ॥ द्युष्ट सती त मिर जन हार सों जले बिरह की
 जाल नां वहु मरे न जलि बुके ऐसै संगि दया ल ॥
 १४ ॥ द्युष्ट मुक हो ते लष मिर तो लषे देती वारि सह
 मुक दीया येक सिर सोई सो पै नारि ॥ १५ ॥ द्युष्ट सती ज
 लिकोइ संई मूये मडे की लार ॥ यो जे जल तीरांम सो
 साचे संग सूर नार ॥ १६ ॥ द्युष्ट मूये मडे सो हेत क्या जे
 जीव की जांणो नाहि हेत हर सों की जिये जे अंतर
 जांमो मां हिं ॥ १७ ॥ सूर चटि संग रांम को पाहुं सग कहै
 सा ॥

सूर रांम का ॥ २ ॥

नही काइर का काम काइर को मन आवे
यऊ सरकायेत तन मन सो पैर मको दाइसी ससदे
तजब लगलाल चजीवका तब लगलाल सेरुवा
नजाइ कायामाया मनतजे तब चोहेरदे
बजाइ दाइ चोहेर में आनंद दे नावध सारिण
जीत साहिब अपणा करिलीया अत रगत की घी
ति दाइ जे उऊ काम कराम सो तो च ऊटे चटि
करि नाच ऊठा दे सो जाइग निह चेर दसाच
साईये कोटी मधे कोइ सरा पूरा संतजन साई
को सैवे दाइ साहिब कारणे सिर अपणा देवे
राऊ ऊंघेत मै साईसन मुख आइ सरको साई मिले
तब दाइ कालन घाइ मरिबे ऊपरिये कपग क
रता करै मुहोइ दाइ साहिब कारणे तालाबली मे
हि दाइ अगन घे चिये कहि समजाऊ तोहि
दिसरो सारामका बकाबालन होइ बऊत
पयो दारहा अब जीव सोच निवाहि दाइ सर
गं निरऊ साहिब के दरबारि जीवों का सं
ख्या को का कोतारै दाइ सोई सरिवा जे आप
जे निकसे संसार घे साई की दिस क्षइ जे
बहुं दाइ बाऊ दे तो पीछे माया जाइ दाइ
ई पीछे दे लाजिनि करै आगे दे ला आव आगे
अनूप दे नही पीछे का साव पीछे को प
सरै आगे को पग दे दाइ यऊ मत सरका
मतौर को लेइ आघाच लिपी बापिर
मऊ मदीत दाइ दे घे दोइ दल सागे दे करि

दाइ मरणां मां भिकरि रदेन ही ल्यो ॥ लाइ काइ
 रसां जे जीव ले आरणा छी मै जाइ ॥ २० ॥ सुरा होइ सुमे
 रन लंघे सब गुण बंधा बूटे ॥ दाइ निरसै कै रदे ॥ का
 इर तिणान बूटे ॥ २१ ॥ सपके सखि काल कुं जरा ॥ बकु
 जो धमार ग मां हि ॥ कोहि मै कोइ ये क असा मरणा
 आस धि जादि ॥ ३२ ॥ दाइ जब जोगें तब मारि यो बैरी
 जीव के साल ॥ मन साहाइ ति को मरि पा ॥ को धम दाव
 ल काल पंच चोर चित वतरदा ॥ माया मोह बिष का
 ल चेत निप दरे आ पणै ॥ कर गहि छटु ग संतालि ॥
 ३४ ॥ काया कबज क माण करि सार सब द करि तीर
 दाइ य क सर सां धि करि मारे मोटे मीर ॥ ३५ ॥ काया क
 ठिन क मां गे दे ॥ मां चैं बिरला कोइ ॥ मोरै पंचो मिर गला
 दाइ सरा सोइ ॥ ३६ ॥ जे हरि को प करे ॥ न करि नौ कां म कटक
 दल जाहि क हां ॥ लाल घलो सखे धरुत साजे ॥ ३७ ॥ हर
 दे हरि ज हांत हां ॥ ३८ ॥ तब साहिब कौ सि ज हा की या
 जब सिर धर्या उतारि ॥ यं दाइ जीव त मरे ॥ हिर सह वा
 को मारि ॥ ३९ ॥ दाइ तन मन कां म करी म को ॥ ४० ॥
 वेतौ नौ का ॥ जिस का तिस कौ सौ पिये ॥ सो चक्या जीव का
 ४१ ॥ जे सिर सौ प्यार म को ॥ सो सिर सया सुनाइ ॥ दाइ
 दे ऊर न सया ॥ जिस का तिस के हाथ ॥ ४२ ॥ जिस को दे ति
 स कौ बटे ॥ तौ दाइ ऊर गा होइ ॥ पहला दे वे सो स ॥ पाछे
 तौ सब को ॥ ४३ ॥ सां ई तेरे ना उपरि ॥ सिर जीव करी क
 र बाण ॥ तन मन नुम्र परि वारौ ॥ दाइ पिंड पुराण ॥ ४४ ॥
 अपणै सां ई कारौ ॥ क्या क्या न दं ॥ ४५ ॥
 नत जि अपणा सिर दीजे ॥ ४६ ॥
 साहिब जी कानां ॥

इसोक्तकृष्णाय माटीधरीमसांगा सीमातादनवा
जही कतगयेसेजोगी दाइरहतेमहीमें करतेरस
सोगी दाइजीयराजाइगा यऊतनमाटीहोइ
जेमुज्यासोबिनसिद्धे अमरनहीकलिकोइ दा
इहे हीदेवतां सबकिसहीकीजाइ जवल्मासास
सरीरमें गोविंदकेगुणागाइ दाइहे हीयांजुणी
हेसबटाऊमाहि काजांणोंकबचालसी मोहित
रोसानाहि दाइसबकोयांजुणां दिवसचारि
संसार ओसरिओसरिसबचले हमसीइहेवि
चार सबकोवेठेपणसिरि रदेबटाऊहोइ जे
आयेतेजाहिगे इसमारगसबकोइ बेगिबटा
ऊपणसिरि अरबिलंबनकीजे दाइबेगक्या
करै रांमजपिलीजे संज्याचलेउताउ लाव
टाऊबनपंममाहि बरियांनोहीहीलकी दाइ
बेगिघरिजाहि दाइकर हपलाराकरी को
चेतनिचढिजाइ मिलिसाहिबदिनदेवतां संक
पड़ेजिनिआइ ॥ १ ॥ पणइहेलाइरिध रांमगन
सायाकोइ उरमारगहमजाहिगे दाइकसुख
सोइ ॥ लेघराकेलकुघरां कपरचाट डीक
अलापाधीपंधमें बिहंदाआहीन दाइहस
तारोवतांपाऊणां कारुकाहितजाइ कालघ
डासिरऊपर आवणहाराआइ दाइजे
रावेरीकालहे सोजीवनजाणों सबजगसुत
नीदही इततांणोंबाणों दाइकरणीकालव
सबजगप्रलेहोइ रांमबिसुखसबमरिगये चै
नदेवेकोइ ॥ २ ॥ साहिबकोंसुमिरैनहीबऊत

गवेसार॥ दाइ करणी काल की सब प्रलससार
 तां काल जगाइ करि सब प्रेसे मुख मां हिं दाइ अ
 चिर जदे धिया कोई चेतै नाहिं ॥ १६ ॥ सब जीव सांहे वि
 काल को॥ करि करि कोटि उपाइ सांहे बकौ सुमि
 नही ॥ य परलै के जाइ ॥ १७ ॥ दाइ करणी काल के सक
 ल संवारे आप मां चबि सांहे मरणा को॥ दाइ सौ क सं
 माया ॥ १८ ॥ दाइ अमृत छा निकरि बिषे दला दल घा
 ॥ जीव विसांहे काल को॥ मृता मरि मरि जाइ ॥ १९ ॥
 निरमल नाउ विसारि करि दाइ जीव जंजाल नही त
 हां थैं करि लीया मन सामांहे काल ॥ २० ॥ सब जग के
 ली काल क साइ कर दली थैं कंठ काटे ॥ पंचनन की
 पंच पंख डी ॥ पंख डं ड करि बांटे ॥ २१ ॥ सब जग सताना द
 तरि जाये नांही कोइ ॥ आगे पाछे दे धिये ॥ घन बिघने
 होइ ॥ २२ ॥ काल जाल में जग जले ॥ नाजिन निक से को
 इ ॥ दाइ सरी सा चकै ॥ असे अमर पद होइ ॥ २३ ॥ ये
 स जे न डुरि जेन चये ॥ अ त काल की वार ॥ दाइ इन में
 को नही ॥ बिघति बंटा वरा दार ॥ २४ ॥ संगी सजरा आ
 पणा ॥ साया सिर जेन दार ॥ दाइ इ जा को नही ॥ इ हि
 कलि इ हिं संसार ॥ २५ ॥ ये दिन बीते चलि गये ॥ ये दिन
 आये क्षण ॥ रांम नांम बिन जीव को ॥ काल गरा से जाइ
 ॥ २६ ॥ जे उपज्या सो बिन सिंदै ॥ जे दी से सो जाइ ॥ दाइ
 निरगुण रांम सुधि ॥ नि ह चल चित लगाइ ॥ २७ ॥ जे उप
 ज्या सो बिन सिंदै ॥ कोई छिर नर दाइ ॥ दाइ बारी आ
 पणा ॥ जे दी से सो जाइ ॥ २८ ॥ सब जग मरि मरि जाते है
 अमर उपा वरा दार ॥ रदितार मिता रांम दे ॥ बहिता
 सल संसार ॥ २९ ॥ दाइ कोई छिर न ही ॥ य ज सब आ

वेजाइ अमरपुरस आपेरहे केसाधल्योलाइ
यऊजगजाताद्विधकरि दाइकरीपुकार घडीमह
रतचालणा राधेसिरजनहार दाइविषसुष
मादेधेलता कालपहुंच्याआइ नपजेबिनसेदे
षता यऊजगयोहीजाइ रामनामबिनजीवज
केतेमयेअकाल मोचबिनाजेमरनहे ताथेदाइमा
ल अपसिंघहसीधणा राकसहृतपरत तिस
वनमैदाइपड्या चेतैनहीअचेत पूतपिताथे
बीबुट्या नूलिपड्याकिसठोर मरेनहीउरफाटि
करि दाइबनकठोर जेदिनइसुबहिनआवे
आवघटेतनहीजे अंतकालदिनआइपहुता
दाइहीलनकजि दाइओसरचलिगया बरिया
गईबिदाइ करछिटकेकदापाईजे जनमअमो
लिकजाइ दाइगंकिलकेरया गहिलाकवा
गवांर सोदिनवातिनआवई सोवेपावप मां
दाइकालमारकरगदे दिनदिनधे ततजाइ
अजकंजीवजागेनही सोवतगईबिदाइ
सुताआवेसुताजाइ सुताधेलेसुतापाइ सुताले
वेसुतादेवे दाइसुताजाइ दाइदेधतहीच
या स्पामबरणथेसेत तनमनजोवनसबगया
अजकंनहरिसोत दाइकतेकेघरदेधिक
रि कतेपकेजाइ कतेकताबोलनेरहेमसा
आइ दाइयाण पयाणाकरिगया मांटीध
रामसाण जालणहारेद्विधकरि चेतैनहीअज
ण दाइकेईजालिकेई जालिये केईजालणज
दि केईजालणकीकरे दाइजीवणनोदि

केई गादे केई गादिये केई गान गाजो दिं केई
 नान गाका कइ दइ नी चराना दि॥१॥ दइ कइ
 उठि रेखांणी जागि जाव॥ अपरां सजरा संसाल॥
 गा किल नी दन की जिये॥ आइ पकंता काल॥६॥
 संमथ का सखां तजे गहे आन की ओटा॥ दइ
 बलिवंत की कंक रिवं चै चोटा॥६॥ अबिनासा
 के आसिरे॥ अजर वर की ओटा॥ दइ रणो साच
 के॥ कन लो गे चोटा॥६॥ संसना गाम रणार्थे ज
 हां जाइत हां गोरा॥ दइ अग प्रयाल सब॥ कवि न
 काल का सोर॥१॥ दइ सब मुख मोहै काल के
 मोह्या माया जाल॥ दइ गोर मसाण मै॥ कं धै अ
 ग प्रयाल॥१॥ दइ महु मसाण का॥ केता करै न
 फाया॥ मृतक मुरद गोशका॥ बकुत करै असि मा
 न॥ राजा रां राव मै॥ मै धां वो सिखां न॥ माया मो
 ह पसारै येना॥ सब धरती अस मान॥ पंचतन का
 पतला॥ यजुं पिंरु सदां श॥ मंदिर मांटी मास का
 बिन सतगं ही वारा॥१॥ दइ चाम
 का पंजरा॥ बिचि बो लण दारा॥ दइ पैसि करि
 बकु की नूप सारा॥१॥ बकुत पसारां करि गया
 कबू हाथिन आया॥ दइ हरि की चमति बिन
 प्रांणी प्रीताया॥१॥ मांण सजल का बुद बुद
 प्रांणी का फोटा॥ दइ काया को टमे॥ मै वा सी मो
 टा॥१॥ बाहरि गह निरसै करै॥ जीव के तांइ॥
 दइ मां दे काल दे॥ सो जाणै नंदी॥१॥ दइ साचे
 मै तै सा दिव मिले
 दइ दये॥ कपट काया

हेमाचंदे सारोंके सिरि साल जे ऊठ्ठा पापे रा ना
 न दाइ सोई काल दाइ जे ताल हरि बिकार
 की काल कवल में सोइ प्रेम लहरि सो पा
 वकी सि न स नयों होइ दाइ का ल रूप
 है वसे कोइ न जां गौ नाहि ये कड़ी करणी का
 ल है सब का रुको पाइ दाइ बिष अमृत ध
 में वसे इ नू ये के गां माया बिषे बिकार सब
 अमृत हरि कानां नू दाइ कदां सुम ह म द म
 रणा सब नवियों सिर ताज सो सी मरि माटी रु
 वा अमर अल ह काराज के ते मरि माटी
 संये बज्र तब ने बलिवंत दाइ के ते के गये दा
 नोटे व अ न न दाइ धरती करते ये क न ग
 दरिया करते फाल हा को प्रवत फा हते सो सी
 पाये काल दाइ सब जग के पे काल ये बुद्धा
 बिसन महे स सुर नर मुनि जे न लोक सब अग
 र सात लि से सा चंद सूर धर पवन जल बुद्धा
 मधु प्रवे स सो काल डरे कर नार ये जे जे वरु
 आदि सा पवनां पाणी धरती अवर विन से
 र वि स सि तारा पंचतन सब माया बिसे से मा
 निष क हा बि चारा दाइ विन से ते ज के मां
 ता के कि स माहि अमर उपा वरा दार है इ जा
 कोइ नाहि प्राण पवन जू पन ला काया
 करे क माइ दाइ सब स सार मे क हा ग द्या न
 जाइ नूर ते ज जू जोति है प्राण पि नू हो
 इ प्रि हि मु षि आते न हा सो हि ब के व सि से
 इ मन ही मां है के मरे जावे मन ही मा हि

सोहि बसायी तूतहे ॥ दाइइसणनांदि ॥ १२॥ आपमार
 आपकौ ॥ आप आपकौ पाइ ॥ आपे अणका लहे ॥ दाइ
 कहि संमकाइ ॥ १३॥ आपेमारे आपकौ ॥ यकुजीववि
 चार ॥ साहिब राषणहारहे सोहि हं हमारा ॥ १४॥
 दाइने जोगां पडे ॥ गपीन दिले जोग ॥ दाइनमो
 नगानि ॥ नमन मजार गुरु नंद वदन श्रवसाधव
 प्रणाम पारगतहा ॥ दाइ जे जोगी गुरु मुखा ॥ तोलेणां त
 न विचारि ॥ गहि आवध गुरु पो नका ॥ काल पुरिस कौ मा
 रि ॥ १५॥ नांद बिंदु सौं घट नरो ॥ सो जोगी जीव ॥ दाइ काहे कौ
 मेश ॥ राम रस पावे ॥ साधु जन की वासना ॥ सब दरहे
 संसार ॥ दाइ आनम ले मिले ॥ अमर उपावरा दार ॥ १६॥
 राम सरीषे कैर दे ॥ यकुना ही उन दार ॥ दाइ साधु अमर
 हे ॥ बिन सै सब संसार ॥ १७॥ जे कोई सै वैरां मकौ ॥ तो राम
 मरीषा होइ ॥ दाइ नो मकवी रज ॥ साधी बोले सोइ ॥ १८॥
 अरुणिन आया सो गया ॥ आया सो कौ जाइ ॥ दाइ नम
 न जीवता ॥ आपा ठौर लगाइ ॥ १९॥ पहलीया सो अब सया
 अब सो आगे होइ ॥ दाइ नीतु ठौर की ॥ बिरला बूझै को
 इ ॥ २०॥ दाइ जे जन हरिके रंगि रंगे ॥ सो रंग कटेन जाइ ॥ सदा
 सुरंगे सत जन रंग मेरे हे समाइ ॥ २१॥ साई की या सुकामि
 ते ॥ सुंदर सो सारंग ॥ दाइ धेवै वावरे ॥ दिन दिन हो सुरंग
 २०॥ दाइ कहै सब रंग तेरे ते रंगे ॥ इंदो सब रंग माहि ॥ स
 वरंग तेरे ते रंगे ॥ इजा को ईनां दि ॥ २१॥ ऐसा को ईनां मि
 ले ॥ तन फेरि सवार ॥ बटे धेवा लाकरे ॥ धेका जनिगे ॥ २२॥
 बटे दंद तो लगे बट ॥ लगे बट तो अमर कंद ॥ अमर कं
 द दाइ आने दा ॥ २३॥ दाइ कहो जम जोरा ॥ २४॥
 लको डम ॥ कहां मोच कौ मारिये ॥

॥ अमरगौर अविनासी आसना ॥ तिहा निरंजन का ॥
 हे ॥ दाइ जो गी जु गी जु गी जीवे ॥ काल का लस सब ॥ सहजि
 ॥ रोम रोम ले लाइ धुनि ॥ अैसे सदा अवम ॥ दाइ अवि
 नासी मिले ॥ तो जंम कौ दा जे मंड ॥ दाइ जुरा काल जंम
 रा मरण ॥ जहां ज हां जीव जाइ ॥ नग निपरां इग लीन मन
 ता कौ काल नषाइ ॥ निरविकार निज नो भुले ॥ जीव नि
 य है उपाइ ॥ दाइ कतम काल है ॥ ता के निकटिन जाइ ॥
 सहज सुनि संतरा बिये ॥ इन इन्द्र के मां है ॥ ले समाधिर सपां
 ये ॥ त हां काल से नाहि ॥ अविनासी के आसिरे ॥ अजर
 वर की ओट ॥ दाइ मरणो सा बके ॥ कटेन लगे चोट ॥ मर
 या जागा मरण ये ॥ उषे नाटा डष ॥ दाइ से सौ ले गया ॥ सुषे
 दा सुष ॥ दाइ सब कौ सं ऊटये कटिन ॥ काल गहेगा आ
 इ ॥ जीव त मृत कहे रहे ॥ ता के निकटिन जाइ ॥ जीव
 न मिले सु जीवते ॥ मूवे मिले मरि जाइ ॥ दाइ इन्द्र दे धिक
 रि ॥ जहां जे कौ त हां लाइ ॥ दाइ को ई धिर न ही ॥ य ऊ स
 ब आवे जाइ ॥ अमर पु रिस आवे रहे ॥ के साध लो लाइ ॥
 ॥ दाइ साधन सब कीया ॥ जब उन मन लागा मन ॥
 दाइ अस धिर आतमां ॥ यं जु गी जु गी जीवे जंम ॥ रह
 ते से ती ला गिर कु ॥ तो अजर वर होइ ॥ दाइ देवि विचारि
 करि ॥ जु दान जीवे कोइ ॥ जेना करण काल का ॥ तेना
 प्रहरि प्राण ॥ दाइ आन मरा मसौ ॥ जे नृ पश सु जाण ॥
 विषे अमृत घट मै वसे ॥ विरता जाणौ कोइ ॥ जिनि विष
 बाया ते मूये ॥ अमर अमी सौ होइ ॥ दाइ सब होम
 रिरहे ॥ जीव त ना ही कोइ ॥ सोई कहिये जीवता ॥ जे कटि
 अजर वर होइ ॥ देहर है संसार में ॥ जीव रांम को
 सा ॥ दाइ ऊरु व्यापे न ही ॥ काल काल डष जास ॥

काद्यकोसंगतितजे॥बैवाहरपदमोहि॥२॥
 रहे॥कोईगुणव्यापेनादि॥३॥दाहृतजिसेसापरा॥
 निराजाहोइ॥अविनासीकेआसिरे॥कालनजामो॥
 २॥जागकुलगाऊरामसो॥रिनिबिहोमीजाइ॥मगिधि
 सनेदाआपना॥दाहकालनषाड॥३॥दाहजागकुला॥
 ऊरामसो॥हाडकुठिबेविकारा॥पीवऊजीवऊरामस
 आतम॥साधनसारा॥३॥मरेतपावेपीवको॥जीति
 तबचेकाल॥दाहतिरसेनावले॥इन्हापिटयाज॥
 दाहजातादेविये॥जाहामूलगदाइ॥साहिवकीगतिआ
 महे॥सोऊछलघानजाइ॥३॥दाहमरोंकोचल्यामगा
 वनिकेसाथ॥दाहलाहामूलसो॥इन्हायेदापि॥
 साहिवमिसेतोजाविये॥नहोतोजीवेनादि॥सावेअमन
 उपाइकरि॥दाहमऊंमाहि॥दाहसजीवनिसाधेनहो॥ता
 येमरिमरिजाइ॥दाहपावेरानरस॥सुषमरेहेसमाइ॥
 दाहजेजनबेधेधीतिसो॥सोजेनमदसजति॥उलटिममा
 नाआपमो॥अंतरनाहोपा॥३॥टिनदिनलकुडकुडि
 सवा॥कहैमेदाहोताजाइ॥दाहदिनदिनतेहते॥जेहग
 मलीलाइ॥३॥नजोगोहोजीचुपहहे॥नेदिअगनिजा
 जाल॥सदासजीवनिसुनिरिये॥दाहतेकेकाल॥दाह
 जीवतबुटेदेहगुण॥जतिनमुकहहे॥जतिनमुकहहे
 मसबासुकनि॥कहातेमे॥३॥दाहदहदहनगनि
 जीवतपुन॥जानपुर॥दाहदहनगनि

चारा॥३॥

नृज

मन्त्रनेक जीवतमुक्तिसदगति सये ॥ दाइदर
४६ ॥ जीवतमेतानां नया ॥ जीवतप्रसनहोइ ॥ जीवतना
पतिनां मिले ॥ दाइबूहे सोइ ॥ जीवतहृतरनांतिरे ॥ जीव
त लघेनपार ॥ जीवतनिरसैनां स ॥ दाइते संसार
॥ जीवतप्रगटनां सया ॥ जीवतप्रचानां हि ॥ जीवतनप
यापीवको ॥ बूडे सौजलमां हि ॥ ४७ ॥ जीवतपदप्रायानही
जीवतमिलेन जाइ ॥ जीवतजेबूटेनही ॥ दाइगयेबिली
इ ॥ दाइबूटे जीवतां ॥ मूवां बूटेनां हि ॥ मूवां पीछेबू
टिये ॥ नौसब आयेन समां हि ॥ मूवां पीछे मुक्तिवता
वे ॥ मूवां पीछे मेला ॥ मूवां पीछे अमर असेपद ॥ दाइसूले
गहिला ॥ मूवां पीछे वे ऊंठ बासा ॥ मूवां अगपतां वे
मूवां पीछे मुक्तिवतां वे ॥ दाइजबोरां वे ॥ मूवां पी
छे दप ऊं चावे ॥ मूवां पीछे तारे ॥ मूवां पीछे सदगति होवे
दाइ जीवतमारे ॥ मूवां पीछे सगति वतां वे ॥ मूवां पी
छे सेवा ॥ मूवां पीछे संजमिरावे ॥ दाइदोजगदेवा ॥
दाइ धरती कासा धनकीया ॥ अबरको ए अस्यासार
ससिकिस आर सये ॥ अमर नयेनि जदास ॥ साहि
बमारेन मूये ॥ कोई जीवेनां हि ॥ साहिवरावेते ॥ दे
इनिजघरमां हि ॥ जेजनराघेरां मजा ॥ अपणे अंगि
गाइइइ ऊंठ बापेनही ॥ जेकोटिकाल कबिजाइ ॥
॥ ४८ ॥ दिसनी वरसदरु ॥ पारथको अंग ॥ दाइ
नमोनिरजन ॥ नमसकार देवतह ॥ बंदन अबसाध
प्रणामं पारंगतह ॥ मनचिंत आनमदेधिये ॥ जाग
किस ठौर ॥ जहां लागा तेसा जाणिये ॥ कादाइ देधे औन
॥ दाइसाधपरधिये ॥ अंतरि आनमदेध ॥ नममां
मायारहे ॥ कै आपे आप अलेष ॥ दाइमनकीदि

करि पाछे धरिये नंदं॥ अंतरगतिकी जेलघे॥ तिन को मैं
 बलि जांउं॥॥॥ कहै लखे सो मानवा॥ सेन लखे सो साध॥ म
 मन की लखे सुदेवता॥ दाइ अगम अगाध॥॥ दाइ बा
 दहर का सब देखिये॥ भीतर लघ्यान जाइ॥ बाहर दिष्टि
 वालो कका॥ भीतरि रोम दिष्टि॥॥ दाइ को मधुरी के ना
 उं सो॥ लो गो सो कुछ नाहि॥ लो गो सो मन ऊपला॥ मन की
 मन ही मां हिं॥॥ अथ ऊपसराफी ऊपिली॥ सीरि की ऊपु
 नाहि॥ अंतर की जां गौ न ही॥ नाथे घोटा सां हिं॥॥ दाइ
 जे नां हो सो सब कहै॥ हे सो कहै न कोइ॥ घोटा सरा पु
 धिये॥ तब जूं पातूं ही होइ॥॥ दाइ दिस करि सुमन हे
 आवै जाइ सुप्रवर्न॥ राखण हारा प्राण हे॥ दिष्टि हारा
 बुद्ध॥॥॥ घट की सो नि अनंति सब॥ मन की मे टि उया
 धि॥ दाइ इष्टि रिये चकी॥ रोम कहै ते साध॥॥॥ अथ अ
 यात बजां गिये॥ जब अंतर य बूटै॥ दाइ नां मा सरम का
 गिरि चौं डे फूटै॥॥॥ दाइ जा क दिवे को रया॥ अंतरि
 दाइ धाक्षे॥ ऊपरि को ये सब कहै॥ मां हिं न देखे कोइ॥॥॥
 जैसे मां हे जावर हे॥ ते सी आवै वासा॥ मुख बोले तब जा
 गिये॥ अंतर का प्रकास॥॥॥ दाइ ऊपरि देखि करि स
 ब को राखे नांउं॥ अंतरगतिकी जेलघे॥ ना को मैं बलि जां
 उं॥॥॥ काया के सब गुण बंधे॥ चौरा सी लख जीवा॥ दा
 इ से वगै सो सुही॥ जेर गिरा ते पीवा॥॥॥ तन मन आतम
 ये कहै॥ इज्ज सब उन हार॥ दाइ मूल पाया न ही॥ इ बि
 ध्या सरम बिकार॥॥॥ काया के बसि जाव सब॥ आत
 म इस आकार॥ दाइ काया बसि करे॥ निरंजन निरका
 र॥॥॥ पूरण ब्रह्म बिचारिये॥ त
 का॥ काया के गुण देखिये॥

निबुद्धिबेकविचारविन मागसपसमान सम
जायासमजैनही दाइप्रमगियान सबजीवप्राणी
मृतदे साधमिलेतबदेव बुद्धमिलेतबबुद्धदे दाइ
अलषअसेत दाइबध्याजीवदे छटाबुद्धसमान
दाइइन्द्रदेधिये हजारनाहीअन करमोकबसिज
बदे करमरहितसीबुद्ध जहांआतमतदाप्रआतमा
दाइसागातरम काचारुलेऊफने कायाही
माहि दाइपाकामिलिरहे जीवबुद्धदेनाहि बांध
सुरनेताये बाजे येहामोक्षरुलीजो रामसनहीसाध
हाथे वेगामोकलिहीजो सबजीवोंकोमरगे
मनकोविरलाकोइ दाइरकेगोनसौ साइसनमुखहोइ
प्राणधारिषजोहर मनछोटातेआवे छोटामन
कैमाथेमाँरे दाइइरिउडावे अदनाहैनानही
ताथेछोटोआहि गोनविचारनऊपजे साचऊतस
मकाहि दाइसाचालाजिये ऊगाहीजेनारि सोचा
नमुखराधिये ऊगानेहनिवारि हीरेकोककरक
मुखजोआ हीराकोहीनालेह मूरिषदाधिगवार
पायाधारिषजोहर दाइमोलअपार अंधहीरा
परधिया कीयाकोडामोल दाइसाधुजोहर हीरे
जनतोला रामविनाकिसकामका नहीकोही
जाव साइसराषाकैगया दाइप्रसेपीडा मित्र
देमेलिकरि मोलिविकानाबस देदाइमदिगात
पारबुद्धमिलिहंस सगुरानिगुराप्रधिये साध
सबकोइ सगुराचानिगुराऊता सादिबकैदरि
दाइसगुरासतिसंजमिरहे सनमुखसि

[illegible]

नाईरामकी उम्हनी के रहियो जूं जूं होवै तूं कहै घा
बधिके देन जाइ दाइ सो सुध आतमा साधु प्रमै आइ
नमो नमो निरंजन नमसकार गुरदेव तह बदन श्रवस
धवा प्रणामं पारंगतह दाइ माया का गुण बल कर उ
पाउ प्रजे आइ राजसतामसमातगी मन चंचल कै जाइ
आपाना हो बल मिटे वृत्ति धितिसरन ही होइ दाइ
जु गुण बल का सुनि समाना सोइ दाइ अने से उपज
गुण मई गुण ही पैले जाइ गुण ही सौ गहि बंधिया क
टे को राउ पाइ दोइ प्रपउ प्रजी प्रदरे निरपप्र अने
सार ऐकरां मह जान ही दाइ ले कु विचार दाइ का
या व्यावर गुण मई मन मुष उपजे ग्यान चौरा सीत प्रज
व को इस माया का ध्यान आतम बोध बंका बेटा
गुर मुषि उपजे आइ दाइ गुल पंच विन जहां रां मत हा
जाइ आतम मोहै उपजे दाइ गुल ज्ञान कृतम जा
इ उलंघि करि जहां निरंजन ध्यान आतम उ पजि अ
काम की सुणि धरती की बाट दाइ मार गये बका कोइ
ले धेन घाट आतम बोधी अन तई साधु निरपप्र हो
इ दाइ रां रां मकार सपी वेगा सोइ इक निरगुण इव
गुण मई सब घटिये धे ग्यान काया कामाया मिले आत
म बुद्ध समान विष अमृत घट मै बसे विरला बूके
कोइ जिनि विष याया ते मूये अमर अम सो होइ
आपै आप प्रकासिया निरमल ग्यान अन न धीर नीरे
नारा कीया दाइ सजित गवंत प्रेम सगति जब क
पजे निह चल सहज समाधि दाइ पीवे रां मरस सतगु
र के प्रसादे प्रेम सगति जब कपजे प्रगुल ग्यान वि
चार दाइ हरि सपाईये बूटै सकल विकार दा

इतमतिनिर्जनरांमकी॥अविचलअविनासी॥साह
 मजीवनिआतमा॥सहजैप्रकासी॥१६॥दाहबंजनि
 याईआतमा॥उपज्याआनदसाव॥सहजसीलसंतो
 षसत॥प्रेममगनमनराव॥१७॥जबहमऊडचालते॥उ
 तबकहतेमारगमांदि॥दाहप्रऊंचेपंथचलि॥कहैयऊ
 मारगतांदि॥१८॥पहलीहंमखऊककीया॥तरमकरम
 संसार॥दाहअनसैऊपजी॥रातेसिरजनदाश॥१९॥दाह
 सोईअनसैसोईऊपजी॥सोईसबदततसार॥सुणतांहां
 सादिवमिले॥मनकेजांदिबिकार॥२०॥दाहअनसैका
 टैरोगकौ॥अनहदउपजैआइ॥मेऊकाजलनिरमलाप
 वैरुचित्योला॥२१॥जबघटिअनसैऊपजै॥तबकीया
 कमकानासा॥सैचमनागोसबै॥पूरगाबुदप्रकासा॥
 २२॥दाहबांगीबुदकी॥अनसैघटिप्रकासा॥रांमअके
 लारहिगया॥सबदनिरंजनपासा॥२३॥पारबुदकदा
 प्राणसौ॥प्राणकदाघटसोइ॥दाहघटसबसौकदा
 बिषअमृतगुणदोइ॥२४॥दाहमालिककदाअरवाइ
 सौ॥अरवाइकदाओजूदा॥ओजूदआलमसौकदा
 ऊकमखरमौजूदा॥२५॥दाहअनसैथैआनदसया
 पाया॥निरंसेनाउं॥निहचलनिरमलनृबाणपदा॥अग
 मअगोचरगंतु॥२६॥दाहअनसैबांगीअगमकौ॥लेग
 ईसंगिलाइ॥अगदगहैअकदकहै॥असेदसैदलहा
 इ॥२७॥दाहजेऊबुदऊरांणथै॥अगमअगोचर
 बाता॥सौअनसैसावाकहै॥यऊदाहअकदकदात
 २८॥दाहजेसाबुदहै॥तेसीअनसैउंजाहोइ॥जिस
 हैतेसाकहै॥दाहबिरलाकोइ॥२९॥जेमतिपौबैऊप
 जै॥सोमतिप्रदलाहोइ॥कबहुन

सुप्रिया सोइ ॥ २६ ॥ दाइ मरिबे की सब ऊपजे ॥ जेबे की ऊठना
हि ॥ जीबे ॥ की जां गौ न हो ॥ मरिबे की मन मां हि ॥ २७ ॥ उपजे
हि ॥ कोइ गये पते ॥ अथ दया विरहे कोइ गये दाइ न मो न मो
निरंजन ॥ नमसकार देव तह ॥ बदनं अब साधवा ॥ प्रणाम प्रा
रगत ह ॥ २८ ॥ आपा मे टेहरि सजे ॥ तन मन तजे बिकार ॥ नृबे
री सब जीव सौ ॥ दाइ यहु मत सार ॥ २९ ॥ निरबैरी निज आ
तमा ॥ साधन काम त सार ॥ दाइ हजारी मखिन ॥ बैरी मंजि
बिकार ॥ ३० ॥ नृबैरी सब जीव सौ ॥ संत जंन सोइ ॥ दाइ ये
कै आतमा ॥ बैरी न हो कोइ ॥ ३१ ॥ सब ह म देष्या सो धि करि ॥
इ जानां ही आन ॥ सब घटिये कै आतमा ॥ क्या हिं ह मुसल
मान ॥ ३२ ॥ दाइ नारि पुरिष कानां उधरि ॥ इ हि स मै च मिनु
लान ॥ सब घटिये कै आतमा ॥ क्या हिं ह मुसल मान ॥ ३३ ॥
इ न्युं साई हाथ पग ॥ इ न्युं साई कान ॥ इ न्युं साई नैन दे ॥ हिं
ह मुसल मान ॥ ३४ ॥ दाइ के इ जान हो ॥ ये कै आतम रां म ॥ मत
गुर सि ॥ परि साधु सब ॥ ये म स गति बि आं मा ॥ ३५ ॥ दाइ सं
सा आर सी ॥ दिषत ह जा होइ ॥ सर म ग या उ बि ध्म मिटी ॥ तब
इ सर नां हो कोइ ॥ ३६ ॥ दाइ किस सौ बैरी कै र द्वा ॥ इ जा कोइ
नां हि ॥ जिम के अंग ये ऊपजे ॥ सोई हे सब मां हि ॥ ३७ ॥ सब घ
टिये कै आतमा ॥ जां गौ सो नी का ॥ आपा प मै च निहले ॥ दर
म न हे पीव का ॥ ३८ ॥ काहे कौं उष दा जिये ॥ घटि घटि आत
म रां म ॥ दाइ सब संतोषिये ॥ यहु साधु का काम ॥ ३९ ॥ ये
कै अलहरां म हे ॥ संमथ साई सोइ ॥ मै दे के प्र क वां न सब
षा तां होइ सु होइ ॥ ४० ॥ काहे कौं उष दा जिये ॥ साई हे सब
मां हि ॥ दाइ ये कै आतमा ॥ इ जा कोइ नां हि ॥ ४१ ॥ साहिब ज
की आतमा ॥ दीजे सुख संतोष ॥ दाइ इ जा को न हो ॥ चौदह
तीन्युं लोक ॥ ४२ ॥ दाइ ये कै आतमा ॥ साहिब हे सब मां हि

साहिब के नाते मिले ॥ सेष प्रथ के नाहि ॥ १५ ॥ दाइ जब
प्राण पिछां गे आप को ॥ आतम सब साइ ॥ सिर जंत दा
य सब निका ॥ ता सौ लो लाइ ॥ १७ ॥ आतम रांम बिवा
रि करि ॥ घटि घटि देव दया ला ॥ दाइ सब संतोषिये ॥
सब जीवो प्रतिपाला ॥ १८ ॥ दाइ पूरण बुद्ध बिचारि ले
हुती साव करि हरि ॥ सब घटि साहिब देखिये ॥ रांम रक्षा
तन दिये ॥ १९ ॥ गान नदिर का ठका ॥ मकर मंद ॥ २० ॥
ग. दाइ ग. ज. य. न. क. क. आप. आप. क. दाइ ॥ २१ ॥
न. स. ॥ २२ ॥ दाइ दाइ ॥ र. स. ॥ २३ ॥ दाइ दाइ ॥ २४ ॥
रिया ॥ तोइ जा को रांम वार ॥ २५ ॥ तन मन आतम ग. क.
दे ॥ इजा सब उनहार ॥ दाइ मूल पापानही ॥ इति भन
मि बिकार ॥ २६ ॥ दाइ सूक सहे जै का जिये नीना नान
नाहि ॥ काहे को इष्ट ही जिये साहिब मानि नाहि ॥ २७ ॥
जूं आप देखे आप को ॥ सजे हसर होइ ॥ तोइ इम मन
ही ॥ उपन पावे कोइ ॥ २८ ॥ काय लेव निज न मन कि
गये अनंत अ पार ॥ दाइ काय लेव निज ॥ निज न मन
रा ॥ २९ ॥ घट घट के न नहार ॥ सब प्रेम निज न न
है एक अनल के ॥ वरत नो नां साइ ॥ ३० ॥ इम न मन
प सब ॥ सांइ हीये पना ॥ दाइ न मन देहि ॥ दाइ न
म के जाइ ॥ ३१ ॥ आप देखे कस्तूर ॥ नदिर का ठका
आदि अनिस जये कहे ॥ दाइ न मन दाइ ॥ ३२ ॥
मरे वरु धिये ॥ जिने देहि न मन ॥ दाइ न मन
इये ॥ बिरोध ॥ दाइ न मन ॥ दाइ न मन ॥ दाइ न मन
जगत् सत न ॥ दाइ न मन ॥ दाइ न मन ॥ दाइ न मन
सिमान ॥ ३३ ॥ दाइ न मन ॥ दाइ न मन ॥ दाइ न मन
माये ॥ दाइ न मन ॥ दाइ न मन ॥ दाइ न मन

क३ दाह अ३ सषु दाहका॥ अजरा व३ काथान
दाह मो क३ दाहिघे॥ सादिव कानी मा३ ॥ ३२ दाह
आप चिणां दे दे ऊरा॥ तिसका की क३ रदि जतन
पत विप्र मे सु रिकीया॥ सो साने जीव रतन॥ ३३ म
तिस बारा मान मो॥ तिस कौ कर हे सलोम॥ अ३ न
आप पै दा कीया॥ सो ठा हे मुसल मान॥ ३४ दाह ज
गत मा हे जीव जे॥ जग पै र हे उदासा॥ ये
न कर ति दिन॥ निह चल ना ही बास॥ बाधा बंधी
जीव सब॥ सो जन पां रां घासा॥ आन मग पां न न ऊ
प जे॥ दाह कर दि बिनासा॥ ३५ दाह काला मुदक
रि कर दका॥ दिल पै हरि निवाशि॥ सब सू रति सु
ब दान की॥ मुलां मुग धन मां रि॥ ३६ गला गुमे क
काटि घे॥ मीयां मनी कौ मां रि॥ पंचो विस मल की
जिघे॥ प३ सब जी उवाशि॥ ३७ दाह उनियां सो ति
ल बंधि करि॥ बेवे दाना दाह॥ नेकी नां व वि स
रि करि॥ कर दक माया घा ३८॥ मिहरि महल
मनि नहा॥ दिल के बजर क मोरी काले का फि र
क दियो॥ मोमिन मालिक ओरा॥ ३९ दाह दया
नौ के दिल नहा॥ ब ऊरि क हां वे माधा॥ जे मु
का दे घियो॥ तो लागे ब ऊ अपराध॥ ४० मास
हारा मरु पीवे॥ बिघे विकारा सो ३॥ दाह
मरां म विना॥ दया क हां थो हो ४१॥ अ३ र नि
आत मा॥ दया न हो दिल माहि॥ दाह मू
ना कौ मां रा जां दि॥ ४२॥ मास अहारा जे
नर सिंघ सियाल॥ बग मे जा र मुन हां स द
पत घि काल॥ ४३॥ नाहर सिंघ सयाल म

सुसलमान॥ मासषाडमोमिनसप्रे॥ बडेमीयाक
ग्यान॥ ४४॥ बेमिहरगुमराहगाफिला॥ गोसतसुर
दनी॥ बेदिलबदकारआलेमा॥ हयातमुरदनी॥ ४५॥
॥ कुलिआलमयेकेहीदमा॥ अरवाहेयष लास
बअमलबदकारहुई॥ पाकयारांपासा॥ ४६॥ साव
हीराजेप्रथमा॥ हयाबिकेरांटेसा॥ नगतिनहीस
गवंतकी॥ तहांकेसाप वेसा॥ ४७॥ कालकालमेंका
हिकरि॥ आतमअंगिलगाइ॥ जीवदयायकुपा
लिये॥ दाहअमृतपाइ॥ ४८॥ दाहबुरानबांछेजी
वका॥ सदासजीवनिसोइ॥ पलेबिषेबिकारसब
सावनगतिरतहोइ॥ ४९॥ नांकोबैरीनांकोमीत॥
दाहराममिलनकीचीत॥ ५०॥ दाहजेसाहिले
घालीया॥ तोमीसकाटिसूलादीया॥ मिहरिमया
करिफिलिकीया॥ तोजायेजीयेकरिजीया॥ ५१॥ बुझ
कोजावेऔरकुंठा॥ हमकुंठकीयाऔर॥ हया
करोतोबूटिये॥ नहीतोनांहांगेर॥ ५२॥ इतिदय
निर्वेतीकोसंपूर्णसुंदरीकोसुदाइनमोनमोनिरंजन
नमसकारगुरदेवनह॥ बदनश्रवसाधवा॥ ५३॥
गांमंपारंगतह॥ ५४॥ अरतिवंतीसुंदरी॥ पलपल
चाहेपाव॥ दाहकारशिकंतके॥ तालाबेलीव
२॥ रतिवंतीआ रतिकेश॥ रामसनेहोआव॥
दाहऔंसुरिअबमिले॥ यकुबिरहशिकाभा
वा॥ ५५॥ काहेनआवकुंतघरि॥ कंधुभूरहेरि
साइ॥ दाहसुंदरिसेजपरि॥ जनमअमोलिकजा
इ॥ ५६॥ आतमअनरिआवहुं॥ पाहेतेरागेर
दाहसुंदरिपावहुं॥ हजानांहीऔर॥ ५७॥ दाह

येसेजपरि सदायेकरसहोइ दाहधेलेपावसा तास
औरनकोइ दाहनमोनमोनिरंजन नमसकारगुरदेव
तह बदनश्रवसाधवा प्रणामंपारंगतह दाह
घटिकुसतूरीनृगके सरमतफिरेउदास अंतरंग
निजागोनही तापैसुधैघास दाहसबघटमै
बिटहे संगिरहेहरिपास कसूरादिगमेबसे सु
घतमेलेघास दाहजीवनजागोरामको रामजी
वकेपास गुरकेसबदोबाहिरा तापैफिरेउदा
सा दाहजाकराजगटदिया सोतोघटहीमाहि
नैप्रडदासमका तापैजागतनाहि दाहइरि
हैनेइरिदेशमरदासरपूर नैनजबिनसूजेनही ता
घटछाइ गुरगोबंदकपाकरे तोसहजैहोमितिजा
सरवर सरियाद हदिसा पंघीपासाजा
दाहगुरघसादबिन कंजलपीवैआइ दाह
नैलवोपांगसे नलक्षंऊमंऊ नजातांऊपांगमै
ईक्याउपेक्षाहे दाहकेईहोडेघारिका केईकार
हिं केईमपुराकौचले साहिबघटहीमाहि
दाहमैचेलामंऊंगुर मंऊेईउपटेसा बाहरि
बावरे जटाबंक्षपैकेस दाहसबघटमो
रदा बिबलाबूफैकोइ सोईबूफैरामको जिन
नेहीहोइ सदासमोपरहेसंगिसनसुषा
धेनगूऊ सुपिनैहीसमऊेनही कांकरिलहे
दाहजइमतजीवजागोनही प्रमस्वात
इ चितनिसमऊेस्वातसुषा पीवैप्रमअ घ

जागतजे आनंद करै॥ सो पावै सुख स्थाव॥ सूतै सुख न
 पावै॥ प्रेम मग वाया लावै॥ दाह जिह्वा संहिद
 जागता॥ नेत न मगान चैन॥ सावधान मन दुख रद
 निरि निरि पदे रुचैन॥ दाह मांड नाव धीन॥ हिन ह
 सये अचैन॥ जागता गधिन जागता॥ नाचै निरफां प्रे
 न॥ दाह गो ब्याद के गुण बज्र नंदे॥ कोड न जागो जा
 व॥ अघा॥ कुत आघ गति॥ जे जल लया प्रव
 नैन॥ निरजन॥ नन मकर गुरदेव तद॥ लदन अल
 साधवा॥ प्रणाम पार गत ह॥ १॥ साधु निरमल नदी॥ म
 रं मर मै सम ताइ॥ दाह औ गुण काटि करि॥ जीवर सा
 नलि जाइ॥ २॥ दाह जब ही साधु संताइये॥ तब ही ऊ
 ध पलत॥ आकास धुसे धरती धिसे॥ तीनु लोक गरत
 ॥ ३॥ दाह जिहि घरि निंद्या साधकी॥ सो घर गये समू
 ल॥ निन की नीवन पाइये॥ नाउ न वाउ न धूल॥ दा
 ह निंदानां न लीजिये॥ सुधि नै ही जिनि होइ॥ नाह म
 क है न तुम्ह सुगो॥ हम जिनि ना धे कोइ॥ ४॥ दाह नि
 द की येन कहै॥ कीट पडे सुख मां हि॥ राम बि सुख जा
 मै मरे॥ जग सुख आवै जाहि॥ ५॥ दाह निंदक बडु
 रा जिनि मरे॥ पुत्र पगारी सोइ॥ हम कौ करतानु जला
 आषा मै ला होइ॥ दाह जिहि बिधि आतम नुधरे॥
 प्रसे प्रीत मधारा॥ साधु सब दकौ नीदरा॥ सम ऊँ चतु
 र सुजागा॥ ६॥ दाह अग देषा अनरथ कहै॥ कलि पि
 थमी का पाप॥ धरती अवर जब लगे॥ तब लग करै क
 लाप॥ ७॥ अग देषा अनरथ कहै॥ अपराधी स
 मारा॥ जदित दिले घालेइगा॥ सम प्रसिर जन दारा॥

॥२॥ दाह करिये लोकमौ कैसा धरै नुठाइ ॥ अण देवी
जंबकी ॥ औसी कहै बरणाइ ॥ १॥ दोसै मांग सप्रत धिका
ल ॥ जू करियुं करि दाह टालि ॥ २॥ दाह अमृत कौ बिष
बिष कौ अमृत ॥ फेरि धरै सब नां ॥ नमल मै लो मै लानि
रमल जाहिगे कि सवां ॥ ३॥ दाह साच कं ऊठा कहै ॥
ठेको साचा ॥ रांमड दाई काटियो ॥ कंठ पैं बाचा ॥ ४॥ ऊठ
न कहिये साच कौ ॥ साचन कहिये ऊठ ॥ दाह साहिब मा
नैन ही ॥ लोगे प्राप अष्ट ॥ ५॥ दाह ऊठ दिखतै साच
कौ ॥ नयान कनै सीत ॥ साचारा ता साच सौ ॥ ऊठ नें अं
नै चीत ॥ ६॥ दाह जूं जूं न दे लोक बिचारा ॥ तूं तूं छी
जे ॥ रोग दमारा ॥ साचे कौ ऊठा कहै ॥ ऊठा साच समा
न ॥ दाह अचिर जटे छिया ॥ यजु लो गो का पान ॥ ७॥ ५॥
निवा कौ अण ॥ अण नियुं कौ अण ॥ दाह नमोन मो
निरंजन ॥ नम सकार गुर देवतदा ॥ बंदन अब साधवा
द ॥ पुगां मं पारंगतदा ॥ १॥ दाह चंन बावना ॥ बसे बटाऊ
आइ ॥ सुष दाई सीतल कीये ॥ तीनु तापन साइ ॥ का
ल ऊहाडा हाथिले ॥ काटगा लागा हाइ ॥ औसा प्रकुस
मार है ॥ माल मूल ले जाइ ॥ २॥ सत गुर चंदन बावना ॥
लागे रहे सुवंग ॥ दाह बिष छुडै न हो ॥ कहा करे सत
ग ॥ ३॥ दाह की डान कका ॥ राघा चंदन माहि ॥ नल
अपठान कमे ॥ चंदन सावै नोहि ॥ ४॥ सत गुर साध
सुजा गाहे ॥ सिष का गुगान ही जाइ ॥ दाह अमृत छ
दिकरि ॥ बिषे दला हल घाइ ॥ ५॥ कोटि बरस लो
विषे ॥ बेसा चंदन प्रासा ॥ दाह गाली धेरै ॥ कटेन
गै बांम ॥ ६॥ कोटि बरस लो राधियो ॥ पथर पां
रहे ॥ दाह आग अंग है ॥ नीतरि से दै नोहि ॥ ७॥

कोटिबरसलौराधिये॥लोहापारससंगा॥दाहरोमक
 अंतरा॥पलटेनाही॥अगा॥८॥कोटिबरसलौराधि
 ये॥जीवबुद्धसंगीदो॥दाहमोहबासना॥कटेनमे
 लाहो॥९॥मूसाजलताटेधिरुशि॥दाहदंसदयाल
 मोनसरोवरलेचल्या॥पेघाकाटेकाला॥१०॥सबजी
 वसुवंगमकप्रमै॥साधकाटेआइ॥दाहबिसहरबि
 संनरे॥फिरिताहीकोषा॥११॥दाहहधपिलाइये॥
 बिसहरबिसकरिले॥शागुणकाओगुणकरिलीया॥
 ताहीकोउषटे॥१२॥बिनहीपावकजलिमूवा॥ज
 वासाजलमांदि॥दाहसकेसीचता॥तोजलकोहसन
 नाहि॥१३॥सुफलबुधप्रमारी॥सुषटेवेफलफूल॥
 दाहऊपरिवेसिकरि॥निगुणांकाटेमून॥१४॥दाहस
 गुणांगुणकरै॥निगुणांमांनैनाहि॥निगुणांमरिनुक
 लगया॥सगुणांसाहिबमांदि॥१५॥निगुणांगुणांमांनै
 नही॥कोटिकैजेकोइ॥दाहसबकुछसोपिये॥सोफि
 रिवैरीदो॥१६॥दाहसगुणांलीजिये॥निगुणांदोजेन
 रि॥सगुणांसनमुषराधिये॥निगुणांनहनिवारि॥१
 ७॥सगुणांगुणांकेतेकरै॥निगुणांनमांनैयेका॥दाह
 साधुसबकहै॥निगुणांनकअनेका॥८॥सगुणांगुणां
 केतेकरै॥निगुणांनधिटाहि॥दाहसाधुसबकहै॥निगु
 णांनकलजाइ॥९॥सगुणांगुणांगुकेतेकरै॥निगुणांन
 मांनैकोइ॥दाहसाधुसबकहै॥सलाकहायेदो॥१०
 सगुणांगुणांकेतेकरै॥निगुणांनमांनैनीच॥दाहसाधु
 सबकहै॥निगुणांकेसिरिमांचा॥११॥साहिबजीसबगु
 णांकरै॥सतगुर
 गुणांनमांनैकोइ॥१२॥साहिबजीस

सतगुरुमाँहें आइ ॥ दाहुराधेजीवदे ॥ निगुणांमेदेजाइ ॥
साहिबजीसबगुणाकरै ॥ सतगुरकादेसंग ॥ दाहुर
लेराधिले ॥ निगुणांपलटै अंग ॥ ४॥ साहिबजीसबगु
णाकरै ॥ सतगुरआडादे ॥ दाहुरादेदेघतां ॥ निगुणां
गुणानहीले ॥ ५॥ सतगुरदीयारासधन ॥ रहेसबुधि
बताइ ॥ मनसाबाचाऊमनां ॥ बिलसैबितडैघाइ ॥
कीयाकिरतमेटैनही ॥ गुणाहीमाँहिसमाइ ॥ दाहुरबै
अनंतधन ॥ कबहुंकवेनजाइ ॥ १२॥ इतिनिगुणा
वै ॥ १॥ सूरदे ॥ अष्टदेवतादि ॥ अंग ॥ दाहनमोनमोनि
रजनानमसकारगुरदेवतह ॥ बंदनअबसाधवा
पणांमंपारंतह ॥ १॥ दाहुरबनबुराकीया ॥ तुम्हेनकर
गांरोसा ॥ साहिबसमाईकाधगां ॥ बंदेकौंसबदोस ॥
॥ २॥ दाहुराबुरासबहमकीया ॥ सोमुषकह्यानजा
नूमलमेरासाँइयां ॥ ताकौंदोसनंताइ ॥ ३॥ साँइसेवा
चोरमैं ॥ अपराधीबंदा ॥ दाहुरजाकोनही ॥ मुकुसरी
षागंदा ॥ ४॥ दाहुरतिलतिलकाअपधीतेरा ॥ रतीरती
काचोर ॥ पलपलकामेंगुनहीतेरा ॥ बकसऊओगुणा
मोरा ॥ ५॥ महाअपराधीयेकमैं ॥ सारेइहिसंसार ॥ जे
गुणामेरेअनिघगां ॥ अतनआवेपार ॥ बेमरजाहामिति
नहां ॥ अमेकयेअपार ॥ मैंअपराधीबापजा ॥ मेरेतुम्ह
येकअक्षरा ॥ दोषअनेककलंकसब ॥ बऊतबु
मुकुमाहि ॥ मैंकीयेअपराधसब ॥ तुम्हयेछानानाहि
गुनहगारअपराधीतेरा ॥ साजिकहांहंमजाहि ॥
६॥ देष्यामोधिसब ॥ तुम्हबिनकदोनसमाहि ॥
॥ ६॥ आदिअंतिलोआइकरि ॥ मुकुतकबुनक
मायामोहमदमदुरा ॥ स्नादसबेचिनहीन ॥ काम

१॥ संसै संदा ॥ कबहुं नां न लीला ॥ पाषं प्रचपा ॥ प्रम
 दाइ अं सैं धीना ॥ ७ ॥ दाइ बकु बंधन मौं बंधिया ॥ ऐ
 क बिचारा जीवा ॥ अपणों बलि बूटे नही ॥ छो दुगा
 दारा पीवा ॥ दाइ बंदी वां न है ॥ नृ बंदि ॥ छो निदिवा
 ना ॥ अब जिनि राख कु बंदी में ॥ मोरां मिहर वां न ॥ ८ ॥
 दाइ अंतरिका लिं मां ॥ दिरे दे बकु बिकारा ॥ पंग र त
 पूरा हरिकशि ॥ दाइ करै उकारा ॥ १० ॥ सब कु बंधाये
 राम जा ॥ कु बंधा जा ॥ तुम्हें एक बाधियाइये ॥ स
 बंदे धी मां ॥ ११ ॥ सब लसाल मन मेरे दे ॥ राम बि स
 रि कूं जाइ ॥ य कु उष दाइ कूं से दे ॥ सांई करी सदाइ
 १२ ॥ राखरा दारा राधि ॥ य कु मन मेरा राधि ॥ तुम्हें बि
 न ह जा को नही ॥ साधु बोले साधि ॥ १३ ॥ माया बिषे बि
 कार ये मेरा मन मोरी ॥ सोई को जे सांई यां ॥ नृ मी ठा लोरी
 १४ ॥ जे साहिब को सांवे नही ॥ सोह मये जिनि होइ ॥
 सतगुरु ला जे अपरां ॥ साधन माने कोइ ॥ १५ ॥ जूं आपे
 दिषे आप को ॥ सोने नां दे मुका ॥ मोरां मेरा मिहर करि दाइ
 देषे मुका ॥ १६ ॥ दाइ पछितावार ह्या ॥ सके न राहर ला
 डा ॥ अरथिन आया राम को ॥ य कु तन संह जाइ ॥ १७
 कह तां सुगतां दिन गये ॥ कै क लून आया ॥ दाइ हरि
 की भगति बिना ॥ प्राणी पछिताया ॥ १८ ॥ सो कु बंध मये
 नां सया ॥ जा परिश के राम ॥ दाइ इस संसार में ॥ हम
 आये बे कामा ॥ १९ ॥ दाइ कहै दिन दिन नो तम सगति दे
 दिन दिन नो तम नां ॥ दिन दिन नो तम नेह दे ॥ मै बलि
 २० ॥ सांई सतगंतो प्रदे ॥ ताव न गति बे सा
 सा ॥ सद्ध क सद्ध र सद्ध दे ॥ न ग दाइ दा सा ॥ २१ ॥ सांई स
 सै हरिकशि ॥ करि संका काना सा ॥ सांनि

३३ दारन समितासद ज प्रकास ॥ ३२ ॥ नाही प्रगत
 र द्या हे सोर द्या लुका ॥ संईयां पड द्या हरि करि
 दुहे प्रगत आ ॥ ३३ ॥ दाह माया प्रगत करे दो ॥ यं
 होता राम ॥ अस प्रसमिलि खेतने ॥ सब जीव सब ह
 गाम ॥ ३४ ॥ दया करै तब अंगिल गांवे ॥ न गति अष
 डित देवे ॥ दाह दरसन आप अकेला ॥ ह जा हरि
 सब लेवे ॥ दाह साध सिषावे आतमा ॥ सेवा दि
 ट करिले ॥ पारबुदा सो बानता ॥ दया करि दरसन
 दे ॥ ३५ ॥ साहिब साध दया लहे ॥ हम ही अपरा
 धी ॥ दाह जीव असा गाया ॥ अविद्या साध ॥ ३६ ॥ सब जी
 व तो रंगम सो ॥ पैरामन तो ॥ दाह काचे ताग जूं ॥ टटे
 तूं जो ॥ ३७ ॥ फटा फेरि सवारि करि ॥ लेप कुचावे अ
 र ॥ ओसा कोई ना मिले ॥ दाह गंद ब हार ॥ ३८ ॥ ओसा को
 ई ना मिले ॥ तन फेरि सवार ॥ बूढे थें बाला करे ॥ धिका
 ल निवार ॥ ३९ ॥ गले बिले करि बानता ॥ धिक मेक अर
 दास ॥ अस प्रस करणा करे ॥ तब दरवे दाह दास ॥
 ४० ॥ साई तेरे करि डरो ॥ सदा रहो सोता ॥ अजा सिंघ
 ने घणा ॥ दाह लीया जाति ॥ ४१ ॥ दाह पल मां हि प्रगते
 सही ॥ जे जंम करै पुकार ॥ दीन दुषी तब देखि करि ॥
 ति आतुर ति दिवार ॥ आगे पीछे संगिर दे ॥ आप उत
 ये सार ॥ साध दुषी तब हरि दुषी ॥ ओसा सिरजन हार
 ४२ ॥ सेवग की रक्षा करे ॥ सेवग की प्रतपाल ॥ सेव
 की बाहर चढे ॥ दाह दीन दया ल ॥ ४३ ॥ काया नाव
 मं ह मे ॥ ओघटे आ ॥ इहि ओसरिये कं गाध बिन
 ह कोण सहा ॥ ४४ ॥ यजुतन तेरा सो जा ॥ कं करि
 घेती ॥ घेवट बिन के सें तिगे ॥ दाह गहर गं सार ॥

नै

दिव

पदपरोदनस्यधजलविमामरसंसारामविनांमू
 नहा॥दाहयेवराहारा॥३॥यकुघटबोदियक्षरमे॥
 दरियावारनपारा॥सिसीतनयानकटेधिकरि॥दाहक
 रीपुकारा॥३॥कलिजुगघोरअक्षरहे॥तिसकावार
 नपारा॥दाहकुम्बिनकांतिशे॥संमथसिरजनहार
 ॥३॥कायाकेवसिजाव है॥कसिकसिबंशमा
 हि॥दाहआतमरामविना॥कांहीबूटेनांदि॥४॥दाह
 जोगीबंशपंचसौ॥कांहीबूटेनांदि॥नीधशिआया
 मारियो॥यकुजीवकायामाहि॥५॥दाहकहेकुम्बि
 नक्षणीनक्षरीजीवका॥यंहीआवेजाइ॥जिदूसोईस
 तिहे॥तोबेगाप्रगटिआइ॥६॥नीधशिआयामारि
 यो॥धणीनक्षरीकोइ॥दाहसोकोमारियो॥साहिवसि
 रपरिहोइ॥७॥रामविमुषजुगिजुगिडुषी॥लवचौरा
 सीजीव॥जोमेमेरेजगआवेते॥राषणहारापीवा॥८॥
 संमथसिरजनहारहे॥जेऊबुकरैसुहोइ॥दाहसेव
 गराधिले॥कालनलागेकोइ॥९॥सोईसाचानाउदे॥का
 लकालमिटिजाइ॥दाहनृसैरहे॥कबहुकालनषा
 इ॥१०॥कोईनहीकरतारविना॥प्रांताउक्षरगहारा
 जीवराडुषीयारामविना॥दाहइहिंसंसार॥११॥जिनका
 रघ्यांनूकरै॥तेउबरेकरतारा॥जेतेकाडेहाथये
 तेडूबेसंसार॥१२॥राषणहारायेकनू॥मारणहारअ
 नेका॥दाहकेइजानही॥हूंआपेहीदेखा॥१३॥दाहजु
 गज्जाताजमरूपहे॥साहिवराषणहाराबुम्बिबि
 अंतरजिनिपेदे॥तायेकरैपुकारा॥१४॥जहांतहांबि
 बेबिकारये॥बुम्बहीराषणहारा॥१५॥
 प्रिया॥साचासिरजनहार॥१६॥

तलि जात दे ॥ तुम्ह बिन संसार ॥ कर गहि करता काहि
ले ॥ दि अ व लं त न आ धार ॥ ५॥ दा इ हौं लागी जग प्रज
ले ॥ घ टि घं टि सब संसार ॥ हम यें क हू न होत दे ॥ बर दि
बुका वरा दार ॥ ७॥ आतम जीव अनाय सब करता
र उ बरै रांम निहोरा की जिये ॥ जिनि का हू मा रै ॥ ८॥
अ र स जि मी ओ जू द मे ॥ तहां तो ऐ अफ ता ब ॥ सब ज
ग जल ता दे पि करि दा इ पु कारे सा धा ॥ ९॥ सकल सव
न सब आतमां ॥ नृ बिष करि हरि ले ॥ प्रदा है सो हरि
करि ॥ कुसम लर दगान दे ॥ १०॥ तन मंन निरमल आ
तमां ॥ सब का हू की हो ॥ दा इ बिषे बिकार का ॥ बात न
बू जे को ॥ ११॥ संमय धोरी कंध धरि रण ले दोर निबाहि
मार गमां दिन मे लिये ॥ पी छै बिड दल जा ॥ १२॥ दा इ गग
न गिरे न ब को धरे ॥ धरती धर हं मे ॥ जे तुम्ह बा न ऊ रांम
रण ॥ कंध को मं है ॥ १३॥ दा इ जं वै बत गगन यें टूटे
कहां धरि कहां ठांम ॥ लागी सुरति अंग यें बूटे ॥ सो क
त जीवें रांम ॥ १४॥ अंतर जांमी ये क हू ॥ आतम के आ धार
जे तुम्ह बा न ऊ हा य यें ॥ तौ कौ रां सबा दग दार ॥ ति रा
से त ग तुम्ह ल गै ॥ तुम्ह ही मां थै सारा ॥ दा इ ड बत रांम ज
बे गि उतारौ पारा ॥ १५॥ सत बू टा सूत न ग या ॥ बल पोरि
व सा गा जा ॥ को ई क्षी र ज नां धरे ॥ काल प हू ता आ ॥ स
गी या के संग के ॥ मेरा ऊं न ब सा ॥ सा व स ग ति धन लू
टि ॥ दा इ ड धी षु दा ॥ १६॥ दा इ जी य रै ज क न हं ॥ बि अ
म न प्रा वैं ॥ आतम प्रां रां लू रां जूं ॥ अैं सै हो इ न आ वैं
६॥ दा इ तेरी पू बू पू बू है ॥ सब नां का लागे ॥ सुंदर सो
सा का हिले ॥ सब को ई सां गै ॥ १७॥ तुम्ह हौं ते सा की जि
तौ बू टै गे जीव ॥ हम हूं अैं सा जिनि करौ ॥ भैं स दि कै

पाव ॥ ६५ ॥ अनाथों का आसिरा ॥ निरक्षरों आक्षर ॥ नि
 रधन का धन रांम है ॥ दाह सिरजंन हारा ॥ ६५ ॥ साहिब द
 रिदाह सदा ॥ नि सदिन करै पुकारा ॥ मीरा मेरा मिहर क
 शि ॥ साहिब देदी दारा ॥ ६६ ॥ दाह प्यासा प्रेम का ॥ साहिब
 रांम पिला ॥ प्रगट प्याला दे कुसरि ॥ मृत कले कुजिला
 ॥ ६७ ॥ अला आले नूर का ॥ सरि सरि प्याला दे ॥ ६८ ॥ हम
 कौ प्रेम पिला ॥ करि ॥ मति वाला करि ले ॥ ६९ ॥ तुम्ह
 कौ हम से बड़ न है ॥ हम कौ तुम्ह साना हिं ॥ दाह कौ जि
 नि प्रदरे ॥ टूर कुनैन कुमां हिं ॥ ७० ॥ तुम्हें तब हों हो
 इस बाहर स प्रसदर हाल ॥ हम थैं कब हूँ न हो ॥ ७१ ॥
 जे बीच हिं जुग काला ॥ ७२ ॥ तुम्हें थैं तुम्हें कौ मिलै ॥
 कपल में आ ॥ हम थैं कब हूँ न हो ॥ ७३ ॥ कोटि कल
 प जे जा ॥ ७४ ॥ साहिब सौ मिलि खेलते ॥ हो ता प्रेम सने
 ॥ दाह प्रेम सने ह बिना ॥ धरी दुहेती दे ॥ ७५ ॥ साहि
 ब सौ मिलि खेलते ॥ हो ता प्रेम सने ह ॥ प्रगट दर सने दे
 ते ॥ दाह सुबिया दे ॥ ७६ ॥ आगा अपर पार की ॥ बस
 अबर सरनारा ॥ दरे पट बर पहरि कशि ॥ धरती करै सिंहा
 रा ॥ बसुक्ष स ब फले फले ॥ प्रिया अनंत अपा राग
 नगर जिजल थल संरे ॥ दाह जै जै कारा ॥ ७७ ॥ काला मुह
 करि काल का ॥ सांई सदा मुकाला ॥ मेघ तुम्हारे घरि घरा
 बर स कुदी न दयाला ॥ ७८ ॥ तुम्हें कौ सावे और कुछ ॥
 हम कुछ की या और ॥ मिहर करै तो छुटिये ॥ न ही तो
 नांही तो ॥ ७९ ॥ मुक सावे सो मैं की या ॥ तुम्हें सावे सो ना
 हिं ॥ दाह गुन दगार है ॥ मैं देखा मन मां हिं ॥ ८० ॥ दाह
 सुसी तुम्हारी तुं करी ॥ हम तो मोना ॥ सावे बंद
 बक सियो ॥ सावे गहिक रिमाशि ॥
 लेखाली या ॥ तौ सी स काटि सु

करिफिलि कीया॥ तो जाये जीये करिजीया॥ १॥
बंदन को अया॥ अयुसा धीन त को ददाइन मोन मो
निरंजन॥ नमसकार गुर देव तदा॥ बंदन अब साधवा
प्रणामं पारंगत ह॥ सब देवण द्वारा जगत का॥ अंत
रिपूरे साधि॥ दाह साबति मो सही॥ हजा और नराधि
२॥ मां है ऐं मुक्त कौं कहे॥ अंतर जांमी आया॥ दाह हज
धे धे॥ साचामेरा जाया॥ ३॥ करता है सो करेगा॥ दाह सा
खी हत॥ को तिग द्वारा कैर ह्या॥ अण करता औ धृत
॥ ४॥ आप अकेला सब करे॥ घट में लहरि उठा ह॥ दा
ह सिरि दे जी व के॥ यं न्यारा कै जाइ॥ ५॥ आप अकेला
सब करे॥ औरों के सिरि दे ह॥ दाह सो सादा सकौ॥ अप
गां नां नुन लेइ॥ ६॥ दाह ज सकरि उति प्रतिकरे॥ सातग
करि प्रतपाल॥ ताम सकरि घले करे॥ निरगुण को तिग
द्वारा॥ ७॥ दाह बुद्ध जीव हरि आतमा॥ बिले गोपा कां न
सकल निरंतर सरि ह्या॥ साखी हत सु जान॥ ८॥ जंम
गमरणो सो नि करि॥ यज्ञ पंड उपाया॥ सोई ही या जी
व को॥ ले जग में आया॥ बिष अमृत सब पाव क पां
सत गुरि सम जाया॥ मन सावा चा कमना॥ सोई फल पा
या॥ ९॥ दाह जां रौ बूझै जीव सब॥ गुण औ गुण की जे
जां रौ बूझै पाव क परे॥ दाई दो मन ही जे॥ १०॥ मन ही मां
है कै मेरे॥ जति मन ही मां हिं॥ साहिब साखी हत है॥
दाह हसरानां हिं॥ ११॥ बुरा मला सिरि जीव के॥ दो व
ह सही मां हिं॥ दाह करता करि ह्या॥ सो सिरि ही जे न
हिं॥ १२॥ प्रमाण कौं राखिये॥ की जे प्रउपगार॥ दाह से
वग सो सता॥ निरंजन निरकार॥ १३॥ जिस का तिस को
सौं धिये॥ मुक्त प्रउपगार॥ दाह से वग सो सता॥ सि
गिन ही लेते जाग॥ १४॥ कर ना लेव करि कन ह्ये॥ १५॥

माहिबं धवो दाहउसकी प्रलियो। कतरनही आवे
 सेवासुकुतसवगया॥ मेमेरा मनमाहि। दाहआपा
 जवलेगो। साहिबमोनेनाहि॥ १६॥ दाहकेइउतारे
 आरती॥ केइसेवाकरिजाहि॥ केइआपूजाकरै॥
 केइधुनावेधाहि॥ केइसेवगकरहे। केइसाधसंति
 माहि॥ केइआइवरसनकरै॥ हमतैहोतानाहि
 ॥ १७॥ नाहमकैकरावेआरती॥ नाहमपीवेधेला
 वेनीर॥ करैकरावेसाइया॥ दाहसकलसरीरा॥ १८
 दाहजवाबेलैजागारा॥ ताकोलेधेनकोइ। सब
 जगबैठाजीतिकरि। कारुलपतनहोइ॥ २०॥ आ
 पवेलकोआरा॥ दाहनमोनमो। निरंजना। नमसका
 रगुरदेवतहा। बंदनं सरबसाधवा। प्रणामंपारंगत्स
 ॥ दाहअंमतरूपीनाउले॥ आतमततपोषे। सह
 जैसहजसमाधिमें॥ धणीजलंसोषे। प्रसरेतीन्यलो
 कमें॥ लिपतनहीधेधे। सोफललागेसहजमें। सुद
 रसबलोको॥ २१॥ दाहबेलीआतमां। सहजफलफ
 लहोइ। सहजिसहजिसतगुरकहो। धूकेबिरलाको
 शशिजिसाहिबसीचैनही॥ तिबेलीकमिलाइ। दा
 हसीचैसाइयां। तिबेलीबधतीजाइ॥ २४॥ हरितरवर
 ततआतमां। बेलीकरिबिसतारा। दाहलागेअमर
 फलाकोइसाधसंचणहारा॥ २५॥ दाहसुकारुषडा
 ॥ काहेनहरियाहोइ। आयैसीचैअमीरसासफल
 फलियासोइ॥ २६॥ कदेनसुकेरुषडा। जिअमरत
 सीच्याआपा। दाहहरियासोफ
 पा॥ २७॥ जिघटरोपेरांमजी। स

गी० अमरफल कबहुं सकेन जाइ ॥ १० ॥ दूर जल
 वरिषे बाहरा सके का पावेत ॥ दाइ हरिया होंगा ॥
 सी च ग हार सुचेत ॥ ११ ॥ दाइ अमर बेल है आतमा
 मार संमं होमाहि ॥ सके धारे नीर सं ॥ अमर फलना
 गेनां हि ॥ १२ ॥ दाइ बडु गुणवंती बेलि है ॥ ऊरी काल
 रमां हि सी च धोर नीर सं ॥ तातें तिये जेनां हि ॥ १३ ॥
 बडु गुणवंती बेलि है ॥ मीठी धरती बाहि ॥ मीठा पां
 री सी चिये ॥ दाइ अमर फल घाइ ॥ १४ ॥ अमर तबेली
 बाहिये ॥ अमर तका फल होइ ॥ अमर तका फल घा
 इ करि ॥ मवान सुगिये कोइ ॥ १५ ॥ बिष की बेली बा
 हिये ॥ बिष ही का फल होइ ॥ बिष ही का फल घाइ कर
 रि अमर नही कलिकोइ ॥ १६ ॥ सत गुर संगति ती
 यजे साहिब सी च ग हार ॥ प्राण बिख पावे सदा
 ॥ दाइ फलै अपार ॥ १७ ॥ दाया धरम का रुख डास
 त सो बधता जाइ ॥ सें तोष सो फलै फलै ॥ दाइ अम
 र फल घाइ ॥ १८ ॥ दाइ नमो नमो
 निरंजन ॥ तम सकार गुर देव तह ॥ बंदन सरब साध
 दा ॥ प्रणाम पारंगत ॥ १९ ॥ दाइ संगी सोई की जिये जे
 कलि अउरावर होइ ॥ नां बडु मरे न बीछु टै ॥ ना
 इ प्रव्यापै कोइ ॥ २० ॥ दाइ संगी सोई की जिये ॥ जिअस
 धिर इहिसंसार ॥ ना बडु मरे न हम प्रपे ॥ असा नै
 कु बिचार ॥ २१ ॥ दाइ संगी सोई की जिये ॥ मुख ड
 प्रकासायी ॥ दाइ जीव गमर गाका ॥ सो सदा सो
 गाती ॥ २२ ॥ दाइ संगी सोई की जिये ॥ जे कबहुं पल
 टिन जाइ ॥ आदि अंति बिहटै नही ॥ तास तियह

मनला ॥ ५ ॥ दाहकाया बिहडै देखता ॥ माया संगी
निजा ॥ करतम बिहडै बावरो ॥ अजरा वर ल्योला
॥ ६ ॥ दाहअ बिहडु आय है ॥ अमर उपा वरा ह
रा ॥ अवितां सी आपै रहे ॥ बिन सै सब सं सारा ॥ ७ ॥
दाहअ बिहडु आय है ॥ सा चा सिर जन दार ॥
आदि अंति बिहडै न ही ॥ बिन सै सब आका
रा ॥ ८ ॥ दाहअ बिहडु आय है ॥ अविचल नर ह्या
समा ॥ निह चलन रसितारां म है ॥ जो दी सै सो जा
॥ ९ ॥ दाहअ बिहडु आय है ॥ कब हूं बिहडै नहि
घटै बंधे न ही एकर सा ॥ सब उप जिष्ये उ समां हि
॥ १० ॥ अ बिहडु अंग बिहडै न ही ॥ अपल टपल
टिन जा ॥ दाहअ घट एकर सा ॥ सब मै र ह्या समां
॥ जे ते गुण व्यापे ते ते ते तै जे रे मना ॥ सा हि बअ
नें कार ते ॥ ११ ॥ इति सरव सा दी अंग सं सर
समाप्तः अंग सै तीस ॥ ३० ॥ राखी ॥ २५००
॥ अथ स्वामी दाह दया लजी के पद गडे ॥
प्रथम राग गोदी लिखत ॥ रामनां मन ही का
हौं माई ॥ प्राण तजौ निक टिजी जाई ॥ टेक रती
रती करि हारे मोहि ॥ सांई संग न छा डों तोहि ॥ १ ॥
नाबै ले सिर करवत दे ॥ जीवनि मूरिं छा डों तोहि
॥ २ ॥ पावक मै ले मारे मोहि ॥ जे रे सरार न छा डों तो
हि ॥ ३ ॥ बदाहू औ सी बनि आई ॥ मिलौ गोपाल
नि सा न बजाई ॥ ४ ॥ रांमनां मजि नि छा डों कोई
॥ रांम कहत जन निरमल होई ॥ टेक ॥ रांम कहत
सुष संप

रांमकहत जंत निरसल होइ ॥ रांमतांमकहि
ससलक्षोइ ॥ रांमकहत कोकोनही तारे ॥ यह
ततदाइ प्राणहमारे ॥ २ ॥ कौणबिधिपाईऐरे ॥
सीतहमारासोइ ॥ टेढापासिपीवपरदेसहैरेजब
लगप्रगटैनांहि ॥ बिनदेखें ॥ उषपाईऐ ॥ प्रहस
लेमनमांदि ॥ जबजगनैननदेखिये ॥ प्रगटमि
लेतआइ ॥ एकसेजसंगाहीरहै ॥ पऊ उषस ह्या
नजाइ ॥ तबलगनैडै ॥ रिहैरे ॥ जबलगमिले
नमोहिनैननिकटिनहीदेखिये ॥ संगरहैंक
होइ ॥ क हाकरोंकेंसैमिलैरे ॥ तलफैमेराजी
व दाइआतुरबिरहणी ॥ कारणिअपगोपीव
॥ ३ ॥ जीपराक्यैरहैरे ॥ तुम्हारेदरसनबिनबे
हाल ॥ टेढापरदाअंतरिकरिहै ॥ हमजीवैकिचि
आधरि सदासंगातीप्रीतमां ॥ अबकैलेहुचबा
रि ॥ गोपिगुसांइकैरहै ॥ अबकाहेनप्रगटहोइ
॥ रांमसनेहीसंगिया ॥ हजानांहीकोइ ॥ अंतरज
माछिपिरहै ॥ हमक्यैजीवैइ ॥ रि ॥ तुम्हबिनब्याकु
लकैसदा नैनरहैजलपरि ॥ ३ ॥ आपअपरछन
कैरहै ॥ हमक्यैरैनिबिहाइ ॥ दाइदरसनकार
गों ॥ तलघतलपिजीवजाइ ॥ ४ ॥ अजरूननिक
सेप्राणकठोर ॥ दरसनबिनावहुतदिनबीते
सुंदरपीतममोर ॥ टेढाचारिपहरचारुजुग
बीतेरैनिगमाईमोर ॥ अबधिगईअजरून
हीआइये ॥ कतकरहेचितचोर ॥ १ ॥ कजरूनैत
बिधिनहीदेखै ॥ मारगबितवततोर ॥ दाइअसै

अतुर बिरहनी ॥ जिसै चंद चकार ॥ ५ ॥ मोक्ष
 पीवनी साजि संधारी ॥ प्रबवे गि मिलो तन जाइ
 बनवारी ॥ टेक साजि सिंगार कीया मन मांही ॥ स
 जहं पीवपती जेनां ही ॥ पीव मिलन को अह निस
 जागी ॥ अजहं मेरी पलक न लागी ॥ जतन जतन
 करि पंथ निहारौ ॥ पावना वै त्य आप संधारी ॥ प्रब
 सुषदी जे जाऊं बलिहारी ॥ कहै दाह सुगि बिप
 तिहमारी ॥ ६ ॥ सो दिन कबहुं आवैगा ॥ दाहडा
 पीव पावैगा ॥ टेक ॥ क्यंहीं अपनै अंगि लगावैगा
 तब सब डख मेरा जोवैगा ॥ १ ॥ पीव अपनै बेंन सुना
 वैगा ॥ तब जानेंद अंगी तमावैगा ॥ २ ॥ पीव मेरी
 पास मिठावैगा ॥ आपहि प्रेमापिलावैगा ॥ ३ ॥ दे
 अपना दर संधियावैगा ॥ तब दाह संग लगावै
 गा ॥ ४ ॥ ॥ तैं मन सो द्यौ मोर रा रहित सकैं हंरा
 मजी टेक तोरें नां द्रवित लाइयारे ॥ अबरनित य
 उदासा सांई ऐस मजाइया ॥ हौं गन बढौ पासरे
 ॥ जानौ तिलु हिन बीबु टोरै ॥ जनि प्रकृति दा
 होइ ॥ गुन तेरे मना जयौ ॥ सुन सी सांई ॥ सो इरे
 मोरें जन मा माइया ॥ चीन्हा नही सो सारा ॥ अ
 जहं एह अचेत है ॥ अबरनही आक्षर रा ॥ ३ ॥ पी
 वकी प्रीति तो पाइ रेरे ॥ जो सरि होवै भांगो ॥ यो
 तो अनतन जाइसी ॥ रहि सी चरन डलागरे ॥ ४ ॥
 अनतें मन ति दारिया ॥ मोहि एक हि सेती काज
 ॥ अनतें गां ऐंड व ऊप जे ॥ मोहि
 जरे ॥ सांई सौ सह जै र मो

वितहां मत बिलंबीया जहां अलख अमेवरे
चरन के चल चित लाईया ॥ मोरे ही ले जावे दा
दू जन अचेत है सह जे ही तं आवरे ॥ ८ ॥ विर
ह निको मिगारन भावे हे को ई औ सारां म मिल
वे ॥ टेक बिसरे अंजन मंजंचीरा ॥ विरह बिषाय
ह व्यापे पीरा ॥ नव स तथा के सकल स्पंगारा
हे को ई पीर मिटावण हारा ॥ देह गेहन ह
सुख सरीरा ॥ निस दिन चित वत चांगनीरा ॥
दाहता दिन भावे आंनरां म बिनां नई म
क समांन ॥ ९ ॥ अब तो मोहिलागी बाइत
नि तिह चल चित लीयो चुराई ॥ टेक आंनन रुवे औ
र नही भावे ॥ अगम अगोचर हांम जाई ॥ रूप न रष
बरन क हौ कैसा ॥ तिन चरनो चित र ह्या समाई ॥
॥ तिन चरनो चित सहज समांन ॥ सोर स सीतांत
हांम न धाई ॥ अब तो ऐसी खनि आई ॥ बिषत जे अ
स अमृत थाई ॥ १० ॥ कह करौ मेरा बसनां हो ॥ और
न मेरे अंगि सुहाई ॥ पलक दाह देषण पावे ॥ तो
जनम जनम की रषा ब्रुकाई ॥ १० ॥ तंजिनिं छाडै
के सदा ॥ मेरे ओरि निवां हन हार हो ॥ टेक ओ गुन
मेरे द्वेष करि तं नां करि मैला मंन दीनां नाथ दया
ल है ॥ अपराधी सेवग जन हो ॥ ह म अपराधी जन
म के नष सिष ले रे बिकार मे टिह मारे ओ गुनां ॥
तं गारवा सिर जन हार हो ॥ ११ ॥ मे जन ब्रुत बिग
रिया ॥ अब तुम ही ले सवारि ॥ संमरथ मेरा सांईयां
तं आयें आप उधारि हो ॥ १२ ॥ तं न बिसारी के सदा

भैंजतमनातोहि॥दाहश्रीरितिबाहिले॥प्रबजि
 निछाडैमोहिहो॥४॥१॥शरामसे साजियेरे॥बिषम
 इहेलीबारा॥टेकमंजिसमंदांतावरिरे॥बिंभेवट
 बाज ॥काटगा हाराकोनहीं॥एकरामबिनआज
 ॥पारिनपऊचैरामबिन॥सेरातौजलमांहि॥नार
 गहाराएकत॥हजाकोईनांहि॥२॥पारिपरोहन
 तोचले॥तुम्रुबेवटसिरजनहारा॥तौसागरमेंरू
 बिंदे॥तुम्रुबिनप्रांताअधारा॥१॥श्रीघटदरियाकं
 तिरे॥बिदिपबैसराहारा॥दाहबेवटरामबिन॥
 कौणउतारैपार॥१॥पारनहींपाइएरेरामबिन
 कोतिरबोहनहारा॥टेकतुम्रुबिनतारणही ॥३॥स
 रयऊसंसार॥पेरतथाकेकेसवा॥स्फुंवारनपार
 ॥बिषमसयांतकतौजल॥तुम्रुबिनतारीहोइ
 ॥हंहरितारणकेसवा॥हजानांहीकोश॥२॥तुम्रुबि
 नबेवटकोनहींश्रीतिरतिस्योनहींजाश्रीश्रीघ
 टिसेरारूबिंदे॥नांहीआनउयाइ॥३॥यऊघटश्री
 घटबिंभमहै॥१॥रूबतमांहिसरीर॥दाहकाइर
 रामबिन॥मननहींबोधेधीरा॥४॥१॥करहमजीबेद
 सगुसांझेतिम्रुछाऊऊसंमथसांझे॥टेकजेतुम्रु
 जनकौमनहेबिसारा॥तौहसरकौणसेमालनहा
 रा॥जेतुम्रुपरहरिरहौनिनारे॥तौसेवगजाइकौ
 णकेघोर॥२॥जेजनसेवगवऊतबिगारे॥तौसाहि
 बगरवादोसतिवारे॥३॥संमथसांझेसाहिबमेरा
 दाहदासदीनहेतेरा॥४॥१॥करकरिमिलेमोकौ
 रामगुसांझे॥यऊबिधियामेंरेब
 मनमेरादहदिसि

जिन्हाच्यादसबेरसलागे॥ इंदी भोग बिषेको जा
 गे॥ श्रवत ऊसाचक देनही भावे॥ नैतरूपत हांदे
 धिलुभावे॥ काम क्रोधक देनही छाजे॥ लालच
 लागे॥ बेरसपीजे॥ दाहदे धिमिलेकपसादे॥ बिषे
 बिकारबसेमनसांही॥ १५॥ जोरे नाई रागमदया
 नही करते॥ नवका नांवेवटहरि आपे॥ यों बि
 नकपुतिसतरते॥ टिक करनी कठिन होत नही मो
 पे॥ कपू करि ऐ दिन भरते॥ लालचलागि परत पाव
 कमे॥ आपदि आपे जरते॥ स्वादहि संगि बिषेन
 ही छुटे॥ मननिहचलनही धरते॥ घाहलाहल
 सुषकेताई॥ आपेही पचि भरते॥ मेंकांसी कपटी
 क्रोधकायामे॥ कपपरत नही भरते॥ करवतको
 मसीसधरिचपतै॥ आपदि आप बिहरते॥ हरिच
 पनां अंग आपनही छाडे॥ अपती आप बिचरते
 ॥ पताकूपतको मारे॥ दाह्यो जनतिरते॥ १६॥ तो
 लगतं जिनि मारे मोहि॥ जो लगमै देखो नही तो
 हि॥ टेक॥ इबके बिछुरेमिलनकैसे होइ॥ इहि बि
 धिव ऊरिनची नैकोइ॥ दीत दयाल दयाकरि
 जोइ॥ सब सुख आनंद तुम्हें होइ॥ १७॥ जनमज
 नमके बंधन मोइ॥ दिषत दाह अहति सिरोइ॥ १८॥
 संगत ठाडो मेरा पांचन पीव॥ मै बलिते रेजी
 वने जीव॥ टेक संगितु मारे सब सुख होइ॥ चरन
 कवल मुख देखो तो हि॥ अनेक जतन करि पा
 या सोइ॥ देखो नैन ऊतौ सुख होइ॥ सरन तुम्हारी
 अंतरिवास॥ चरन कवल न सदाइ निवास॥ अ
 नेक जतन करि पाया सोइ॥ देखो नैन ऊतौ सुख

सोइ सरनितुमरी अंतरिवास ॥ चरनकवलतहा ॥
 अतिवास ॥ १॥ अबदाइ मन अनतनजा ॥ अंतरि
 धिरद्वौ लोला ॥ १॥ नही मे लोरां मन ही मे लो
 मे सो धना धेत ही मे लो ॥ विततु मरु सो बाधे न ही मे
 लो ॥ टक मे तु मरु का जे ता ला बे ली ॥ दिवै कि सु मने जा
 प्रसि मे ली ॥ साहि सिक्के न मन सो गा हो ॥ चरन समा
 नो के ही परिका हो ॥ १॥ राधि मिरि दै त मा फौ सां मी ॥
 मे डो दि ले प्रां सो अंतर जां मी ॥ ३॥ दिवै त मे लो संखां मी
 मा फौ ॥ दाइ मन मुम से वरा तां फौ ॥ ४॥ १॥ १॥ दां म सुन
 इ न बिपति ह मारी हो ॥ तिरी सरनिकी बलि हारी हो
 टक मे जु चरन वित चांदना ॥ तु मरु से वरा साधार ना
 ॥ १॥ तिरे वित प्रंति चरन दिखो वना ॥ करि दया अंतरि
 आं वना ॥ १॥ जन दाइ बिपति सुनां वना ॥ तु मरु गो ब्य
 दत पति बुजां वना ॥ २॥ की राजां तिल ल मां नै गु मा
 ॥ ३॥ तु मरु मां वे सो मे जां नत नां ही ॥ टक के मल मां नै ता
 चंगां ॥ के सल मां नै लोक रिजां ॥ १॥ के सल मां नै
 तीर थलां ॥ के सल मां नै मूह मुंडां ॥ १॥ के सल मां
 नै सब धर त्यागी ॥ के सल मां नै तरे बैरागी ॥ ३॥ के सल
 मां नै जटा बंधां ॥ के सल मां नै सम म लगां ॥ ४॥ के स
 ल मां नै बत बत डोले ॥ के सल मां नै मुख हिन बोले
 ॥ ५॥ के सल मां नै जप तप की ॥ के सल मां नै कर द
 त लीये ॥ ६॥ के सल मां नै ब्रह्म गियांनी ॥ के सल मां
 नै अधिक धियांनी ॥ ७॥ जितु मरु मां वे सो तु मरु ये आ
 हि ॥ दाइ न जां गे क हि समजा ॥ ८॥
 ए तोर औ गुण मोर गुमां ॥ ९॥ तु

न जानत नांही॥ टेक॥ तुम्ह उपगार की ऐहरिके ते
 सोहम बिसरे गए॥ आप उपाइ अगति सुधिरावे तह
 प्रतिपालन ये हो गुसाई॥ न घस घसाजिकी ऐहो
 जीवने॥ उदरि अधर दीऐ॥ अनयांन जहां जाइ स
 सम कै॥ तहां ये राखिली ऐहो गुसाई॥ दिन दिन
 जानि जतन करि पोषे॥ सदा समी परहे॥ अगम अप
 रकी ऐगुण के ते॥ कबहुं नां हिक देहो गुसाई॥ क
 बहुं नां दिन तुम्ह तन चित चत॥ माया मोह घरे दा
 इ तुम्ह तजि जाइ गुसाई॥ २२॥ कैसे जीवै ऐरे मा
 ई संग न पास॥ बंचल मन निह चलन ही॥ निस
 दित फिरै उदास टेक॥ नेहन ही रेगं मका॥ प्री
 तिन ही प्रकास॥ साहिब का सुमिरा न ही॥ करै
 मिलन की आस॥ जिस दे बंध लियारे॥ प्राणी
 पंड बंधाणो मास॥ सोती जल बलि जाइ गा॥ फूल
 नोग बिलास॥ २॥ तौ जीवी जै जीवणां॥ सुमिरै सा
 भै सास॥ दाइ पराट पीव भिन्ने॥ तौ अंतरि होइ उ
 जास॥ ३॥ २३॥ जीयरा मेरे सुमरि सार॥ काम को ध
 म डत जि बिकार॥ टेक॥ तंजिनि सत्ते मन गंवार॥
 सिरिभार न लीजे मांति हार॥ सुणिंसम जायौ
 बार बार॥ अजहूँ न चेतै होइ मिथार॥ २॥ करिते
 सें भवति रिण्यार॥ दाइ दुख ये ऐ बिचार॥ ३॥ २४॥
 जीयरा चेतौ रे जिनि जारे॥ दे जै हरि सौ प्रीति न
 कीली॥ जन्म अमोलिक हारै॥ टेक॥ बिरबेर सस
 जायौ रे जीयरा॥ अचेतन होइ गंवारै॥ यकृत न
 हेका गट्की गुडिया॥ कबूँ कबूँ चेतै बिचारै॥

॥ तिल तिल तुलसी को हां गिं होत है जे पल्लव म बि
 सारे ॥ मो मारी दाह के जीव में ॥ क ऊ कै सें करि डारे
 ॥ २५ ॥ ता सुष कों कहो काकी जौ ॥ जातै पल पल य
 ऊत न छी जौ ॥ टिक आसण कुं जर सि रिछ ३ धरी
 जौ ॥ ता यें फि रि फि रि उष सही जौ ॥ १ ॥ से ज संधारि
 सुंदरि संगि र मी जौ ॥ घाड़ हल हल नरं मि मरी जौ
 ॥ २ ॥ ब ऊ बिधि नो जन मां रु चि ली जौ ॥ स्वाद संकट नि
 नर मया सि पारी जौ ॥ ३ ॥ ऐत जि दाह प्राण पती जौ ॥ स
 ब सुष र सनां रां मर मी जौ ॥ ४ ॥ २६ ॥ मन निरमल तन
 निर्मल मां ॥ आं न उपाह विकार न जां ॥ टिका
 जौ मन को दूला तो तन कारा ॥ को टिक रे न हीं जा
 हि विकारा ॥ ॥ ॥ जौ मन बिसहर तो तन भुवंग ॥ क
 रे उपाह बिधौ पुनिसंग ॥ मन मैला तन उजल
 नां हीं ॥ ब ऊ तप बिहारे विकार न जां हीं ॥ ३ मन
 निरमल तन निरमल हो ॥ दाह सा च बिचारै को
 ॥ १ ॥ २७ ॥ मै मै करत सबै जग जां ॥ अजहं अंधन
 चे तेरे ॥ य ऊ उनियां सब देषि दिवांती ॥ नू ली ग एह
 कै तेरे ॥ टिक मै मै रे मां नू लिर है रे ॥ सा जन सोई बि
 सारा ॥ आया ही राहा पि अमो लिका ॥ जन मजु दा
 ज्प हारा ॥ लाल चलो मै ला गिर है रे ॥ जानंत मेरी
 मेरा ॥ आप हि आप बि चारत नां हीं ॥ त्रिका को को
 तेरा ॥ ॥ आवत है सब जाता दी सौ ॥ इन मै तेरा नां हीं
 इन सौ ला गि जन मजि नि मो दी ॥ सो धि देषि स बु
 मां हीं ॥ ३ निह चल सौ ॥ ॥ ॥
 नि आ ॥ दाह

रकीलाई॥२५॥ काजीवतांका मरनां रेभाई॥ जे
 तैरांमनरमिसिअघाई॥ टेक कासुषसंपतिछत्र
 तिराजा॥ बिनमंडिजाइबसेकिदिकाजा॥॥ काबि
 व्यागुनपाठपुराणा॥ कामरिषजैतैरांमनजांता
 २॥ काआसनकरिअहिनिसजागे॥ काफिरिसोव
 तरांमनजागे॥३॥ कामुक्ताकाबंधहोई॥ दाहरां
 मनजांतासोई॥४॥ २५॥ मनरेरांमबितांतनही
 जेजबयऊजाइमिलैमाटीमें॥ तबकऊकैसैं
 कीजे॥ टेक पारसपरसिकंचनकरिलजै॥ सहज
 सुरतिसुषदाई॥ मायाबेलिविषेफललागे॥ ता
 परिल्लिनसाई॥॥ जबलगप्राणप्यंडहेनीका॥
 तबलगताहिजिनिमूलें॥ यइसंसारसैंबलके
 सुकज्पू॥ तापरित्जिनिफूलें॥१॥ ओसरऐहजा
 निजगजीवन॥ समुदेधिसचुपाचै॥ अंगअने
 कआंनसतिमूलें॥ दाइजिनिदहकाचै॥३॥३०॥
 मोद्योंमरादेधिवनअंधा॥ सफतनहीकाबैफ
 धा॥ टेक फल्योफिरतसकजबतमांही॥ सिर
 सांधेंसरसफतनांही॥॥ उदमहिमातौवनकेव
 टा॥ छाडिचलैसबबाहेबाटा॥१॥ फंध्योनजांनैव
 नकेचाइ॥ दाइस्वादिवंधानोंआइ॥१॥३१॥ का
 हेरेमनरांमबिसारै॥ मतिषाजनमजाइजीव
 दारै॥ टेक मातपिताकोबंधनसाई॥ सबहीमु
 पितांकहासगाई॥॥ तनधनजोवनफूटाजा
 यी॥ रांसहिरदेधरिसारंगप्राणी॥१॥ चंचल
 चितविचूचीमाया॥ काहेनचैतैसोदिनअथा

दाहृततमनज्जवाक (हरि) राम चरन गहका
 हेनरहिरे ॥ ३२ ॥ श्री साजुंतमअमोलिकसाईजा
 मैआइमिलेणमराई। टेक। जमैप्राणप्रेमरसपी
 वे। सदासुहागसेजसुषजीवै ॥ आतमआइरां
 मसौराती ॥ अखिलअमरधनपावैपाती ॥ ए
 रगटपरसनदरसनपावै ॥ परमवृषिमिलिसां
 हिंसमावै ॥ ३३ ॥ श्रीसाजतमनहीनरआवै ॥ मोकू
 दाहरतनंगवावै ॥ ३३ ॥ कौंराजनमकदांजा
 तावै ॥ अरेसाईरांमछाडिकद्वारातावै ॥ टेक। मे
 मैमेरीइतसौलागि ॥ स्वादिपतंगतसूकैआगि
 ॥ विधियासौरतगरवगुमांता ॥ कुजरकांसबंध
 अस्मिना ॥ ३४ ॥ लोचनमोहमदमायाफंध ॥ ज्ज
 लमीतनचैतैअंध ॥ ३४ ॥ दाहयुक्तनयोदीजाश
 रांमबिमुखमरिगएबिलाइ ॥ ३४ ॥ मनसरिषा
 तैक्याकीया ॥ कुछपीवकारनिबैरागनलीया ॥
 रतैजवतपसाधीक्यादीया ॥ टेक। रतैकरवतका
 सीकदिसद्या ॥ रतंगंगासाहेनांबद्या ॥ रतैबि
 रहनिज्जंडुषनांसद्या ॥ रतंपालेपरवतिनांगल्प ॥
 रतैआपदिआपानांदद्या ॥ रतैपीववुकारीका
 दिकद्या ॥ ३५ ॥ दोइप्यासेहरिजननांपीया ॥ रतंब
 जरनफाटैरेदिया ॥ ३५ ॥ गजीवनिदाहएजीया ॥
 ३॥ ३५ ॥ क्याकीजेमनिषाजनंमको ॥ रांमनजपदि
 गवार ॥ मायाकेमदिमातीबहे ॥ न्निरहेसंसा
 रा ॥ टेक। द
 ॥ हरिमारासूकैनहीं ॥ कः

आया आनि जु आये मे अहि निसि जले स
 रीरारे भाव सराति भावे नही पीवे न हरि जल
 नीरारे मे मेरी सब सखे है ॥ सखे माया ज
 लीरे रांमनांम सखे नही ॥ अधन सखे कालीरे
 ॥ ३१ ॥ असे ही जनम गांवा देया ॥ जित आया तित जा
 ऐरे ॥ रांमरसां दण तां पीया ॥ जन दाह देत लगा
 ॥ ३२ ॥ ३६ ॥ इनमें काली जै क्या दी जे ॥ जन्म अ
 मोलिक बी जे ॥ टेला सो दूत सुपि नां दोई ॥ जागे थो
 नही कोई ॥ मृग त्रिजां जल जैसा ॥ चेति देखि ज
 ग असा ॥ बाजी सरस दिषावा ॥ बाजी गरद ह
 कावा ॥ दाह संगी तेरा ॥ कैद नही किस कैरा
 ॥ ३७ ॥ ३७ ॥ बालिक जागे जीयरा सोवे ॥ कंकरि
 मेला होवे ॥ टेक से जये क नही मेला ॥ ताते प्रेम
 नखेला ॥ सांई संगत पावा ॥ सो दूत जनम गं मा
 वा ॥ ३८ ॥ गाफिल नीदन की जे ॥ आवध टेत न छी
 जे ॥ दाह जीव अयां नां ॥ फूटे भरंम सुलां ना
 ॥ ३९ ॥ ३९ ॥ यह लै यह रै रै गिंदे बणिं जारिया ॥ तूं अ
 याह हिंसं सारवे ॥ माया दार सपी बणल गा ॥ बि
 सया मिर जन दारवे ॥ मिर जन हार बिसारा की
 याय सारा ॥ मात पिता कुल नारिवे ॥ फूटी माया
 आय बंध्या ॥ चेतै नही गंवारवे ॥ गंवार न चेतै
 श्रीगुण केते ॥ बंध्या सब परिवारवे ॥ दाह दासक
 देबणिं जारा ॥ तूं आया हिंसं सारवे ॥ ४० ॥ ४० ॥ जे यह
 रै रै गिंदे बणिं जारिया ॥ तूं रतातरुणी नालि
 वे ॥ माया मोह फिरै मति बाला ॥ रांमन सक्यास

जालिदे रामनसंज्ञानैरतानां ले॥ अंधनसुके
 कालदे॥ हरितहीध्यायाजनमगं वाया॥ दहदि
 सिफुटातालुवे॥ दहदिसिफुटानीरनिषुटा
 ॥ लेषादेवणसालुवे॥ दाहदासकहेबणिंजा
 रा॥ तरतातरुणीनालिदे॥ १॥ तीजेप्रहरैरैणि
 देबणिंजारिया॥ तैबकुतनुठायासारवे॥ जोम
 निमायासोक रिआया॥ नांकुछकीयाबिचारवे
 ॥ बिचारनकीयानां वतलीया॥ क्यं करिलंधैण
 रवे॥ पारनयावे॥ फि रिपछितावे॥ रुबणलग्गा
 धरवे॥ रुबणलग्गा नेरासगा॥ दधिनआया
 सारवे॥ दाहदासकहेबणिंजारा॥ तैबकुतनु
 ठायासारवे॥ ३॥ चौथेप्रहरैरैणिं देबणिंजा
 रिया॥ तपका रुवापीरवे॥ जोवनगयाजुराबिया
 यी॥ नाही सुधिसरीरवे॥ सुधिनयाईरैणिंगवाई
 ॥ नैनकुं आयातीरवे॥ जोजलनेरामुबणलग्गा
 ॥ कोईबबंधेधरवे॥ कोईधीरनबंधेजसकेफं
 धे॥ क्यं करिलंधैतीरवे॥ दाहदासकहेबणिंजा
 रा॥ तपका रुवापीरवे॥ ३॥ काहेरेनरक
 रकुटुफाण॥ अंतिकालघरगोरमसांया॥ टेक
 पदलेबलिदंतगएबिला॥ ब्रह्माआदिमहे
 स्वरजा॥ आगेहोतेमोटेमारा॥ गऐछादिपे
 कंवरपीर॥ काचीदेहकहागुवांनो॥ जेउयज्य
 सोसबेबिजांनो॥ दाहअमरनयांवरणहार॥ आ
 पहिआपरहैकरतार॥ ४॥ इतघरिचोरन
 मसैकोई॥ अंतरिहेजेजांनैसोई॥ टे॥ जाग

ऊरे जनतन जाइ जागत हे मोर ह्या समाइ
 न जतन करि राख ऊसार ॥ तस कर उपजे कौण
 बिचार ॥ १ ॥ बकरि दाइ जायें जे ॥ तो साहिब रण
 गति ले ॥ ४१ ॥ मेरी मेरी करत जगधीना ॥ देखत ही
 चलि जावै ॥ काम को धिष्णा तन जावै ॥ ताथे पा
 रन पावै ॥ टे ॥ मरिष ममता जनम गवावै ॥ मरि
 देइ दिवाजी ॥ बाजी गर कौं जाणत नांही ॥ जन
 म गवावै बादी ॥ परपंचयं चकरै बड तेरा ॥ का
 ल कुटंब के तांई ॥ बिष के स्वादिस बे ऐलागे ॥ ता
 तें चीकृत नांही ॥ ऐता जीय में जांनत नांही ॥ आ
 इक हांचे लिजोवै ॥ आगोपी छै समकृत नांही ॥
 मरिष यों दुह कावै ॥ ऐस बर मरंमं नांति मल
 पावै ॥ सो धिजे ऊ सो सांई ॥ सोई एक तु मरारा मज
 न ॥ दाइ हसर नांही ॥ ४२ ॥ गबन की जिरे
 गबै दोइ बिणा सागर बै गोब्यं दनां मिले ॥ म
 बै नरक निवास ॥ टे ॥ गबन सात लिजोवै ॥ म
 बै वारन पारा ॥ १ ॥ गबै पारन पाइए ॥ गबै जम पुरि
 जाइ ॥ गबै को छूटे नही ॥ गबै बंधे आइ ॥ २ ॥ गबै
 भावन ऊपजे ॥ गबै भाति न होइ ॥ गबै पीव का
 पाइए ॥ गबै करै जिन कोइ ॥ ३ ॥ गबै बड त बिणा
 सहै ॥ गबै बड त बिकार ॥ दाइ गबन की जिरे
 सन मुष सिर जनत हार ॥ ४३ ॥ तंहे तंहे तंहे
 तेरा मैं नही मैं नही मैं नही मेरा ॥ टे ॥ तंहे तेरा
 जगत उयाया ॥ मैं मैं मेरा धंधे लाया ॥ तंहे तेरा
 बेल पसारा ॥ मैं मैं मेरा कहे गंवारा ॥ तंहे तेरा

सर्वसंसार॥ मैं मैं मेरा तिन सिरि सारा॥ १॥ तू है तेरा
 कालनया॥ मैं मैं मेरा मरि मरि जा॥ २॥ तू है तेरा
 द्यां समा॥ मैं मैं मेरा गया बिना॥ ३॥ तू है तेरा तु
 मही मां हिं॥ मैं मैं मेरा मैं कुछ नां हिं॥ ४॥ तू है तेरा तू
 ही हो॥ मैं मैं मेरा भै लण॥ न को॥ ५॥ तू है तेरा लं
 घे पार॥ दा दू पा पा ग्यां न बिचार॥ ६॥ साहिब जी
 सति मेरा रे॥ लोक ऊँ चै ब ऊँ तेरा रे॥ टेक जी वृजन
 मजबू पाया॥ मसत किले बलिषा पारे॥ ७॥ घटे च
 धे कुछ नां हीं॥ करं मलिषा उस मां हीं रे॥ बिधू
 ता बिधिकी त्तो॥ सिरजि सब न कौं दी न्गरे॥ ८॥ सं
 मय सिरजन दारा॥ सो तेरे निकटि गंवारारे॥ ९॥ स
 कलं लोक फि रि आवे॥ तो दा दू दी पा पावे रे॥ १०॥
 ११॥ हरि रं द्या प्रमे स्वर मेरा॥ अण मां ग्या टे दे ब
 ऊँ तेरा॥ टेक सिरजन हार सहज मैं दे॥ तो
 काहे धू मां गि जन ले॥ १२॥ बिसंभर सब जग
 कौं पूरे॥ चंदर का जिन र काहे ऊँ रे॥ १३॥ पूरक पू
 रा है गोपाल॥ सब की चीत करे दरहाल॥ १४॥ सं
 मय सोई है जग नां थ॥ दा दू देखुर ही संग साथ
 १५॥ धारां मधन घात न घटे रे॥ अपरं पार पार न
 हीं आवे॥ आपिन तू टे रे॥ टेक तू सकर ले न
 पाव क जाले॥ प्रेम न लू टे रे॥ च ऊँ दि सि य स त्यो
 बिन र ब वाले॥ चोर न लू टे रे॥ १६॥ हरि ही रा हे रां
 मर सां द्या॥ सरसन सु कै रे॥ १७॥ दा दू और आ
 पि च ऊँ तेरी॥ तुम न र कू टे रे॥ १८॥ रां म हि म्
 बजग मरि मरि जा॥

टेक जीनम ऐजे आतम रांमां सदा सजीवन की
 ऐनांमां॥१॥ अमतरांमरसां दूत पीया ताते अमर
 कबीरा कीया॥ रांमनांमक हिरांमसमांतां जन
 रेदास मिले भगवांतां॥२॥ आदि अंत्य के तेक लि
 जागे॥ अमर भये अविनासी लागे॥ रांमरसां दू
 रां दूमाते॥ अविचल भये रांमरां गिराते॥४॥
 निकटि निरंजन लागिरहे॥ तब हम जीवत मु
 क्ति भये॥ टेक मरि करि मुक्ति जहां जग जाइ त
 हां न मेरा मन पतियाइ॥१॥ आगे जनम लहे अ
 वतारा॥ तहां न मानै मन हमारा॥ तन छूटे गति
 जोष दहोई॥ मृतक जीव मिले सब कोई॥ जी
 वत जनम सुफल करि जांतां॥ दाहरांम मिले
 मत मांतां॥४॥ धर
 कदाये उय
 दूर तिल सी न जा
 माइ॥ टेक कदाये को
 गगन ॥ ५॥

दाह मुझ ही मांहें मेर हो ॥ मे मेरा घर बार मुझ ही
मांहें मे बसौ ॥ आपक दे करतार ॥ दाह मे ही मे
रा अरस मे ॥ मे ही मेरा घांन ॥ मे ही मेरी गोर मे ॥ आ
पक दे र हि मांत ॥ दाह मे ही मेरी जाति मे ॥ मे ही
मेरा अंग ॥ मे ही मेरा जीव मे ॥ आपक दे प्रसंग ॥
३ ॥ दाह मे ही मेरे आस रे ॥ मे मेरे आक्षर मे रत
किये मे रहो ॥ कहै सिरजन दार ॥ ५५ ॥ रा मर
समीतारे ॥ कोई पीवै साध सुजाण ॥ सदा रस पीवै
प्रेम सौ ॥ सो अखिनां सी प्राण ॥ टिह ॥ इहिर ॥ मु
निला गो सबै ॥ ब्रह्मा बि स मे दे स ॥ सुरनर सा
ध संत जन ॥ सो रस पीवै से स ॥ सिध साधिक जे
गीजती ॥ सती सबै सुष देव ॥ पीवत अंतन आव
ई ॥ असा अलष असेव ॥ १ ॥ इहिर सिराते नां म दे
व पीण ॥ अरु रे दास ॥ पीवत कबी रा नां प कवा
॥ अजरुं प्रेम पि या स ॥ २ ॥ य ऊर समीठा जिनि पी
या ॥ सो रस ही मांहि समा ॥ ३ ॥ मीठे मीठा मिले
रह्या ॥ दाह अंतन जा ॥ ४ ॥ ५६ ॥ मेरा मत म
वाला मक्ष पीवै ॥ पीवै बारं बारोरे ॥ हरिर सर
तोर म के ॥ सदा र दै इक तारोरे ॥ टे ॥ भाव न
गति प्राची न ॥ काया क सणी सारोरे ॥ पीत
मेरे प्रेम का ॥ सदा अषंडित धारोरे ॥ ब्रह्म न
गनि जीव न जरे ॥ चेत निचिंतां उजा सोरे ॥ सु
तिक लाली सारवै ॥ कोई पीवै बिर ला दा स
१ ॥ आपा धन सब सौ पि या ॥ तबर स पा पा स
ने ॥ पी नि पि या ले पीव ही ॥ छित छित बारं व

३॥ अथापर नही जाणिये॥ मू लोमाया जालो
 रा॥ दाह हरि रस जे पावै॥ ताको कहे न लागे कालो
 रे॥ ५७॥ रस के रसिपाली न भये॥ सकल सिरों स
 गित हां गये॥ टेक॥ रंम रसां द्र ए अम तम ते अ
 विचल भये नर कि नही जाते॥ रंम रसां द्र ए म
 रि भ रि पी दौ॥ सदा सजीव निजु गि जु गि जी वै शरां
 म रसां द्र न त्रि भुवन सारां रंम रसिक सब उत्तरे पा
 रा॥ दाह अमली बडु रि न आये॥ सुख सागर ता
 मां हिं समाये॥ ५८॥ भेष नरी के मेरा निज भरता
 रा॥ ताते की जे प्रीति बिचार॥ टेक॥ डरा चार नीर
 बिभेष बनावै॥ सील साच नही पीव क्यं भावै
 ॥ कंत न मां वै करै सिंगार॥ अंभ पणै री के संसा
 रा॥ ॥ जो पति ब्रता के है नारी॥ सो धन मां वै पी
 व हि पियारी॥ ॥ पीव पदि चानै आन नहि कोई
 ॥ दाह सोई सुहागनि होई॥ ५९॥ सब ह मनो
 री एक भरतारा॥ सब कोई तनिके रै सिंगार॥ टे
 रा॥ धरि धरि अयनै से ज संवारे॥ कंत पियारे पं
 प निहारे॥ ॥ आति अयनी पीव को ध्यावै॥ मि
 ले नाह क बअंगी लगवै॥ ॥ अति आतुर ऐसे
 जत डोलै॥ बानि परी बिद्योगति बोलै॥ ६०॥ सब
 ह मनोरी दाह दीन सोई सुहागनि साच सिं
 गारा॥ तन मन लाह जे भरतारा॥ टेक॥ भव
 भगति प्रेम लो लावै॥ नारी सोई सार सुख पा
 वै॥ ॥ सह ज संतोष सील सब आया॥ नारी नां
 ह अमो लिंक पाया॥ ॥ तन मन जीवन सोई

सबदी न्हा तब कंतरि जाइ आपब सि की न्हा
३॥ दाइ बड़ रिखि वोग न होई पीव सौ प्रीति मुहा
गनि सोई ६॥ ६१॥ तब हम एक न एरे भाई मो
हन मिलि साची मनि आइ टेर पार सपर मि
न ये सुषदाई तब इतीया डरम ति हरि गंवाई
१॥ मलया गिर मरम लि पाया तब बंसवर न
सब भरम गंवाया ॥ २॥ हरि जल नीर निकटि ज
ब आया तब बंद बंद मिलि सहजि समाया
२॥ नां नो नेद भरम सब भागा तब दाइ एक
एक अंग लागा ॥ ६२॥ अलहरा म बूटि ग
या न म मोरा ॥ ६३॥ हुरक नेद कुछ न होई दि
छौंदर मन तोरा ॥ ६४॥ सोई प्राण प्यंड पुनि
सोई सोई लोही मासा सोई नैन नां सिका सो
ई सहजै की न्हा तमासा ॥ ६५॥ प्रव नौ सब दबाज
ता सुनिये ॥ जिन्या मीठा लागे सोई नृप सब
निकौ व्यापे ॥ एक जुगति सोई जागे ॥ सोई संध
बंध पुनि सोई ॥ सोई सुष सोई प्रीरा ॥ सोई हम
तया व पुनि सोई ॥ सोई एक सरीरा ॥ ३॥ ऐस बंधे
न लघालि हरितरे ॥ तुम्ह ही एक करि ली न्हा
॥ दाइ जुगति जां निक रिअे सी ॥ तब यडु प्रा
ण पतीना ॥ ६३॥ भाई रेअे सायं प्रह मारा
द्वे प्रहर हित प्रयाग हि परा ॥ अवरण एक
धारा ॥ ६४॥ बाद बिबाद काहु सौ नां ही ॥ मा
हि जागत ये न्यारा ॥ समदृष्टी सुताइ सहज
मो आपहि आप बिचारा ॥ मै तै मेरी यडु म

नांही॥ निरवैरी निरकारा॥ पूरण सबे दे विआ
पायरा॥ निरालंब निरधारा॥ का हू कै संगि मोह
नममिता॥ संगी सिरजन द्वारा॥ मनही मनसो
समकिसया॥ ना॥ आनंद एक अपारा॥ का
ल कलयतां कहे नही की जे॥ पूरण ब्रह्म पि
यारा॥ इहियं पिपडं चिपारगहि दाह॥ सोतत
सहज संभारा॥ ६४॥ औसौ खेल बल्यो मेरी ला
ई॥ किसे कहौ कछु जां एपे न जाई॥ टेक सुरन
र मुनि जंत अचिर ज आई॥ राम चरन को रुने
दन पाई॥ मंदिर मां है सुर समाई॥ कोऊ है
सो देऊ दिखाई॥ १॥ मन है विचार के ल्यो ला
ई॥ दीबास मां नां जोतिक हां छिपाई॥ २॥ देह
निरंतरि सुंति ल्यो जाई॥ तहां को घर में कोण
सतारे मां ॥ ३॥ दाहन जां गेय ऊ चतुराई॥ मो
गुर मेरा जित सुधि पाई॥ ४॥ ५॥ माई रे घर ही में
घर पाया॥ सहज समा प्रहोता मां ही॥ सतगु
र खोजवताया॥ टेक ता घर का जिस बेफि रिआ
या॥ आयें आय लयाया॥ खोलि कयाट मह के दी
नै॥ धिर अस्थान दिषाया॥ १॥ सयौ सेद भर मा
सब भागा॥ साच सोई मन लाया॥ प्यंड पट्टे जह
जीव जावे॥ तामे सहज समया॥ निहचल
सदा चले नही कब हं॥ देखा सब में सोई तादी
सौ मेरा मन लागा॥ और न ह जा कोई॥ ३॥ आदि
अंतिसोई घर पाया॥
इए कर गै रंग लागा॥

इतहेनीरन्नुवावणजोग अनत हीनमैसल्य
 रजोग ॥ टे ॥ तिहितटिन्सरेतिरमलहो ॥ ब
 सतअगोचलघेरेसोई ॥ सुघटघाटअरुति
 रिबोतीर ॥ चेततहां जगतगुरपीर ॥ दाइन
 जांणेंतिनकातेव ॥ आपलषावेंअंतरिदेव
 ॥ ३॥ ६० ॥ असायांतकघौमनायांती ॥ इहिंध
 रिहोइसहजिसुखजांती ॥ टे ॥ गांजमुनतहां
 नैरन्नाइ ॥ सुषमनतारीरंगालगाइ ॥ आपते
 जतनरह्योसमाइ ॥ मेंबलिताकीदेखोअघाइ
 ॥ बासतिरंतरिसोसमजाइ ॥ बिनतैतकुंदेव
 तहांजाइ ॥ दाइरेयकुअगमअपारा ॥ सोधतर
 मेरेअधरअधर ॥ ६८ ॥ अबतौअसीबनिअ
 ई ॥ रांमचरंतबिनरह्योनजाइ ॥ टे ॥ सोईको
 मिलिबेकैकारनि ॥ त्रिकुटीसंगमनीरन्नुव
 ई ॥ चरनकवलकीतहां ल्योलागो ॥ जतनज
 तक रिप्रीतिबनाइ ॥ जेरसमीनाछोवरीजा
 ॥ सुंदरिसहजैसंगिसमाइ ॥ अनहदबाजेब
 जयालागो ॥ जिआहीतौकीरतिगाइ ॥ कह
 कहौंकछूवरनीनजाइ ॥ अबिगतिअंतरि
 जोतिजगाइ ॥ दाइनंतकामरंमनजांनै ॥ अ
 पसुरंगेबेनबजाइ ॥ ६९ ॥ नीकैरांसकह
 हेवपरा ॥ घरमांहेघरतिरमलराखे ॥ पं
 धैवैकायाकपरा ॥ टे ॥ सहजसुमरपरा
 सुमिरणसेवा ॥ त्रिवेणीतटिसंजमसपरा
 सुंदरिसलमुखजागालागी ॥ तहांमेहन

रामनयकरा॥१॥ बिनरसनां मोहनगुनगादे॥ ना
 नां बानी अननै अपरा॥ दाह अनदद असेक
 हिये॥ भगति तत यऊ मारग संकरा॥ १०॥ अ
 वधकां मधेन गहिराषी॥ बसिकी न्नीत बअ
 मृत सरदी॥ आगे चारिन नांषी॥ टेक पोषेतां प
 दली उठि गरजे॥ पीछे हाथिन आदे॥ मूषी न
 ले इधनि तइया॥ पीये इधन उहादे॥ ११॥ ज्ये
 ज्ये दीया पडे त्यइये॥ मुक्ती मेल्पां सोरे॥ धाटा
 रोकि घेरि घरि आये॥ बांधी कारज सोरे॥ स
 हजे बांधी कहेत खूटे॥ करम बंधन छुटि जाई
 ॥ काटि करम स हज सो बांधे॥ सहजे मां हि स
 माई॥ छिन छिन मां हि मनोरथ पूरे॥ दिन दि
 न होइ अनंदा॥ दाह सोई देषत पावे॥ कलि
 अजरा वरकंदा॥ १४॥ १५॥ जब घटि परगट
 राम मिले॥ आतम मंगल चार चऊ दिसि जा
 नम सुफल करि जीति चले॥ टेक भगति मुक
 ति अनेक रिराये॥ सकल सिरोमणि आयकी
 ऐ॥ निरगुं गाराम निरंजन आपे॥ अजरा वर उ
 र लाई लीऐ॥ १६॥ अपनै अंग संग करिराये॥ नि
 रमै नां वनिसां न बजावा॥ अविगत नाथ अ
 मर अविनासी॥ परम पुरिष निज सोपावा॥ १७॥
 सोई बड नागी सदा सुहागी॥ परगट पीतम
 संगि मये॥ दाह नाग बडे वरवरिकै॥ सो अज
 रा वर जीति गये॥ १८॥ १९॥ २०॥
 ले मोहि सेज सुहागन श्री

ननांही तो दि॥ टे॥ अंग प्रसंग एकर सनांही सदा
समीप न पावे॥ जपर समै रस बरु रित निकसे॥ औ
सै होइन आवे॥ २॥ आतम लीन नही निस वासुर
नगति अषंडित से वा॥ सनमुख सदा परसपर
नांही॥ तातें दुष मोहि देवा॥ २॥ मग नगलित म
हार समाता॥ तदे तब लगपी जे॥ दा॥ ६॥ जब लग
अंत न आवे॥ तब लग देषण ही जे॥ १॥ ७॥ गुर
मुखिया ईरे॥ औ साग्यां न बिचार॥ सम किसम कि
सम ज्यां नही॥ लागा रग अपार॥ टे॥ जांति जां
ति जां एपां नही॥ औ सी उपजे आ॥ बूफि बूफि
बूझा नही॥ ठोरी लागा जा॥ १॥ लेले लेली या न
ही॥ होसरही मन मां हि॥ राबिराबिरा व्या नही
मै रस पीया नां हि॥ २॥ पा॥ पा॥ पा॥ पा॥ नां ही॥ ते जे ते
ज समा॥ करि करि कुच्छ की या नही॥ आतम
गिलागा॥ १॥ बेलि बेलि बेल्या नही॥ सनमुख सिर
जनहार॥ देषे देषि देष्या नही॥ दा॥ १॥ सेव गसार
॥ ७॥ १॥ अ॥ अ॥ रा॥ ग॥ जे॥ ग॥ ली॥ ओ॥ डी॥ बा॥ बा॥ गुर॥ मुखि॥ ग्यां॥
रे॥ गुर॥ मुखि॥ ध्यां॥ नां॥ रे॥ टे॥ दा॥ गुर॥ मुखि॥ दा॥ ता॥ गुर॥ मु
धिरा॥ ता॥ गुर॥ मुखि॥ ग॥ व॥ तां॥ रे॥ गुर॥ मुखि॥ स॥ व॥ तां॥ गुर॥
मुखि॥ च॥ व॥ तां॥ गुर॥ मुखि॥ र॥ व॥ तां॥ रे॥ गुर॥ मुखि॥ प्र॥ रा॥
गुर॥ मुखि॥ सरा॥ गुर॥ मुखि॥ बां॥ लां॥ रे॥ गुर॥ मुखि॥ दे॥ यां॥
गुर॥ मुखि॥ ले॥ यां॥ गुर॥ मुखि॥ जां॥ लां॥ रे॥ २॥ गुर॥ मुखि॥
दि॥ बा॥ गुर॥ मुखि॥ र॥ हि॥ बा॥ गुर॥ मुखि॥ न्यां॥ रां॥ रे॥ गुर॥
धि॥ सारा॥ गुर॥ मुखि॥ ता॥ रा॥ गुर॥ मुखि॥ पारा॥ रे॥ ३॥ गु
मुखि॥ रा॥ या॥ गुर॥ मुखि॥ पा॥ या॥ गुर॥ मुखि॥ मे॥ ला॥ रे॥

मुनिवतजगुमुमुषिसजा॥ द्वाहवला रत्ना॥ ननर
 मेंहेरा॥ मधिमाहिपीवनेरा॥ टेकजहांअगमअन
 पअवासा॥ तहांमहां॥ पुर्विकाबासा॥ तहांजांनै
 गजनकोई॥ हरिमाहिंसमांतांसोई॥ १॥ अषडजो
 तिजहांजागै॥ तहांरासनांमल्योलागै॥ तहांरांम
 रहेभरपूरा॥ हरिसंगरहैनहीहरा॥ २॥ रवेगांत
 टितीरा॥ तहांअमरअमोलिकहीरां॥ उसहीरेसो
 मनलागा॥ तबभरमगयासौभागा॥ ३॥ दाइदेपु
 हरिपावा॥ हरिसहजैसंगलषावा॥ पूरणपरम
 तिधंतां॥ निजतिरषतहौभगवांतां॥ ७६॥ मे
 रमनिजागासकलकरा॥ हमनिसदिनहदेसो
 धरा॥ टेकहमहिरदेमांहेहेरा॥ पीवपरगटया
 पारा॥ सोनैरहौतिजजीजै॥ तबसहजैअमृतपी
 जै॥ १॥ जबमनहीसौमनलांगा॥ तबजोतिसरूपी
 जाणा॥ जबजोतिसरूपीपाया॥ तबअतरमांहि
 समाया॥ २॥ जबचितहिचितसमांनो॥ हमहरि
 बिनऔरनजांनो॥ जांनोजीवतिसोई॥ अबह
 रिबिनऔरनकोई॥ ३॥ जबआतमएकेबासा
 म॥ परमांतमांहिप्रकासा॥ प्रकासापीवपियारा
 सोदाइमीतहमारा॥ ४॥ ७७॥ इतिगोडीसपू
 री॥ अथरागमालीगोडा॥ १॥ गोबिंदेनांवतेरा
 जीवतिमेरा॥ लारगामोपारा॥ आगेइहिनांइ
 लागे॥ संतनिर्झंधारा॥ टेककरिबिचारततमा
 रा॥ पूरणधनपाया॥ अबिलनांवअगमचांम॥
 र्मोहमारेश्याया॥ ॥ भगतिम

॥ १ ॥ सब हरना ॥ सकल सिद्धि न वेतिधि ॥ पूरा
 सब कामा ॥ राम रूप तन अत्त ॥ दाहनि जनामा
 ॥ २ ॥ गोव्यं देके सैतिरिरे ॥ नावनां ही येवनां ही
 राम बिमुख मरिरे ॥ टेक ॥ गाननां ही ध्यातनां ही
 ॥ लेस माक्षिनां ही ॥ बिरहा वैरागनां ही ॥ पंचौ गुण
 मां ही ॥ प्रेमनां ही प्रातिनां ही ॥ नावनां ही नेरा
 ॥ नावनां ही भगतिनां ही ॥ काहर जीव मेरा ॥ २ ॥ बा
 टनां ही घाट नां ही ॥ कै सैपग धरिरे ॥ वारनां ही पा
 रनां ही ॥ दाह बह डरिरे ॥ २ ॥ पीव आवह मारे
 मिलि प्राण पि पारिरे ॥ बलि जां न तु मारिरे ॥ टेक
 सुनि सषी सयांनी रे ॥ मै सेवन जांनी रे ॥ दो नई दिवा
 नी रे ॥ सुनि सषी सहेली रे ॥ कर रं अकेली रे ॥
 रुं धरी उहेली रे ॥ १ ॥ करौं पुकारि रे ॥ सुनि सिरज
 न हारि रे ॥ दाह दास तु मारि रे ॥ ३ ॥ वाला सेज
 हमारी रे ॥ तं आव रुं चारी रे ॥ रुंद सि तु मारी रे
 टेक तेरा पय निहारौ रे ॥ सुंदरि सेज संवारौ रे ॥ जी
 यरा तु मरि वारौ रे ॥ तेरा अंग डापे धौ रे ॥ तेरा
 मुख डाढ़े धौ रे ॥ तब जीवनां ले धौ रे ॥ २ ॥ मिलि मुख
 डाढ़ी जै रे ॥ थुला हडाली जै रे ॥ तुम देखे जै रे ॥
 तेरे प्रेम की माती रे ॥ तेरे रंग डैरा ही रे ॥ दाह चार
 गौ जाती रे ॥ ४ ॥ दरबार तु मारे दरद वंद ॥ पीव
 पीव पुको रे ॥ दी दार दरु नै दी जिये ॥ सुनि सस मह
 मारे ॥ टेक तन हां के तनि पीर है ॥ सुनि तं ही निवा
 रे ॥ कर म करी मां की जिये ॥ मिलि पीव पि पारि रे ॥ स
 ल सुला कौ सो स हो ॥ तेरा तन मारे ॥ मिलि साई सु
 यदी जिये ॥ तं ही तं ही संतारे ॥ मै सुदा दा वन

सोषता॥ बिरहा दुखजारे जीवतरे सैदी दार को दी
 इन बिसारे ॥ ५ ॥ संईयां तू देसाहि बसेरा मेहो
 बंदा तेरा ॥ टेक बंदा बरदा चेरा तेरा ॥ ऊक मीमै बि
 चारा ॥ मीरो मिहरवां नगुसां ॥ सै सिरता जह मारा ॥ त
 गुलां मतु मुरा मुना जादा ॥ लोटा धरका जाया
 ॥ राजिक रिक्क जीवतै दीया ॥ ऊकंतु मुरे आया ॥ सा मि
 दी लबै हाजरि बंदा ॥ ऊक मतु मुरे मां ही ॥ जबहि
 बुलाया तब ही आया ॥ मैमै वासी नां ही ॥ १॥ ॥ बस सा
 ह मारा सिरजन दारा ॥ साहिब संग प्रथमां ॥ मीरो
 मेरा मिहरि मया करि दा ॥ हतु रु ही तो ही ॥ ३ ॥ दा
 मुज थै कच्छ नमयारे ॥ य ऊ यो ही गयारे ॥ प्रछिता वा
 रद्वारे ॥ टेक मैसी नदीयारे ॥ सरि प्रेम नयीयारे ॥ मै क्या
 कीयारे ॥ हौरंगिन रातारे ॥ सि प्रेम न मातारे ॥ नदी
 गलित गातारे ॥ मै यी वन पायारे ॥ कीया मन का सा
 रे ॥ कछ हो इन आयारे ॥ १ ॥ हौरहो उदासारे ॥ मुज
 तेरी आसारे ॥ कहे दा हृदयारे ॥ ॥ ॥ मेरा मेरा छा
 डिगां वाया ॥ सिरय रि तेरे सिरजन दारा ॥ अयगें जीव
 बि चारत नां ही ॥ क्या लेगाई लाबं मतु मुरा ॥ टेक
 तब मेरा कत करत नां ही ॥ आवत है हकारा ॥
 काल चक्र सौं घरी परीरे ॥ बिसरि गया घर बारा ॥
 ॥ जाइत हांका संजम कीजे ॥ बिकट यंथ गिर क्षा
 रा ॥ दा हरेत न अयनां नां ही ॥ लो कै सै जपा संसारा
 ॥ ॥ दा हृदय सुकारे रौ सरसां धे मारे रे ॥ टेक ज
 म काल निवारारे ॥ मन मन सा मारीरे ॥ ॥ य ऊ जन

मत मूलन छोड़ेरे ॥ ३ ॥ मि

मेकी तिसही जीरे ॥ अबही लनकी जीरे ॥ यहुँ
 सरतेशरे ॥ पंथी जागिसवेशरे ॥ सबे बाट बसेरारे ॥
 सब तरवर रखायारे ॥ धन जोवन मायारे ॥ यहुँ क
 ची कायारे ॥ ६ ॥ सिसर भित्त लीरे ॥ बाजी देखित
 फलीरे ॥ सुषसागर फलीरे ॥ रस अमृत पी जीरे ॥
 बिष काना वन ली जीरे ॥ कदा सुकी जीरे ॥ सब
 आत्म जोणीरे ॥ अपराधी विविधांणीरे ॥ यहुँ द
 वाणीरे ॥ ८ ॥ पूजौ पहली गणपतिरा ॥ यडि
 हों पायौ चरनौ धा ॥ आगे कै करि नीर लगा ॥
 सहजै अपनै बैत सुना ॥ टेक कंक कथा कचुक
 हीन जा ॥ ऐकतिल मै ले सबे समा ॥ गुण कुं ग
 हीर धीर तन देही ॥ असौ समग्र सखे सुहा ॥
 जिसि दि सि देखो दोई देरे ॥ आप रक्षा गिर तरव
 रखा ॥ दाहरे आगे क्या होवे ॥ प्रीति पीया कर जो
 डिलगा ॥ १० ॥ नीको धन हरिकरि में जान्य ॥ मे
 रे अषई दोई ॥ आगे पीछे सोई देरे ॥ और न ह जा
 कोई ॥ टेक कब हन छाड़ौ संग पिया को ॥ हरिके
 दरसन मोही ॥ भाग हमारे जो हों पांऊ ॥ सरनै अ
 यो तोही ॥ ११ ॥ आनंद भयो मयी जाय मेरे ॥ चरन क
 वल को जोई ॥ दाह हरिको बाधरो ॥ बहुरि विवि
 गन दोई ॥ १२ ॥ बाबा मरद मरदांगो ॥ ऐदिल
 पाक कर दस धोई ॥ टेक तरक डनिया हरिकरि
 दिल फरज फारिक होई ॥ येव सत परवर दिगार
 सौ ॥ आकिलो सिर सोई ॥ मनी मुरदा हिर सफांती
 नय सरां पै माल ॥ बदी राख रतर क करदां ॥ नाच
 नेकी साज ॥ जिंदगांती मरद हवा मरद ॥ कुंज का

मो जूदमो जूदमो पाक परवर्द्धिगारव दे
खिले दीदारको गोबगोता मारव मो जूदमा
लिकत घत घालिक आसिकारा नवे गुजर
करि दिल मरा जभीतरि अजब है यह सैनवे अ
सै ऊपरि आपबैठा दो सत दां नां पारवे घो जि
करि दिल कबज करिले दरुनै दीदारव कुमि
पारह जिर चुस्त करदं म मीरां मिहरवां नवे दे
खि ले दरहा लदाह आप है दीवां नवे ॥ १५ ॥ नि
मै लत ततिर सलत तति मे लत तत असा ॥ निर्गुण नि
ज निधि निरंजन ॥ जैसा है वैसा ॥ टेक नत पति
आकार नां ही ॥ जीवनां ही काया ॥ काल नां ही क
रम नां ही ॥ रदतारां मराया ॥ सति नां ही घां मनां
ही ॥ धपनां ही छाया ॥ बांन नां ही बरन नां ही ॥
मोहनां ही माया ॥ २ ॥ धरती आकास ॥ अगम चंद
सर नां ही ॥ रजीनी निसदिवस नां ही ॥ पवन नां ही
जां ही ॥ किरत स घटक लातां ही ॥ सकल रहित सो
ई ॥ दाह निज अगम तिगम ॥ ३ ॥ जान ही कोई ॥ ४ ॥
॥ १६ ॥ रागताली गौदा सूरदा ॥ अथ राग कला
॥ १ ॥ मत मेरे कछु भी चेतिगवार ॥ पीछे फिरि पछि
तावै गौरे ॥ आवै न हजीवार ॥ टेक काहे रे मम म
नो फिरत है ॥ काया सो विविचारि ॥ जिनि पयोच
न नां है तुफ को सोई पय सवारि ॥ २ ॥ आगे बाट
जुबिषमी मनरे जैसी घड़े की क्षार ॥ दाह दास त
साईं सुसत करि कड़े कां मनिवारि ॥ ३ ॥ जग
सौं कहो हमारा देषान्तर तुम्हारा ॥ टे ॥ परम

तीजधरमरा सुधसागरमालिखसरा ॥ किंजलि ॥
 लिङ्गतिश्रान्तदा ॥ पायापरमानदा ॥ गतिश्रया
 रश्रनंता ॥ धेलैफागवसेता ॥ ३ ॥ आदिश्रुतिश्रसथा
 ना ॥ दाहसोपहिचांता ॥ ४ ॥ २ ॥ इतिश्रमकल्याण
 सपूणे ॥ श्रयगगकनडा ॥ राग ॥ दे दरसन
 देषनतेरा ॥ तोजियजकपादेमेरा ॥ टेकपीवतमेरीवे
 देनजानौ ॥ मिकहाइरांके छाने ॥ मेरातुरु देषेमत
 मानौ ॥ पीवकरककलेजेमांही ॥ सोकरहीनिक
 सैनंही ॥ पीवपकरिहमारीबांही ॥ पीवरोमरोम
 इषसाले ॥ इतपीरोपंजरजाले ॥ जीवजाताकरही
 बाले ॥ पीवसे जशकेलीमेरी ॥ मुकुश्ररतिमिल
 नेतेरी ॥ धतदाह्वारीफेरी ॥ १ ॥ आवसलौनेदेष
 पादेरे ॥ बलिबलिजांउंबलिहारीतेरे ॥ टेकआव
 पीयात्तसेजहमारी ॥ निसदिनदेखौ बाटतुसूरी
 ॥ सबगुणतेरे ॥ श्रीगुणमेरे ॥ पीवहमारीआदिन
 लेरे ॥ सबगुणवंतासाहिबमेरा ॥ जाडगहेजाट
 इकेरा ॥ २ ॥ आवधि ॥ पारिमातहमारे ॥ दरसन
 देखौपावतुसूरे ॥ टेकसेजहमारीपीवसवारी ॥ दा
 सितुसूरीसोधनवारी ॥ जेतुफयांऊंअंगिलगा
 ऊं ॥ कंसमऊंऊं ॥ वारनैजांऊं ॥ पंचनिहारो
 बाटसंवारी ॥ दाह्वारीतनमनवारी ॥ ३ ॥ आ
 ववेसजणआव ॥ मिरपरिधरिपाववेसजणआव ॥
 जानीमैंडाजिंदअसाही ॥ तंगवैदराववेसजण
 आव ॥ टेकइथांउथांजिथां
 नांवदे

नाम देस जग आच ॥ तन नी देवां मन नी देवां ॥
दुपराणवे ॥ सचा सां ई मि ॥ लुह्यौ ई ॥ जं द करा
कुर नां ग वे स जग आच ॥ तं पा को मिरि पाक वे
स जग ॥ तं ब वौ मिरि ब ॥ दा ह मा दे स जग आच
॥ तं मि ठा मह ब व वे स जग आच ॥ ४ ॥ द दाल स
प ते च र न नि मे रा चित ल गा व ड ॥ ना के ही क री
टे ॥ न ष स ष सु र नि स री र ॥ तं नां व र ॥ हों म री ॥ मे
अ जा न म ति ही न ॥ ज स की पा सि तै र ह त हों ड री
॥ स बे दो ष दा ह के इ रि क रि ॥ तु रु ही र हों ह री
॥ ५ ॥ म त म ति ही न ध रे ॥ म रि ष म न क ल स म फ त
नां ही ॥ अ से जा इ ज रे ॥ टि द नां व बि स रि अ व र चि
त रा षे ॥ क टु का ज क रे ॥ से वा हरि की म न रु न अ
ने ॥ म रि ष ब ड रि म रे ॥ नां व सं ग म क रि ली जे पा
ली ॥ ज म थै क द हा ड रे ॥ दा ह रे जे रां म सं नारे ॥ सा
गर ती र ति रे ॥ ६ ॥ पी व ते अ ते का ज स वा रे ॥ को ई
ड व दी न को मार न ॥ सो ई ग हि ते मारे ॥ टि ॥ मे र स
मा न ता य त नि ब्या ये ॥ स ह जै ही सो टारे ॥ सं त नि
को सु ष दा ई मा धे ॥ बि न पा क फं ध जारे ॥ तु रु
थे हो इ से वे बि धि सं म थ ॥ आ ग म स वे बि चारे सं
त उ वारि ड व ड व दी न ॥ अ ध क प में डारे ॥ अ से
हे म रि ष स म ह मा ॥ रे ॥ तु रु जी ते ब न हारे ॥ दा ह
सों अ से नि र ब दि ए ॥ वे स प्रा ति पी व पारे ॥ ७ ॥ का
रु ते रा म र म न जां नारे ॥ सब म ये दि वां नारे ॥ टे
मा पा के र मि रा ते ला ते ॥ ज ग त मु ल्यां नारे ॥ को व
रु का क द्या त मां ते ॥ म ये अ यो नारे ॥ मा पा म ये

मुद्रितमगना ॥ मोनघानारे ॥ विषियारसअरसप
 रस ॥ सावधानारे ॥ १ ॥ आदिअंतिजीवजेत कीयाय
 यानारे ॥ दाइसबमरसमले ॥ दिविदांनारे ॥ २ ॥ तं
 हीतुंगुरदेवहमारा ॥ सबकुछमेरेनांवतुमुरा
 ॥ टेकतुमहीपजातुमहीसेवा ॥ तुमहीपातीतु
 महीदेवा ॥ १ ॥ जोराजगितंसाधनंजाये ॥ तुमहीमे
 रेआयेआये ॥ २ ॥ नपतीरथतंबरतअसनां ॥ तु
 महीपांतांतुमहीध्यानं ॥ ३ ॥ वेदभेदतू पाठपुरा
 नां ॥ दाइकेतुमपंडयरांतां ॥ ४ ॥ तंहीतंआक्ष
 रहमारे ॥ सेवगसुतहमरांमतुमुरा ॥ टेकमाइबा
 पतंसाहिबसेरा ॥ मगतिहीनमेंसेवगतेरा ॥ मा
 तपितातंबंधवनाई ॥ तुमहीमेरेसनमहाई ॥ तु
 महीतातंतुमहीमातां ॥ तुमहीजातंतुमहीन्यातं
 ॥ कुलकुटुंबतंसबपरिवारा ॥ दाइकातंतारण
 दारा ॥ ५ ॥ १० ॥ निरनैनसरिदेषणदीजे ॥ अमीमहा
 रसमरिसरियांजे ॥ टेकअमृतधाराचानपाया ॥
 निरमलसारातेजतुमुरा ॥ १ ॥ अजरजरंताअमी
 करंता ॥ तारअनंताबहुगुणचंता ॥ किलिमि
 लिसाईजोतिगुसांई ॥ दाइमांहीनररहोई ॥
 ११ ॥ अैनएकसोमीवाजागो ॥ जोतिसरूपीवा
 टाआगो ॥ टेककिलिमिलिकरणां ॥ अजरजर
 णां ॥ नीजरजरणां ॥ तहांमनधरणां ॥ १ ॥ निजनिर
 क्षरनिरमलसारे ॥ तेजअपारं प्रोणअक्षरं ॥ अ
 गहाराह

ज

सदाहजरंदाहसरं ॥ १२ ॥ तौक्यदेकीप्रदाहमा
रे रातेसातेनांइतुम्हारे ॥ टेक ॥ फिलिमि लिफिलि
मिलितेजतुम्हारा ॥ परगटघेलैप्रोताहमारा ॥ नर
तुम्हारातेनकुंमांही ॥ तनमनजागाबूटेनांही ॥
सुषकासागरधारनयारा ॥ अमीमहारसपीक
हारा ॥ प्रेमसागतमतिबालामाता ॥ रगितुम्हारेदा
हरता ॥ १३ ॥ इति कतकालपर ॥ अथवा
तत्काल ॥ भाईरे ॥ असासतगुरकहिये ॥ भगति
मुक्तिफललहिये ॥ टेक ॥ अबिलअमरअविनासी
॥ अचमिधिनवनिधिदासी ॥ असासतगुराया
चारिपदार्थपाया ॥ १४ ॥ अमीमहारसमाप्ता ॥ अम
रअसंपददाता ॥ सतगुरत्रिभुवनतारैदाहणा
रितुतारै ॥ १ ॥ भाईरे ॥ भांतिघडैगुरमेरा ॥ मैसेव
गउसकेरा ॥ टेक ॥ केचनकरिलेकाया ॥ घडिघडि
घाटनिपाया ॥ सुषदरपनमांहिद्विषावे ॥ पविपर
गटआंगिमिलावे ॥ २ ॥ सतगुरसाचाधोवैतौबहु
रिनमैजाहोवै ॥ इतनमनफेरिसंवारे ॥ दाहकर
गहितारे ॥ २ ॥ भाईरे ॥ तेतौरूडोपाये ॥ जेगुरमु
षिमारगजाये ॥ टेक ॥ कुसंगतिपरहरिये ॥ संतसंग
तिअगासरिये ॥ कामक्रोधनहीआंगे ॥ बांगी
बुद्धबबांगे ॥ मनबिषियायोचारे ॥ तेआपरा
पोतारे ॥ बिषमकीअमहलीधो ॥ दाहरूडोकी
धो ॥ ३ ॥ बाबामनअपराधमेरा ॥ कल्यानमांते
तेरा ॥ टेक ॥ मायामोहमदिमाता ॥ कनककामती
रता ॥ कामक्रोधअहंकारा ॥ भावैबिषबिका

॥ १ ॥ को लमी च नही सूको ॥ आत मरा मन बजे ॥
 संमर प्रसिर जत हारा ॥ द्वा इ करै सुकारा ॥ ४ ॥ मा
 ई रे यो बिन संसारा ॥ काम को ध अहंकारा ॥ टे लो
 प्रमोह सै सेरा ॥ मद मस्तर ब डुतेरा ॥ ॥ आया पर अ
 निमो ना ॥ केता गर ब गुमा ना ॥ २ ॥ ती ति ति मर न
 ही जां ही ॥ पें यो के गुन मां ही ॥ ३ ॥ आत मरा मन जा
 ना ॥ द्वा इ ज गत हे वानो ॥ ४ ॥ पा ॥ मा ई रे त ब कषा क
 थि सि गिया ना ॥ जब इ सर नां ही आं ना ॥ टे क जब
 त त हित त समा ना ॥ ज हां का त हां ले सां ना ॥ ज ह
 का त हां फि ला वा ॥ ज्यं पा त्पं हो इ आ वा ॥ २ ॥ सं धें सि
 धि सि ला ई ॥ ज हां त हां थि ति पा ई ॥ ३ ॥ सब अंग स
 ब ही गं ई ॥ त ब द्वा इ इ सर नां ही ॥ ४ ॥ ६ ॥ इ ति
 टा रां स यं र रा ॥ अ च रा रा के द्वा रा ॥ मा फ ना थ
 जी ता फे ना व लि वा इ रे ॥ रा म र त न रि दी या मै रा वे
 मा फ वा ल्सा जी वि धि यो वारे ॥ टे क वा ल्सा बां रा
 ने म त मां ही मां फे ॥ चि त व न ता फे चि त रा ये ॥ अ
 व रा ने त्र या ईं डी नां गु रा ॥ मा फा मां हि ला म ल ते ना
 ये ॥ ॥ वा ल्सा जी यां नो फ ल ए आ ये ॥ ता फ नां व वि
 नां दो जि हां बा धो ॥ ज न द्वा इ नां बं ध न का पे ॥ १ ॥
 अ रे मे रा स द्वा सं गा ती रे रां म ॥ का र ति ते रे कं प्या
 प हें म स म ल गो के ॥ बे रा ग नि छे ट् टो रे रां म ॥ ॥
 गि र व रि बां सा र हूं उ द्वा सा ॥ च टि सि रि मे र सु का रो
 रे रां म ॥ य कृत न जालो य कृत म न मा लो ॥ क र व त
 सी स च टां ऊ रे रां म ॥ ॥
 रो ॥ द्वा इ ब लि व नि

७ भरउपावणहाररेखालिक॥ असिकतेरा ६ तुम
 सौरातातुमसौसाता॥ तुमसौलागारगरेखालिक
 ॥ तुमसौधेलातुमसौमेला॥ तुमसौलेगांतु
 मसौदेणा॥ तुमहीसौरतहोइरेखालिक॥ ७
 लिकमेराअसिकतेरा॥ दाइअनतनजाइरेख
 लिक॥ ३॥ अरेमेरासमेरप॥ साहिबरेअला॥ न
 रतुमारा॥ ते॥ सबदिसिदेवैसबदिसिलेवै॥ सब
 दिसिवारनपाररेअला॥ सबदिसिकरतासबदि
 सिहरता॥ सबदिसितारनहाररेअला॥ सबदिसि
 बकता॥ सबदिसिसुरता॥ सबदिसिदेवणहाररे
 अला॥ तहैतैसाकहिऐअसा॥ दाइअनंदहो
 इरेअला॥ ४॥ हाजअसांजोलाहडै॥ तोकरसब
 मालूमहै॥ ते॥ मंजेषांमंजिबरांला॥ मंजेलग
 नाहिहै॥ मंजमेढीमुचधियोला॥ कैंदरिकरियां
 धाहिहै॥ बिरहकसाइमूगरेला॥ मंजैबटैमाह
 डै॥ साधौकरैकबाबजीला॥ इयेंदाइजेदुआहडै॥
 २॥ ५॥ पियजीसेतीनेहनवेला॥ अतिमीचामोहि
 नावेरे॥ निसदितदेघौबाटतुमारी॥ कबमेरे
 धरिआवेरे॥ ते॥ आइबनीहैसाहिबसेती॥ ति
 सखिनतिलकरंजावेरे॥ दासीकंदरसनहरिदी
 जेअबकरंआपछियावेरे॥ तिलतिलदेघौ
 साहिबमेरा॥ तूतूअनंदअंगितमावेरे॥ दाइ
 कपरिदयाकरी॥ कबनैनऊनैनमिलवेरे॥
 २॥ ६॥ माफरेवाल्लानैकाजै॥ रिहैजोइवानैध
 नधरों॥ आकुलपाएप्राणअमुरी॥ कहनैव

हाथ करौ॥ टेक संतास्यो आवै रे बालू॥ बेली
 रहै॥ जोइ ठरौ॥ साथ जी साथै पड़ेनौ॥ पेली तीर
 पारतिरौ॥ पिय पाषैं दिन डुहिलां जाये॥ घडी बर
 सासौ किम भरौ॥ दाहरे जनहरि गुण गाता॥ पू
 रणास्यामी तेह बरौ॥ १॥ ७॥ मरि ऐसी तबि छोड़े॥
 जियरां जाइ अंदोड़े॥ टेक जंजल बिछुरे मीनां॥
 तल फिलफि जिय दीनां॥ यौ हरिदमसौ कीलै॥
 १॥ चात्रि मरै पिपासा॥ तिस दिन रहै उदासा॥ जी
 वे किहि बेसासा॥ २॥ जल बिन कबल कुमिल आवै॥
 ॥ पासानी रन पावै॥ कंकरि पिषाबुजावै॥ ३॥ मिलि
 जिति बिछुरौ कोइ॥ बिछुरे बरु डुध होइ॥ कंज
 न जीवै सोइ॥ ४॥ मरनां मीत सुहेला॥ बिछुरन ध
 रा डहेला॥ दाह पीवसौं मेला॥ ५॥ ८॥ पिय दौ कद
 करौ॥ पाय परो कै प्राण हरो॥ ६॥ बहौ मरनै नाहि
 डरौ॥ टेक गालि मरौ कै जालि मरौ॥ कै हंक
 र धत सी सधरौ॥ १॥ घाइ मरौ कै घाइ मरौ॥ कै हंक
 र तह जाइ मरौ॥ २॥ तल फिमरौ कै करि मरौ॥
 कै हंक बिरही रोइ मरौ॥ ३॥ टेकि कद्या में मरण
 गद्यारै॥ दाह डुबिया दीन मयारै॥ ४॥ सी बालू
 हौ जाणौ जेरंग मरि मिये॥ माफौ नां पति मयन
 ही मेल्हौ॥ अंतर जां मीनां हन आवै॥ ते दिन
 आवौ छेह लौ॥ टेक बालू से जह मारी एक
 लड़ी॥ तिहां तुज नै काइ न प्रां मी॥ अदत अ
 मरौ प्ररिब लौ॥

नदी जैरे दाइतों अपराधीता को नाथ उक्षरी ली
जेरे १० वाक्य तू छे माफ़े रांस गुसाईं पिन वि
ताफ़े बाधरे तुफ़ बिना दौ अनतर डबडि यो
की धीक माई लाधरे टेह जीउ जे तिल हरी बि
नारे देह डी डबे दाधरे ऐलें औ तारे कां फ़ीज
रणे माथे ठाकर धाधरे ॥ छटिक माफ़े केही
परिधासी सको नरांस अगधरे ॥ दाइ ऊपरि दया
मया करि होता को अपराधरे ॥ ११ ॥ पीव धरि
आधरे बेदन माफ़ी जां यो रे बिरह संतापै कव
रापरि की जे कहौ छौं डबनी क हां यो रे टेक अ
तर जां मां थ अस्स रा तुफ़ बिन दौ सी दां यो
॥ मंदरि माफ़े कां न अवे र जीनी जाइ बिहाए
रे ॥ ताहरी बाट हो जेइ जेइ धाकी ॥ नैन न घ
पां यो रि दाइ तुफ़ बिन दीत डबरे तं साथे र
छेतां यो रि ॥ १२ ॥ कव मिलि सी पीय गह छाती
औ रांस गि मलाती टेक तिस जला गति सह
रा जनमि जनमि सो साथी ॥ मीत हमारा अ
यारा ताफ़ा रंग नैराती ॥ पीव बिन मं नैनी व
आवे गुणता फ़ा लेगाती ॥ दाइ ऊपरि दया
करि ताफ़े वार यो जाती ॥ १३ ॥ तं ही तं त
फ़े गुसाईं तं बिन तं के नै क हरे तं तां तं
ईर दोरे सरणिं तुमारी ज ईर दोरे टे
मन माहें जेइ तं तां तुफ़ दी तां हो सुख
तं तां जे तिल त जीर दोरे ॥ तिम तिम तां हो
तं तं तिम माफ़े कोइ नहीरे होतो

नांव हैं॥ दाहरे जनहरि गुण गाता॥ मिमेल्लो माझ
नेहो॥ १४॥ हमारे तुम्ही होर क्षपाल॥ तुम्ही
तयोर नही को मेरे॥ ओउध मे टणहार॥ टेक बेरी
पंच निमष नही न्यारे॥ रोकिर हे जमकाल॥ हा जग
दीस दास उष पावो॥ स्वांसी कर ऊसंताल॥ तुम्ही
बिन रांमद हे ऐंद्र॥ दसों दिसा सब साल॥ देष
तदीन उषी कर कीजे॥ तुमहों दीन दयाल॥ निर
नेतां वहेत हरि दीजे॥ दरसन परसन लाल॥ दाह
दीन लीन करि लीजे॥ मे टऊस बेजं जाल॥ १५॥
ऐम नमो धोवर जिबर जिअति गति बियासौरत॥ नि
वृत जुगर जिगर जि॥ टेक बिषे बिलास अधिक अ
ति आतुर॥ बिलसत संकन मांनो॥ घाह लाहल
मरा नमाथामो॥ बिष अंम तक रिजांनो॥ पंचनके
संगि बहत चहुं दिसा॥ उलटिन कबहुं आवे॥
जहां जहां काल जाहत हांत हां॥ मग जलज्म मन
धोवें साधक हे गुण्यांत न मांनो॥ नाव मन न तु
मारा॥ दाह के तुमूस जन सहाई॥ कछ न बसा
इह मारा॥ १६॥ हां हमारे जिघरा रांम गुण गाई॥ ऐ
ही बचन बिचार मांनि॥ टेक कैती कही मन कार
नो॥ तंछो हीरे अजि मांन॥ कहिस मऊं ऊं बेखे
रा॥ तुऊ अजहंत आवे पांत॥ १७॥ ऐसा संग कहाय
इरे॥ गुण गावत आवे तांत॥ चरनों सो चितरा
षिरे॥ निस दिन हरि काध्यांत॥ देखी लेखा देहिरो
आपक हां वैषांत॥ जन दाहरे गुण गाइरे॥ प
र न है निखांत॥ १८॥ बटाऊ चलनो आज

कालि समकिन देखै कहामु धिसोवै रेख नस
 सभालि टेक जैसै तरव रिखि रंधि वसेरा पंधी बें
 आइ अंसै यहु सब हाट्य सारा आप आप कज
 ५॥ कोइ नही तेरा सजन संगती जिनि घोवै
 नमल यहु संसार देखि जिनिलूने सबही सबल
 फूल तन नही तेरा धन नही तेरा कहार ह्योइ दि
 लागि दाइ हरि बिन कंसु धिसोवै कहै न देखै जा
 गि १५ जात कत मद कै मातोर तन धन जोवन
 देखि गरवांतो मापारा तोर टे अयनो ही रूप तै
 न भरि देखै काम निको संग सावैरे बार बार बि
 धै रुचि मानै मरिबो चीतिन आवैरे मै बड आ
 गै और न आवै करत के त अति मानारे मेरी मे
 री करि करि मल्यो माया मोह मुलानारे मै मै
 करत जन सख्यो यो काल सिराने आयोरे दाइ दे
 धि मंड न रांणी हरि बिन जनम रां मायोरे १६
 जागत कंक देन मसै कोइ जागत जा निज तन
 करि राखे चोरन लाग होइ टे सो दत साहब स
 तन ही पावै चोर मुसे घर घेरा आसिया सिप हरे
 कोना ही बसतै की नून बेरा पाछें कहु कबाज
 गे होवै बसत हाथ धे जाइ बीती रैन बडु पिन
 ही आवै तब का करि हे माई पहलै ही पहरे
 जे जागे तौ बस्त कछु नही छीजे दाइ जु गति
 जानि करि असी करणा हे सो कीजे २० सज
 तीर जनी घटती जाइ पल पल छीजे अब धिदि
 न आवै अपनौ लल मनाइ टे अति गतिनी

कहां सुबिसोवै॥ यऊ चोसरचलिजाइ॥ यऊ त
 नबिछोरै बऊरि कहां पावै॥ फिरि पीछै पछिताइ
 प्राणपति जागे सुंदरि कसोवै॥ उठि आतुर गहि
 ॥ कोमल बचन करुणां करि आवै॥ नख सि
 धर ऊल पटाइ॥ सघी सुहाग सेज सुषपावै॥ प्री
 तम प्रेम बटाइ॥ दाइताग बडे पीव्यावै सकल
 सिरोम निराइ॥ २१॥ कोई जातौ रे सरस साधई
 कैरो॥ कैसे रहै करै कास जनी प्राण मेरो॥ टिक
 न बितो दकर तरी सजनी॥ कवन निसंगि बसेरो
 संत साधग सिआये उन के करत जु प्रेम घनेरो॥
 ॥ कहां निवास बास कहां सजनी॥ गवन तेरो॥ घट
 घमाहै रहै निरंतरा॥ ऐदाइ नेरो॥ २२॥ मने बेरा
 गिरांम को संगि रहै सुख होइ॥ टिक हरि कारणि
 मन जोगिया॥ क्यंहि मिले मुक सोइ॥ निरखण का
 मोहि चावै॥ क्यं आ पदिषावै मोहि॥ हिरदै मे
 हरि आवै॥ मप्रदेखो मन धोइ॥ तन मन मैं तही
 बसे दया न आवै तोहि होइ॥ निरखण का मोहि चा
 वै॥ ऐ इध मेरा सोइ॥ दाइतु सारा दास होइ॥ ने
 न देखन को रोइ होइ॥ २३॥ धरणी धरि बाध्यो ध
 तारो॥ अंग परसन ही आपे रे॥ कदो अमारी का
 इन मानौ॥ मति भावै ते पापे रो॥ टिक वाही वाही
 नै सबे सली धो॥ अबिला को इन जातौ रो॥ अल
 गर है ऐणी परिते डै॥

पिगल ते को इन जातौ ऐ

माताबालकरुदनकरता॥ बाहीधानैराधे
 जेकोछैतेहोआपणायो॥ दाहतेनहीदाधेरे॥
 २४॥ सिरजनहारथैसबहो॥ उत्पत्तिपरलेक
 रेआपे॥ हसरनांहीको॥ ठे॥ आपहो॥ कुलाल
 करता॥ बंदधैसबलो॥ आपकरिअगोचबैठा
 इनीमनकोमोहि॥ आपथैउपाइबाजीतिरवि
 देधैसो॥ बाजीगरकोयऊमेदआवे॥ सहजि
 सौजसमो॥ जेकुछकीयासुकैरेआपे॥ ऐहउ
 पजैमोहि॥ दाहरेहरिनांवसेती॥ मेलकुसमल
 धो॥ २५॥ देहुरेमऊदेवपायो॥ बसतअगोच
 लपायो॥ टेकैअतिअनूपजोति॥ पतिसो॥ अंत
 रिआमोप्यंडुब्रह्मंडसमितुलिदिषायो॥ सदा
 प्रकासनिवासतिरंतरि॥ सबघटमांहिसमायो॥
 तैनतिरविनैरौहिरदेहेतलायो॥ पूरबभाग
 सुहागमेजमुष॥ सोहरिलेनपठायो॥ देवको
 दाहपारनपावै॥ अहोपैउनही॥ चितायो॥ ३॥
 २६॥ इति केदातारुके॥ अथरागभाट्ठ॥
 मनांमजिरामनांमलीजै॥ साधसंगतिसुमरिसु
 मरि॥ रसनांरसपीजै॥ टेकैसाधजनसुमरनक
 रि॥ केतेजपिजागे॥ अगमनिगमअमरकीये॥
 कालकोईनलागे॥ नीचकुंचचितनकरि॥ स
 रनांगतिलीये॥ भगतिमुकतिआपनीगति॥
 असैजनकीये॥ केतेतिरितीरलागे॥ बंधनभो
 वटै॥ कलिमलविषजुगजुगके॥ रामनांमध
 टे॥ भरंभकरमसबनिवारि॥ जीवनिजयिमो

दाह इव हरिकरन हजानही को है ॥ ११ ॥ मता
 जयिरां मतां सकहिरे। रां मतां मम निविशं म
 गीसो गहिरे। टेक जागि जागि सोवे कदा। कालक
 धने रौ। बारं बार करि पुकार। आवत दिन नरे
 ॥ सोवत सोवत जनम चरिते। अज हं च जीय जा
 गो रां मसं सारिती दति चारि। जनम जुरा लावो
 आसि पासि सर सिबं ध्यौ। तारी गिरद मेरा। अंत
 काल छाडि चाल्यो। को है तही तेरा। तजिका
 मको ध सोहसाया। रां मरां मकरणां। जवना
 गजी व प्राण प्यंड। दाह गहि सरणां ॥ २ ॥ कर
 विसरै मेरा पीव पिपा मारा। जीव की जीवति
 प्राण ह मारा। टेक क्यं करि जीवै मीत जन विज
 रौ। तुम हिन प्राण सतेही। अंत सगि जन क
 पै बटौ। तब उपपदे देही। साता बानिक ॥ ३ ॥
 तद्वै सोके सें करि पावे। तिरधत का धत अन
 म सुजंठा। सैंके सैं करि जीवै। दप ॥ ४ ॥
 सदसुख अंतत। तीकर तिरस न धारा। दिस
 याला मरित निदं जे दाह दास तुल्य ॥ ५ ॥
 ईक है र ता जतां अंत नारा दित लिद न द
 टेक दन उपपानुदरी। कन दन दत द
 रौ तुम हिन ताद विरद को द्य कन क
 रिता अंदरे। तधर दित दित दित को
 रिखित अंत जतिरे। दद
 यो
 कति अंतर गहि

मो व्याकुल होइ गइरे ॥ ४ ॥ अरु बिरह गुण
रास तुम्हार दिया ॥ तुम्ह बिन नाथ अनाथ को
बिसार दिया ॥ ते अरु नै अगि अनल पर जा
नाथ निकटित ही आवैरे ॥ दसे नकार नि बिरह
ति व्याकुल ॥ और न कोइ ना वैरे ॥ आप आयर
न अरु नै देखै ॥ आप न पोत दिषाँ देरे ॥ प्राणी
प्यंजर देव दे करि दरसन मांगै ॥ अंतर जांमी अ
पेरे ॥ दाह बिरह निबनि बनिट्टे ॥ ऐड्य काँइ न
काँपेरे ॥ ५ ॥ कबहुँ असा बिरह उपावैरे ॥ पिय बि
न देखै जीय जावैरे ॥ टे ॥ विपति हमारी सुन ऊँ
हे ली ॥ पीव बिन चैन न आवैरे ॥ ज्यंजल मीन
मीन तन तलपे ॥ पीव बिन बज्र बिहावैरे ॥ ६ ॥ अ
सी प्रीति प्रेम की लागी ॥ ज्यं पंथी पीव सुनावैरे ॥
सुमन मेरा रहै निसबा सुरि ॥ कोइ पीव को अ
गि सिलवैरे ॥ तो मन मेरा धर ज धर ॥ कोइ
आगम आगि जणावैरे ॥ तो सुख जीव दाह का
पावै ॥ पल पीव जी आप दिषाँ देरे ॥ ६ ॥ पंथाँडा
बूझै बिरह नीक हिनै पीव की बात ॥ कब धरि
आवै कब मिले ॥ जो ऊँ दित अरु राति पंथाँडा
॥ कहाँ मेरा प्रीतम कहाँ बसे ॥ कहाँ रहे करि
वास ॥ कहाँ ठहौ कहाँ पाइये ॥ कहाँ रहे किस
पास पंथाँडा ॥ ७ ॥ कवन देस कहाँ जाइ ऐ कीजे
कौं गाउ पाइ ॥ कौं गा अंग के सँ रहै ॥ कहाँ करे
समजाइ पंथाँडा ॥ ८ ॥ परम सनेही प्राण का ॥ सोक
त देऊँ दिषाँ ॥ जीवति मेरे जीव की ॥ सो मुँज आ ॥

तिष्ठिना प्रपंथीडा॥ नैननन आवेनी दंडी॥ नि
 सदिनत लफतजा प्र॥ द्वा प्रआतुर बिरहनी॥
 क्यंकरि रें ति विहा प्रपंथीडा॥ ७॥ पंथीडा पं
 थपिच्छां रें री प्री चका॥ गहि बिरहे की बाट जी
 वत मवक के चलै॥ जंघे श्री घं घाट पंथीडा॥
 टेक सतगुर सिरपरि राखी ऐ॥ निरमल ग्यां ल बि
 चार प्रेम भगति करि प्रीति सौ॥ सनमुख सिरज
 नहार पंथीडा॥ परआतम सौ आतमा प्रजल
 जल हि समा प्र॥ मन ही सौ मन ला प्रे॥ निकै मार
 गि जा प्रपंथीडा॥ ताला बेनी ऊप जे आतुर प्री
 ड पुकारा सु मरि सने ही आयणां॥ निस दिन बा
 रं बार पंथीडा॥ देवि देवि प्रग राखि ऐ॥ मार मां
 डा धर॥ मन सा बाचा क्रमना॥ द्वा प्रलंघे पार पं
 डा॥ ८॥ साधक है उपदेस बिरहनी॥ तन मूलै
 तब पाई ऐ॥ निकट मया परदेस बिरहनी॥ टेक
 आतम अंतरिते बसे॥ तहां रहै करि वास॥ तहां
 टेहें पी बपाई ऐ॥ जीवनि जी के पास बिरहनी॥
 ९॥ परम देस तहां जा प्रे॥ आतम लीन नुपा प्रे॥
 क अंगि अंग सैं रहै॥ प्रजल जल हि समा प्र बिरह
 नी॥ सदा संगती आयणां॥ कब हूं हरिन जा प्र
 परम सने ही पा प्रे॥ तन मन ले कुल गा प्र बिर
 हनी॥ जागें जगपति देधि ऐ॥ परगट मिले है आ
 प्र॥ द्वा प्र सनमुख कै रहै॥ आनंद अगित मा प्र बि
 रहनी॥ १०॥ गोबिंद गा प्र बादे रे गा प्र बादे आ
 डंडी आं ति निचारि रे॥ अन्

मञ्जु ऐक से ॥ निरमै को इनकी जेरे ॥ श्री महा
 रस अमृत आयै ॥ अमर मि कर सपी जेरे ॥ अवि
 चल अमर अघे अविनासी ॥ तेर सको इनकी जेरे
 ॥ आतम रांम अक्षर अमर ॥ जनम सुफल क
 रिली जेरे ॥ देव दयाल कृपा लद मोदर ॥ प्रेम वि
 ना कि मरहि ऐरे ॥ दाइ रंगतरि रांमर मादो ॥ न
 गत बछल तं कहि ऐरे ॥ १० ॥ गोव्यंदा ॥ जोइ बा
 दरे जोइ बादे ॥ जेवर जेतै वारिरे ॥ आदि पुरिष ते अ
 छै अमर ॥ कंत तुमारी नारिरे ॥ टे ॥ अगौ सगौर
 गौर मिरे ॥ देवा हरिन की जेरे ॥ रस मां हें रस प्रमथ
 रहिरे ॥ ऐ सुष अमर तै दी जेरे ॥ से जट्टियें सुष रां
 मरि रमिरे ॥ प्रेम प्रगति रसली जेरे ॥ ऐक मे कर
 सके लिकर ता ॥ अमर अवला प्रमजी जेरे ॥ स
 मप्रथा स्वांती अंतर जांमी ॥ बार बार कांइ बादेरे
 ॥ आदें अलें ते जतुमर ॥ दाइ देखे गायेरे ॥ ११
 ॥ तुमर सीरंग रमाडि ॥ आप अपर कृत्य प्र
 करि ॥ मंनै मभर माडि ॥ टे ॥ मंनै नोल बिकां प्र
 यइ वेगलों ॥ आपरा पोदिषाडि ॥ किम जी ऊं
 ऐकली ॥ बिरडुनियां नारि ॥ मंनै बाहि सिमा
 अलगो यइ ॥ आतमां नुधरि ॥ दाइ सौर मि ऐं स
 दा ॥ ऐणी परि नारि ॥ १२ ॥ जागिरे किसनी दडी
 सूता रेंगि ब्रिह्मोणी सब गइदि ॥ न आइ प्रहंता
 टे ॥ सोक्खं सोवेती दडी ॥ जिस मरणां दो वरे ॥ जो
 रावैरी जागणां जीवतं क्यं सोवेरे ॥ जाके मिर
 परिजम घडा सर मां धें मारैरे ॥ सोक्खं सोवेती द
 टी कटिकां न प्रकारैरे ॥ दिन प्रति दिन सकल

ऊँ पै जीवन जागैरे दाह सूतानी दडी उस अंगि
 न जागैरे ॥ १३ ॥ जागिरे सब रेंगि बहारांगि ॥ जा
 प्रजतम अंजुरी कौ पांगी ॥ टेक घडी घडी घडि
 याल बजावे ॥ जो दित जाइ सुबहु दिन आवे ॥ ॥
 सरिज चंदक है ससजाइ ॥ दित दित जा वंधटती
 जाइ ॥ सरव पांगी तरवर छाया ॥ निस दिन का
 ल गरा सै काया ॥ हे सबटाऊं प्रांत पयां नां ॥ दा
 ह आतम यमन जां नां ॥ धं ॥ आदिकाल अंतिका
 ल अधिकाल नाई ॥ जनम काल जुरा काल ॥ काल
 ऊँ पै आइ चलत काल फिरत काल ॥ कबहुं ले
 जाइ ॥ आवत काल जात काल ॥ काल कछिन
 भाई ॥ लेत कौ दैत काल ॥ काल ग्रसै धाई ॥ कह
 त काल सुनत काल ॥ करत काल सगाई ॥ काम क
 ल कोध काल ॥ काल जाल छाई ॥ आगे काल
 पीछे काल ॥ काल संगि समाई ॥ काल रहित रां
 मगहित ॥ दाह ल्यो लाई धी ॥ श्या ॥ तो कौं के ताक
 व्यामन मेरे ॥ धिया ऐक सां है जाइ अनेरे ॥ प्रांत उ
 धारी लेरे ॥ टेक आगे है मन बरी बिमासणि ॥ ने
 भा मांगे देरे ॥ काहे सो दैनी दम री ॥ कृत बिचा
 रे तेरे ॥ ते परिकी जे मन बिचारै राखे चरनौ तेरे
 ॥ रती प्रक जीवन मोहिन सजे ॥ दाह चेतिस बेरे
 ॥ १४ ॥ मन बाळूरे कबू बिचारी धेलो ॥ पडसी
 रगत ते ल ॥ टेक बहू मां ते
 जूँ तिल मै ल जै ते ल
 ॥ हो सीर सिरि हे ल

ल्का साई सेतीमेल ॥ दाइसंगछाड़ी पीवकाय
 ईहेगुणकीबेल ॥ ११ ॥ मनवावरेहोअततजि
 जाइ ॥ तोतंजीवैअमीरसपावै ॥ अमरफ
 देनपाइ ॥ टेकरंडु चरतसरतमुषपावै ॥ देषइ
 नेनअघाइ ॥ भागतेरेपीचनेरे ॥ पीरपातदि
 षाइ ॥ संगितेरैरहेधेरै ॥ सहजैअंगिसमाइ ॥ सरी
 रमाहैसो धिसाई ॥ अतहदध्यांतलगाइ ॥ पीव
 पासिआवैसुषपावै ॥ तनकीतपतिबुजाइ ॥ दा
 इरेजहांतादउपजै ॥ पीवपासिदिषाइ ॥ १२ ॥
 निरंजनअंजनकीत्सारे ॥ सबआतमलीत्सारे
 ॥ टेकरअंजनमायाअंजनकाया ॥ अंजनछाया
 रे ॥ अंजनरातेअंजनमाते ॥ अंजनपापारे ॥ अंज
 नमेरा ॥ अंजनतेरा ॥ अंजनमेलारे ॥ अंजनलीया
 अंजनदीया ॥ अंजनबेलारे ॥ अंजनदेवाअंज
 नसेवा ॥ अंजनपूजारे ॥ अंजनपातोअंजनध्या
 ता ॥ अंजनहजारै ॥ अंजनबकताअंजनसुखा
 ॥ अंजनभावैरे ॥ अंजनरांमनिरंजनकीत्सारे
 ॥ दाइगावैरे ॥ १३ ॥ अंतबैतचैतहोवै ॥ सुगता
 सुषलागे ॥ तीन्यगुणत्रिबिधितिमर ॥ परमकरम
 नागे ॥ वे ॥ होइप्रकासअतिउजास ॥ परमतत
 सूके ॥ परमसारनिरबिकार ॥ बिरलाकोईबूके
 ॥ परमप्रांतसुषनिधांत ॥ परमसुनिषेले ॥ सह
 जमाइसुषसमाइ ॥ जीवब्रह्ममेलै ॥ अगमति
 गमहोइसुगम ॥ इतरतिरिआवै ॥ परमपुरुषद
 रसपरस ॥ दाइसोपावै ॥ १४ ॥ कौंइरांमकाराता

२॥ कोई धर्म का मातारे ॥ कोई धर्म का मातारे ॥
 कोई तन को तारे ॥ कोई आप उबारै ॥ कोई
 जोग जुगं तारे ॥ कोई मोक्ष मुखं तारे ॥ कोई हे नग
 वं तारे ॥ कोई सदगति सारारे ॥ कोई तारणादा
 रारे ॥ कोई पीव का प्यारारे ॥ कोई पार का पायारे
 कोई मिलि करि आया रे ॥ कोई मन का मायारे
 कोई देव दुसागारे ॥ कोई सेज मुहागारे ॥ कोई
 हे अनरागारे ॥ कोई सब सुख दातारे ॥ कोई रूप
 बिभ्रतारे ॥ कोई अमृत घातारे ॥ कोई नर पिछा
 रौरे ॥ कोई तेज के जाणौरे ॥ कोई जोति बखारौरे
 कोई साहिब जै सारे ॥ कोई साई तै सारे ॥ कोई दा
 ह में नाँव सारे ॥ २१ ॥ सदगति साधवारे ॥ मन
 मुख सिरजन द्वार ॥ मौज लज्जापति रैते तारे ॥
 प्रान्त उधारन द्वार ॥ टेक परण ब्रह्म रां मरंगार
 ते ॥ निरमल नां व अक्षर ॥ सुप्रसंतोष सदा सति
 संजमा ॥ सति गति वारन पार ॥ जुगि जुगिराते
 ॥ जुगि जुगि माते ॥ जुगि जुगि संगति सार ॥ जुगि
 जुगि मेला जुगि जुगि जीवनि ॥ जुगि जुगि ग्यान दि
 चार ॥ सकल सिरोमनि सब सुख दाता ॥ दुल्लभ
 प्रहिसंसार ॥ दाह हंस रहै सुख सागर ॥ आये घर
 उपगार ॥ २२ ॥ अरु धरि पाहुणारे ॥ आवाचा
 तरांम ॥ टेक चहुँ दि सिमंगल चार ॥ आनंद अ
 ति धरार ॥ बर त्याजै जै कारा ॥ बिरधि ब्रह्म वरां
 ॥ २३ ॥
 ऐ ॥ आनंद अंगिन माइ ॥

भादसगतिअपार सेवाकीजियोऐ सनमुख
मिरयनहार सदासुखलीजियोऐ ॥ धनेअम
राजागा ॥ आवा ॥ अमृतगोऐ ॥ दाहसेजसुखस
गत्तंविमुवनधणीऐ ॥ ४॥ २३॥ इतिराग
॥ २३॥ ॥ अष्टावरांतकली ॥ सबदसमांता
जेरहे ॥ गुरवाहकबीधा ॥ उनहीलागाऐकसो
॥ सोईजनसीधा ॥ टे ॥ औसीलागीमरमकी
तनमनसबसला ॥ जीवतमृतककेरहेग
दिआतमसला ॥ चेतनिचितहनबीसरे ॥ म
हारसमीठा ॥ सबदतिरंजनगदिरहे ॥ उनिस
दिवदीवा ॥ ऐकसबदिजनउधरे ॥ सुनिसद
जैजागे ॥ अंतरिरातेऐकसो ॥ सरसनमुखला
गे ॥ सबदिसमांतासनमुखरहे ॥ प्रआतमआ
गे ॥ दाहसीजेदेषता ॥ अविनासीलागे ॥ १॥
हो ॥ तरनीकाहेहरिनांव ॥ हजानहीनांव
बितनीका ॥ कहिजेकेवलरांम ॥ टे ॥ निरम
लसदाऐकअविनासी ॥ अजरअकलरसऔ
सा ॥ दिहगदिराधिमूलसनमांही ॥ निरधिदे
धितिजकेसा ॥ ॥ अऊरसमीठासदाअमीर
स ॥ अमरअनूपमपीवै ॥ रातारहेप्रेम ॥ सो
माता ॥ औसैजुगिजुगिजीवै ॥ हजानदाऔ
रकीऔसा ॥ गुरअंजनकरिस ॥ जेदाहमोटे
भागहमारे ॥ दासबंबेकीबके ॥ २॥ ॥ कबआ
वैगाकबआवैगा ॥ पीवपरगटआपदिषावै
गा ॥ मिठहामुफकौनावैगा ॥ टे ॥ कंठडैलागि

रुंरेंतेंतौमैंबाहिधरौंरो॥पीवतुम्बिनफरि
रौंरो॥पांऊंससतकमेरारो॥तबमनपीवजीतेरा
रो॥हंराघौनैंतें॥ऊंनेरारेश॥दियेंडेहेतलगांऊंरो
अबकेजेपीवपांऊंरो॥तौबेरबेरबलिजांऊंरो
मेजडियेपीवआवेरे॥तबआनंदअंगिनमावे
रो॥जबदाइदरसदिषावेरे॥अ॥पिरीतंपांरा
यसाइडे॥मंतनलगीमाहिडे॥टेकपांधीदीदो
तिकरीला॥असांसांरागलुइडे॥सांईसिका
सडुकेला॥गुजीगालिसुनाइडे॥यसांपाक
दीदारकेला॥सिकअसांजीलाहिडे॥दाइसं
फिकलूबमैंला॥तोडेबियानकाइडे॥४॥को
मेडीदोसजराण॥सहारीसरतकेला॥नयेडीह
घणा॥टेकपिरीयांसदीगालुडीला॥पांधीडा
पूछो॥कडीईदोमंगरेला॥डीदोबादअसां
दा॥आदेसिकदीदारजीला॥पिरीपूरिपसां
इमंदाइजेजिंदऐला॥सजरासांरारहां॥५॥
हरिहांदिषावडुनैंतां॥सुंदरसरतिमोहनां
बोलिसुनांवडुबैंतां॥टेकप्रगटिपुरातनघेड
नां॥महीमांतसुषमंडणां॥अबिनासीअपर
परा॥दीनदयालगगनधरा॥पारखस्नपरपूर
णा॥दरसदेऊडुषहरनां॥करिकियाकरूणां
मई॥तबदाइदेखेतुम्बदई॥धारांससुषसेद
गजानैंरो॥इजाइयकरिमानैंरो॥टेकअोरआ
कीआला॥फंधरोपेहैंजमजाला॥समिकालव
धिनसरयेषे॥यऊंसिंधरूपसबदेखे॥बिषस

मयांतकमारी रिपकरतमीचविचारी यऊ
 औसारूपबुलावा वगपासीदाराआवा सब
 औसादेविबिचारे प्रांतघातबटपारे औसजन
 सेवगसोई मनिऔरभावेकोई हरिप्रेममगन
 रंगिराता दाहरांतरमेंरसिमाता ॥ ७ ॥ आपनि
 रजनयोंकहे कीरतिकरतार मैंजनसेवगदो
 नही ऐकेऔगसार देत समकारतिसबपरद
 रे आपाअभिमान सदाअघंडुतिउरधरे बोले
 मगावान् अंतरपटजीवेनही तबहीमरिजा
 बिबुरेतलफेमीतज्जे जीवेजलिआइ नीर
 धीरज्जेमिलिरहे जलजलहिसमान आतम
 पाणीलूयाज्जे इजानही आन मैंजनसेवगदो
 ही मेराबिआम मेराजनमुफसा रिघा दाहक
 देराम ॥ ८ ॥ सरनितुम्हारे सदा मैंअनतसु
 षपाया नागिबडेतसेटिया रुं चरनों आया
 टे मेरीतपतिमिटीतुम्हदेयता सीतलन
 याभारी नवबंधनमुकतातये जबमिलेमुरारी
 सरमनेदसबनलिपा चेतनिचितलाया पा
 रससौपरचाभया उनसहजिलघाया मेरा
 चंचलचिततिहचलनया अबअनंततजाई
 मगनभयासरबेधिया रसपीयाअघाई स
 नमुषकेतैमुषदीया पऊदयातुम्हारी दाह
 दरसनपावई पीवप्रांतअधारी ॥ ९ ॥ गोब्यंद
 राधेऊअपनीऔट कांसक्रोधनएबटपारे
 तकिमारेउरिचीट टे बेरीपंचसबलसंगिम
 ने मयांतकमारी कालअहेडोबधिककेल

गो॥ ज्यंजीववाजगद्दे॥ ग्मांनध्यांनहिरदेहे
 जीन्तो॥ संगीदीघेपिरहे॥ समकिनपरईबापर
 मईया॥ तुम्बिनसुलसहे॥ सरणितुम्हारी
 राघऊगोव्यं॥ इतसौसंगतदीजो॥ इतकैसंगी
 बरुतइषयाया॥ दाइकराहिलीजो॥ १०॥ रांम
 कृपाकरिहोदयाला॥ दरसनदेऊकरोप्रति
 पाला॥ टेकबालकइधनदेवैमाता॥ तौकरेक
 रिजीवैद्विबिधता॥ गुनऔगुनसबकुचनवि
 चारै॥ अंतरिहेतप्रीतिकरियारै॥ अपनौजांति
 करैप्रतिपाला॥ नैननिकटिउरिधरेगोपाला॥ इद
 हकहेनहीबसमेरा॥ तुम्हमातामैबालिकतेरा
 ॥ ११॥ भगतिमांगोबापभगतिमांगो॥ मनेता
 फांनाममोप्रेमलागो॥ सिद्धपुरबदनपुरश्रव
 स्येकीजिएअमरध्यानहीलोकमांगो॥ टेकआ
 पिआनंबनताफाअंगनौ॥ भगतिसजीवनीर
 गिराचौ॥ दिहनैगेहनैबासबैकुंतलणो॥ इंद
 आसणनहीमुक्तिजाचौ॥ १२॥ भगतिबाल्सीव
 रीआपिअबिचलहरी॥ निरमलीनांमरसपा
 नतावै॥ पद्विनैसधिनैराजरूडोंनहीं॥ देवपद
 माफैकाजिनोवै॥ १३॥ आत्माअंतरिसदातिरंत
 रि॥ ताफ्रीबापजीभगतिदीजो॥ कहैदाइहिदे
 कोडिदतआयो॥ तुम्बिनांतेअरुनहीलीजो
 ॥ १४॥ ऐकौएकतरांमजीनांमरूडो॥ तांफात
 मबिनांबीजोसबैकडो॥ टेकतुम्बिनांऔर

गतही काये ॥ संत नैं सांक डौं दुष्ट पीडा करै ॥
हरै बहिलौ बेगि आवै ॥ पाप नां पुं जप हो करी ॥
ॐ ॥ सांजिया मै मरम जोति नावै ॥ साधनै दुहि
लौति हां तं आकु लौ ॥ माफौ माफौ करी नैं धौ ॥
॥ दुष्ट नैं मारि वासंत नैं तारि वा ॥ प्रादृष्या वा
हां आय जाये ॥ नाम लेतां धिण नां यतै ऐक ले ॥
कोटि तां करम नां छेद की धौ ॥ कहे दाह हि वेतु
रुखि नां को नही ॥ साधि बोले जे सरति ली धौ ॥
हरि नाम देऊ निरंजन तेरा ॥ हरि ह ॥ रखि जपै जीय मे
रा ॥ तेना वसाति हेत हरि दीजे ॥ प्रसन्न संगि म
आवे ॥ कोमल बचन दीनता दीजे ॥ राम रसांद्र रा
मावे ॥ बिरह बैराग प्रीति मोहि दीजे ॥ हिरदै साव
सति साधौ ॥ चित चरनौ चिंता मणि दीजे ॥ अंतरि
दिठक रिराधौ ॥ सहजै सील संतोष सब दीजे ॥ म
न निहचल तुलसी गो ॥ चेतनि चिंतन सदा तिचा
सी ॥ संगितु मुरारे जागौ ॥ ग्यांत ध्यांत मोहन मोहि
दीजे ॥ सुरतिसदा संगितेरे ॥ दीन दया लदा पूकौ
दीजे ॥ परम जोति घटि मैरे ॥ १४ ॥ जे जे जे जगदी
सतं तं संमरप सांद्र ॥ सकल सुवन मां तैं धड़े ॥ पूज
को नां ही ॥ टंक काल सी चकरुणां करै ॥ जम किं
कर माया ॥ महा जोध बलि वंत बली ॥ मैक पै राया
जुरा म रौ ॥ तुम तैं डरै ॥ मन कौ नैं नारी ॥ कां
मद लन करुणां मई ॥ वंदेव मुरारी ॥ सब कं पैक
स्तारतै ॥ जीवंधत पासा ॥ अरि रिप नं जन नै गता
॥ सब विघन बिना सा ॥ सिरऊ परिसांद्रिषडा सो
ई देस मां नी ॥ नाने नागो नागर ॥ निजै नयन नैं

१५॥ हरिके चरनपकरिमनमेरा॥ यहुअबिना
 सीधरतेरा॥ टेक॥ जबचरनकवलरजपावै॥ त
 बकालब्यालबौरावै॥ तबत्रिविधितपततिना
 से॥ तबसुषकीरासिबिलासै॥॥ जबचरनकव
 लचितलारौ॥ तबमाथेमाचनजागै॥ तबजन
 मजुरासबधीना॥ तबपदपावनउरलीना॥ जब
 चरनकवलरसपावै॥ तबमाया नब्यापैजीवै॥
 तबभरंसकरमनोताजे॥ तबतीन्यलोकबि
 राजे॥॥ जबचरनकवलरुचितेरी॥ तबचारिप
 दारथचेरी॥ तबदाहूऔरनबांछै॥ जबमनला
 गेसावै॥॥ १६॥ सतौऔरकहोकाकहिऐ॥ ह
 मतुम्हसाधहैसतगुरकी॥ निवटिरामकेर
 हिऐ॥ टिकहमतुम्हसाहिबसैसोस्वामी॥ सावै
 सौसबुलहीऐ॥ दरसनपरसन जुगिजुगिकी
 जै॥ काहेकौडुषमहिऐ॥ हमतुम्हसंगिनिकंठि
 रदैनैरै॥ हरिकेवलकरगहिऐ॥ चरनकवल
 छाडिकरिअैसे॥ अनतकाहेकौबहिऐ॥ हम
 तुम्हतारणातेजघनसुंदर॥ नीकेसौनिर
 बहिऐ॥ दाहूदेधुऔरडुषसबही॥ तामेंतनक
 दहिऐ॥॥ १७॥ मनरेबहुरिनअैसेहोई॥ पीछेफि
 रिपछितावैगारे॥ नीदमरेजिनिसोई॥ टिक
 गमसारेसंचुकरिले॥ तौसुषहोवैतोही॥ प्रीति
 करीपीवपाइये॥ चरनौराधेमोदी॥ संसारसा
 रबिषमअतिसारी॥ जि
 रेजुनरामनामसौ॥

गर्वरजाया कह्योइकाकहिये टे बाबाबाट
घाटकछूससकिनपरई। हरिगवनहमजोतां
परदेसीयंथि चलेअकेला श्रीघटघाटपयोन
बाबासंगनसाथीकोईनहीतेरा यहुसबह
ठपसारा तरवरपंथीसंवेसिधये तेराकौताप
रा बाबासबैबटाऊंपंथमिराते असधिरना
हीकोई अंतिकलिकोआगोयीछे बिछुरतब
रनहोई बाबाकाचीकायाकौनभये सारे
गिराईक्यासोवै दाहसंबलसुकृतलीजै मव
धानकिनहोवै १८ मेरामेराकहेकंकीजै
जेकछुसंगितआवै अनंतकरीनैधनधरीला
रे तेऊतौरीताजावै मायाबंधनअंधनचैतेरे
मेरमांहिलपटाया तेजायोंहौ एहबिलासौ
रे अनंतविराधेधायी आपसवारथएहबि
लुधा आगममरमतजायोंरे जमकरमाथे
बायाधरीला तेतौमनिनआयोंरे मनबिच
रीते लीजै तिलमाहैतनपडिवा दाहरेतिहा
तनताडिजै जेगौमारगिचढिवा २० सन
मुषमइलातबअगद लातेमेरेप्राणअधरी
निराकारनिरंजनदेवारे लेवातेहबिचारी
टेअयरंथारपरंसतिजसोई अलखतीरा
बिसतारं अक्षरबीजैसहजिसमांतरे आसा
संमथसारं जितैकीन्सकिन्सकंचीन्समे
लातेपरिमाणो अविगततौरीबिगतितजानौ
रे मेमूरिषअपानं सहजैतौराएमनसौरा गी
साधंसौरंगआई दाहूतौरीबिगतितजानौरे

हमारा हेस धी सुखसागर पाया ॥ दाहकी
दरसनकी ॥ मिलि धि सुवन राया ॥ ३२ ॥ निरं
जननां व केर सिमा ते ॥ कि ई पूरे प्राणी राते टे
॥ सदा सने ही रांम के ॥ सो ई जन साचे ॥ तुम्ह
न और न जान ही ॥ रंग ते रे राचे ॥ १ ॥ आन न सा
चे ऐक तं ॥ सति साक्ष सो ई ॥ प्रेम प्रिया से पी व के
ऐसा जन को ई ॥ २ ॥ तुम्ह ही जीव नि उर रहे ॥ आ
नंद अन रागी ॥ प्रेम मगन पी व प्रीति डी ॥ लि
तुम्ह सो लागी ॥ ३ ॥ जे जन ते रे रंगि रंगे ॥ हजारा न
ही ॥ जन्म सुफल करि ली जिये ॥ दाह उर मा
ही ॥ ४ ॥ ३३ ॥ चतुरेम न जहां अम त वनां ॥ निर
मल नी के संत जनां टे ॥ न गुण नां व फल अग
म अथा ॥ संत नि जीव नि प्राण अधरा ॥ सीत
ल छया सुधी सरीरा ॥ चरन सरोवर निरमल
नीर ॥ सुफल सदा फल बार हम सा ॥ नां नां वां
रां ॥ धुनि प्रकासा ॥ ३ ॥ जहां वास वसि अमर अने
का ॥ तहां चलि दाह दहे बबेक ॥ ३४ ॥ चलोष
न माफा जहां मित्र अमरा ॥ जहां जां मर मर
ण न जां पिये न ही जां पिये ॥ टेक जहां मोहन सा
या मेरा न तेरा ॥ आवागन न ही जम फेरा ॥ जहां
पंड पंडे न ही प्राण न छूटे ॥ काल न लारो आ
वन छूटे ॥ १ ॥ अमर लोक जहां अधि वसरी रा ॥ व
धिविकार न व्यापे पीया ॥ २ ॥ रां सरज को ई हृद
न साजे ॥ अ
प्रतिरंजन और न को ई

॥ रामरससी चै॥ दितदितबध तीजाइ टे सत
गुरसहजैबाहीबेली॥ सहजिगगतधरबाय
सहजैसहजैकयलमेले॥ जांरौऔधराया
आतमबेलीसहजैफलै॥ सदाफलफ लहो
ई॥ कायाबाडीसहजैतिपजे॥ बूझैबिरलाको
ई॥ सतहठबेलीसूकनलागी॥ सहजैजुगिजु
गिजीवै॥ दाहूबेलिअसरफललागै॥ सहजि
सदारसपीवै॥ ३६ संतौरामबांनमोदिलगो
मारतमिरगसरमजबपाया॥ सबसंगीमिलि
जागो॥ टेकचितचेतनचिंतामणिचीन्है॥ तुल
टिअपूठाआया॥ मंदरियेसिबहु रितहीनिक
सै॥ परमततधरयाया॥ १॥ आवैनजाइजाइन
हीआवै॥ तिहिरसिसनबांमाता॥ पांतकरत
परमानंदयायो॥ यकितनयाचलिजाता॥ २
भयाअपंगायंकनहीलागै॥ निरमूनसंगिस
हाई॥ पूरणब्रह्मअखिलअबिनासी॥ तिहि
तजिअनंतनजाई॥ ३॥ सोसरलागिप्रेमप्रकासा
प्रगटीप्रीतमबांणी॥ दाहूदीनदयालहिजा
रो॥ सुषमैसुरतिसमांणी॥ ४॥ ३७॥ मधिनैतनि
रघौंसदासोसहजसरूप॥ देखतहीमनमो
हिया॥ हेततअनूप॥ टेकत्रिवेणीतटियाइया
मूरतिअबिनासी॥ जुगिजुगिमेराभांवता
सोईसुषरासी॥ तारुणीतटिदेघिहौ॥ त
होअस्थानां॥ सेवगस्वांमीसंगिहै॥ बेवेमग
वांतां॥ निरमैथांतमुहातसो॥ तहांसेवग
स्वांमी॥ अनेकजतनकरियाइया॥ मैअनर

नांसीं ते जगत्परमिति न ही॥ औसाउजिये
रा॥ दाइपारनपाइये सोस रूपसंभारा॥ ३५
निकटितिरंजनदेखिहो॥ छिनहरिनजाई॥
बाहरिभीतरिऐकसा॥ सबरदयासमाझेठिकी
सतगुरसेदबताइया॥ तबपूरायाया॥ नैननि
हीनिरबोसदा॥ घरिसहजेंआया॥ परेसोप
चांनया॥ पूरीमतिजामी॥ जीव जांनिजीवति
मिले॥ औसेबडनागी॥ रोमरोममेंरभिरदया॥
सोजीवतिमेरा॥ जीवपीवन्पारानही॥ सबसं
गिसेबसेरा॥ सुंदरसोसहनेरहे॥ घटिअंतर
जांसी॥ दाइसोइदेखिहो॥ सारोंसंगिस्वांमी॥ ३६
सहजंसहेलडीहे॥ तंनिरमलनैननिहारि
॥ रूपअरूपनिरगुणआगुणामें॥ त्रिभुवनदेव
मुरारि॥ टेकबारंबारनिरखेजगजीवन॥ इहिंध
रिहरिअबिनासी॥ सुंदरिजाइसेजसुषबिन
से॥ परणायंरमनिवासी॥ सहजेंसंगपरसि
जगजीवन॥ आसणअमरअकेला॥ सुंदरिजा
इसेजसुषसोदे॥ ब्रह्मजीवकामेला॥ मिलिआ
नंदप्रतिकरिपांवता॥ अगमनिगमतहाराजा
॥ जाइतहांपरसिपांवतको॥ सुंदरिसारैकाजा
॥ मंगलचारचहुंदिमिराये॥ जबसुंदरिपाव्या
वे॥ प्रमजोतिपरेसोमिलिकरि॥ दाइरंगलगा
वे॥ ३७॥ तहांआये आपनिरंजनां॥ तहांनिम
वासुरितहीसंजमा॥ टिक
तहां

नही श्री पर एक बिना राणी तहां चंदन ऊरी सरा
 मुख कालन बाजे तरा तहां सुप्र उषका गमिना
 ही श्री तो अगम अगो चरमां ही तहां कालमी च
 नही लागे तहां को सो वै को जागे तहां पाप पुनि
 नही होई तहां अलख निरंजन कोई तहां सह
 जिरहे सो स्वांसी दो सब घटि अंतर जांसी सक
 ल निरंतरि वासा रहि दाह संगम पासा ४१ अ
 वध बोलि निरंजन बोलणी तहां ऐकै अतह दजा
 रणी टे तहां बसुध का बल तां ही तहां गानध
 मन ही छां ही तहां चंद सरन ही जाई तहां का
 ल का पा न ही भाई तहां रें गिं दिवस न ही छा
 या तहां बाव वरन न ही माया तहां उद्रे अस ता
 न ही होई तहां मरे न ही पाठ पुरां नी तहां अगम
 निगम न ही जां नी तहां बिद्या वाद न ही गान
 न ही तहां जोग रधां नी तहां निराकार निज
 जैसा तहां जां एणं जाइ न ते सा तहां सब गु
 ण रहिता गहिऐ तहां दाह अतह दक हिऐ
 ४२ बाबा को जैसा जन जोगी अंजन छां डेर
 है निरंजन सहजिस दारस भोगी टे छाया
 मापार है बिबर जित पंडु ब्रह्मंडु नियारे चंद
 सूर ये अगम अगो चर सो गहित त बिचारे
 पाप पुनि लिये न ही कब हूं वैय वैर हिता सोई
 धर निअ का सता हूं तै ऊपरि तहां जाइ रत हो
 ई जीवण मरण न बांछे कब हूं आदा गव
 न न फेरा पांणी पवन परसन ही लागे तिहि

निकरबसेरा॥ गुण अकारजहागमिताह॥
आपअकेजा॥ दाहजाइतहांजनजोगी॥ परम
उरिषसोंमेलाइ॥ ४३॥ जोगीजांतिंजांतिजनजि
बिनहीमनसामनहिंबिचारे॥ बिनरसतारसपीव
टेकबिनहीलोचननिरखनयनबिन॥ श्रवणरहि
नसुनिसोई॥ असैंआतसरहेऐकरसा॥ तोइसरना
वनहोई॥ बिनहीमारगचलेचरनबिन॥ निहच
लबेठाजाई॥ बिनहीकायामिलेपरसपर॥ जूज
लजलहिसमाई॥ बिनहीठहरआसहापूरै॥ बि
नकरबेनबजावै॥ बिनहीपांऊंतांचेतिसदि
न॥ बिनजिस्वागुणगवै॥ सबगुणरहितासकल
बियापी॥ बिनइंदीरसमोगी॥ दाहऐसागुरुह
मारे॥ आपनिरंजनजोगी॥ ४४॥ इहेपरमगुरजो
ग॥ अमीमहारसमोगा॥ टेकमनयवनांधिरसाध
॥ अखिनंतनांअअराध॥ तहांसबदअनाहदनां
द॥ यंचसषीप्रमोधि॥ अगमगणंतगुरबोधातहा
नांअनिरंजनसोधि॥ सतगुरमांहिलषावा॥ नि
राधरधरछाया॥ तहांजोतिसरूपीयावाइसह
जैसदापरकास॥ परगब्रह्मबिलास॥ तहांसे
वगदाहदास॥ ४५॥ मतेऐहअचंभाथांऐकी
डीयेहसतीबिडास्यो॥ तेतैबैठीवाऐ॥ टेजांरा
ऊतौतेबैठीहारे॥ अजांगतेतैवावादै॥ यांगु
लोउजाइवालागो॥ तेतैकरकोसाहै॥ नांतो
ऊतौतेमोटोपयो॥ गगनमंडलनहीमाऐ॥ मो
छेरोबिस्तारमणीजै॥ तेतौकीहैजाऐ॥ तेजांते

।निरखी जोवै । भोजी नै बली माहे । दाइ तेले
 । सरमन जायें । जे । जित्पाई । गोंगारे ॥ १ ॥
 । तंही मेरे रसना । तंही मेरे बेंता । तंही मेरे श्रवता
 । तंही मेरे नैता । टें । तंही मेरे आतम कबल मंज
 । तंही मेरे मन सातु रू परिवारी ॥ तंही मेरे म
 । तंही मेरे सासा । तंही मेरे सुरति प्राण निवासा
 । तंही मेरे नख सिध सकल स । रीरा । तंही मेरे जी
 । यरे ज्ये जलनीरा ॥ तुम्हिन मेरे अवर कोताही
 । तंही मेरे जीवति दाइ मांही ॥ १ ॥ तुम्हारे नां ईला
 । छिहरि जीवति मेरा । मेरे साधन सकल नां वनिज
 । तेरा । टें । न प्रनित पतीर श्रमे । केवल नां
 । वतुम्हारा ॥ ऐसब मेरे सेवा पूजा । ऐसा बरत हम
 । रा ॥ ऐसब मेरे वेद पुरा नां । सुचि संजम दै सोई
 । ग्यां न ध्यां न ऐई सब मेरे । और न ह जा कोई ॥ २ ॥
 । कांसक्रोध काया बसिकरण । ऐसब मेरे नां मां
 । मुकता गुप्ता प्रागटक दिरे । मेरे केवल रांसा ॥ ३ ॥
 । तारणतिरण नां वनिज तेरा । तुम्हें ही ऐक अ
 । धरा । दाइ अंगि ऐकर सजाया । नां वग दै तोया
 । रा ॥ ४ ॥ हरि केवल ऐक अ धारा । सोई तारण
 । तिरण हमारा । टें । नां मै पंडित पटिगु निजा
 । नौ । नां कुछ ग्यां न बिचारा । नां मै अगमी जोति
 । ग जानौ । नां मुक रूप सिंगारा ॥ १ ॥ नां तप मेरे
 । जी निग्रह । नां कुछ तीर शिफिरणां । दिवल
 । पूजा मेरे नां ही । ध्यां न क छुन ही धरणां ॥ २ ॥

नोगाभुगतिन ही कछु मेरे नां सै साधन जानें
और बह मूली मेरे नां ही नां सै दे सब धांतो
मैं तो और कछु नही जानो ॥ कहो और क्या की
जे ॥ दाहू ऐक गलित गो ब्यंद सो ॥ इहि बिधि पा
गयती जे ॥ ३ ॥ पीव धरि आवनै रे ॥ अहो मो
भाव नो ते ॥ टिक मोहन न कोरी हरी दिखो ग
अंधि पां तरा ॥ रां बों गा उरि धरी प्राति धरी ॥ मो
हन मेरी माझै रहो हो चरन धरै ॥ आनंद ब
धरै ॥ हरि के गुन गाई ॥ दाहू रे चरन गहि ऐ ॥ जाइ
नो तहा तो रहि ऐ ॥ तन मन सुख लहि ऐ ॥ बिन
तीक हि ऐ ॥ ४ ॥ हो माई मेरी रां म बैरागी तजि जि
नि जाइ ॥ टिक रां म बिनोद करत उर अंतरि ॥
मि लिहो बैराग नि धरै ॥ ॥ जीग नि के करि
फिरो गी बदे सा रां म नो म ल्यो लाइ ॥ दाहू को
स्वां मी हरे उदासी ॥ रहि हो नैन दोइ लाइ ॥ ५
रे मन गो ब्यंद ॥ दगाइ रे गाइ ॥ जनम अ बिरथा जा
इ रे जाइ ॥ टिक औसा जनम तवारं बारा ॥ ताथै
जपि ले रां म पियारा ॥ यऊ तन औसा बऊ धिन
पावे ॥ ताथै गो ब्यंद काहे न गावे ॥ बऊ रि न पावे
म निषादे ही ॥ ताथै करि ले रां म सने ही ॥ इव
कै दाहू की या निहाला ॥ गाइति रंजन दीन द
या ला ॥ ६ ॥ मन रे सो वत रे गि बिहाणी तें अ
जहं जात न जानी ॥ टिक बीतरि गि बऊ रि न
ही आवे ॥ जीव जागि जिनि सोवे ॥ चास्युं दि सा
चोर धरि लागे ॥ जागि देखि क्या दोवे ॥ सोरन

॥ यच्छितां वगलागा माहिं महलक चुनही ज
ब जाइ काल काया करलागा ॥ तब सो धै धरमा
ही ॥ जागी जत न करि राखो सोई ॥ तब तत नित
तन जाई ॥ चेत निपद रे चेत तना ही ॥ कहे दाइ
समा जाई ॥ ३० ॥ देखत ही दिन आइ गये ॥ पलटि
केस सब सेत मारे ॥ टेढ़ा जाई जुरा मी च अरु सर
गा ॥ आया काल अबै क्या करण ॥ श्रवणो सु
रति जाई नैन न सजे ॥ सुख बुद्धि नावी क द्या नव
जे ॥ मुख तै सब द बिकल नई खांणी ॥ जनमा
या सब रोगि बिहाणी ॥ प्राण पुरिष यच्छितां व
गलागा ॥ दाइ औ सरिका देन जागा ॥ ८ ॥ हरि
बित हां हो कहुं सच ना ही ॥ देखत जाइ बिषे फ
लषां ही ॥ टेढ़ा रसरस नां के मी न मन तीरा ॥ ज
न थै जाइ यौ दहे सरीरा ॥ गज के ग्यां त मगन
मदि माता ॥ अंकुस डोरि गहै फं न धगा ता ॥ स
र कट मछी माहिं मत लागा ॥ उष की रासि न मि
जागा ॥ दाइ देखु हरी मुख दाता ॥ ता कौ छाडि
कहां मन राता ॥ ९ ॥ सोई बिना संतोष न पावै
॥ ना वै धरत जिवन वन धावै ॥ टेढ़ा ना वै पटि गु
नि वेद उचारै ॥ आगम निगम सबै बिचारै ॥
ना वै न वषंडु सब फिरि आवै ॥ अजहं आगे का
देन जावै ॥ ना वै सबत जिरहै अकेला ॥ नाई ब
धन काहुं मेला ॥ दाइ देखै सोई सोई साच बि
ना संतोष न होई ॥ १० ॥ मन मायारा तो मूले ॥
मेरी मेरी करि करि बोरै ॥ कहां मुग धन रफले

टे० मायाकारनिमलगवावे॥ समकिदेखिम
 मेरा॥ अंतकालजबआइपहुता॥ कोईनही
 तबतेरा॥ मेरीमेरीकरिकरिजांनै॥ मतमेरीक
 रिरहिया॥ तबपहुमेरीकोमिनआवे॥ प्राणपु
 रिसतबगहिया॥ रावरंकसबराजाराणा॥
 सबहनुकोबौरावे॥ अथपतिनपतितिनह
 केसंगि॥ चलतीबेरनआवे॥ चेतिविचारिज
 निजीपअपनै॥ मायासंगितजार्ह॥ दाइहरिज
 जिसमंसिमयांना॥ रहोरामल्योलाई॥ ११॥ र
 हसीएकउपांवरणहारा॥ औरचलिसीसब
 संसारा॥ टे० चलसीगगनधरनिपुनिचलसी
 । चलसीपंचनसपांती॥ चलसीचंद्रसूरसीच
 लसी॥ चलसीसबैउपांणी॥ १॥ चलसीदिवसरे
 निमीचलसी॥ चलसीजुगजमवारा॥ चलसी
 कालव्यालमीचलसी॥ चलसीसबैपसारा
 ॥ चलसीसरातरकमीचलसी॥ चलसीनूच
 नहारा॥ चलसीसुषड्यमीचलसी॥ चलसी
 करमबिचारा॥ २॥ चलसीचंचलनिहचलर
 हसी॥ चलसीजेकुछकीन्हो॥ दाइदेयुरहे
 अबिनांसी॥ औरसबैघटघीनां॥ १२॥ इंक
 लिहसमरयोंकआपे॥ मरणामीतउनिमंगि
 पठाये॥ टे० जबथैयहुहममरणबिचारा॥ त
 वथैआगमपंथसंवांरा॥ मरणांदेखिहमग्नव
 नकीन्हो॥ मरणापठावासो
 गांमीठालागैमोहि॥ इहिमर

॥ १२ ॥ मरगोयहली मरैजेकोइ ॥ दाइ सो अजरा
 वरहोइ ॥ १३ ॥ रे मन मरगो कहा डराइ ॥ आगे
 पीछे मरगारे नारै ॥ टे ॥ जेकुछ आवे धिरनर
 हाइ ॥ देखत सबै चल्या जग जाइ ॥ पीर पै केव
 रकी पाप पांतां ॥ सेष मसाइ कसबै समांतां ॥
 ब्रह्मा बिष्णु महेश महाबलि ॥ मोटे मुनि जन
 गणै सबै चलि ॥ निह बल सदा सोइ मन लाइ
 ॥ दाइ हरिषरा मगुण गाइ ॥ १४ ॥ असात तत्र
 नय मसाइ ॥ मरै न जीवै काल न घाइ ॥ टे ॥ पाव
 कि जरेत मास्यो मरइ ॥ कोट्यो कटे नटास्यो ट
 रइ ॥ अद्विरद्विरेत लागे काइ ॥ सात घां मज
 लिह बिन जाइ ॥ माटी मिले न गगन बिलाइ ॥
 अघट ऐकर सरद्व्यो समाइ ॥ असात तत्र अत्र
 पमक हिये ॥ सो गहि दाइ काहे नर हिये ॥ १५
 मनरे सेवै निरंजन राइ ॥ ताको सेवै डरे चित
 लाइ ॥ टे ॥ आदि अंतिसोइ उपधि ॥ परले लेइ
 छिपाइ ॥ बिन धांतां जिनि गगन रह्या ॥ सो
 रद्व्या सब निमै समाइ ॥ पातां लमां है जे आ
 राधे ॥ बासिगारे गुन गाइ ॥ सहं स मुख जिन्पा
 दै ताके ॥ सो नी पारन घाइ ॥ सुरनर जाके पा
 रन पांचे ॥ कोटि मुनी जन धाइ ॥ दाइ रेत न ता
 को हैरे ॥ जां को सकल लोक आराही ॥ १६
 निरंजन जो गी जां निले चैला ॥ सकल बिया
 पीर है अकेला ॥ टे ॥ पपरन ऊली डुंडन अ
 धारी ॥ मही न माया लेइ ॥ द्विचारी ॥ सी गी मु

॥ बिभ्रति न कथा ॥ जटा जीय श्रीसयासय
॥ तीरधर तनवन घेडि बासा ॥ मांगिन घाई
नही जंग आसा ॥ अमरगुरु अविनासी जोषी
॥ दाइ चेलामहारससोगी ॥ १७ ॥ जोगीयावे
रागीरे बाबा ॥ रहे अकेला उनमति नागा ॥ दि
आतम जोगी धारजक था ॥ तिहचल आस
ता आगम पेथा ॥ १८ ॥ सहजै मुदा अलख अक्षरी
अनहद सीगी रहति हमारी ॥ कायावन घ
दुपाचो चेल ॥ पांन गुफा में रहे अकेला ॥ १९ ॥
दाइ दरसन कारणि जागो ॥ निरंजन गीतिष्ठा
मागो ॥ २० ॥ सुषड्य संसाइ रिकीया ॥ तब हम
केवल रागलीया ॥ टे ॥ सुषड्य दोऊ मरम बि
चारा ॥ जनसौ बंधा है जगसाया ॥ मेरी मेरा सुष
केताई ॥ जाइ जनम रचेते नाही ॥ २१ ॥ सुषकेताई
फूला बोले ॥ बोधे बंधन कब हनयो ले ॥ २२ ॥
॥ सुषड्य संनिज जाई ॥ प्रेम प्रीति पीवसौ ल्यो
लाई ॥ २३ ॥ बाबा कहै हजा करं कहिरो ॥ ता
थे ॥ हिंसमें डूब सहिरो ॥ टे ॥ यहु मति सो सीय
सुवा जैसी ॥ काहे समजत नाही ॥ अयणों अं
ग आपत ही जांणो ॥ देखि दरपण मांही ॥ इहि
मति सीच मरण केताई ॥ कप सिंघत हांआ
या ॥ हृविस्वामनि मरमन जांणो ॥ देखि आ
पणी छाया ॥ मद के माते समजत नाही ॥
मेगल की मति आंई ॥ आप ही आप डूब दीत
देखि आपणी जांई ॥
ही ॥ निरमल है मरमने

दीक्षाकोई एक अनेकनां मतुमारे मेष
और न होई टे अलषइलाही एकत् तं
रामरहीम तंहीमालिक मोहनां के सोनां
सकरीम साइसिरजतहारत तं पावनत
पाक तं कांशमकरतारत तं हरिहंजरिआप
रमिताराजिक एकत् तं सारागसुबहान क
दिरकरता एकत् तं साहिबसुलितान अ
बिगतिअलह एकत् गनीगुसाई एक अज
बअनूपमआपहे दाइनां वअनेक २१
जीवतभारेमुऐ जिलारे बोलतारंगारगबुल
ई टे जागततिसमरिसेई सुलाऐ सोवतर
लीसेई जगाए सफतनैतौलोइतलीऐ अ
धबिचारेतिनमुषदीऐ चलतेभारातेबिचला
ऐ अयोगबिचारेमंई चलाऐ असाअहुतह
मकछुपावा दाइसतगुरकहिसमजावा २२
करकरियइ जगरचौगुसाई तेरेकौनबि
नोदबन्योमतमांही टे कैतुम्फआपापर
कैयइतुम्फकौसेवगजानै कैयइरचिले
मतकेमानै कैयइतुम्फकौसेवगमावै कै
रचिलेबेलदिखावै कैयइतुम्फकौबेल
पारा कैयइमावैकीरुप सारा यइस
दाइअकथकहाणी कहिसमजावोसार
प्राणी २३ हरेहरेसकलभुवनभरे जु
जुगिसबकरे जुगिजुगिसबधरे अकल

सकल जरे हरे हरे टेह सकल मुवन छाजे स
कल मुवन राजे सकल कहे धरती अंबर गहे
चंद सूर सुबिल हेल पवन प्रगट बहे ॥ घट घ
ट आय देवे ॥ घट घट आय लेवे ॥ मंडित माया
जहां तहां अपराया ॥ जहां तहां आप छाया ॥
अगम अगम पाया ॥ रस मां है रस राता ॥ रस मां है
रस माता ॥ अमृत पीया ॥ नूर मां है नूर लीया ॥
तेज मां है तेज कीया ॥ दाह दरस दीया ॥ ॥ पी
वपी व आदि अंति पीव ॥ परसि परसि अंग संग ॥
पीव तहां जीव ॥ टे ॥ मन पवन भवन गवन ॥ अ
नक बल मां हिं ॥ निधि निवास बिधि बिलास ॥
राति दिवस नां हिं ॥ सास बास आस पासा ॥ आत
म अंगि लंगा ॥ अंत वैन निरखि नैन ॥ गाइ गाइ
रिजाइ ॥ ॥ आदितेज अंतितेज ॥ सहजिस सहजि
आइ ॥ आदिनूर अंतिनूर ॥ दाह बलि बलि जाइ
॥ ॥ ॥ ॥ नूरनूर अबलि अधिरनूर ॥ दाह मकोइ
मकोइ मदाइ म ॥ हाजिर है मर पूर ॥ टे ॥ अस मांत
नूर जिमी नूर ॥ पाक परवर दिगा ॥ आवनूर बाट
नूर ॥ खूब खूबो पार ॥ जाहिर बात निहाजिर ना
जिर ॥ दानां तंदीवां न ॥ अजब अजाइ बनूर दीद
मा ॥ दाह है है रां न ॥ ॥ ॥ मे ॥ अमली मतिवाला
माता ॥ प्रेम मगत मेरा मन राता ॥ टे ॥ अमी महा
रसर सरिस रिपीवे ॥ मन मतिवाला जोगी जीवे
॥ रहै निरंतर गगन मंजारी ॥ प्रेम पिपा ला सह
जिषु मारी ॥

मीते रांमरसांशगपीवत्तच्छाके ॥ २० ॥ कासौक
होहोअमहरिवाता गगननधरणिदिवसनहीरा
ताटेक संगतसांधीगुरतचेला ॥ आसनपासयों
रहेअकेला ॥ वेदननेदनकरतबिचारा ॥ अब
रणवरणसबनिधेन्यारा ॥ प्राणतप्यंडरूपतह
रेखा ॥ मोततमारनेतबितदेषा ॥ जोगतमोगमोह
नहीमाया ॥ दाहदेवुकालनहीकाया ॥ २१ ॥ मेरा
गुरुअसा ग्यंतबतावे ॥ कालनलागैसंसाभोगै
॥ ज्यंहेत्यंसमज्जावे ॥ टेक अमरगुरुकेआसणि
रहिए ॥ परमजोतितहांलहिए ॥ परमतजसोदि
ठकरिगहिए ॥ गहिएलहिएरहिए ॥ मतपवना
गहिएआतमषेला ॥ सहजसुनिधरमेला ॥ अग
मअगोचरआपअकेला ॥ अकेलामेलाषेला
धरतीअंबरचंदनसरा ॥ सकलनिरंतरपूरा ॥ शी
बदअनाहदबाजेतरा ॥ तरापूरासरा ॥ अवि
चलअमरअभेयददाता ॥ तहांनिरंजतराया
ग्यंतगुरुलेदाहमाता ॥ मातारा ॥ तादाता ॥ २२ ॥
मेरागुरुआपअकेलाषेले ॥ आपेदेवेआपेले
वे आपेदेकरमेले ॥ टेक आपेआपउपावेमाया
पंचततकरिकाया ॥ जीवजतमलेजामेआया
आयाकायामाया ॥ धरतीअंबरमहलउपाया
सबजागधेलाया ॥ आपेअलषनिरंजतराया
रायालायाउपाया ॥ चंदसूरहोहदीपककीन्
रातिदिवसकरिलीन् ॥ राजिकरितकसबति
कंदीन् ॥ दीन् ॥ जीन् ॥ कीन् ॥ परमगुरुस
गंगायमारा ॥ सबसुषद्वेसारा ॥ दाहबलेज

नतअपारा॥ अपारासाराहमारा॥ ३०॥ यंकतम
 योमतकद्योंनजाई॥ सहजसमाधिरहैल्योनाई
 टे॥ जेकुछकहिऐसोचिबिचारा॥ ग्यांतअगोच
 रअगमअपारा॥ सायरबंदकैसैंकरितोले॥ आ
 पअबोलकहाकहिलोले॥ अनलयंधियरेयर
 हरि॥ ओसैरांमरद्योंनरपर॥ स्वमनमेराअ
 सैरेभाई॥ दाहकहिवाकहणनजाई॥ ३१॥ अ
 बिगतकीगतिकोनलहे॥ सबअपणाननसा
 नकहे॥ टे॥ केतेब्रह्मावेदबिचारे॥ केतेपंडि
 तपाठपठे॥ केतेअननैआतमषोजे॥ केतेसुर
 नरनांदरहे॥ केतेईसुरआसणिबेटे॥ केतेजो
 तीध्यांतधरे॥ केतेमुनियरमनकंसारें॥ केते
 ग्यांतीग्यांतकरें॥ केतेपीरकेतेपैकंबरा॥ के
 तेपठेंकुरांतां॥ केतेकाजीकेतेमुलां॥ केतेसे
 षसयांतां॥ केतेपारिषअतनयांदे॥ बारबार
 कछुतांही॥ दाहकीमतिकोईनजांतों॥ केतेआ
 वेंजाही॥ ३२॥ ऐहोबजिरहीपीदा॥ जैसाहैतेसा
 कोतकहे॥ अगमअगाधअपारअगोचर॥ सु
 धिवुधिकोनलहेरे॥ टेकबारबारकोईअंतनया
 वे॥ आदिअंदिसधितांदीरे॥ घरेसयांनैमऐदि
 वानें॥ कैसाकहाराहेरे॥ ब्रह्मांविष्णुमहेश्वर
 ब्रह्म॥ केताकोईबतावैरे॥ सेषमसाहकपीरपै
 कंबरा॥ हैकोआहगहैरे॥ अंबरधरतीसरसशि
 बकै॥ बावबरणसबसोधरे॥
 रांतां॥ कोहैकरमदहेरे॥ ३३॥ ३३

विहारमें सतरहरिजलनीर प्राणी आप
लिए निरमल सदा हो सरीर टे मुकता हल
मनमातियां चुगे हंस सुजां ग मधिरंतर
लिए मधर विमल रस पांन मवर कवल रस
वासना रातों रां मयी वंत अर सपर स आतं
करे तहां मन सदा हो जी वंत मीन मगत म
हैर है मुदित सरोवर माहि सुष सागर की ला
करे पूरणा परमिति नाहि निरनैत हां नै को न
हो बिल से बार बार दाह दरसन की जिये सन
मुष सिरजनहार सुष सागर में जू लियो
कुसम लफड़े हो अपार निरमल प्राणी हो द्वौ
मिलि बौ सिरजनहार टे तिहि संज मियां व
न सदा पंकन लामे प्राण कवल बिगा से ति
तणी उम जै ब्रह्म गियांन अगम निगम दि
होगा मिकरे तंत हितंत मिलांन आस गिणु
कै आइ बौ मुकै महलिस मांन प्राणी यरि
जाकरे पूरे प्रेम बिलास सह जै सुंदर से बिए
लागी लैक बिलास रै गि दिव सदी से नही
सह जै पुंज प्रकास दाह दरसन दे बिए इहि
रमिता हो दास २ अविनासी संगी आत
मार में रै गि दि सरांम एक निरंतर ते स जै
हरि हरि प्राणी नांम टे सदा अघटित पुरिब
मौ मन जां गी ले सकल निरंतरि पूरि सब
जीन मरा तो ते निराक्षर निज बैसे गौ तिहि

तत्ते आसना पूरा गुरमिष आनंद ऊपजे सनत
बसदा हजरि ॥ निहचल तेवा लेन ही ॥ प्राणी
तेष रिमांणा ॥ साथी साथे ते रहै ॥ जांयों जांया
सुजांया ॥ ति निरगुण आगुण धरी ॥ मोहैं कौति
गहार ॥ देह अछि त अल गौर है ॥ दाह से बिअ
पार ॥ ४३ ॥ पार ब्रह्म सजि प्राणीयां ॥ अविगति
एक अपार ॥ अदिना सी गुर से दिऐ ॥ सहजै प्राण
अधार ॥ टेक ते पुरंणी तेहनौ ॥ अविचल सदा
दंत ॥ आदि पुरिष ते आप्रणौ ॥ पूरण परम अनंत
॥ अविगत आसना की जिऐ ॥ आयै आय निधि न
निराले बस जितेहनौ ॥ आनंद आत्म रांभा ॥
निरगुण निहचल धिर रहै ॥ निराकार निज सोइ
ते सति प्राणी से दिऐ ॥ लेस साभिरत होइ ॥ ३ ॥ अम
र आपरमित रहै ॥ घटि घटि सिरजन द्वारा ॥ गुण
अतीत सजि प्राणीयां ॥ दाह ऐह बिचार ॥ ४४ ॥ क्य
ना जै से वगंतेरा ॥ औसा सिरसाहि बसेरा ॥ टेक जा
के धरती गगन अकासा ॥ जाके चंद सूरक बिना
सा ॥ जाके ते जय बत जन साजा ॥ जाके पंचतत
के बाजा ॥ जाके अतार हमार बत साजा ॥ गिर्य
रबत दीन दयाला ॥ जाके सायर अनंत ते रीया
॥ जाके चौरासी लख संग ॥ जाके असे लोक
अनंता रचि राखे बिबि बडु संता ॥ जाके असे
बेल पसारा ॥ सब देखै कौति गहारा ॥ ३ ॥ जाके का
लमी चदुरनांही ॥

कबहुनइससुरबदा॥सबमुतिजनलागेअ
 ॥जाकेसाधसिधसबसांही॥परिपूरणपरमि
 नांही॥सोईसांनैघडेसवारै॥जुगकेतेकब
 हुनहोरै॥असांहेसाहिवपूरा॥सबजीवति
 तमसरा॥सोसबहनिकासुधिजांयो॥जो
 सातैसीबांरो॥सरबगीरांमसयांन॥हरिकरै
 सुहोइनिदांतां॥जैहरिजनसेवगताजै॥तौ
 असासाहिवलाजै॥इवमरणसांदिहरिअप
 ॥तबदाइबांरातलागे॥५॥हरिमजतांकि
 मनाजिये॥नागेंतलनांही॥नागांनलक
 पाइये॥पछितावेसांही॥टेकसरोसोसहजे
 निडेसारउरिजेले॥रणरोकपांभाजैनही॥ते
 १॥माणनमेले॥सतीसतसावोगहे॥सरयोनड
 राई॥प्राणतजैजगदेयतां॥पीवडोउरिलाई
 २॥प्राणायतंगाइमतजै॥वोअगतमोडे॥जो
 बनजारैजोतिसो॥नैनांमलजोडे॥सेवगसो
 स्वांमीभजै॥तनमनतजिआसा॥दाइदर
 नतेलहे॥सुषसंगमयासा॥६॥सुणितमना
 रमरिषमंठबिचार॥टेकअचेलहरिविद्या
 वणी॥दमेदेहअपार॥करिवोहेतिमकीजि
 रे॥सुमरिसोआधर॥चरणबिहूगोचोले
 वोरै॥संभालीरेसार॥दाइतेहजलीजिएरे॥
 सावोसिजनहार॥७॥रेमनसाथीमाफा॥त
 समजायोकेबारा॥रातौरंगिकसंभकेते
 बीसासोआधरोरे॥टेकसुपितांसुषकेका

रने फिरिपीछे डबहोईरे॥ दीपक दृष्टियतंगज
 ॥ ये नरमिजरे जितिकोईरे ॥ जिह्यास्वारधिआ
 पणों॥ मीनमरेन जिनीरोरे॥ मांहे जालनजाति
 यों॥ ताथें उपनों डबसरीरोरे॥ स्वादेंही संकुटि
 पड्यो॥ देवतत् नरअंधोरे॥ मरकटमठीछाडि
 दे॥ होइरहोनि बंधोरे॥ ३॥ मांनिमिषावणिमां
 हरी॥ हरितजिम जनहारीरे॥ सुषसागरसोईसे
 बिये॥ जनदाइरांमसंजारीरे॥ ४॥ ८॥ इतिरा
 ॥ ६॥ सपूरण॥ अथरागरजरी॥ सरणिंतु
 मारीआइपरे॥ जहातहांहमसदफिरिआये
 राधिराधिहमडुषितधरे॥ टेककसिकरिकायात
 पब्रतकरिकरि॥ नरमतनरमतहमभूलिपरे
 ॥ कहूंसीतलकहूंतयलिदहेतना॥ कहूंहम
 करवतसीसधरे॥ कहूंवनतीरथफिरिफिरि
 पाके॥ कहूंगिरपरबतिजाइचहूं॥ कहूंमिष
 रचटिपरेधरनिपरि॥ कहूंहतिआपाशंनहरे
 ॥ १॥ अंधमरेहमतिकटिनसूजे॥ ताथेंतुमरुतजि
 जाइजरे॥ हाहाहरिअबदीनलीनकरिदाइ
 बरुअपराधनरे॥ १॥ बोरीतंबारबारबोरां
 नी॥ सघासुहागनपावेअसै॥ कैसैनरमिहुलां
 नी॥ टेकचरनोंचरीचितनहाराख्यो॥ यतिब्रत
 नाहिंनजात्यो॥ सुंदरिसेजसंगनहीजोनो॥ या
 वसौमननहीमांत्यो॥ १॥
 यो॥ सीसनाइनहीवाढी॥
 दीकबहुं॥

संवासुरिआतिउरअंतरि परमपुजितहीजानी
पतिव्रतआगेजिनिजिनिपांल्यो सुंदरिनि
नसबछाजे दाइपीवेबिनओरतजाने ताहि
सुहागबिराजे २॥ मनसरियातैयोहीजनम
गमावायो साईकेरीसेवनकीन्ही इहिकलि
काहेकंआयो टे जिनिवातनितैरोछूटिक
नांही सोमनितैरेनायो कोमीहोइबिषीयासं
गिलागो रोमरोमलपटापो कछूइकचेतिबि
चारीदेयो कहापापजीयलायो दाइदासम
जनकरिलीजे सुपिनैजगडहकापो ॥१॥ ३॥
इतिरागगरजरीसपूरला ॥ अथगतावडलेर ॥
वाल्हाहोताक्रीतमाफोनाथ ॥ तुम्हसोपहली
प्रीतडी ॥ पुरिखलौसाथ टे वाल्हासैतमाफो
यो लघियोरे राधिसित्तनैरिहामंजारि हौं प्राप्ते
यो वैआपणो ॥ त्रमुबरादातादेवमुरारि ॥ वा
ल्हासममाफोमनमांहीराधिसि ॥ आतमएक
निरंजनदेव ॥ चितमाहेचितसदा निरंतर ऐलो
परंतुम्हारीसेव ॥ बालासावसगतिहरिमजन
तुम्हारे ॥ प्रेमपरिसिकबलविगास ॥ अन्निअं
तरिआनंदअबिनासा ॥ दाइनीहिचैपूरबिआ
स ॥ १॥ बारीबारी कहरैमहिला रोमनासा
काइबिसास्योरे जनमअमोलिकप्राप्तीयो ॥
ऐहोरतनकाइहास्योरे ॥ टे बिषीयाबादो
नैतिहाधायो ॥ कीधौतहीमाफोवासरै मा
याधनजोईनैमलौ ॥ परथइऐलौहासरै ॥ १॥
रमवासदेहदबतौप्राणो ॥ आश्रमतेहसंभा

कुरादाहरेजनरांसनणीजो॥ नहीतो जथाब
 धहास्त्रे॥ २॥ २॥ इतिकेलेरासपूरणा॥ लाता
 नजिया॥ नररदाभरपूराअमीरसपीजिएरे
 रसमाहेरसहो॥ लाहाजीजिएरे॥ टेकपरम
 टतेजअतंत॥ पारनहीपाइएरे॥ किलिमिलि
 किलिमिलिहो॥ तहांमननाइएरे॥ सहजैसदा
 प्रकासजोतिजलपूरिया॥ तहांरहैनिजदाससे
 वगसरिया॥ सुषसागरवारनपार॥ हमारावास
 है॥ हंसरहैतामाहि॥ दाहदासहै॥ ३॥ १॥ इति
 परजियासपूरण॥ अथरागतांगामली॥ माफो
 बाल्सारताकैसरणिंरहेसा॥ बीततडीबाल्सा
 नैकहता॥ अनतसुखलहेसा॥ टेकस्वांमीतगो
 होंसंगनमेले॥ बीततडीकहेसा॥ होंअबला
 तंबलिवंतराजा॥ तांफाबनांबहेसा॥ संगिर
 होंतांसबसुषपांमों॥ अंतरथोंदहेसा॥ दाह
 ऊपरिदयाकरीनै॥ आवेऐगीवेस॥ १॥ चर
 णदिषाडि॥ तोपरमांणा॥ स्वांमीमाफोनै॥ निर
 थों॥ लागोऐहजमांणा॥ टेकजोकंतुफनैआसा
 मुफनै॥ लागोऐहजध्यांता॥ बाल्सेमाफोमेले
 रेसहिऐ॥ आवेकेवलणंता॥ जेणीपरहोंदेवो
 तुफनै॥ मुफनैआलोजांणा॥ पीवतणीहोंपरि
 नजांणो॥ दाहरेअजांणा॥ २॥ तेहरिमे
 फौनाथ॥ ज.

साथटेद

कारातिनाथः

तसीं मनें ताति ॥ एक वर धरि आवे वाळा न
दिमेल्लें कही थ ॥ एक बीन ती सांति निरुमी
दाह ता को दास ॥ ते किम प्राप्ति ऐरे ॥ इत
जे आक्षर ॥ ते बिन तारण को नही ॥ किम कृत
रि ऐषार ॥ टेक केही प्रिकी जे आपणों रे ॥ तत
व ते छे सार ॥ मन मनोरथ पूरे माफा ॥ तन चौता
प्रतिवारि ॥ संभास्ये आवे रे वाळा ॥ वेलां ऐ आ
वार ॥ बिरह नी बिलाप करे ॥ तिम दाह मनि बिचो
र ॥ २ ॥ ॥ अथ सगलारं ॥ हो श्री मायां नक्ष्यांत
गुरबितां कं पावे ॥ वार पार पार वार ॥ इत ति रि आ
वे हो ॥ टेक भवत गवना वन भवत ॥ मन ही मन
जावे ॥ रवन छवन छवन रवन ॥ सत गुर समजा
वे हो ॥ धीर नीर नीर धीर ॥ प्रेम सग विजावे ॥ पाण
क वल बिया सि बिया सि ॥ गोव्यंद गुना वे हो ॥
परम न्तर परम तेज ॥ दाह दिष जावे हो ॥ १ ॥ तो
निबंदे जन सेव गतेरा ॥ श्री सै दया करि साहिब
मेरा ॥ टेक ज्ये हम तो रे तू जों रे ॥ हम तो रे पैत न
ही तो रे ॥ २ ॥ हम बिसरे पैत न बिसारे ॥ हम बिग
रे पैत न बिगारे ॥ २ ॥ हम भूलें तं आनि मिलावे ॥
म बिछुरें तं अंग लगवे ॥ ३ ॥ तुम्हा वे सो हम पे
नां हो ॥ दाह दरसन देऊ गुसाईं ॥ २ ॥ माया स
सार की सब ऊठी ॥ मात पिता सब ऊठे नाई ॥ ति
न ही देषतां लूटी ॥ टेक जब लग जीव काया मे
थारे ॥ धिग बेठी धिगा ऊठी ॥ हंस जुघा सो वे
लिग्यारे ॥ तब थें संगति छूटी ॥ एदिन पूगे आ

वृद्धांणी॥ तब निच्यंत कैसरी॥ दाहदासकंद
श्रीसीकाया॥ जैसी गगरीया फटी॥ २॥ ३॥ श्रीसैंग
हमें कंठ न रहे॥ मन साबा चारंग मक हो॥ टेक स
पति बिपति नही मैं मेरा॥ हरिष सो कदो ऊनां ही
॥ राग दोष रहित सुष डुष थो॥ बैठा हरि पदमा
ही॥ १॥ तन धन माया मोहन बंधे॥ बिरी मीतन को
ई॥ आया परस मिरहे निरंतरा॥ निज जन से वग
सोई॥ सरवर कवल रहे जल जैसै॥ दक्षि मधि घट
करि लीला॥ जैसै बदन में रहे बटाऊ॥ काहु हित
नही कीला॥ भाव सगति रहै रसि माता॥ प्रेम स
गन गुन गावै॥ जीवत मुक्ति होइ जन दाह॥ अमर
अभै पद पावै॥ ४॥ चलि चलि रे मन तहां जाइ रे
॥ चरन बिन चलि बौ भवन सुनि बौ॥ बिन कर
बैन बजाइ रे॥ टेक तन नांही तहां मन नांही
तहां॥ प्रांत नही तहां आइ रे॥ सब दन ही जहां ज
वन ही तहां॥ बिन रसना सुष गाइ रे॥ १॥ यवन पाव
कन ही॥ धरति अंबर नही॥ ३॥ नैन ही तहां ला
इ रे॥ चंदन ही जहां स्मरन ही तहां॥ परम जोति
सुष पाइ रे॥ तेज पुंज सो सुष का सागरा॥ किलि प
लिन रन हाइ रे॥ तहां चलि दाह अगम अगोच
रा॥ तामें सहज समाइ रे॥ ३॥ ५॥ श्री राग दोह
॥ १॥ सितत सहजै सुष मन कदवणा॥ सावय कडि
मन जुगि जुगिर हणा॥ टेक प्रेम प्रीति करि नीकां
थै॥ बारं बार सहज नर भावै॥ १॥ सुष
संभारै॥ ति

रसोदनीका जांयों निमघन विसरै ब्रह्मबषा
 गौ सोई सुजां रासुधरसपीवै दाइ द्वेषुजुगे
 जुगिजीवै ॥ १ ॥ नांवरें नांवरें सकल भिरोमणि
 नांउरें मैबलिहारी जांऊरें ॥ टेक हतरतारैपा
 रिउतारें नरकिनिदोरें नांवरें ॥ तारणहारण
 जलपारा निर्मल सारा नांवरें ॥ नूरदिषाद्वैते
 जमिलावै ॥ जोतिजगावै नांवरें ॥ सब सुषदाता
 अमतराता ॥ दाइ माता नांवरें ॥ राइ रेराइ
 रे ॥ सकल सुवन प्रतिराइ रे ॥ अम तदेऊ अघाइ
 रेराइ ॥ टेक परगटराता परगटमाता ॥ परगट
 नूरदिषाइ रेराइ ॥ अस्थिरपांतां असधिरध
 नां ॥ असधिरतै जमिलाइ रेराइ ॥ अबिचलमे
 लाअबिचलषेला ॥ अबिगतिजोतिजगाइ रेरा
 इ ॥ निहचलवैनां निहचलनैनां ॥ दाइ बलि
 बलिजाइ रेराइ ॥ ३ ॥ हरिसमातेमगनमणे सुम
 रिसुसरिमणेमतिवाले ॥ जांमणामरणसबम
 लाये ॥ टेक निरमलमगतिप्रेमरसपीवै ॥ आन
 नइजांमावधरे ॥ सहजैसदारांमरेगिराते ॥ मुक
 तिबेकुंठैकहाकरै ॥ गाइगाइरसलीलमणैहै
 ॥ कछनमागैसतजनां ॥ औरअनेकदेऊद
 तआगै ॥ आननमावैरांमबिनां ॥ इकटगध्या
 नरहै ल्योलागै ॥ खाकिपरैहरिसपीवै ॥ दाइ
 मगनरहैरसिमाते ॥ अमैहरिकेजतजीवै ॥
 ४ ॥ तेमैकीधलारांमजेतैवास्थते ॥ मारामै
 लिअ मारगाअणसरि ॥ अकरमकरमहरे ॥ टे

॥ साधुनो संग छाड़ी नैं ॥ असंगति अणसरियो ॥
 ॥ सुकृतमम कि अविद्या साध ॥ विषया विसतर
 रियो ॥ ओन कदो आन सें मलियो ॥ नैं रों आन
 दी ठो ॥ अम तक डुवो विषम लागो ॥ घाता अ
 तिम ठो ॥ रां मरि दाघो विसारी नैं ॥ प्राया मन दी
 धो ॥ पांचे प्रांणी गुर मुषि बर ज्यो ॥ ते दाइ की धो ॥
 ॥ ५ ॥ कहो क्यं जन जी दे सां र्यो ॥ दिचरे न क बल
 आधार हो ॥ हबत हे भौ सागरा ॥ कारी करौ क
 रतार हो ॥ टेक मीन मरे बिन प्रांणी यो ॥ तुम्ह बि
 न रोह बिचार हो ॥ जल बिन कै सैं जीव ही ॥ इब
 तो किती इक बार हो ॥ ज्यं परै प्रतंग जो तिम
 देषि देषि निज सार हो ॥ प्यासा बंदन पाव द्रो ॥ त
 बब निबनिके रे पुकार हो ॥ निस दिन पोर पुका
 रही ॥ तन की ताय निवारि हो ॥ दाइ बिपति सु
 नां वही ॥ करि लोचन सन मुख चारि हो ॥ ६ ॥
 तं साचा साहिब मेरा ॥ करम करीम कि पाल निहा
 रो ॥ मैं जन बंदा तेरा ॥ टेक तुम्ह दीवां त सब हनि
 की जां तो ॥ दीनां नां पदया ला ॥ दिवाइ दीदार
 भौ ज बंदे को ॥ कां इम करौ निहाला ॥ मालि
 क से बे मुलिक के सां र्यो संमथ सिर जन दारा
 ॥ घेर घुछा इब लक मै बेल ता दे दीदार तुम्हा
 रा ॥ मैं सि कस ता दरिगह तेरी ॥ हरि हजरित
 कहि रे
 नहि रे ॥ ७ ॥ कुछ चे
 मैं बे ना फूलिक रि तें दे द

जानै तन धन मेरा ॥ मरिष देषि भुलाया ॥ आजक
 लिखलि जावे देही ॥ औसी सुंदर काया ॥ रामना
 मनि जली जिये ॥ मै कहि समजाया ॥ दूह हरिकी
 सेवा कीजे ॥ सुंदर साज मिलया ॥ २॥ ८॥ नेटिरे मा
 टी मै मि लना ॥ मोडि मोडि देही काहे कंच लना
 टे ॥ काहे कंच अपना मन भुलावे ॥ यऊ तन अपना
 नी कांधरना ॥ कौटि बरसत काहे न जीवे ॥ बिच
 रि देषि आगे हे मरना ॥ काहे न अपणी बाट संवा
 रे ॥ संज मरहयां सुमिर्ण करणा ॥ गहिला द्वा श्वा
 रवन काजे ॥ यऊ संसार पंच दिन मरणा ॥ २॥ ९॥ जा
 इरे तन जाइरे ॥ जनम सुफल करि लेऊ राम मि
 ॥ सुमरि सुमरि गुन गाइरे ॥ टेक नर नाराइ न सक
 ल सिरोमनि ॥ जनम असमोलि कआहिरे ॥ सोतन
 जाइ जगत नही जानै ॥ सक हित वाहर लाइरे
 ॥ १॥ गुरा काल दिन जाइ गरासे ॥ तासौ कुछ न ब
 साइरे ॥ छिन छिन जत जाइ सुगध नरा ॥ अंतिका
 ल दिन आइरे ॥ प्रेम भगति साधकी संगति ॥ नाव
 निरंतर गाइरे ॥ जेमि रमागतौ सो ज सुफल का
 रि ॥ द्वाइ बिलंब न लाइरे ॥ १०॥ काहे रे बकि म
 लगवावे ॥ राम के नाइ न ले सचु पावे ॥ टे ॥ बाद
 बिबादन कीजे लोइ ॥ बाद बिबादन हरि सही
 ॥ मै तै मेरी मां नै नाही ॥ मै तै मेठि मिलै हरि मां
 ही ॥ हारि जीति सौ हरि स जाइ ॥ समहि देषि
 मेरे मन भाई ॥ मूलन छाडी द्वाइ खोरे ॥ जिनि
 मूलने तंबकि वेओरे ॥ ११॥ ऊ सियारहा किम

न्यावहे। साईकेदीवानाकुलिकाहसेबकेगा
 समंकिमुसलमान। टेकनीयतनेकीसालि
 हा। रासतांदेमान। द्रवजासअदरिआपरो
 ॥ रषणांसुबिहान। १३ कमहाजिरहोऊवा
 वा। मुसलम। मिहरवान। अकलिसेतीआ
 पमा। सोधिलेऊसुजाण। हकसोहजरिऊ
 णा। द्रवणांकरिणां। दोसतदांतांदा। त
 का। मनणांफुरमान। गुसाहेवांती। इरिकरि
 ॥ ७ डिदेअभिमान। १३ द रोगांतांदिमुमिय
 ॥ दाइलेऊपिछांणि। १२ निरपघरदगां
 ॥ रांमरांमकदयां। कांमकोधसेदेदनददगां
 ॥ टेक। जेणेमारगिसंसारआह्ला। तेणेपंग
 ॥ आपबहाह्ला। जेजेकरतं। जेजेकरतं
 ला। सोकरणीसंतह। धरिदा। जेणेपंग
 कराता। तेणेपंगेसाधनजान्द। दाइरंग
 मअसैकहिण। रांमरमतगतदिदिकरिदि
 ऐ। १३ हसपायहसपायनेदर। तेपदत
 ॥ असीमतिआइ। टेक। सीतलकपडितेदर
 जानें। कहेसुद्धारातिकपदतलने। जेजेकर
 यसौपरधानांदी। नसुद्धर। जेजेकर
 ही। साईसुपितेकवकतकहे। कवकहे
 सैमहलिबुनव। १३ वक। जेजेकर
 जआवे। यटनका। गपदक। जेजेकर
 हागनिअमुकाई। मयजे
 ॥ १४ ॥ अमेना। न। न। न।

अंतर नही की जे ॥ टे ॥ जे सै आतम आपने
 जीव जंत सै सै करि देखे ॥ एक राम सै सै करि
 जानै ॥ आपा पर अंतर नही आने ॥ सब घटि
 आतम एक छिचारे ॥ राम सने ही प्राण हमारे ॥
 दाइ साची राम सगाई ॥ ऐसा नाव हमारे म
 ई ॥ १४ ॥ माधई यो माधई यो मीठो रोमाई ॥
 माहवो माहवो भेटियो आइ ॥ टे ॥ कान्हू
 यो कान्हू यो करतां जाइ ॥ केसवो केसवो के
 सवो धाई ॥ नधरो नधरो नधरो भाई ॥ रामई
 यो रामई यो रदो समाई ॥ २ ॥ नरहरिन हेरि
 नरहरि राई ॥ गोब्य दो गोब्य दो दाइ गाई ॥ ३
 ॥ १६ ॥ एक हिए कै मया अनंद ॥ एक हिए कै ना
 क रोदंद ॥ टे ॥ एक हिए कै समान ॥ एक हिए कै
 पद निरखान ॥ एक हिए कै त्रिभुवन सार ॥
 कहिए कै अगम अपार ॥ एक हिए कै निरंभ
 होइ ॥ एक हिए कै कालन कोइ ॥ एक हिए कै
 घटि परकास ॥ एक हिए कै निरंजन बास
 ॥ एक हिए कै आपहि आप ॥ एक हिए कै माई
 न बाप ॥ एक हिए कै सहज सरूप ॥ एक हि
 एकै भये अनूप ॥ एक हिए कै अनतन जाइ
 एक हिए कै रक्षा समाई ॥ ७ ॥ एक हिए कै भये
 लेलीन ॥ एक हिए कै दाइ दीन ॥ १७ ॥ आदि
 हे आदि अनादि मेरा ॥ संसार सागर भगति
 मेरा ॥ आदि हे अति हे अति हे आदि हे बिहु
 तेरा ॥ टे ॥ काल हे काल हे काल हे काल हे

राधिले राधिले प्राण घेरा ॥ जीवका जनमका
 जनमका जीवका ॥ आपही आपले ना निजेरा
 ॥ नरमका करमका करमका सरमका ॥ आ
 इबाजा इबामे टिफेरा ॥ तारिले पारिले पारिले
 तारिले ॥ जीवसौ सीवहे निकटिनेरा ॥ आत
 मारां महारां महें आतमां ॥ जो तिहे जुगति सौं क
 रो मेला ॥ ते जहे से जहे से जहे ते जहे ॥ एकर स
 दा इबे लबे ला ॥ १८ ॥ सुंदर रां मराया ॥ परमाप
 न परम ध्यांत ॥ प्रम प्राण आया ॥ टेक अकल सक
 ल जति अंत्या ॥ आया नही माया ॥ निराकार ति
 राक्षर ॥ वार पार न पाया ॥ गंती रक्षीर निधिसरीर
 ॥ निरगुण निरकारा ॥ अखिल अमर परम पुरिष
 ॥ निरमल निज सारा ॥ परमत्तर परम तेज ॥ परम
 जोति परकासा ॥ परम पुंज परायें रा ॥ दा इति जदा
 सा ॥ १९ ॥ अक्षिल माव अक्षिल न ॥ गति अक्षि
 ल नां वहे वा ॥ अक्षिल प्रेम अक्षिल प्रीति ॥ अक्षि
 ल सुरति सेवा ॥ टेक ॥ अक्षिल अंग अक्षिल संग
 ॥ अक्षिल रंग रां मां ॥ अक्षिल रत अक्षिलामत
 ॥ अक्षिल निज नां मां ॥ अक्षिल गणांत अक्षिल
 ध्यांत ॥ अक्षिल आनंद कीजे ॥ अक्षिल लै अक्षि
 लामे ॥ अक्षिल सपीजे ॥ अक्षिल मगन अक्षि
 ल मुदिता ॥ अक्षिल गलित सांझे ॥ अक्षिल दरस
 अक्षिल परमा ॥ दा इतु सु मां ही ॥ २० ॥ अक्षु
 राग जसेन ॥ २१ ॥ कांता ॥ नुंदी मेरे जांत निगर

तूही मेरे सादर्यदर आलंम बेगाना साहि
बसिरता जमेरे तूही मुलिताना दोस्त दिल
तूही मेरे किसका धिलघाना नरचसम जि
दमेरे तूही रहिमाता ऐके अफ्ना वमेरे तूही
हम जाना जा निबा आजी जमेरे खबब जाना
नेक नजर मिहरमीरा बंदामें तेरा दाहदर
बारतेरे खबसा दिवमेरा ४१ तू घरि आवसुल
छिनपीव दिक्कतिल मुषदिय लावे तेरा क्या
तरसावे जीव टेक निस दिन तेरा पंथ निहारो
तू घरि मेरे आव दिरदाती तरिहेत सौरेवाल
तेरा मुषदिय लाव बारी फेरी बलिगई सो
नित सोई कपोल दाह ऊपरि दया करी नै सु
नाह सुहावे बोल १२ रागत टन एह
तू कौं काहेत प्राण सें माले कोटि
अपराध कलप के लागे साहि मरुत टाले टे
नेक जनम के बंधन बाटे बिन पावक
फंध जाले असो हेमन ना बहरी को कबहु
इयन साले अंतमणी जुगति सौराघे ज्य
नती सुत पाले दाह देषु दया करे असो
गो बिंद कबहु मिले पीव मेरा चरंत कवनक
ही करि देखो राबौ नै नई नेरा टेक निरखणक
मोहि दाव घणेर कब मुष देखो तेरा प्राण पि
लन को नई उदासी मिलित मीत सबेरा
व्याकुलता प्ये नई तन देही सिरपरि जमका
हेरा दाह रे जन राम मिलन को तयई तन
६ जनक जाल नराले

ऊतरी॥२॥ कब देखो नैन डरै भरती॥ प्राणमि
 जनको जई सती॥ हरि सौं खेली हरी गती॥ कब
 मिलि हे मोहि प्राणपती॥ टेक बलिकी तीक्य
 देखी गीरे॥ मुझ मां हैं अति बात अतरी॥ सुनि
 साहिब एक बीन ती मेरी॥ जनमि जनम ही दा
 सी तेरी॥ एक दुहाइ सो सुनि सी सांई॥ हों अब ल
 बल मुझ में नाहीं॥ करम करी॥ घरि मेरे आंई
 तो सो साप्री वतरे नांई॥३॥ नीके मोहन सौं प्री
 तिलाई॥ तन मन प्राण देत बजाई॥ रंग रस के बत
 ई॥ टेक रेही जी प्रे देखी पी प्रे॥ छो स्वी न जाई स
 ई॥ बांन से दूके दैत लगाई॥ देखत ही मुरकाई
 ॥४॥ निरमल नैह धिया सौं लागी॥ रती न राखी का
 ई॥ दाइरे तिल में तन जावे॥ संग न छा मो माई
 ॥५॥ धा॥ तु रूखि न असे कौन करे॥ गरीब निवा
 ज गुसांई मेरी॥ माथे मुकट धरे॥ टेक नीच के
 चले करे गुसांई॥ दा स्वी हूं न टरे॥ हसत कव
 की छाया राखी॥ का हू थैं न डरे॥ जाकी छोति
 जात को लागी॥ ता प्रित हूं ही टरे॥ अस र आ प
 ले करे गुसांई॥ मा स्वी हूं न मरे॥ नांम देव क
 बीर जु लाहा॥ जन रे दा सति रे॥ दाइ बे गिब
 र न ही लागी॥ हरि सौं सबै सरे॥५॥ न सो न
 हरि न सो न सो॥ ताहि गुसांई न सो न सो॥ अक

जि जि

सिरजे जल सी सबरन कर

भवतसंघारितेनरसनांमुख॥ अंसोचिअकीयो
 आपत्तयाइकीऐजगजीवन॥ मुरनरसकर
 साजे॥ पीरपैकंबरसिधअसंसाधिक॥ अपते
 नांइनिवाजे॥ १॥ धरतीअंबरचंदसरजिति
 पांगीपवनकीऐ॥ मानगाघटुणपलकसैके
 तेसकलसंवारिलीऐ॥ आपअंधेतनांही
 सबसमिपूरिरहे॥ दाइदीनताहिनइबंदित
 आगमअगाधकहे॥ ४॥ ५॥ हमथैहरिरहीगति
 तेरा॥ तुम्हहोतैसेतुम्हहीजानौ॥ कदाब
 पुरीमतिमेरी॥ टेकमनथैअगमदिष्टिआग
 चर॥ मतसाकागमितांही॥ मुरपहुंचैतांही॥
 १॥ जोगनध्यातग्यांतगमितांही॥ संसकिसमगि
 सबहारे॥ उतमतीरहतप्रानघटसाधे॥ पारत
 गहततुम्हारे॥ योजियरेगतिजाइनजानौ॥
 अगदगहनकेसैआवे॥ दाइअविगतिदेइव
 याकरि॥ भागबडेसोपावे॥ ३॥ १॥ २॥ ३॥
 रागसैरतिमाटी॥ कोलीमालनछांडे
 रे॥ सबघाबरकाठेरे॥ टेकपेमपातालगाइध
 रौ॥ तततेलनिजदीया॥ एकमनांसअरम
 लागा॥ ग्यांतराछमरिलीया॥ नांचनलीमरि
 बुगकरलागा॥ अंतरातिरंगराता॥ तागोव
 रौजीवजुलाहा॥ परमततसोसाता॥ सव
 लसिरोमनिबुयेंबिचारा॥ सोनांसूतनतोडे
 सदासुचेतरहेज्योलागा॥ जपटूटेतपजोडे
 १॥ अंसैतनिबुनिगहरगजीता॥ सोईकेमनि

मावे। दाहू कोली करता के संगि॥ बड़ु रिन रहि
 जगि आवे॥ ४॥ १॥ बिरहणी बधु संसारे॥ निस दिन
 तल फेरों सके कारनि॥ अंतरि ऐक बिचारे॥ टे
 आतुर सई मिलन के कारनि॥ कहिक हिरा मधुक
 रे॥ सास उसास निमष नही बिसरे॥ जित तित पंथ
 तिहारे॥ फिरे उदास बरुं दि सिंचित वृत्ता नैनो
 र भरि आवे॥ रांम बिआग बिरह की जारी॥ और न
 कोई नावे॥ व्याकुल सई सरीर न समझे॥ बिंस
 बांन हरे मारे॥ दाहू दरसन बिन क्यं जीवै॥ रांम स
 ने ही हमारै॥ २॥ मन रे रांम रटत क्यं रहि ऐ॥ यहु
 तत बार बार क्यं न कहि ऐ॥ टेक जब लग जि स्या बा
 रों॥ तौ लो जपिले सारां प्राणों॥ जब पवना चलि
 जावै॥ तब प्राणों पछितावै॥ जब लग श्रवण सु
 री जे॥ तौ लो सासं सब दसु गिली जे॥ श्रवणों सु
 रति जब जाई॥ ऐतब का सु गि है नाई॥ जब लग
 नैनं ऊं प्रेक्षे॥ तौ लो चरण कवल किन देखे॥ जब नै
 न ऊं क बून सूर्ये॥ ऐतब मरिष क बावै॥ जब लग
 गत नमतनी का॥ तौ लो जपिले जीवनि जी का॥ ज
 ब दाहू जीय आवे॥ तब हरिके॥ मनि नावे॥ ३॥
 मन रे तेरा कौन रावारा॥ जपि जीवनि प्राण अधारा
 टेक मात पिता कुल जाती॥ धन जोवन सजन सं
 घांती॥ गह दारा सुन नाई॥ हरि बिन सब फूटा के
 जाई॥ रितुं अंति अके ला जावै॥ काहू के संगि न
 आवै॥ रितुं नां करि मेरी मेरा॥
 तेरा॥ रितुं चेतनि देखे अंधा॥

धध रेकालसीचसिरिजागे हरिसुमिरणकाहे
नलागे यऊ औस रबऊ रिनआवे फिरमति
बाजनमनपावे अबदाइटीलनकीजे हसि
मत्तजनकरिलीजे धध मतरदेष्टतजनमाये
ताथेंकजनकोईमयो टेक मनइंदीग्यानवि
चारा ताथेंजनमज्जवा ज्पंदारा मनफवसाव
करिजाते हरिसाधकहैनहीमाते मनबद्धि
हंचतुराई ताथेंमनमुप्रवातबनाई मनआप
आपकोथापे करताहोइवेठाआपे मनखा
दीबऊतबनावे मेंजांन्यांविषेवतावे मनमा
गोसोईदीजे हंसहीरांसडुषीकंकीजे मनम
बहीछादिबिकारा प्रांतीहोहगुननसौन्यारा
निरागुननिजगहिरहिरे दाइसाधकहैतेकदि
रे ॥ ५ ॥ मनरेअंतिकलदिनआया ताथेंयऊसब
मयापराया टेक प्रवतौसुणैननैऊसऊं रस
नांकद्वानजाई सीसचरनकरकंपनलागे सो
दितपडुच्याआई कालेधौलेबरनपलटया
तनमनकावलभागा जीवतगयाजुराचलिआ
ई तबपछितावनलागा आवघटेघटछी
जेकाया यऊतनसयापुराणां पांचोथांकक
द्वानमानै ताकामरमतजांतां हंसबटाऊ
प्रांतपयांतां समफिदेष्टिमनमांदी दिनदितका
लगरासैजीवरा दाइचेतेनांदी ॥ ६ ॥ मनरेतदे
घेसोनांदी हैसोअगसअगोचरमांदी टेक निरा
अधियारीकच्छनसऊं ससैसरयदिषावा औ

संश्रुत जगत तहां जानै जीव जे बड़ी धावा ॥ म
ग जल देषित हों मन धावे दिन दिन फूटी आसा
॥ जहां जहां जाइत हों जल नों हों ॥ निहं चे मरे
पियासा ॥ नरम बिला सब कृत बिधिकी लो ॥ ज
सुधे नें सुषयावे ॥ जागत फूटत हों कुछ नों हों
॥ फिरि पीछे पछितावे ॥ जब लगसूला तब ल
ग देषे ॥ जागत नरम बिलाना ॥ दाइ अंति इहां व
छ नों हों ॥ हे सो सो धिसयां ना ॥ धावा इरे बाजी
गरंट बेला ॥ अं सें आयै रंहे अकेला ॥ टेक यूक बा
जी बेल पसारा ॥ सब मोहे को तिगहारा ॥ यूक बा
जी बेल दिषावा ॥ बाजी गर किन रुं नयावा ॥ इ
हि बाजी जगत मुलां ना ॥ बाजी गर किन रुं न जा
ना ॥ कुछ नों हों सो पेया ॥ हे सो किन रुं न देषा
॥ कुछ अंसा चेट ककी लो ॥ तन मत सब हरि
ली लो ॥ बाजी गर मुरकी बाही ॥ काइ ये लघी
न जाइ ॥ बाजी गर परकासा ॥ यूक बाजी गुरु
तमासा ॥ दाइयावे सोई ॥ जो इहि बाजी लिप्त न
होई ॥ धावा इरे अंसा एक बिचारा ॥ यो हरि
रक देह मारा ॥ टेक जागत सूते सो वत सूते ॥
जब लगरां मत जां ना ॥ जागत जागे सो वत जा
गे ॥ जबरां मत ममत मां ना ॥ देषत अंधे अंधनी ॥
अंधे ॥ जबल सत्यन सूके ॥ देषत देषे अंधनी टे
षे ॥ जबरां मत नें ही वके ॥
भी गतो जब लगत तन ची लो
गंरां नी बोले ॥

जीवतमरणमरेभीमरे॥ जबलगतही प्रकासा॥ जी
 वत जीऐ मरेभी जीऐ॥ दाहरांमनिवास॥ २९॥
 रासजीनां बचितां दुषतारी॥ तेरे साधनिकही
 बिचारी॥ टेक केई जोगध्यानाहिरहिया॥ के
 ई कुलके मारगिबहिया॥ केई सकलदेवकी
 ध्यावै॥ केई रिधिसिधिचाहै पावै॥ केई वेदधरा
 नौ माते॥ केई मायाके संगिराते॥ केई देसदिसत
 रदोले॥ केई ग्यांती के बडु बोले॥ केई कायाक
 से अपारा॥ केई मरै थडगकी धरा॥ केई अनतजी
 वनकी आसा॥ केई करहि गुफामें बासा॥ आ
 अतिजे जारो॥ सोतौरांमतांमल्यो लागो॥ इबदा
 इहे बिचारा॥ हरिनागधाराहमारा॥ १०॥ सा
 धोहरिसोहेतहमारा॥ जिनियडुकी रूपसा
 टेक जाकारणि ब्रतकीजे॥ तिलतिलयडुत
 नछीजे॥ सहजैही सो जाना॥ हरिजांतनही
 मनमाना॥ जाकारणितपिजइऐ॥ ध्यसतीत
 रिसहिऐ॥ सहजैही सो आवा॥ हरिआवतही
 सुचुपावा॥ जाकारणि बडु फिरिऐ॥ करितीर
 यत्रमिन्नमिमरिऐ॥ सहजैही सो चीन्स॥ हरि
 चीन्सबे सुखलीन्स॥ येमत्तगतिजित्ति
 नी सो काहे नरमै प्रांती॥ हरिसहजैही न
 लमानै॥ ताथैदाहू औरन जानै॥ ११॥ रास
 जीजिनिमरमावेहमको॥ ताथै करौ बीनती
 तुम्हको॥ टेक चरनतुम्हारे सबही द्वेषो॥ त
 पतीरथब्रतदांता॥ गोगजमुनपासियाई के त
 ति

हां देऊ असनां तां सुगि तुम्हारे सब ही लागे ॥
॥ जो गि जाय जे की जौ साधन सकल एह सब सेरे
संग आपणा दी जे ॥ पूजो पाती देवी देवल
सब देखौ तुम्ह मां ही ॥ मो कौ बोट आपणा दी
जो ॥ चरन कवल की छांही ॥ ऐश्वरदासदास की
सुगियो ॥ हरिकरौ भ्रम मेरा ॥ दाइतु मर बिना
और न जानै ॥ राघो चरनौ चेर ॥ १२ ॥ सोई देव
पूजो जे टांका नही घड़िया ॥ ब्रह्मवासनां ही
औत रिया ॥ टेक बिन जल संजम सदा सोई देवा
॥ नाव सरातिक रौ हरि सेवा ॥ पाती प्राण हरि
देव चटां ऊं ॥ सहज समाधि प्रेम ल्यो लां ऊं ॥ १३ ॥
हि बिधि सेवा सदा तहां होई ॥ अलखति रंजन
लखै न कोई ॥ ऐ पूजा मेरे मति मां नै ॥ जिहि बिधि
होई सुदाइ न जानै ॥ १४ ॥ रांमराइ मो कौं अवि
रज आवै ॥ तेरा पारन कोई पावै ॥ टेक बुद्धादि
क संत कादिका नारदा ॥ नेति नैति जे गावै ॥ सर
ति तुम्हारी रहै ॥ तिस वासु रि ॥ तिन को तं न ल
पावै ॥ संकर से ससवे सुर मुनि जन ॥ तिन कं
त न जानां वै ॥ तीनि लोकर टैं सनां सरि ॥ ति
न को तं न दिखवै ॥ दीन लीन रांम र गिराते
॥ तिन को तं संगि लावै ॥ अपनै अंग की जुगति
न जानै ॥ सोमनि तेरे मां वै ॥ सेवा संजम करे
जप पूजा ॥ सब दन तिन को सुतावै ॥ मे अछो
पही नमति मेरी ॥ दाइकी
इति राग मेलि पं पना ॥ अ० ॥

दरसनदे दरसनदे ॥ हूँ तो तेरी मुक तितमा
गोरे ॥ टेक ॥ सिधितमांगो रिधितमांगो ॥ तुमही
मांगो गो बिंदा ॥ जोगनमांगो भोगनमांगो
तुमहीमांगो रामजी ॥ घरनहीमांगो बतन
हीमांगो ॥ तुमहीमांगो देवजी ॥ दाइतुम
बिन औरनमांगो ॥ दरसनमांगो देऊजी ॥ १
तुं आयेही बिचारि ॥ तुज बिन करहौ मेरे
औरनइ जाकोइ ॥ दुष किसको कहौ ॥ टेक ॥ मा
तहमारा सोइ आदैं जेयीया ॥ मुकै मिलावैको
वैजीवतिजीया ॥ तेरेनैन दिषाइजी कजि
सआसिरे ॥ सोधतजीवैक्यनही ॥ जिसपासि
रे ॥ पंजरमांहे प्राणतुम बिन जाइसी ॥ ज
दाइमांगो मानकवधरिआइसी ॥ २ ॥ दौजो
रहीरेबाटतंघरिआविनै ॥ ताफादरसन
मुषहोइ तेतुल्याविनै ॥ टेक ॥ बरयाजीवा
षोतितेतंदिषादिनै ॥ तुमबिना जीवदेइ
हेलीकामिनी ॥ नैननिहारौ बाटकजीव
वनी ॥ तंअंतरथै उरुहो आवदेही जावनी ॥
तं दयाकरी घरिआवदासी जावनी ॥ जन
दूरांसंजालिवैनसुनावनी ॥ ३ ॥ पीवदे
बिनकरहै ॥ जीव ॥ तलयेमेरा सबसुख
नदणइ ॥ मुषदेघौतेरा ॥ टेक ॥ पीवबिनके
जीवता मोहिचैतनआवै ॥ निरधनअंध
इ ॥ जबदरसदिषावै ॥ तुमबिनकरही
धरौ ॥ जोलोतोहिनपांक ॥ सनमुषकेसुख

जिऐ बलिहारी जांऊरु बिरह बिदोगन सह
 सकौ ॥ काइर घटकाचा ॥ पावन परसतण
 रे सुतिसाहि बसाचा ॥ सुनिये मेरी बीतती ॥
 बदरसनदी जौ ॥ दाइ दैषन पावही ॥ तैसें कुछ
 की जौ ॥ धा॥ इहि विधि बंधी मोरसतां ॥ जूले भू
 गी की टततां ॥ टेक चाधि गरट तै रै निबिहाइ
 ॥ प्यंड प्ये रै पांति न जाइ ॥ मरे मीत बिसरे तद
 पांती ॥ प्रांत तजे उति औरत जांती ॥ जले सरीर
 न मो डे अंगा ॥ जोतिन छा डे प डे पतंगा ॥ दाइ
 इब धे असे होइ ॥ प्यंड प डे न ही छा डो तो हि
 ॥ ५ ॥ आवोरां मदया करि मेरे बार बार बलिह
 री तेरे ॥ टेक बिरह नि आतुर पंथ निहारे रांम
 रांम कहि पीव पुकारे ॥ पंथी बजै मारा जो वै
 नैन तीर जल भरित रिरो वै ॥ निस दिन त लफे
 फि रै तदास ॥ आतम रांम तु मारे पास ॥ बड
 बिसरे तन की सुधि नांही ॥ दाइ बिरह नि मृतक
 मांही ॥ ६ ॥ निरंजन कपर है ॥ मौंति गह वै राग
 कै ते जु मगये ॥ टेक जागे जगपति राइ ॥ हसि बो
 ले न ही ॥ परगट घंघट मां हि ॥ पट धो ले न ही
 ॥ सहि कै करौ संसारा सब जग वारणो ॥ छा डो
 सब प रि वार ॥ तेरे कारणो ॥ वारो प्यंड प रांण ॥ प
 ऊं सिरि धरो ॥ जू जू ता वै रांम सो सेवा करौ ॥
 ॥ दीर्त नां थद पाज बिलंबन की जिऐ ॥ दाइ बलि
 बलि जाइ ॥ सेज सुषदी जिऐ ॥ ७ ॥

काइलि

गुणतही जागो कोइ टे ॥ धर अंबर लागे तही
 नही जागो ससिहरसर ॥ पांती प्रवत लागे तही
 जहां तही भरपूर ॥ तिस बासुरि जागो तही
 नही जागो सीतल घांस ॥ बुध्या नृषा लागे तही
 घटि घटि आत सरांस ॥ माया मोह लागे तही
 नही जागो काया जीव ॥ काल करम लागे तही
 परगट मेरायीव ॥ इकल स एके नरहे ॥ इक
 ल स एके तेज ॥ ऐकल स एके जोतिहे ॥ दाइ बेल
 सेज ॥ ४ ॥ जरा जीवन प्रांत अधर ॥ बाचापा
 लता ॥ होक हां पुकारो जाइ ॥ मेरे लालना टे
 मेरे बेदन अंगि अपार ॥ सोइ छटालता ॥ सागर
 निसतारि ॥ गहरा अति घणा ॥ अंतर दे सोटा
 की जे आयणा ॥ मेरे तुम्ह बिन और न कोइ ॥
 दे बिचारणा ॥ ताथे करौ प्रकार ॥ यहुत नचा
 णा ॥ दाइ कौ दरसन देइ ॥ जाइ इष सालणा
 ॥ मेरे तुम्ह ही राखणहार ॥ इजा को नही ऐक
 चल चहुं दिसि जाइ ॥ काल तही तही टे ॥ मेरे
 ते की रेउपाइ ॥ निह चलनारहे ॥ जहावर जोत
 हां जाइ ॥ मदिसा तो बहे ॥ जहावर जोत हां जा
 ॥ तुमथे नां दे ॥ तासो कदा बसाइ ॥ मेरे ताक द
 गुर अऊ समाने नां हि ॥ तिर मे करे ह्य ॥ तु
 बिन और न कोइ ॥ इ समन को गहे ॥ त्यं राधे
 राधार ॥ दाइ तोरहे ॥ १० ॥ निरंजन काइ कये
 प्राणियां ॥ देषिय ऊ दरिया वारणार मुखे नह
 मन मेरा दरिया टे ॥ अति अथाह ऐ नोज
 ॥ ११ ॥ मेरे तुम्ह ही राखणहार ॥ इजा को नही ऐक

॥ आसंधतही आदो दिविदेधिदुरये घणां प्रा
णां डधयावे ॥ विसृजलनरियासागरा सबथके
सयातां तुम्रुवितककुकेसेंतिरो ॥ मेमूठअपा
तां २ आगेही डुरये घणां ॥ मरीकाकहिरे करग
हिकाटेंकेसवा ॥ पारतोलहिरे एकनरोसातीरहे
॥ जेतुम्रु होऊ दयाला ॥ दाहककुकेसेंतिरे तं
तारिगोपाला ॥ ११ ॥ संमरथमेरासांईयां सकलअ
घजारै सुषदातामेरेप्राणका संकोचनिवारै ॥ ठे
॥ ८ विधितापतनकीहरे ॥ दोथेजनराधे ॥ आपस
मागमसेदगा ॥ साधयोंनाथे ॥ आपकरैप्रतिपाल
नां ॥ दारनडधटारै ॥ पूछयाजनकीपूरवै ॥ सबका
विजसारै ॥ करमकोटिसेमंजनां ॥ सुप्रमंजनसोई
॥ मतमनोरथपूरनां ॥ त्रैसाऔरनकोई ॥ त्रैसा
औरनदेविहो ॥ सबपूरनकांमां ॥ दाहसाधसंगी
कीरे ॥ ३ निआतमरांमां ॥ १२ ॥ तुम्रुवितरांमक
वमकलिसांहे ॥ विधियाथोंकोईवारैरे ॥ मुनिय
रमोटासनवैबाह्या ॥ एरुंकोणमनोरथमारैरे
॥ ठेठुछिनैकमनवोंमरुंमाफौ ॥ धरिधरिबारि व
नचावैरे ॥ छिनैकमनवोंचंचलमाफौ ॥ छिन
एकघरमेंआवैरे ॥ छिनैकमनवोंमीनअरु
रो ॥ सचराचरमांध्याएरे ॥ छिनैकमनवोंउद
मदिमातो ॥ स्वांदेलागोघाहरे ॥ छिनैकमन
वोंजोतियतंगा ॥ मरमिमरमिस्वांदेदाऊरे ॥ छि
नैकमनवोंजोसेंलागो ॥
छिनैकमनवोंकुंजरमाहरी ॥

माद्वेरे छिन एक मनवों को सी माद्वेरे विधि
रंगर माद्वेरे छिन एक मनवों मरा अमर
नाद्वे सोद्वे जा ऐरे छिन क मनवों माया
तो छिन एक अमर नै वाद्वेरे छिन एक मनवों
मद्वर अमरों वा सै क बल बंधों गौरे छिन
क मनवों चहुँ दि सि जाए मनवाने कोई आ
रे तुम बिन राखे कौ रा बिधाता मुनि वर सा
आ गौरे दाह मत क छिन में जीवे मनवाना
रितन जा गौरे ॥ १३ ॥ क राणी पोच सोच मुषक
ई लोही की नाव के सै मज्जल तिर ई टे द
न जात पट्टि म के सै आद्वे नैन बिन नू लि बा
कत पाद्वे बिषव न बै लि अम त फल चाहे
इह लाल ल अमर उ माहे ॥ अति गद्वे प्रेमिक
रि मुषक चं सोद्वे जल गि जागी घटी सी तल क
होद्वे पाप पाषंड की ऐ पुन्य कं पाइ ऐ कप
निय टि बागान कं जाइ ऐ कंदे दाह मोहि
बिर जतारी हृदय कट कं मिले मुरारी ॥ १४ ॥
मेरा मन के मन सौ मन लाग ॥

सबद के सबद सौ नाद बाग टे
वन के श्रवण सुणि मुष प्राया नैन के नैन सौ
र धिराया प्रात के प्रात सौ खे लि प्रांती मुष के
ष सौ बोलि बांणी ॥ २ ॥ जीव के जीव सौ रंगिरात
चित के चित सौ प्रेम साता ॥ सी स के सी स के
समेरा देखि ले दाह साग तेरा ॥ १५ ॥ मेर मिषर
टि बोलि मन मोरा रांम जल बरिषे सबद मुनि

रा॥ ट॥ आर॥ त आतुरपीवृष्टुकारे॥ सोवत जागत
 यंघनिहारै॥ निसबासुरिकहिअंम तवांणी॥ रांस
 नांसल्योलाह्लेप्राणी॥ टे रिमनभाईजबलगजी
 वे॥ प्रीतिकरिणही प्रेमरसपीवै॥ दाहूअरीसरिजेम
 नजामे॥ रांसघटादलबखिषणलागे॥ ध॥ १६॥ नारीने
 हनकीजिये॥ जेतुऊरांसपियारा॥ मायासोहनबंदि
 ऐ॥ तजिऐसंसार॥ टे॥ बिधियारंगिराचेतही॥ नही
 करेपसारा॥ दिहग्रेहपरिवारमें॥ सबथेंरहेन्यारा
 ॥ आपापरउरजेतही॥ नांहीमेंमेरा॥ मनसाबाचा
 करमतां॥ सोईसबतेरा॥ मनइंजीअसथिरकरे॥ क
 तहंनहीडोले॥ जगबिकारसबपरहरे॥ सिध्यान
 हीबोले॥ रहैनिरंतरांससौ॥ अंतरगतिराता॥
 गावेगुणगोविंदके॥ दाहूरसिमाता॥ १७॥ तूराबे
 त्यहीरहे॥ तेईजनतेरा॥ तुम्हबिनऔरनजानही
 सोसेवगतेरा॥ टे॥ अंबरआपेहीधत्ता॥ अजहंउ
 पगरी॥ धरतीधारीआपथें॥ सबहीसुखकारी॥ य
 वनपासिसबकेचले॥ जैसेंतुम्हकीन्हा॥ पांतीपर
 गटदेखिहो॥ सबसौरहेनीतां॥ चंद्रचिराकीचऊ
 दिसा॥ सबसीतलजाने॥ सरिजनीसेवाकरे॥ जैसे
 भलमाने॥ एतिजसेवगतेरडे॥ सबआह्लाकारी
 ॥ मोकोअैसेकीजिरे॥ दाहूबलिहारी॥ १८॥ नंदक
 बाबाबीरहमारा॥ बिनहीकोडे॥ बहेबिचारा॥ टे॥
 करमकोटिकेकुसमलकाटे॥ काजसंवारेबिन
 हीसाटे॥ आपगारूबेऔरकोतारे॥ प्रेसाप्रीत
 पारितारे॥ जुगिजुगिज॥

देवतुमुरुकौंतिहोरा ॥ न्येदकबपुरापरउपागरी
 दाइतिव्याकरेहमारी ॥ ४ ॥ १८ ॥ देऊजीदेऊजी
 प्रेमपियालादेऊजी ॥ देकरिबऊरिनलेऊजी ॥
 जपेनरनदेघोतेरा ॥ त्येत्यजीपरातनपेमेरा
 अमीमहारसनावनआवे ॥ त्येत्यप्रातबऊ
 तइषयावे ॥ प्रेमभगतिरसपावेनाही ॥ त्येत्यसा
 लेमनहीमाही ॥ ३ ॥ सेजसुहागसदासुषदीजे ॥ दा
 इइषीयाबिलंबनकीजे ॥ ४ ॥ २० ॥ बरिषऊरासअ
 मतधारा ॥ फिलिफिलिफिलिफिलिसीचणदारा
 टे ॥ प्राणबेलिनिजनीरनपावे ॥ जलहरबिन
 कवलकुमिलावे ॥ सकेबेलिसकलबनराइ
 रांसदेवजलवरिषीआइ ॥ आतमबेलीमरेपि
 यास नीरनपावेदाइदास ॥ २१ ॥ २१ ॥ २१ ॥
 रायतिला ॥ दयातुमुरीदरसनप ॥ २२ ॥ जात
 तहौतुमुरुअसतजांसी ॥ जांतराइतुमुरुसौका
 कहिरे ॥ टे ॥ तुमुरुसौकहाचतुराईकीजे ॥ कौ
 नकरमकरितुमुरुपारे ॥ कोइतहीमिलेप्रातब
 लिअपने ॥ दयातुमुरीतुमआरे ॥ कहाहमा
 रोआंनितुमुरुआगे ॥ कौनकलाकरिबसिकीरे
 ॥ जीतैकौनबुधिवलघोरिष ॥ रु ॥ चिअपनीतै
 रनलीरे ॥ तुमुरुहीआदिअंतिपुनितुमुरुही
 ॥ तुमुरुकरतात्रियलोकसंज ॥ २ ॥ कुबनाही
 कहाहोतहे ॥ दाइबलिपावेदीद्वार ॥ १ ॥ मा
 कमिहरबानकरीम ॥ गुनहगरहरोजहरद
 पनहराधिरहीम ॥ टे ॥ अचलिआधरिबदा

धराधरादारा ॥ तिकं को डरना ही ॥ साचे फूटन ॥
 । कवला ॥ सतिन लगे काई ॥ दाह साचा सत जिम मान ॥
 फेरि वै फूट बिलाई ॥ ॥ साईकं साच पियारा ॥ साचे
 । चमु होवे देवो ॥ साचा सिरजन हारा ॥ जे ज्येष्ठ राघो व
 । पधडी जे ॥ फूट सवै जडि जाई ॥ धरा के घां कं सार दे
 ॥ फूटन मोहिं सवाई ॥ ज्येष्ठ तवो लेता ताकी
 । ताइवाइतत की न्हा ॥ ततै ततरहे गाभाई
 । फूट सवै जलिषी नां ॥ २ कनक कसोटी अग
 ने भुषडी जे ॥ कं पसवै जलि जाई ॥ यो तो कस
 । साच देगा ॥ फूट सहे नदी भाई ॥ यो तो क
 । सगी साच सहेगा ॥ साचा कसिक सिले वै ॥ दा
 । दरसन साचा पावे ॥ फूट दरसन देवै ॥ २ प
 । बातै बादि जाहिं गी सई ॥ तुम्ह जिनि जानुं
 । बात निय ॥ २ ॥ जवला अपना आपन जांरो
 । तबला कथणी काची ॥ आपा जांरो साईकं
 । जांरो ॥ तब कथणी सब सावी ॥ करणी बिना को
 । तनही पावे ॥ कहं मुता क्या होई ॥ जैसी कहै करै
 । जो तेसी ॥ पावेगा जन सोई ॥ बात तेही जे तिरम
 । लहो वै ॥ तो को दे को कसिली जे ॥ सोनां अग नि
 । दहै दसंबारा ॥ तब यऊ प्राण पती जे ॥ यो हम जां
 । नां मन पति पां नां ॥ करनी कठिन अपासा ॥ दाइ
 । तन का आपा जांरो ॥ तो तिरत न लगे वारा ॥ २५
 । पडि पडि वेद सु

ब्रह्मोने

आप निशाधी सोई

॥ निरबाहौ करलाई ॥ २१ ॥ हरिमारगिममतव
 दीजिरे ॥ तब निकटि परमपद लीजिरे ॥ २२ ॥
 रगमाहें मरणा ॥ तिलपीछे पावन धरणा ॥ २३ ॥
 आगे होइ सही ॥ पीछे सोचन करणा कोई ॥
 ॥ ज्येसरारिण जूके ॥ आपा परत ही बूके ॥ मिरि
 हिवका जसंदारे ॥ घगा घावां आपा डारे ॥ सती
 सतगहि साचा बोले ॥ मन निहचल निमषन वे
 ले ॥ वाकें सोच प्रोचन ही आवे ॥ जग देखत आप
 ३ जरावे ॥ २४ ॥ सिसिर सौं साटा कीजे ॥ तब अविनासी
 पद लीजे ॥ ताका तब सिर स्यावति होवे ॥ जब दा
 २ ॥ आपा मोक्षे ॥ २५ ॥ फल कलि जुग कल्याण ज
 २ ॥ अमृत कौं बिष कहेवन ॥ २६ ॥ धन कौं निध
 न निधन कौं धन ॥ नीति अनीति पुकारे ॥ निरमल
 मैला मैला निरमल ॥ साध चोर करि मोरे ॥ कंचन
 काच काच कौं कंचन ॥ हीरा कंकर भाषे ॥ मां गि
 क मां गियां मां गियां मां गि ॥ साच जूठ करि ना
 २ ॥ पारस पथर पथर पारस ॥ काम धेन पसुण दे
 ॥ चंदन काठ काठ कं चंदन ॥ औसी बडु तब ना
 २ ॥ रस कौं अनरस अनरस कौं रस मीठा धारा हो
 ई ॥ दाह कलि जुग औसा बरतै ॥ साचा बिरला कोई
 २ ॥ २७ ॥ दाह मोहि नरो सामोटा ॥ ताराति रसा सो
 २ ॥ सगि मेरे कहा करै कलि घोट ॥ वेद दो लागी
 दरीया तै न्यारी ॥ दरिया मंकिन जाई ॥ मछ कछ
 रहै जल जेतै ॥ तिन कौं काल नषाई ॥ जब सवै प
 जर धर पापा ॥ बाजर द्यावन सांही ॥ जिनका

नही॥ असलबद बिसयार॥ गरक इनियां सतारसा
 दिव॥ दरदवंद धकार॥ फरामो सने की बदी कर
 दस॥ बुराई बद फेल॥ बक सिंदतं अं जा बचाय रि
 ऊक महा जिरसेल॥ नावने कर ही मराजिक
 पाक परवर दिगार॥ गुनह फिलक रिदे ऊदाइ
 तल बदर दीदार॥ २॥ कौण आदमी कमी नधि
 चारा॥ किस कौं पूजोगी बधिं जारा॥ टेढ़ में जन
 ऐक अनेक पसारा॥ जो जल न रिया अधिक अया
 रा॥ एक होइती कहिस मजां ऊं॥ अनेक अरु
 ऊं क्यं सुरजां ऊं॥ मैं हों निबल सबल ऐसारे
 ॥ कर करि पूजो बडत प्रसारे॥ पाव पुकारो समऊ
 नें ही॥ दाइ देयुद सो दिसि जाही॥ ३॥ जाग ऊं
 जियरा काहे सो वै॥ से दिं करी मां तो सुख होवै॥ टेढ़
 जाधैं जीवनां सो ते बिसारा॥ यछि मजां तां पंथ न स
 वारा॥ मैं मेरी करि बडत मुलां नां॥ अज हूं न चेतै
 हरि पयां नां॥ सांई करी सेवा नां ही॥ फिरि फिरि
 हूबेदरी या सो ही॥ और न आदि पार न पावा ऊं
 जीवन बडत मुलावा॥ मल न राधा लाहानली
 या॥ कौडी बदले ही रादीया॥ फिरि पछितां तां स
 बलुतां ही॥ हारि चल्या क्यं पावै सांई॥ इब सुख का
 रणि फिरि इष पावै॥ अज हूं न चेतै क्यं दुहि कावै
 ॥ दाइ कहै सीष सुनि मेरी॥ कहूं करी मसंतालि
 सवेरी॥ ४॥ बार बार तन ही बाबरे काटे कोबा

एक हांको पावैरे टे

कीन्ता क्यं करि चित्रवतावेरे सोत लेख विषे मैदा
 रे कचन छार मिलोवेरे तं सति जानै बडु रिषा
 २९॥ अब के जिनि डहिकावेरे तीनि लोक की पू
 जीतेरे बत जिबे गिसो आवेरे ॥ तब लग घट मे
 सासवासरे तब लग काहेन कोवेरे ॥ दाइत न ध
 रितां वतलीन्ता ॥ सो प्राणी पछितावेरे धपरां म
 बिसास्यो रे जग नाथ ॥ हीरा हास्यो देषत ही को
 डी कीन्ती हाथ ॥ टेक कावडुता कचन करि जानै
 ॥ नलोरे चमपास साचे सो पल पर चाना ही क
 रिका चेकी आस ॥ बिषता को अंम तक रि जानै
 सो संगन आवे साथ ॥ सैबल के फल निपरि फल्यो
 चको अब की घाता ॥ हरिन जिरे मन सह जि पिब
 नी रे सुन्ये साची बात ॥ दाहरे अब ये करि लीजे
 आवे घटे दिन जात ॥ ६॥ मन चंचल मेरे कल्यो
 न मानै दसौ दस दोरावेरे ॥ आवत जात बार नही
 लागे ॥ बडुत साति बोर आवेरे ॥ टेक बेर बेर बर जत
 या मन को ॥ क्यंचित सीषत मानैरे ॥ ऐसे तिक सि
 जात यात नथै ॥ जैसे जीवन जानैरे ॥ कोटि कज
 तन करत या मन को ॥ निह चल निमख न होइरे
 ॥ चंचल चपल बडु दि सिनर मे ॥ कदा करै जन को
 इरे ॥ सदा मोघ रहत घट तीतरि ॥ मन थिर के से
 की जैरे ॥ सह जै सह ज साध की संगति ॥ दाइ हरि
 जिली जैरे ॥ ७॥ इन को मनि घर घालेरे ॥ प्रीति ल
 गाइ प्राण सब सोये ॥ बिन पावक जिय जालेरे टे
 ॥ अंगिल गाइ सार सब लैवे ॥ इन थै कोइ बाचेरे प

ऊसंसारजीतिमन्त्रनीया॥मिलननंदेईसांभैर॥
 हेतलगाइसंबेधनलेवै॥बाकीकछुनराधैरे॥मा
 षणमांहिसोधि सबलेवै॥छाछिछियाकरिनाथै
 र॥जेजनजांनिजुगतिमोत्यागै॥तिनकोनिजप
 दपरसेरे॥कालनवाइमरेनहीकबहुं॥दाइति
 नकोदससेरे॥५॥जिनिसतछाडैबावरो॥पूरिक
 हैपूरा॥मिरजेकीसबचिंत है॥देवैकौंसरा॥टे
 ॥गरसवासजितिराधिया॥पावकथैन्यारा॥जुग
 तिजतनकरिसीचिया॥देशानअक्षारा॥कुंजक
 हांधरिसंचैरे॥तहांकोरखवारा॥हेमहरतजिति
 राधिया॥सोषसमहमारा॥जिलजथजीवजितैर
 है॥सोसबकोपूरे॥सपटमेलामेदेतहै॥काहेन
 रऊरे॥जितियऊमारउठाइया॥निरवाहैसोई
 ॥दाइछिननबिसारिये॥ताथैजीवनहोई॥६॥
 सोईगोमसेनालिजियरा॥प्राणायंदुजितिदीनो
 रे॥अमरआपउपावराहारा॥मांहिवित्रजिति
 कीनोरे॥टेहचंदसरजिनिकीऐचिराका॥चरनो
 बिनांचलावैरे॥इकसीतलइकताताडोले॥अ
 नतकलादिखलावैरे॥धरतीधरतवरनबहुं
 नीरधिलेसससमंदारे॥जलथलजीवसंभाल
 नहारा॥परिरह्यासबसंगारे॥प्रगटपवनपा
 नीजिनिकीनो॥वरिषादेवकुंधारारे॥अवारमा
 रविरखवकुंविधिके॥
 येचततजि
 गारे॥निहचलरामंजयी

जागारे ॥ १० ॥ जब मैं रहते की रह जाँती काल
काया के निकटित आये पावत है सुष प्रांति टे
सोग संताप नैन नदी देखो रागा दोष नही आ
वे जागत है जसौ रुचि मेरी सुपिते सोई द्विषावे
भरम करम सोहत ही ममिता बाद बिबाद
न जाँतो मोहन सो मेरी बनि आई रसना सोई
बयाँतो निशाबासु रिमोहन तनि मेरे चरंतक
बल मन माने सोई निधि निरखि देखि सचुपां ऊँ
दाह औरत जाँने ॥ ११ ॥ जब मैं साचे की सुक्षिपाई
तब धौ अंगि और नदी आये देखत हौ सुष
दाई टे तादित धेत नितापन व्यापे सुष ड
ष संगित जाँऊँ पावन पीव पर सिपद लीला
आनद भरि गुन गाँऊँ सब सौ संगत ही छनि मे
रे अरस परस कुच्छ नाही एक अतंत सोई संगि
मेरे निरखत हौ निज माँही तन मन माँहि सोधि
सोलीला निरखत हौ निज सारा सोई सगस
बे सुष दाई दाह भागह मार ॥ १२ ॥ हरि बिन
निह चल कही न देखो तीनि लोक फिरि मोक्ष
जेद मैं सो बिन सि जाइगा ॥ १३ ॥ सागु रिपर मोक्ष
रे टे धरती गगन यवन अरु पाँगी चंद सर
धिर नाही रे निदिव सरहत नही दीसे एक
रहे कलि माँही रे पीर पै कंबर सेष मसाइव
सिद्ध बिरच सब देवारे कलि आया सो कोई
रहसी रहसी अलख अने वारे सवाला घमे
रपर बत समदन रहसी पीरारे नदी निव

कछु नही दी सौरह सी अकल सरीरारे ॥ अविना
 सी ओ एकर है गा ॥ जितियु सव कुच्छ की नारे
 ॥ दाह जाता सब देखो ॥ एकर हत सो ची नारे ॥ १३
 मज सी विवधे उप बेला ॥ सो तत तर धर रहे अके ला
 टिक दे वी देखत फिरें उप मूले ॥ १४ ॥ हला हल वि
 यको फले ॥ सुषको चाहे पड़े गलि पासी ॥ देखत ही
 राहायें जासी ॥ के पूजार विध्या न लगवें ॥ देखल
 देखै बरित पावें ॥ तीरै पाती जुगति न जांती ॥ इहि
 न मित्र निरहे अति मांती ॥ तीरथ ब्र तन पूजे आ
 सा ॥ बन घंड़ि जाइ रहै उदासा ॥ यों तप करि करि
 देह जलावें ॥ भरमत हो लें जन्म गावें ॥ सतगुर
 मिलै न ससा जाइ ॥ ऐबं धन सब देइ छुटो ॥ तब दा
 इ प्रम गति पावें ॥ सो निज मरति मां हिल पावें ॥ १५
 ॥ सोई साधु सिरों मणी ॥ गोविंद गुन गावें ॥ राम न
 जे बिधिया तजे ॥ आया न जनावें ॥ टिक मिथ्या सुष
 बोले न ही ॥ परत पंढ्या नां ही ॥ ओ गुण छांटे गुण
 गहै ॥ मन हरिय दमां ही ॥ निरखेरी सब आतमां
 पर आतम जांते ॥ सुष दाई स मिता गहै ॥ आया न
 ही आंते ॥ आया पर अंतर न ही ॥ निर्मल निज सा
 रा सतवादी साचा कहै ॥ लै लीन विचारा ॥ निरते
 निन्यार रहै ॥ काहु लियत न होई ॥ दाइ सब स
 सार में ॥ ऐसा जन कोई ॥ १५ ॥ राम मिथ्या यों जांते
 ये ॥ जो काल न व्यापे ॥ जुरा मरण त को न ही ॥ अरु

दूके ॥ टे ॥ जाए तदे सो जन रहे ॥ अरु जुग
पुगि जाये ॥ अतर जांसी रहे ॥ कुछ काई न लाये ॥
॥ काम दहे सह जैरहे ॥ अरु सुनि विचारे ॥ दाइ
सो सब की लहे ॥ अरु कबहु न हारे ॥ १६ ॥ इन
बातनि मेरा मन माने ॥ इति या दोइन ही उर अंतरि
ऐकै एक करि पीय को जाने ॥ टे ॥ पूरा ब्रह्म द
ये सब दिन मे ॥ मन जीय करु ये आने ॥ दोइ द
याल दीनता सब सो ॥ अरि पंचनिकी करे कि माने ॥
आपा परस सब बत चुने ॥ हरि मन जे केवल
॥ जस माने ॥ दाइ सोइ सजि धरि आने ॥ संकुट स
बे जीव के माने ॥ १७ ॥ ऐ मन मेरा पीव सो ॥ और
मोनां ही पीव बिना पल दिन जीव सो ॥ ऐ उपज
मांही ॥ टे ॥ देधि देधि मुख जीव सो ॥ तहो धूप न
हो ॥ अजरा वरि मन बधिया ॥ ताये अनंत जाव
ते जपु ज कल पाइया ॥ त हार सबां ही ॥
बलि अमृत करे ॥ पीव पीव अघाही ॥ प्रां
ति हां पाइया ॥ जहां उलटि ममांही ॥ दाइ
परवा नया ॥ हरे हित लांही ॥ १८ ॥ अर
रबदा ॥ लाइया ॥ हरि माने ॥ मका बि
ना मुलिताने ॥ टे ॥ नव
वे जनत कुले
॥ दाइयां अ
॥ अतर बां

थां ह्यशान्तवे॥ १२॥ आसगरमतरांमदाहरि
 ५थां अविगतिआपवे॥ कायाकोसी वंजणा॥ ह
 रि५थां प्रजाजापवे॥ टेक महादेवमुनिदेवते॥ मि
 धेदाविश्रामवे॥ सुरगसुर्षसणाङ्कनये॥ हरि५थे
 आतमरांमवे॥ अमीसरोवरआतमां५थां ह्य
 आधारवे॥ अमरथांतअविगतरहे॥ हरि५थे मि
 रजनहारवे॥ सबकुच्छ५थे आववे॥ ५थां परमांत
 डवे॥ दाहआर्पहुरिकरि॥ हरि५थां ह्यआंतंडवे॥
 ३॥ २॥ आजिपरजातिमिलेहैलालादिलकीबिधा
 पीडुसबभारी॥ मिट्योहेजीवकोकाल॥ टेक
 देवतनैतसंतोषनयोहै॥ इहेतुमुरोष्पलादाह
 जनसौहिलमिलिरहिवो॥ तुम्हहोदीनदयाल
 ॥ २१॥ अग्रगतसूहो॥ ॥ तुम्हबिधिअंत
 रजिनिपरो॥ माधवे भावेतनधनलेड॥ भावेसर
 गतरकरसातल॥ भावेकरवतदेड॥ टेक भावे
 बिपतिदेहडषसंकुट॥ भावेसंपत्तिमुषसरीर
 ॥ भावेघरवतगवरंककरिमाधवा॥ भावेसागर
 तीरमाधव॥ भावेवंधमुकतिकरिमाधवाना
 वेविस्ततसारा॥ भावेसकलदोषधरि
 वेसकलनिवारिमाधव॥

माधवे॥ तंजितिदेवेहरिमाधव॥

पनाकरिलीकं॥ नागाभिरुपमां॥

दाहगुरमुखिपादरे सबकुछकायामांहि को
मांहै सबकुछजाति कायामांहैले इपि
तो कायामांहै बडबिसतार कायामांहै अ
नपार कायामांहै अगमअगाध कायामांहै नि
जसाध कायामांहै कल्यानजार कायामांहै कर
ल्योलाह कायामांहै साधनसार कायामांहै कर
विचार कायामांहै अमृतबांशी कायामांहै सार
गप्रांती कायामांहै धैलेप्रांती कायामांहै पदनि
रबांती कायामांहै मूलमहिरहे कायामांहै स
बकुछलहे कायामांहै निज निरधार कायामांहै
है अपरंपार कायामांहै सेवाकरे कायामांहै
ऊरऊरे कायामांहै बास करिरहे निरंतरछा
दाहपाया आदिघर मतगुरदीयादिघर
यामांहै अननैसार कायामांहै करे विचार
यामांहै उपजेपान कायामांहै लागे ध्यान
यामांहै अमरअसपान कायामांहै अत
कायामांहै कलाअनेक कायामांहै कर
क कायामांहै जागेरग कायामांहै कर
कायामांहै सरवरतीर कायामांहै कर
कीर कायामांहै कंचबनेन कायामांहै
बनेन कायामांहै कवलप्रकास कायामांहै
करबास कायामांहै नादकुरग कायामांहै
तिपतंग कायामांहै चात्रिगमोर कायामांहै
हचकोर कायामांहै प्रतिकरि कायामांहै
हचकोर कायामांहै प्रेमरस दाहगुरमुखि

कायामां है तारणहार। कायामां है उत्तरपार। कायामां है
मंदैश्चरतारै। कायामां है आपउवारै। कायामां है
हैश्चरतिरै। कायामां है हो ३३५॥ कायामां है
निपजेआश। कायामां है रहसमाश। कायामां है
लेकपाट। कायामां है निरंजनहाट। कायामां है
हेदीद्वार। कायामां है द्वेषणहार। कायामां है रां
रंगिराते। कायामां है प्रेमरसिमाते। कायामां है अ
बिलभरे। कायामां है नेहचलरहे। कायामां है जी
वैजीव। कायामां है पायापीव। कायामां है सदा
तंद। कायामां है परमानंद। कायामां है कुसलहे
। सोहसदेष्वाआश। दाहगुरमुखिपाशरे। साधक
हैसमजाश॥७॥ कायामां है देष्वांतर। कायामां है
रह्यापर। कायामां है पायातेज। कायामां है सुद
रसेज। कायामां है पुंजप्रकास। कायामां है सदा
उजास। कायामां है किलिमिलिसारा। कायामां है
सबधैत्यारा। कायामां है जोतिअनंत। कायामां है
। कायामां है बेलैरास। कायामां है विविधिविलास
। कायामां है जहिवजे। कायामां है नादकनिमा
जे। कायामां है सेजसुहगा। कायामां है मोटेताग
॥ कायामां है मंगलचारा। कायामां है जैजैकार।
कायाअगमअगधहै। मां है करबजाशदृश्य
गैटपीवतिल्या गुरमुखिरहेसमाश॥८॥ इति
कायेलीसंपूर्णः शतवसेस॥ निरमलनांदनलीया
जाश। जाके नागबडे सोईफलवाशटेमनमा
यामोहमदमाते ५

बिचकारमानिसनसांही सकलमतोरथसुद्वे
कांसकोधऐकलकल्पनां मैमैमेरीअतिअद
कार॥ ८॥ अतिनमानैकबहुं सदाकुसंगीपव
बिकार॥ अनेकजोधरदेरषवाले डल्लनइरिफ
नआमअपार॥ जाकेसागबडेसोईस लेपावे
दाहदातासिरजनहार॥ १॥ तघरिआवेनैसा
देरेहो॥ जोऊंवारलौतांके रे॥ टेरैलिदवस
मनेनिरखेतांजाऐ॥ बहुलोथईधरिआवेवाल्का
आकुलपाऐ॥ तिलतिलहोतोताफ्रीबाटडी
जोऊं॥ एतोरिआसूहेवाल्का॥ मुषडोधीऊं॥ ता
फ्रीदयाकरीधरिआवेरेवाल्का॥ दाहलोतांफ्री
छेरि॥ मकरिटाला॥ २॥ मोहनडमदीरघतंनि
वारि॥ मोहसंतावेबारबार॥ टेककांसकविनघ
रहेमाहि॥ ताथैगणनध्यानदोऊंदेनांहि॥ गति
मतिमोहनबिकलमोरा॥ ताथैचीतिनआवेनां
नोर॥ पांचोइंदरदेहपूरि॥ ताथैसहजसी
तरहेइरि॥ सुधिवुधिमैरीगईसाजि॥ ताथैनुम
सरेहोमहाराजि॥ ३॥ क्रोधनकबहुंतजेसंग
चेभावसजनकाहोइसंग॥ समकिनकाईम
फारि॥ ताथैचरनबिमुषनऐश्रीमुरारि॥ अ
जांमीकरिसहाइ॥ तैरोदीनडधितनयोजन
जाइ॥ त्राहित्राहिप्रभुतंदयाल॥ कहेदाहद
रिसंभार॥ ३॥ मरमोहनमरतिराबिमो
सबासुरिगुनरमोतोहि॥ टेकमनमीनहो
नालुकिनागोजलपेजाइ॥

सती मातौ अपारा काम अंधा जल हेत सार
मनांत राधा वकि परै अग्नि न देखै जपे जरे मन
मगा जपे सुनै नाद प्राण तजे यो जाइ वाद मन
मक्ष कर जै सै लु बधि बासा कबल बंधा वै हो स्ला
सा मन सा बाचा सरन तोर दाइ कौ राधो गो बि
द मोर दाइ। बड़ रिन की जै कपट काम दै दे जा
पि ऐरा मना मटे कह रि पाषे न ही कहुं ठाम पि व
बिन बड भड गां मगां सा तु मुराष ड जिय रा अय
ली मां मा अनत जिनि जाइ र ड बिश्राम। कपट
काम न ही की जै हां म र ड चरन कवल क ड रां म
नां मा जब अंतर जां मी रहे जां मा तब अषे पद जन
दाइ प्रां म रा त हां घेली पी व सौ नित ही फारा
दे धिस मी मेरे नागा टे त हां दिन दिन अति आ
नंद होइ। प्रेम पिल वै आ प सोइ संगिय न से तीर
मै रा मा त हां पू जा अर चा चरन पास त हां ब च
न अमो लिक सब दिसार त हां बर ते ली ला अति
अपारा अं गि देइ त ब मेरे नागा ति हित र वर फ
म अम र ला ग रा अल ब देव को ई जानै मेव
त हां लय देव की की जै मेव दाइ बल बलि ब
रवार त हां आप निरंजन निराधार ॥ द मो ह
न माली सह जिस मां नां कोइ जानै साध सु जा
नां टेक काया बां डी मां है माली त हां रा सब ना
या सेवा सौ स्वां मी ये लण को आप दया करि
आया ॥ बाहरि नी तरि सकल निर तरि सब
मै र द्या म मा है ॥

वगतलखान जाइ ता माली की अक थक हाथी
कहत कही नहीं आवे ॥ अगम अगोचर करै अन
दा ॥ दाइ ऐज सगावै ॥ ३७ ॥ मन मोहन मेरे मन ही म
हि ॥ की जै सेवा अति तहा ॥ टेक तहा पायो देव नि
रंजना ॥ प्रगट सरे हरि ऐत ना ॥ नैन निही देखो अ
घाइ ॥ प्रगट्यो हे हरि मेरे भाइ ॥ १ ॥ मोहि करि ते न
न की सैन देख ॥ प्रांन म सिहरि मोर लेइ ॥ तब उप
जै मो कोइ देवांति ॥ निज निरखत हो सारग प्रांन
॥ अंकर आवे प्रगट्यो सोइ ॥ बैन बांन ता थैला
गे मोहि ॥ सरयो दाइ रद्यों जाइ ॥ हरि चरण द्विषा
वे आप आइ ॥ टेक मतिवाले पंचौ प्रेम पूरि ॥ निम
ष नइत उत जाइ हरि ॥ टेक हरि सिमा ते दया दी
न ॥ राम रसत करे रहे लीन ॥ उलटि अपूवे न ऐ थीर
॥ अमृत धरा पीवहि नीर ॥ सहज समाधी तजि
बिकार ॥ अविनासी रस पीवहि सार ॥ थकित न ऐ
मिलि महल मां हि ॥ मन साबाचा आनना दि ॥ म
न मतिवाला रांम रंगि ॥ मिलि आस गिबे ठे एक स
गि ॥ अ मथिर दाइ ऐक अंग ॥ प्राणनाथ तहा प्र
मानंद ॥ ३८ ॥ इति राग वसंत संपूर्ण ॥ राग जै रे ॥
सतगुर चरण मसत धरण ॥ रांम रांम कहि ह्व
रतिरण ॥ टेक ॥ अव सिधिन वनिधि सहजै पावै
॥ अमर अंते पद मुख मै आवे ॥ ३९ ॥ भगति मुक्ति
बैकुंठ जाइ ॥ अमर लोक फल लेवै आइ ॥ पर
पदारथ मंगल चार ॥ साहिब के सब भरे नार
॥ नर तेज है जोति अपार ॥ दाइ राता सिरजन दा

॥ तनहीरांममनहीरांमारांमरिद्वैरमराधीले
मनमारांमसकलपरिपूरण॥ सहजसंदारसचा
धीले॥ टेक नैनारांमबेनारांमरसनांमसमारा
ले॥ श्रवनांसनमुखरांमरमितारांमविचारीले॥
॥ सासैरांमसुरतैरांमसबदैरांमसमाईले॥ अंत
रिंमनिरंतरिंमआतमरांमांधाईले॥ सरबैरां
मसगैरांमरांमनांमल्योलाईले॥ बाहरिरांमनातरे
रांमदाहरोबिंदगाईले॥ २॥ अिसीसुरतिरांमल्यो
लाशहरिद्विंदजेनिबीसरिजाशटेक छिनछि
नमातसंभारेपूत॥ बिंदराधेजोगीओधत॥ शिपार
कुरूपरूपकौरहे॥ नटणी॥ निरखेबंसबतचढे॥
कछिबद्वैधैधरेधियांन॥ चात्रियनीरधेमकीवाति
॥ कुंजीकुरलिसंभारेसोइ॥ नृंगीध्यांनकीटकौहो
इ॥ श्रवणोसबदज्जसुनैकुरग॥ जोतिपतंगानसो
रेअंगा॥ जलबिनसीनतलपिज्जसंभारे॥ दाहसेदगअ
सैकरे॥ ३॥ गुणरांमरहेल्योलाइ॥ सहजैसहज
मिलेहरिजोइ॥ टेक नौजलव्याधिलिपेनहीकब
रुंकरमनकोईलागेआइ॥ तीन्यंतापजरैनहीजि
परासोपदपरसैसहजसुजाइ॥ जनमजुरजोनि
नहीआवै॥ मायामोहनलागेतादि॥ पंचौपीडप्रा
णनहीव्यापे॥ सकलसोधिसबइहेउपाइ॥ संकु
टसंभानरकननैनहं॥ ताकौकबहुंकालनघाइ
॥ कंपनकाईसैभ्रमतागे॥ सबबिधिअिसीएकल
गाइ॥ सहजसमाधिगहोजे॥
सोइआदिनृंगीहोइकीटतांई॥

कदिघाऽ३॥ धन्यधं न्यतधणी तुम्हसौमेर
 आऽबाणी टे धनिधनित्त तारे जगदीश सुरन
 मुनिजनसेवैरस ॥ धनिधनित्त केवलरांसे
 मसहसमुषलहरितांसे ॥ धनिधनित्तसिजन
 दार तेराकोईनयावेपार ॥ धनिधनित्ततिरजन
 देव दाहतेराजघेनसेव ॥ ५ काजाणोमोहिक
 लेकरसी तनहितापमोहिछिननबिसरसी टे
 आगाममोपेजाणपूजजाऽ ॥ इहेबिसगिजियरेम
 हि ॥ मेनही जाणोक्यासिरिहोऽ ताथेजियराड
 रपेरोऽ ॥ कारुथेलेकचूकरे ताथेमश्याजीव
 डरे ॥ दाहनजाणोकैसैकहे तुम्हसरयांगति
 आऽरहे ॥ ६ काजाणोरांमकोगतिमेरी मेवि
 धईमनमानदीफेरी टे ॥ जेमनंगेसोईदीन
 जातादेधिफेरितहीलीन ॥ देवाहंदरअधिकप
 सारे ॥ यंचौपकरिपटकिनहीमारे ॥ इनबाततिघ
 टनरेविकारा ॥ विज्ञातेजमोहतहीहाराऽ ॥ इन
 हिलागिमेसेवनजाणी ॥ कहिदाहसुगिकरमा
 कहाणी ॥ ७ ॥ डुरिरेडुरिरे ॥ ताथेरांमनांमचित
 धरिरे टे ॥ जितियेयंचपसारे ॥ मारेरेतेमारे ॥ क
 छिबजंकरिलीरे ॥ जीयेरेतेजीरे ॥ मंगीकीटस
 मांनारे ॥ ध्यांनारेयहध्यांनारे ॥ अर्जसिधज
 हिरे ॥ दाहदरसनलहिरे ॥ ८ ॥ तहांमुकव
 मीनकीकोनच लावे ॥ जाकोअजहंमुनिमह
 नपावे टे ॥ सिवबिरंचनारदजसणावे ॥ कोन
 नकरिनिकटिबुलावे ॥ देवाभकलतेतीसोव

शिरहे हर बार ठाट कर जो रिश सि ध सा धि कर हे
ल्यो लाइ। अजरुं सोटे मह चन पाइ। सब थें नी
बमें नो वन जा ना। कहि दाइ कूं मिलै सया ना।
॥१॥ तुम्ह बिनु कहि कूं जीवन मेरा। अजरुं नर
देष्या दरसन तेरा। टेक दोह दया लदीन के दा
ता। तुम्ह प्रति प्ररण सब बिधि साधा। जो तुम्ह क
रो सोई तुम्ह छाजै। अयगें जन कौं काहे नति वा
जै। अकरा करण त्रै सैं अब की जै। अयनों जा
निक रिदरसन दी जै। दाइ कहै सुन ऊहरि सोई
॥ दरसन दी जै मिलो गुं सोई ॥१॥ कागार करे क
परिबोले। पाइ मास अरु लग हो डोले। टेक जात
न कौं रवि अधिक सवारा। सोत न ले साटी में दारा
॥ जात न देधि अधिक नर फले। सोत न बाडि च
ल्यारे झले। जात न देधि मन में गरबां ना। मिलि
गया माटी तति अति मां ना। दाइ तन की कहा
बडाई। निमधमां हि माटी मिलि जाई ॥१॥ ज
पि गो बिंद बिभरि जिनि जाइ। जनम सुफल करि
निस दिन ध्याइ। टेक हरि सुभिरास्य है त लगा
इ। न जन प्रेम जस गो बिंद गाइ। मनिषा देह मुक
ति कधारा। राम सुभरि जग सिर जन दारा। जब
लग बिषम व्याधिन ही आई। जब लग काल काया
न ही षाई। जब लग सब दयल टिन ही जाई। तब
लग सेवा करि राम राई। औ सरि राम कह सित
ही लोई। जनम गया न बक है न कोई। ज. बलग
जो बित बलग सोई। पीछे फिरि पछितावा होई

विजागोतेद सकलदेवपतिसेवाकरे मुनिअ
नेक एकचितधरे चित्रविचित्रलिपेदरवार भरमार
रवाटेगुणसार रिधिसिधिसी आगेरहे चारि
पदार्थजीजीकहे सकलमिधरहे लोनाइ सब
परिपूरणअसौराइ बलकषजीनामरेमंडार
ताधरिखरतेसबसंसार पूरदिवांसस हजसब
दे सदातिरजनअसौहे नारदगांनगुगोबिंद
सारदकरैसबछेद नटवरनाचैकलाअनेक
आपनदेवैचरितअलेष सकलसाधवाजैनीसा
नजेजेकारनमेठेअंत मालनिपुंड्रपअवारहमा
र आपणादातासिरजनहार असौराजासोईआ
हि चौदहमुवनमैरह्योसमाइ दाहताकीसेवाक
रे जितियंडरविलेअधरधरे ४१६ जवयंडमै
मेरीजाइ तबदेषतवेगिमिले रांगराइ ते मैमैमे
तबलगाइ रि मैमैमेटिमिलेतरपूर मैमैमेरीतब
लगानाहि मैमैमेटिमिलेमनसाहि मैमैमेरीनप
वेकोइ मैमैमेटिमिलेजनसोइ दाइ मैमैमेरीमे
टि तबत्तजागिरांससोतेटि २० नांदीरमना
हारे सत्यरांससबसां हारे ते नांदीधरतिअका
सारे नांदीपवनप्रकासारे नांदीरविसमितारा
नहीपावकपरजारारे नांदीपंच सारारे नां
संबसंसारारे नहीकषाजीवहमारारे नहीबा
कोतिगहारारे नांदीतरवरचापारे नहीपंड
मायारे नांदीगिरवरबासारे नांदीसमंदनिव
मारे नांदीजलय लषंडारे नांदीसबब्रह्म

नंदां आदि अंततरे दाहरां सरहंतरे ४२१ अ
नहकहो मावेरां मकहो ॥ डालनत जो सब मलगहो
टे अलहरां मकहिकरंदहो ॥ फटे मारगिकहाव
हो ॥ साक्ष संगति तो निबहो ॥ आश्वरै सो सीम सहो
काया कवल दिलला सरहो ॥ अलख अलादी दरल
हो ॥ सतगुर का मुं गि साध अहो ॥ दाक्ष कचे पार पहे
॥ २२ ॥ ह्यं हतुर कन जागो दो ॥ सोई सब निका
मोई हरे ॥ और न ह जा देखो को ॥ टेक की टप तंग
सबे जो निनिमै ॥ जल थल संगि समांतां सो ॥ पीर पेक
बर देवादां गव ॥ मार मलिक मुनि जन को सोहि ॥ क
रता हरे सोई चीन्हो ॥ जिन वै को धकरै रे को ॥ जिसे
आर सीमं जन की जे रां सरही मदेही तन धो ॥ सोई
करी सेवा की जे ॥ पापौ धन काहे को धो ॥ दाहरे जन ह
र ज पि जी जे ॥ जन सि जन सि जे मुर जन हो ॥ २३ ॥
को स्वांमी को सेवक हो ॥ इस धनि ऐकां सर सत कोई
न हो ॥ टेक कोई रां म कोई अलह मुनावे ॥ पुन्य अलह
रां म क भेदन लावे ॥ कोई ह्यं ह कोई तुरक करि मां
नै ॥ पुनि ह्यं हतुर के कीष बरिन जां नै ॥ २४ ॥ सब कर
णी ह्यं वेदा ॥ सम कि परीत बयाया मेद ॥ दाहदे
मे अत्र म एक ॥ कहि बा मुनि वा अनत अनेक ॥ २५ ॥
नी दत हे सब लेक बिचारा ॥ हम को मावेरां म पि
यारा ॥ टेक निर सं सै निर दोष लगवै ॥ ताथें मो को
अचिर ज आवै ॥ इ बिधा वै पपर ह ताजे ॥ नास नि
क हें ग ए रे ऐ ॥ निर बैरी निह का म
रि देत ब डत अ प ग म ॥ २६ ॥

तास निक दत करत अति मान न्ये द्या असुंति
कै तोले तास के दे अपवा दे बोले दाहति द्या
ता को नावे जाके दै रांस न आवे ४॥ २५॥ माफो
सुं जे हो आपो तां फो छे तू नै आपो टे श्रवजी
वनो तं दातार ते सिरज्या नै तं प्रत्यपाल तत धन
ता फो ते दीधो दोता फो नै ते कीधो म ऊवे ना
फो साचो ये मे नै मा फो ऊवो ते दाहने म नि
जोरन आवे तं करताने तं ही जु भावे २६॥
ओसा ओधरांस विपारा प्राण विडु धै रहै ति
यारा टे जब लग काया त बल रा माया रहै ति
रंतर ओधराया अठ सिधिताई नो निधि आई
निक टिन जाई रांस उदाई अमर अने पदवे
कुंठ बास बाया मारहे उदास सोई सेवग सब दि
बलवे दाह जाह धिन आवे २७॥ तं साहिब
मे सेवग तेरा भावे सिरदेसूली मेरा टे भावे च
र व त सिरपरि सारि भावे ले करि गार दनि मा
र भावे च ऊं दि सि अग्निलगाइ भावे गिरव
गगन गिराइ भावे दरिया मं दि बहाइ भावे
कनक कसौ टी देऊ दाह सेवग कसिक मिले
ऊ २८॥ काम जोधन आवे मेरे ताये मे अट
पाया तेरे टे भरम करम जा रिस बदी तां रम
रांस सब निमै चीन्हा उबि धा डर मति हरि गाव
ई रांस रमत साचे मति आई चम धाम
को नां हो देखो रांस सब नि दा
मति मे मोई ने

हांजिरां दज्जर सांई। है हरि ने डाइ रितां ही। ठेक
 मनी मेदिम हल मे पावे। काहे धी जण हरि जावे।
 ॥ हरि सने होइ गुसास बषाई। ताथे संपां हरि न जा
 ॥ ३२ ॥ इई हरि दरोग न होइ। मालिक मन मे देखे सो
 ॥ ३३ ॥ अरि ऐपंच सो धिस बमारै। दाइ देखे निकटि वि
 चारै। ॥ ४॥ ३० ॥ रां सर म त देखे न ही कोइ। जो देखे सो प
 वन होइ। टेक बाहरि तीरि ने डान हरि। स्वांसी सब
 लर ह्या सर पर। जहां देखे तहाइ सर नाहि। सब धा
 टि रां ससां नां मां हि। जहां जां तहां सोइ साथ। ॥ ५
 ॥ रिह्या हरि त्रिभुवन नाथ। दाइ हरि देखे सुख होइ
 ॥ निस दिन निरंगा दीजे सोहि। ॥ ३१ ॥ मन पवन ले उ
 न मति रहै। आगम निगम मूल सो लहे। टेक पचवाइ
 जे सहजिस मावे। ससि हर के धरि आणें सर। सीतल
 सदा मिले सुख दाई। अनहद सब द बजावे तर। बंक
 मालि सदा रस पावे। तब यऊ मन वां कही न जाइ।
 बिगसे कवल ईश जव जय जे। ब्रह्म जीव की करे स
 हाइ। बिसि गुण में जोति बिचारै। तब ताहि स्फुटि
 मुवन राइ। अंतरि आप मिले अबिनासी। यद आन
 द काल न ही पाइ। जामरां मरग जाइ नो ताजे।
 अबरण के धरि वरण समाइ। दाइ जाइ मिले जग
 जीवन। तब ऊ आवागन बिलाइ। ॥ ३२ ॥ जीवनि
 मरी मेरे आत्म रां मा। भाग बडे पायो निज वां स। टे
 ॥ सब द अनां हद जय जे जहां। सुख मन रंग ल गावे
 तहां। तहां रंग लाये निरमल होइ।
 जे सोइ। सरवर तहां हंसार है।

धलहे सुबदाई को तैत ऊ जोइ ॥ त्पत्तं मनि अति आ
 नंद होइ ॥ सोहं सासर नागति जाइ ॥ सुंदरि तहां पषा
 ले पाइ ॥ पीवै अम तनी ऊरनीर ॥ वेठे तहां जगत गु
 रपीर ॥ तहां माद प्रेम कीस जा होइ ॥ जापरि कया
 जां नै सोइ ॥ कृपा करी हरि द्वे उमंग ॥ ताज निपायो ति
 र सै संग ॥ तब हंसा मनि आनंद होइ ॥ बसत अगो व
 र ॥ लखै रे सोइ ॥ जा कौ हरी लषा वै आप ॥ ताहि न लि
 पे पुन्यं न पाप ॥ तहां अनंद दवा जे अहुत घेन दी
 यक जलै चाति बिन तेल ॥ अंबे डु जोति तहां मयो प्र
 कास ॥ फाग बसंत गुबार हमास ॥ त्रिप्र अस्थान ति
 रति निरधार ॥ तहां प्रभु वैठे सम प्रसार ॥ नैन ऊन
 यो तो सुष होइ ॥ ताहि पुरि सकौ लषेन कोइ ॥ जे
 सा है हरि दीन दयाल ॥ सेवग की जानै प्रतिपाल ॥ च
 लुहंसा तहां चरन समांत ॥ तहां दाइ पऊ चैपरि द्वा
 न ॥ ३३ घटि घटि मोपी घटि घटि कांरु ॥ घटि घटि
 रांम अमर अस्थान ॥ टे गंगा जमुनी अंतर बंद सु
 रस तीनीर बंदै पर सेद ॥ कुंज के तितहां परम बिला
 स ॥ सब संग ॥ मिलि बेलै रांम ॥ तहां बनि बेना बाजेत
 रा ॥ बिगसै कवल चंद अरु सर ॥ परण ब्रह्म परम
 परकास ॥ तहां निज देखै दाइ दास ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥
 तेरुं संपन ॥ अष्ट राग ललत लिखत ॥ रांम तमे रा होतो
 रा ॥ पांइ न परत निहोरा ॥ तेज ऐकै संगै वासा ॥ तुम्ह
 ठा कुर मै दासा ॥ तन मन तुम्ह को देवा ॥ तेज पुं
 दम लेवा ॥ रस मां है रस होवा ॥ जोति सरूपी जो
 वा ॥ ब्रह्म जीव का मेला ॥ दाइ नर अकेला ॥ ३७ ॥

[illegible]

॥ ५ ॥ सिहरवान सिहरवान आबबादयाकआत
 स आदमनीसान टे सीसपावहाथकीये नैन
 कीऐकोन मुषकीयाजीबदीया राजिक रहिसान
 मादरपदरपरदपोस साई सुबहां न संगिहै
 दसतगहै साहिबमुलतान ॥ याकरीसप्रारहीम
 दानां दीवान पाकनूरहै हजर दहदेरोन ॥
 ॥ इति जलित से पूरगा ॥ राग जैतली ॥ तेरेनां उंकी ब
 बलिजांउं ॥ जहां रहौ जिसचांउं ॥ टे तेरबैनोंकी
 बलिहारी ॥ तेरेनैन ऊ ऊपरिवारी ॥ तेरी सरतकी
 बलिकीनी ॥ दारिबारिहो दीती ॥ सोनितनरतुम्हा
 रा सुंदरजोतिउजारा ॥ मीठां प्रांत पिपारा ॥ तंदे
 यीबहसारा ॥ तेजतुम्हारा कहिये ॥ निरमलकाहे
 नलहिये ॥ दाहबलिवलितेरे ॥ आबपीयाकमेरे ॥
 ॥ मेरेजिय कीजांनै जंनरा ॥ तुम्हें सेवगकहा
 डरा ॥ टे जलबितजैसैं जाइ जीयतलपत ॥ तु
 म्बिनतैसैंहमबिहाइ ॥ तनमनब्याकुलहोइ
 निरहनी ॥ दरसपियासीप्रांतजाइ ॥ जैसैंचितव
 कोरचंदमन ॥ अैसैं मोहनदमहिआदि ॥ बिरह
 अमनिदहतदाहकै ॥ दरसनपरसनतनसिरा
 ॥ ॥ ॥ इति जलित सीपूरगा ॥ अथ राग धुनासरी
 ॥ रंगलागोरेरांसको ॥ सोरंगकदेनजाइरे ॥ टे अ
 दिनासीरंगऊपनौ ॥ रचमचिलागोचोलोरे ॥ सो
 रंगसदासुहावणो ॥ अैसोरंगअमोलोरे ॥ हरि
 कदेनऊतरे ॥ दिनदिनहोइसुरंगोरे ॥ नि त
 नवौ निरबाणहै ॥ कदेनकैलानंगोरे ॥ साचो
 नैजो ॥ मंदरंगअपारोरे ॥ भागवि

रूप पाईये॥ सब रागों में सारोरे॥ अब राग का काव
 रणियो में राग सहज सरूपोरे॥ बलिहारी उ सरंग
 की॥ जन द्वा द्वे बिअन पोरे॥ ॥ १॥ ल गिर द्यौ म
 न रां म सौ॥ अब अनंत नंदी जगरे॥ अचला सौ धिर
 कै र द्यौ॥ स कै न चित डुला एरे॥ टेक ज्यं फुनिंग चंद नि
 रहे॥ परम ल रहै लुभा एरे॥ तं सन मेरा रां म सौ॥ अब
 की बेर अघा एरे॥ म वर न छा डै वास को॥ कवल
 हिर द्यौ बंधा एरे॥ तं सन मेरा रां म सौ॥ बेधिर द्यौ दि
 त ॥ ला एरे॥ जल बिन मी न न जी व क्षी॥ बिछुरत ही
 म री जा एरे॥ तं सन मेरा रां म सौ॥ ऐसी प्रीति बना एरे
 ॥ ज्यं चात्रिग जल को र टै॥ पाव पीव करत बिहा एरे
 ॥ तं सन मेरा रां म सौ॥ जन द्वा द्वे त लगा एरे॥ ॥ २॥
 मन मोहन हो कछि न बिरह की पीरा॥ सुंदर दर स
 दिषाई एरे॥ टेक सुन ऊन दीन दया ल॥ तव मुख बें
 न सुनाई एरे॥ करणों में किरया ल॥ सकल सिरा म
 गा आई एरे॥ मय जीवनि प्रांत अक्षर॥ अविनासी
 उर लाई एरे॥ अब हरि दर सन देऊ॥ दाइ प्रेम बटाई
 एरे॥ ॥ ३॥ कत कर रहे हो बदे सा॥ हरि न ही आये हो ज
 न म सिरा नौ जाइ॥ पीवन ही पाये हो॥ टेक विपति
 हमारी जाइ॥ हरि सौं कौं कहै हो॥ तुम बिन नाथ
 अनाथ॥ बिरह निक्कर है हो॥ पीव के बिरह बिछो
 ग॥ तन की सुधिन ही हो॥ तन पितल पिजीव जाइ
 मृतक कै रहै हो॥ उषित मद्रह म नारि॥ कब ह
 री आवै हो॥ तुम बिन प्राण अक्षर॥ ग.
 हो॥ प्रगट ऊदी म दया ल

तनमनमवाकुल होत है दरसदिखावो आइ
नैनरदेष्य जो वता रोवत रै सि बिदाइ बाल
नेही कब मिले जो पेर द्यात जाइ छिन छिन
अंगि अतल दहे हरिजी कब मिलि है आइ अतर
तांमी जोगिकरि मेरे तन की तप तिलु जाइ तुम्
शता सुषदे त हो हां हो सुणि दी न दया ल चो है न
न उताव ले हां हो कब देखौ लाल चरन कवल
कब देखि हो सन मुख मिरजनहार साइ संगिस दार
हो हां हो तब भाग हमार जीवनि मेरी जब मिले
हां हो तब ही सुष होइ तन मन में तं ही वसे हां हो
कब देखौ सोइ तन मन की तं ही लखे हां हो सनि
तुर सु जान तुम् देखे बिन क्यूर हो हां हो मोहि ला
गो बान बिन देखे इष पाइए हां हो बबिलंबन
लाइ दाइ दरसन करनै हां हो सुष दी जे आइ
१५ सुरजन मेरावे की है पारल हां जे सुरजन घ
रि आइ दे दिक्क हां ला कहां १६ तो बाजें मे को
चैन न जावे एइष की दक हां जे तो बाजें मे को नि
इन जावे अंधिया नीर मरां जे तं मे को सुजन
देवे सो हो सी सहां जे जन दाइ सुरजन जावे
दरगद सेव करां ६ एषु हिय ऐस वसोग बिला
सन तैं स डबा जो छत्र संघासन टे जन तिहरा
निसत न जावे लाल पलिंग क्या की जे माहिलो
इहि से ज सुषा सया मे को देख ग दै जे बैकुंठ सु
कतिसरग क्या की जे सकल भुवन न ही नावे
छिय ऐस बमंड पक्का जे जे घरिकं तुन जावे लो
मनं कंषे क्या की जे मे बिरही जन तेरा दाइ

मनदेवणदी जै॥ ऐसुणिसाहिबमेरा ३०॥ अलाआ
मिकांझमांता॥ सिसतदोजकदीनडनियं॥ चि कारे
हिमांता॥ ऐकमीरसीरीपीरपीर॥ फरेसजांफुरमांन
॥ आवआतसअरसकुरसी॥ दीदनीदीवान॥ हर
इआलमखलकषांता॥ मोमिनांइसलाम॥ हजाहा
जीकजाकाजी॥ धांनत॥ सुलितांत॥ इलमआलम
मुलिकमालुमा॥ हाजतेहेरांन॥ अजबपारांखबर
दारां सरतेसुबहान॥ अवलिआधरिएकतंहें
जिंदहेकुरवान॥ आसिकांदीदारदाह॥ नरका
नीसांता॥ ८॥ अलातेराजिकरफिकरकरतेहैं
आसिकांमुसताकतेरे॥ तरसितरसिमरतेंहैं॥ टे
बलकषसेद्वारंनेस॥ बैठेदिनसरतेहैं॥ दां इमद
रबारतेरे॥ गौरमहलडरतेंहैं॥ तनसहीदमनसह
दारातिदिवसजरतेहैं॥ प्यांनतेराध्यांनतेरा॥ इसक
आगिजरतेहैं॥ जांततेराज्यंदतेरा॥ पांऊं॥ सिरध
रतेहैं॥ दाहदीयांनतेरा॥ जरखरीदघरकेहैं॥ ९॥
मुषिबोलिस्वांमी॥ अंतरजांमी॥ तेरासबदसुहावें
रांमजी॥ टेक॥ धेतचरावनबेतबजांवन॥ दरसदि
षावनकांमती॥ बिरहउयावनतपतिबुजावन
॥ अंगिलगांवतमांमिती॥ संगिधिलावनरासबनां
वनगांपीनांवतमूधरा॥ दाहताराणडरतिनिवा
रण॥ संतसक्षरणरांमजी॥ १०॥ हाथदेहोरांमां
॥ तुमसबपूरणकांमां॥ होंतौउरकिरहोसंसार
टेक॥ अधकूपगदमेंपस्यो॥ मेरीकरऊंसंमाल॥ तु
मबिनहजाकोनहैं॥ मेरेदीनांनाथदयाल॥ मा

कोसंकेतही दहदिसिमायाजाल कावपमि
सिखंधियो मेरोकोईनबुडावण हार रांसवि
गोबूटेनही कीजेबहुतउपाइ कोटिवापसुरके
पही अधिकअलूतजाइ दीनडुषीतुमुदेष
मो मोडमंजनरांम दाइकहैकहोपदे तुमस
बपूराकांसध ११ जिनिछाड़ेरोमजिनिछांमैह
महिबिसारिजिनिछाड़े जिपजातनलागेबारजि
निछाड़े दे माताकंपबालंतजे सुतअपराधीहो
इ कबहुंनछाड़ेजीवथै जिनिडुषपावेसोइ वा
कुरदीनदयालहै सेवासदाअचेत गुनओगुणह
रिनांगियो अंतरितासोहेत अपराधीसुतसेवण
तुमहोदीनदयाल हमथैओगुणहोतहै तुम
पूराप्रतिपाल जबमोहनप्राणीचले तबदेहा
किहिकांस तुमजांततदाइकहै अबजिनिछाड़े
रांस १२ बिषमबारहरिअक्षर करणाबहुता
मी भगतिनाइवेगिआइ मीडयजनस्वामी दे
अतिअरसंतसक्षर सुंदरमुखदाइ कांसकोधक
लम्बसत पाटोहरिआइ पूराप्रतिपाल कहि
ये सुमस्याथैअबै भरमकरममोहलागे काहेन
बुडावे दीनदयालहोहकपाल अतरजामीक
हिए एकजीवअनेकलागे कैसेडुषसहिए पाव
पीवचरतसरन जुगिजुगितेतारे अनाथनाथ
इके हरिजीहमारे १३ साजनिघांतेहनतोर
जेहमतोरैमहापराधी तंतूजेरीर ट प्रेमबिन
रसफीकालागे मीठामकरनहोइ सकलसि

माणिसबथेनीका॥ कडवाजागोसोई॥ जबलगप्रति
 प्रेमरसेसांही॥ त्रियाबिताजलत्रैसा॥ सबथेसुंदर
 कजमीरसे॥ होइहलाहलजेसा॥ सुंदरसाईधरा
 पियारा॥ नेहनवांतिहोवै॥ दाइमेरातबमनसांते
 ॥ सेजसदासुखसोवै॥ १४॥ काइसांकीरतिकरौली
 ॥ तंसोदोदातार॥ सबतैसिरजीडासाहिबजी॥ तंसो
 दौकरतार॥ टेक॥ चौदहभवनसांतेधंडे॥ घडतन
 लागेवारा॥ पापैउथपैतंध॥ यी॥ धनिधनिभिरजन
 हार॥ धरतीअंबरतैधस्या॥ पांणीपवनअपरा॥ चं
 दसरदीपकरच्या॥ रेंगिदिवसबिसंतार॥ ब्रह्मा
 संकरतैकोया॥ बिह्नदीयाअवतार॥ सुरनरसाध
 भिरजिया॥ करिलेजीवविचार॥ आपनिरुजनकै
 रसो॥ काइमोंकोतिगहारा॥ दाइनिरागुणगुणक
 हैजांकंलीहोबलिहार॥ १५॥ जीधरागंभजनक
 रिलीजो॥ साहिबलेषामागोरे॥ ऊतरकैसेदीजोटे
 क॥ आगेजाइयहैतावनलागो॥ पलपलयडतनछी
 जो॥ ताथेजीयसमजोइकहोरि॥ सुकतअवथेकी
 जो॥ सगिरहैजंतजी॥ दाइदासजंतकभलीजै
 हरजीकीरसिरसीजै॥ १६॥ का॥ लकायागढनेल
 सी॥ छिंदसोडवारोरे॥ देखतडुंतेलटिरे॥ होसाहा
 हाकारोरे॥ टेक॥ नाइकनगरनैमैसी॥ एकलडोतेजा
 इरे॥ संगतसाथीको॥ आइसी॥ तिहांकोजांणैकिमथा
 इरे॥ सतजतसाधोसाफासाईडो॥ कं॥ तन २॥
 सारोरे॥ सारगिदियमेंचालिवो॥
 गोरे॥ जिसतीरनिबांणांठाहरै॥

समथमोईमोदो तोकायानलागेकालार
रे॥ दाहधिरमनआणिये तोनिहचलधिरधारो
प्राणीनेप्ररोमिले तोकायानमेल्हीरे॥ १७ ॥ डरिरे
रेरुप्ररमेस्वरथेडरिरे॥ लेपलेवेतरिमरिदेवे ताते
बुरजकरारेडरिरे॥ ठे साचाजीजीसाचादीजी सा
चासोदाकीजीरे॥ साचागधीऊठानांधी॥ बिषतपीजी
रे॥ निर्मेलगहिएनिरमलनरहिए॥ निर्मेलकहिएरे
॥ निर्मेलजीजीनिरमलदीजी॥ अततनबहिएरे॥ सा
हियठापावतिजनआया॥ जिनिडहकावेरे॥ ऊठन
मावेफेरिपठावे॥ कीपापवेरे॥ पपडहेलाजाअ
केला॥ मारतलीजेरे॥ दाहमेलाहोअमुहेला॥ सोकुछ
कीजीरे॥ १८ ॥ डरिरेडरिरे॥ देखिदेप्रपगधरिये तारे
तिरियेसारेमरिये॥ लाथैगरबनकरिरेडरिरे॥ ठे
देवेलेवेसमथदाता॥ सबकुछछाजेरे॥ तारेसारेग
रबनिवारै॥ बिठागाजेरे॥ गधेरहिएबाहेबहिए॥ ऊ
नततलहिएरे॥ मातेघडेसबारेआये॥ असाकदि
एरे॥ निकटिबुलावेहरिपठावे॥ सब बनिआ
रे॥ पाकेकाचेकाचेपाके॥ ज्येमनिमावेरे॥ पाव
चनकंचनलोहा॥ कहेसमजवेरे॥ समिहरसू
सूरतैसमिहर॥ परगटघेलेरे॥ धरतीअंबअअर
रती॥ दाहमेलेरे॥ १९ ॥ मनसामनसबसुरति॥
चोधिारकीजे॥ एकअंगसदासंग॥ सहजेरमपीजे
दे॥ सकलरहितमूलगहित॥ आपानहीजाने
तरगतिनिरमलति॥ एकैमनिमानै॥ हृदयेसुधा
मलबुध॥ परतपरकासै॥ रसनातिजनवतिर

अंतरगतिबोसे॥ आत्ममक्षिपूरगागति॥ प्रमत्तग
 तिराता॥ संगतगलितअरसपरसा॥ दाहरसिमाता
 २२॥ गोखिंदकेचरतोंही॥ ल्यो॥ जाऊ॥ जेमेंचात्रिग
 बनमेंबोले॥ पीवपीवकंधांकुं॥ टेकसुरिजनमेरी
 सुनऊबीनती॥ मैंबलितेरेजांकुं॥ विंपतिहमारीतो
 हिसुनांकुं॥ देवरसनकुंहीपांकुं॥ २॥ जातइषसुषु
 पजततनको॥ तुमरुसरतागतिआंकुं॥ दाहकोद्व्या
 करिदीजे॥ नाउंतुमरारोगांकुं॥ २॥ प्रेममगतिवि
 नरहोचजाई॥ परगटदरसनदेऊअघाई॥ टेक॥
 तालाबेलीतलफैमांही॥ तुमरुबिनरामजीपरजक
 नांदी॥ निसबसुरिसनरहेउदासामें॥ जनव्याकुल
 सासउसासा॥ एकमेकरसहोइनआवे॥ तापेंप्रो
 गबहुतइषपावे॥ अंगसंगमिलियऊसुषुदीजे॥ दा
 हरामरसांइनपांजे॥ २॥ निसघरिजानांवे॥ जहांवे
 अकलसरूपा॥ सोईअबध्याइऐरे॥ सबदेवतिका
 मय॥ टेकअकलसरूपपीवका॥ बांनवरननपाइ
 रे॥ अषंडमंडलमांहिरहे॥ सोईप्रातमगाइरे॥ गा
 वऊभनविचारंवे॥ मनविचारासोईसारा॥ प्रग
 टपीवतेपाइरे॥ सोईसेतीसंगसाचा॥ जीवततिस
 घरिजाइरे॥ अकलसरूपपीवका॥ कैसेकरियांन
 पिये॥ सुन्यमंडलमांहिसाचां॥ नैनसरिसोदेधिये॥ दया
 लीचनसारिवे॥ देधोलोचनसारिसोई॥ प्राटहोई
 फेअचंनपेधिये॥ दयावंतदयालयेसो॥ बरगाअनि
 बिसेधिये॥ अक
 ईजनजेपावई॥ दयावंतदयाल
 जागच

अगमबैतसुनावही॥ सबइषमागारंगलागा
 काहेनमंगलागावही॥ अकलसरूपपीवका
 करिकैसैकरिआणिये॥ तिरंतरतिरक्षरआये॥ अ
 तरिसोईजाणिये॥ जोराइमनबिचारावे॥ मनबि
 चारासोईसारा॥ सिधरिसोईबधाणिये॥ श्रीरंगसे
 तीरंगलागा॥ दाइतोसुषमाहिये॥ २३॥ रामतहां
 प्रागटरहेनरपूर॥ आत्मकवलजहां॥ प्रमपुरि
 भूतहां॥ किलिमिलिकिलिमिलिनूर॥ तेबंद
 सरमध्यामाइ॥ तहांबसैरभराइ॥ गंगजमुनके
 तीर॥ त्रिवेणीसंगमजहां॥ तिरमलबिसलतहां॥
 निरषितिरषिनिजनीर॥ आत्माउलटिजह
 तेजउजरहेतहां॥ सहजिसमाइ॥ अगमतिगत
 अति॥ तहांबसैप्राणपति॥ परमिपरमितिजआ
 २२॥ कोमलकुसुमदल॥ निराकारजोतिजलवार
 नपार॥ सुनिसरावरजहां॥ दाइहंसारहेतहां॥ बिल
 सिबिलसितिजसार॥ २४॥ गोबिंदपादामनिमाया
 अमरकीयेसंगिलीऐ॥ अषेअतैहांनदीये॥ छाया
 नहीमाया॥ टेक॥ अगमगगनअगमत्तर॥ आममचं
 दअगमसर॥ कालजालरहेहरि॥ जीवनहीकाया॥
 आदिअतिनहीकोशरातिदिवसनहीहोइ॥ उदै
 असतनहीदोइ॥ मनहीमनलाया॥ अमरगुरुअ
 मरपांत॥ अमरप्ररिषअमरध्यान॥ अमरब्रह्मक
 मरपांत॥ सहजिशुनिआया॥ अमरनरअमरसार
 अमरतेतसुषनिवास॥ अमरजोतिदाइदास॥ सा
 कलनुवनराया॥ २५॥ रामकीरातीमईमाती॥ लो
 कबेदबिधिनदे॥ भागेसबसरसत्तेद॥ अमृतरसप

मरकतिवा रे॥३॥ तिराकारतेरी आरती करे ब्रह्मा
मुवनके रा॥३॥ सुरतरसब सेवा करे ब्रह्मा
सतमहेस॥ देवतुस्फारासेवन जाते धारतया
सेस॥ चंदसर आरती करे नमोतिरेजन देव
धरतिपवन आकास अराधे॥ सबे तुस्फारी सेव
सकल मुवन सेवा करे॥ मुतियर सिध समाध
दीतली तछे रहे सतजन॥ अविगतिके अराध
३ जे जे जीवने रांमहमारी॥ भगति करे लोच
६ तिराकार की आरती की जे॥ दाद बलि बलि
जा॥३॥ तेरी आरती ऐ॥ जुग जुग जेने कार
दे॥ जुग जुग आन मरां॥ जुग जुग सेवा की
जिये॥ जुग जुग लंघे पार॥ जुग जुग जगपति
को मिले॥ जुग जुग तारण द्वार॥ जुग जुग दर
सत देखी ऐ॥ जुग जुग मंगल चार॥ जुग जुग
दा॥३॥ अति श्री कृष्ण मीत
३५६॥ सवद ४३॥ सगरी सति॥
३५६॥ गुरदेव को अंग॥
कबीर सत गुर सवान को मगा॥ सोध सवीन
हरिजी सवान को हित॥ हरि जन सहे जा
॥ कबीर बलिदारी गुर आपणो॥ दोहा
बार॥ जिनि मांतिष ते देवता की या॥ व
लागी बार॥ कबीर सत गुर की मति
नंत॥ अतंत की या उपगार॥ लोचन
धाड़ीया॥ अतंत दिषां चरा द्वार॥ जि
मतीया॥ सत की नार सरीर॥

पार्श्वचारन्त॥ यंकहेदासकबीर॥॥ कबीररांस
गि॥ निकोपेठंतरे देवेकोकुचगोहि॥ कपालगुरुसं
तोषये॥ होसरहीमनसांदि॥॥ कबीरसतगुरकेस
दिकेकरों॥ दिलअपणीकासाच॥ कलिजुगहमसो
लडिपड्या॥ मुकसमेराबासा॥॥ कबीरसतगुर
नईकसांराकर॥ बादनलागातीर॥ एकजुबाह्या
पीतिसों॥ नीतरिरदासरीर॥॥ कबीरसतगुरमा
चासरिवा॥ सबदजुबाह्याएक॥ लागतहोतैम
लिया॥ पड्याकलेजढेक॥॥ कबीरसतगुरमा
स्याबांरासरि॥ धरिकरिसूधीमठि॥ अंगिउधाडे
लगीया॥ गईइदासफटि॥॥ कबीरहसेनबोले
उनमनी॥ चंचलमेल्पासारि॥ कहेकबीरनीतरि
नित्या॥ सतगुरकेहथियार॥॥ कबीरगुरगुरुवा
बाबलौ॥ बहाराहुकोति॥ पांकुथेंपंगुनभया॥ स
सगुरमास्याबांनि॥॥ कबीरपीछेंलागाजाइया
॥ लोकबेदकेसाथि॥ आगेपैसतगुरमित्यादीप
कदीयाहाथि॥॥ कबीरदीपकदीयातेनसुरि॥ बा
तीदईघट॥ परकीयाबिसांरुणां॥ बडुनिआदो
हाट॥॥ कबीरग्यांतप्रकास्यागुरमित्या॥ सोजिति
बीसरिजाइ॥ जबगोबिंदकृपाकरी॥ तबगुरमि
लियाआइ॥॥ कबीरगुरगरवामित्या॥ र॥ लिग
आटेल्ग॥ जातिपांतिऊलसबसिटे॥ नावध
रैमोकोरा॥॥ कबीरजाकागुरनीअंधला॥ चेला
हेजाचंध॥ अंधअंधाटेलिया॥
॥ कबीरतागुरमित्यानसिधभया॥

वा। इत्यं बडे धारमे चटि पापरकी ॥ १५ ॥ नि
रचो सटि दी बा जो इ करि चोद ह चंद सी दि
ह घरि किस को चांति गो ॥ जिदि घरि गो बिद तां हि
॥ कबीर निस अधिपारी कारने ॥ चोरा सी लष चंद
अति आतुर उदे कीयो ॥ तो उदिषित ही मंद ॥ क
बीर न सी मई जु गुर मिल्य ॥ नही तर हो ती हां गि
॥ दीपक दिषि पत गज ॥ पड ता परी जाति ॥ कब
र माया दीपक न र पतंग ॥ भर मि भर मि द्वै प डें त ॥
कहे कबीर गुर गणंत ते ॥ एक आध उबरंत ॥ कब
र सत गुर बधुरा क्या करे ॥ जो सिध ही मां द्वै चक
मा चत्पर मो धिले ॥ ज्यों बां सिब जाई फक २२ क
बीर सै सै पाया सकल जगु ॥ संसा कि त रुं नष ध जे
बध गुर अ धिरा ॥ तिस संसा बुसी चुलोष ध २३ चे
तति चो की बैस करि सत गुर दी ली क्षीर तिसै
होइ तिस कमजि ॥ केवल कहे कबीर २४ कबीर स
त गुर मिल्य त कामया ॥ जेम नि पा डी मो ले पा सि
बित ठा क पडा ॥ क्या करे बिचारी चोल ॥ कब
र बडे घे परि ऊबरे ॥ गुर की लहरि चमकि ॥ भेरा
देखा जर जरा ॥ तब ऊतरि पड पा फर कि २५ क
बीर गुर गो बिद तो एक हे ॥ ह जाय ड आ कार ॥
पामे टि जीवत मरे ॥ तो पावे करतार २६ कबीर
त गुर नो मिल्य ॥ रही अ धरी सी ब ॥ स्वां गज ती
पहरि करि ॥ घरि घरि मांगे भीष २७ ॥ कबीर स
र साचा सूरि वा ॥ ताते नो हलु हार ॥ क स र
कंचन कीया ॥ ताई ली पात त सार २८ ॥ या

पाई प्रीति मई सतगुरि दीन्हो धीर॥ कबीर ही राव
गि जिया प्रान्त सरोवर तीर ३०॥ निहचल निधि मिला
स्तत॥ सतगुर साहस धीर॥ निप जे में आजी घणा
बांटे नही कबीर ३१॥ चौपडि माडी चौहटे॥ अ
रध उर धवा जारा॥ कहै कबीर रांम जन॥ घेलों सत
विचारि ३२॥ पासां कड्या प्रेम का॥ सारी कीया सरी
रा सतगुर डाव बतार्इया॥ घेलै दांस कबीर ३३॥
कबीर सतगुरि हंस सौरी जी करि॥ एक कट्या पर स
रा॥ बर स्यावा दल प्रेम का॥ मीजि ग्या सब अंग ३४॥
कबीर वादल प्रेम का॥ हम परिवर स्या आइ॥ अंत
रिती गांजात मां॥ हरी मई बणारा ३५॥ कबीर पूरे
सोपर चातया॥ सब डख मेल्का हरि॥ निरमल की
नी आतमा॥ ताथें सदा हजरि ३६॥ पुरे देव को अंग
मंहरि ॥ अशु सुमिरन को अंग ॥ कबीर कहता
जात हो॥ सुगता है सब कोइ॥ रांम कहै न लहो
इगा॥ नही लमलान होइ ॥ कबीर कहै मै कधि
गया॥ कधि गया ब्रह्म महे सारांमनां मत तसार॥
है सब काहु उपदेस ॥ तत तिल कति हूं लोक
मै॥ रांमनां मति जसारा॥ जन कबीर मे सत कि दीया
॥ सो मा अश्विक अंगार ३॥ अगति न जन हरिनां उं
है॥ ज॥ इष्ट अंगारा॥ मन सावाचा कमना॥ कबी
सुमिरण सार ॥ कबीर सुमिरण सार है॥ ओं स
रुज जंजाल॥ आदि अंदि सब सोधिया॥ इजा देवों
काल ॥ कबीर चंता तो हरिनां उंकी॥ और न
चंता दास॥ जे कछु चितवै रांम बिन॥ सोई काल

की पास ॥ घंघ संगी पीव पीव करै ॥ बवा जुं सुमि
सेत ॥ आइ सति वली रकी ॥ पापारां मरुन ॥
कबीर मेरा मन सु ॥ मेरे राम को ॥ मेरा मन रामहि आ
दि ॥ इव मन रामहि कै रखा ॥ सीसन बां ऊं कादि
॥ कबीर तं तं करतात तथा ॥ मुझ में रही तहो
॥ दारी फेरी बलि गई ॥ जित देखौ तत तहो ॥ कबी
र निर भैराम जपि ॥ जब लगदी वैवाति ॥ तेल घट्य
वाती बुझी ॥ तब सो बैराग दिन राति ॥ कबीर सूत
व्या करै ॥ जागित जपै मुरारि ॥ एक दिन भी सो ब
रा ॥ लाबे पाब पसारि ॥ कबीर सूत व्या करै ॥ का
हे न देखै जागि ॥ जाका संग तैं बूछया ॥ ताही
कैसे गिला सि ॥ कबीर सूत व्या करै ॥ रुति त
रौ देखै ॥ जाका वासा गोर में ॥ सो कर सो चे सुष
॥ कबीर सूत व्या करै ॥ गुण गो बिंद के गाइते
र सिर परिजम घडा ॥ घर चक दे काया ॥ कबी
र सूत व्या करै ॥ सूता होइ अकाज ॥ ब्रह्मा काज
सन धिया ॥ सुनत काल की पाज ॥ कबीर के स
कहिक कहिक किये ॥ ना सोइ असारा ॥ राति दिव
कैं कैं कैं ॥ मत कबहुं लगे प्रकार ॥ कबीर
द्विघटि प्रीतिन प्रेम रस ॥ फुतिर सना नही रा
॥ तिनर आइ संसार में ॥ उपजिये वेकां म ॥
बीर प्रेम न वधिया ॥ चषिन लीया साव ॥ सूने घ
योइ राग ॥ ज्य आया तू जाइ ॥ कबीर यह ल
राक माइ करि ॥ बोधी बिष की पोट ॥ कोटिक
ना लक में ॥ जब आया हरि की ओट ॥ रच

कोटिक रसपेलेपलकमै॥ जेरंचकअवनानुवा
ब्रीतेकजुजेप्रतिकरे॥ नहरांसबितठांनु०
॥ कबीरजिनिहरिजेसाजाणियां॥ तिनको
तेसालेसा॥ दोसोप्यासनसाजई॥ जंबलगधसे
तआन॥ कबीररांसप्रियाराछाडिकरि॥
करैआनंकाजाय॥ त्रिस्वांकेराष्टतज्ज॥ कहेको
नसोंवाप॥ कबीरआपणरांसकहि॥ शीरो
रांसकहा॥ जिहिमुषिरांसनउचैरे॥ तिहिमुय
फेरिकहा॥ कबीरजैसेमायासनसोंधोजे
रांसरसा॥ तोतारामंडलछाडिकरि॥ जहां
केसोतहांजा॥ कबीरलूटिसकेतोल्हिये
॥ रांसनांसदेल्हिये॥ पीछेंहीपछिताऊगे॥ ५५
तनजेहेल्हिये॥ कबीरलूटिसकेतोल्हिये
ये॥ रांसनांससंडारकाजकंवतेंगहेगा॥ फंधे
सोंडवार॥ कबीरलांबमारगहरिदरा॥
टपंधयऊमार॥ कहोसंतोकांपांड्ये॥ ५६
रिहीद्वार॥ कबीरांगुणायांगुणातांकटे॥
हुनरांसविषोरा॥ अहति सहविधोवेनहो॥
कंपावेइलंसजोग॥ कबीरकठितांड्ये॥
मिरतांहरितांससलीऊपरितटविद्या॥
मोततांदीठांस॥ कबीररांसगकाइलेमुघ

नकी पास ॥ घंघसंगी पीघपीघ करै ॥ बछाजु सुमि
रेमन ॥ आइसुति कबीर की ॥ पापाराम रस न ॥ २० ॥
कबीर मेरामन सु ॥ मेरे राम को ॥ मेरामन राम दिख
दि ॥ इव मन राम दि ॥ कैर ह्या सी सनवां ऊंकादि
॥ कबीर तंतं कर तात जया ॥ मुफ मै रही तहो
॥ दारी फेरी बलिगई ॥ जित देखौ तत तू ॥ २१ ॥ कबी
रतिर मेराम जयि ॥ जब लगदी देवाति ॥ तेल घट्या
वाती बुझी ॥ तब सोवै गादिन राति ॥ कबीर सूता
क्या करै ॥ जागित जपै मुरारि ॥ एक दिन भी सोव
या ॥ लाबै पाबै पसारि ॥ कबीर सूता क्या करै ॥ को
दे न देखै जागि ॥ जाका संग तैं बखुट्या ॥ ताही
कैसे गिला सि ॥ कबीर सूता क्या करै ॥ ऊतिन
रोवै डष ॥ जाका बासा गोरम ॥ सोक सोवै सुष ॥
॥ कबीर सूता क्या करै ॥ गुण गोबिंद के गा ॥ ते
रे सिर परि जम घडा ॥ घर चक दे काघा ॥ २२ ॥ कबी
र सूता क्या करै ॥ सूता होइ अकाज ॥ ब्रह्मा का अ
न विस्था ॥ सुनत काल की प्राज ॥ २३ ॥ कबीर के सो
क दिक् दिक् किये ॥ ना सोइ असार ॥ राति दिवस
कै ककरो ॥ मत कबहुं लगे पुकार ॥ २४ ॥ कबीर जि
दि घटि प्रीति न प्रेम रस ॥ फुतिर सना नही राम
॥ तेनर आइ संसार में ॥ उपजिष्ये वैकांम ॥ २५ ॥ क
बीर प्रेम न वधिया ॥ चधिन लीया साव ॥ सनै घर के
पांडु राग ॥ ज्यु आया तू जा ॥ २६ ॥ कबीर यह ली
राक माइ करि ॥ बोधी बिष की पोटा ॥ कोटि करम
लय लक मे ॥ जब आया हरि की ओट ॥ २७ ॥ कबी

कोटिक रसपेलैपलकमैं॥ जेरंचकअवैनानुवा
 श्रीतेकजुआजुतिकरो॥ नहरांसबिनवांनु
 ॥ कबीरजिनिहरिजेसाजागियां॥ तितको
 तेसालैसा॥ वोसोप्यसनमाजई॥ जंबलगधसे
 तआन॥ कबीररांसपियाराछाडिकरि॥
 करैआनंकाजाप॥ बेस्वांकेराष्टतज्ज॥ कहैको
 नसौबाप॥ कबीरआपणरांसकहि॥ ओरो
 रांसकहा॥ जिहिमुषिरांसनउचैरै॥ तिहिमुष
 ॥ फेरिकहा॥ कबीरजैसैमायासनसौथोजे
 रांसरमा॥ तौतारामंडलछाडिकरि॥ जहां
 केसौतहांजा॥ कबीरलूटिसकैतौलूटिये
 ॥ रांसनांसहैलूटि॥ पीछैहोपछिताऊगे॥ इऊ
 तनजैहैलूटि॥ कबीरलूटिसकैतौलूटि
 यो॥ रांसनांससंडारा॥ कालकंठतैगहैगा॥ रुंधेद
 सोडवार॥ कबीरलांबामारा॥ हरिधरा॥ बिक
 टपंथयऊमारा॥ कहोसंतौकंपाईये॥ कुलसह
 रिहीदार॥ कबीरागुणाग्येगुणानांकटे॥ र
 उनरांसबिधोरा॥ अहतिसहरिधोवैनही॥
 कंपावैडलंसजोग॥ कबीरकठिनाईधरा॥ सु
 मिरतांहरिनांस॥ सल॥
 येतनांहीनांस॥

अमृतगुणगाइ ॥ फटानगज्जं जोरिमन संधं संधि
 मिलाइ ॥ कबीरचित्तचमकिया ॥ चहुँदिमिल
 गीलाइ ॥ हरिमुमिराहाथौ घडा ॥ बेगले ऊबु
 ॥ ३ ॥ साधोइ ॥ अथ विरह कौं श्रुत ॥ रात रुनी
 विरहती ॥ ज्ये बच्चा कौं ऊंज ॥ कबीर अंतर
 ल्या ॥ प्राट्यो ॥ विरहां पुंज ॥ कबीर अंतरि कु
 जां कुरलिया ॥ गरजि मरे सब ताल ॥ जिन तें गोवि
 द बीबुटे ॥ तिन के कौं गहवाल ॥ कबी
 बीबी बुटी रंगा की ॥ आइ मिली परमाति ॥ जे नर
 बिबुटे रांम सौ ॥ ते दिन मिले नराति ॥ बासु
 रि सुषन रौं गि सुष ॥ नां सुष सुपि नै मां हि ॥ कबी
 रा बिबुटे पारंम सौ ॥ नां सुष सुध पत छां ह ॥
 ॥ कबीर विरह निऊ ती पंथ सिरि ॥ पंथी बूके
 धाइ ॥ एक सब दकहि पीढ़का ॥ कबीर मिले गो
 आइ ॥ कबीर बडुत दिन न की जोवती ॥ बा
 टतु सारी रांम ॥ जीवत रसै तुम मिलन कौं ॥ म
 नि नां ही बिश्राम ॥ ६ ॥ कबीर विरह निऊ नै म
 पड़े ॥ दरसन कारनि रांम ॥ मंवा पीछे देइ जे
 ॥ सोर दरसन किहिकांम ॥ मंवा पीछे जिनि
 मिले ॥ कहै कबीरा रांम ॥ पाथ रिघाता लोह स
 ब ॥ तब पारम कौं लोकांम ॥ कबीर अदिस

बीरसतनकादीवाकरो॥ बातीमेलूं जीव॥
साचोतेलज्ज॥ कबमुषदेघोपीव॥ २२॥ कबीरनेना
ऊरलाईया॥ रहठबहेतिसजांस पपीहाज्जपपीवे
पावकरे॥ कबीरमिलऊरोरांस॥ २३॥ कबीरअंधडि
यांघेसकसाईया॥ लोगजातोंडघडियां॥ साईअपणे
कारतों रोइरोइरतडियां॥ २४॥ कबीरसाईआंसंसज
तां॥ साईलोकबिडां॥ जेलोइणालोहीचुवे॥ तोजा
तोंहेतहीया॥ २५॥ कबीरहसणांहरिकरि॥ करिरोव
तासौचित॥ बिनरोयांकपणईयो॥ प्रेमपियारामित
२६॥ कबीरजेरोवोतौबलघंटे॥ हसोंतरांमरिसा
मतहीसांहिबिसूरणां॥ जंघणकाठहिषा॥ २७॥
कबीरहसिहसिकंतनयाईये॥ त्रिपियातनरो
२८॥ जेहासैहीहरिमिले॥ तोनहीउहागनिकोइ
२९॥ कबीरहासीषेलोंहरिमिले॥ तोकोणसंदेधरस
३०॥ कांसक्रोधधत्रिज्ञांतजे॥ ताहिमिलेभगवा
३१॥ कबीरपूतपियारपिताको॥ गोहनिनागाध
३२॥ लोतमिठाइहापिदेइ॥ आपणगयाभुलाइ॥
३३॥ कबीरडारीघाडुपटकि करि॥ अतिरिसउ
३४॥ रोवत्तोवतमिलिगया॥ पितापियारेजाइ॥ कबी
३५॥ नांअंतरिआचत्त॥ निसदिनराघोतोहि॥ कबी
३६॥ दरसनदेऊगे॥ सोदिनआवेमोहि॥ ३७॥ कबीर
३८॥ तदिनगया॥ निसनीनिरघातजाइ॥ बिरहनि
३९॥ नही॥ जियरातलपेमाइ॥ ४०॥ कबीरकेबिरहा
४१॥ मीनदेकेआयादिवालाइ॥ आठ

मोपेसदसतजाइइ कबीरबिदेतिथीतोपपरदोप
लीनपीवकेनालि।रऊरऊमुषाभेनयप्रभिसतना
जोमारि३५ कबीरहोरबिरदकीजवकीसामितो
मकिधंधाइ॥बूटिपडोयाविरदने।असामीनीभावि
माउंइ कबीरततमनयोजन्पा।विरदगरानिमित्त
५ मतकपीदुनजोगाइ।जापोपीददया।॥॥॥॥
रबिरहजलोवैमैजलो जजती जन्दाविआ।॥॥॥
षाजलदरजले मतीकदाकुरां॥॥॥॥
तिबरहदितेफिरा नैततनोपुंगड।॥॥॥॥
नही जायेजावतिवेद।॥॥॥॥
धनकरो जेवलडोउदरं॥॥॥॥
पने मेइनेइनेकलन॥॥॥॥
जिअरे डित डितनेहिअ।॥॥॥॥
वैसैबेअरुअ॥॥॥॥
गमकेअरे डित डितनेहिअ।॥॥॥॥
हि॥॥॥॥
देवलेअरे डित डितनेहिअ।॥॥॥॥
मकमकेअरे डित डितनेहिअ।॥॥॥॥
जोअरे डित डितनेहिअ।॥॥॥॥
कबीरदेअरे डित डितनेहिअ।॥॥॥॥
तुअरे डित डितनेहिअ।॥॥॥॥
वैअरे डित डितनेहिअ।॥॥॥॥
पुअरे डित डितनेहिअ।॥॥॥॥
रवअरे डित डितनेहिअ।॥॥॥॥
मोअरे डित डितनेहिअ।॥॥॥॥

लीजली घमराफटिमफटि ॥ जोगीयासोऽमिगया
 आसणिरहीमसि ॥ कबीरआनिजुलानीसो
 रमे ॥ कंइजलियाजगिर ॥ उतरदक्षिणकेपंडितारहे
 बिचारिविचरि ॥ कबीरदोलागीसाप्रजल्य
 पंथीबैतेआइ ॥ दाधीदेहनपलहे ॥ सतगुराया
 लगाइ ॥ कबीरगुरदाधाचेलजल्य ॥ बिरहाजा
 गीआगि ॥ तिनकाबपुडाऊबस्या ॥ गलिपूरेकैला
 गि ॥ कबीरअहेडीदोलाइया ॥ मगपुकारेरोइ
 जावनमैक्रीलाकरी ॥ दाऊतदेवनसोइ ॥ क
 बीरयागीमोहैप्रजली ॥ नईअप्रबलआगि ॥ ब
 हितीसलितारहिगई ॥ मछरहेअवत्यागि ॥ कबी
 रसमंदरिलगीआगि ॥ नदियांजलिकोइलाभेइ
 ॥ देखिकबीराजागि ॥ मछीरूयांचहिगई ॥ १०॥ १२॥
 ॥ अरदाकोअंग ॥ अंता ॥ ४॥ कबीरतेजअनेत
 का मातोंऊगीसूरिजसेणि ॥ पतिसाजागीसुंदर
 कोतिकदीगतेणि ॥ कबीरकोतिगदीगतेर
 बिन ॥ रविससिविनाउजास ॥ साहिवसेवासाहि
 दे ॥ बेपरवाहीदास ॥ कबीरपारब्रह्मकेतेज
 का ॥ केसाहेउतनांत ॥ कहिबेकौसोमानही ॥
 देखाहीपरबान ॥ अगमअगोचगमितही ॥
 हांजगमगोजेति ॥ जहांकबीराबंदगी ॥ तह
 पपुतिनही ॥ कोति ॥ कबीरहदवाडिवेहदर
 या ॥ हुंवातरतरवास ॥ कवलजफल्याफले
 न ॥ कोतिरखेनिजदास ॥ कबीरमलमककं
 भया ॥ रह्यानिरंतरिवास ॥ कवलजुफल्याइ

देवितोको नवै निजदास॥ कबीर अंतरिक व
न प्रकाशिया॥ ब्रह्मवास तहां होइ मत नौरान
दां लुबधिया॥ जां गोगा जनकोइ॥ सायरतां
ही सी पवित॥ स्वांति बंद सीतां हि॥ कबीर मोती
नी पजे सुनि सिषर गढ मां हि॥ कबीर घट मां
वै श्री घट पाईया॥ श्री घट मां है घाटा॥ कहि कबी
र यवा नया॥ गुरू दियाई बाटा॥ एक कबीर सरस मां
नां बंद मो॥ दहू कीया घर एक॥ मन का चिता तब
मया॥ कछू परबल लेष॥ कबीर हृद बाटि वे
द राया॥ कीया सुनि गांता॥ मुनि जनम हल नया
वई॥ तां ही कीया बिश्राम॥ ११ दिखै करम कबीर
को॥ कछू परबल जनम का लेष॥ जाको महल न
मुनि जहै॥ सो दोसत कीया अलेष॥ १२ कबीर पं
जरि प्रेम प्रकाशिया॥ जाया जोरा अनंत सांसा
सटा सुषयया॥ मिल्या पियारा कंत॥ कबीर पं
जरि प्रेम प्रकाशिया॥ अंतरि नया उजास॥ मुनि
कसूसरी मह भही॥ बांणी फूटी बास॥ कबी
र मन लागी न मन सं॥ गगन परंता जाइ दे
षा चंद बिरूणां चांदरां॥ तहां अलख निरंज
न राइ॥ कबीर मन लागी न मन सो॥ नित मन
रहि बिलगा॥ लूण बिलगा पांशिया॥ पांशी लू
ण बिलगा॥ कबीर पांशी ही तें हिम मया॥ हिम
को गया बिलगा॥ जे कछु पा सोई नया॥ अब्क
चक दान जाइ॥ कबीर मनी मई ७

गईदसासबनलि पायागलियांणींनया दुलि
मिलियाउसकलि कबीरचौहटैचंतामलि
चढीहाडीमारतहाथिमीरंमुऊसोमिहरक
रीइबमिलोनकाहुसाथि कबीरपेषउडा
णीगगनकोप्यहरदयाप्रदेस पांणीपीयाव
चभरिभूलिगयापडदेस २० कबीरपषिउडा
णीगगनकंउडचढीअसमान जिहिसरिम
दुलमेदिया सोसरलगाकांति २१ कबीरसुर
तिसमांणी निरतिमे निरतिरहीनिरक्षर सुतिनि
रतिपरचाभया तबबलेस्पंमडवार २२ कबीर
सुरतिसमांणी निरतिमे अजयामाहै जय लेष
समांणीअलेषमे योआयामाहै आय २३
संसारमे द्वेषणकोबड

॥ मडिगयातजरिअनूप २४ ॥ अकजरिमरिनेटि
या मनमेंनाहीक्षर कहेकबीरतेकरमिले जय
लादोषइसरीर २५ कबीरसचपायासुषऊपना
अरदिलदरियापरि सकलपापसहजैगरे जय
साईमिल्यादजरि २६ धरतीगगनप्रबतनही
ते नहीतोयानहीतारा तबहरिहरिकैजनही
कहेकबीरबिचारा २७ जादिनकृतमनो
होताहटतपट कताकबीरारांमजन जि
येओघटघट २८ कबीरथितिपाईमनथिरसु
मतगुरिकरीसहाइ अनितकथाततिआवर
हिरदैत्रियाभवतरा २९ कबीरहरिसंगतिस

नमया मिटि मोह की ताम। तिनि बासुरि सुं बलिधि
लया। जब अंतरि पग टया आष। कबीर तन
भीतरि मतं मां नियो। बाहरि कहे न जाना। जाला
ते फि रिजल नया। बुकी बलेंती लाहू। कबीर त
तया पात न बीस स्या। जब मति धरि पाध्यां न। तप
ति गई सीतल नया। जब सुं न कीया अज्ञान ३२
कबीर जिनि पायाति निसुग दग दग। रसतां लागी
सो दिरत न निरा ला पाइया। जगत टंढो लाना दि
३३ कबीर दिज स्या बलि मया। पाया फल सख्य
सा परमां हिं टंढो लतां। हीरै पडि गया हथ ३४ क
बीर जब मैं था तब हरि न ही। अब हरि है मैं तां हिं
मब अंधियारा मिटि गया। जब दीपक देख्या मां हिं
३५ कबीर जाकारणि मैं टंढो टा। सन मुख मिलिया
आ। धन मै ली पीव उजला। लागत सकं याइ ३६
३७ कबीर जाकारनि मैं जाइया। सोई योई और
सोई फि रि आया नया। जा सो कहता और ३८
कबीर देख्या एक अंग। महि मां कही न जाइ ३९
जुं जयार सध्यां। नै नौरा द्या समाइ ४० कबी
र मां त सरोवर सुतर जला हंसा के लिकरां हि। मु
कता हल मुकता चुगै। सब उफि अत न त मां हि ४१
गगन गरजि अमृत चवै। कदली कदल लका
स। तहां कबीरा बंदगी। कै कोइ निज दास ४२
नीध बिहुं गां देऊरा देह बिहुं गां देह। कबीर त
हां बिल बिपा। करै अलख की सेव ४३
न मां है देऊरी। तिल ४४

हि जल मां है पूजाहार ॥२॥ कबीर कवल
सिया ऊपा निरमलसर ॥ निस अधिपारी सिटि
॥३॥ जब बागे अत हदतर ॥ अत हद बाजे नीकर
करे ॥ नय जे ब्रह्म गियो न ॥ अत्रि गति अंतरि प्रस
धियो न ॥ आकासे मुषि औ धाक द्या ॥ पाताले पदि
हारि ताका पांगी को हंसा पीवे ॥ बिरला आदि बि
चारि ॥ सिव सकती हि सि कौण जु जोवे ॥ पच्छिम
दिसा उठै धरि ॥ जल मे स्पंघ जु धर करे ॥ मछली च
ढे बि जरि ॥ अमृत बरिषे हीरानी पजे ॥ घटे पड़े
टक माल ॥ कबीर जु हात या पार ॥ अत मे उत
स्या पार ॥४॥ कबीर ममिता मे सक्या करे ॥ प्रेम उ
घा डी पोलि ॥ दरसन मया दया लका ॥ सल मई
बसो डि ॥५॥ ॥६॥ अमृत ॥५॥ रस कौ ॥ कब
र हरि रस यो पीया ॥ बाकी रहि न था कि ॥ पाका क
ल सकुमार का ॥ बडुरि न चढे ई चाकि ॥ रोम रसा
इत प्रेम रस ॥ पीवत अधिक रसाल ॥ कबीर पीव
ग डले न है ॥ मांगै सीस कलाल ॥७॥ कबीर माठी व
लाल की ॥ बडुत कवे ते आइ ॥ सिर सौ पे सौ ई पी
वे ॥ न हो तो पीय न जाइ ॥८॥ कबीर हरि रस पीया
जांछिये ॥ नेक बरुन जाइ सुमार ॥ मेमंता घं मत
रहे ॥ नाही तन की सार ॥ कबीर मेमंता तिणत
वरे ॥ साले बितां सनेह ॥ बारि जु बंधा प्रेम के ॥ डा
रि द्या सिरिषे दे ॥ कबीर मेमंता आतर द्या ॥
कलय आसा जीत ॥ रोम अमलि मातार है ॥ जीव
ते मुक्ति अतीत ॥ कबीर जिहि संध डान है

ता ॥ अब मैं गलमलिमलिनका ॥ देवल दंड कल
 मसौ ॥ पंडित साई जाइ ॥ कबीर सबै रसों न मै की
 या ॥ हरि साओ रन को ॥ तिल एक घट सैं चै तो
 सब तन कंचन होइ ॥ ५॥ १७५॥ अंग ॥ ६॥ लो
 तिको अंग ॥ कबीर काया कमंडल भरि लीया उ
 जल निर्मल नीर ॥ तन मन जो बल भरि पीया ॥ प्यस
 न सिटी सरीर ॥ कबीर मंत्र उलटं पाद रिपा सि
 ल्या ॥ लागामलिमलिनका ॥ पाद प्यादन आब
 ॥ कपूरारहि मांता ॥ देरत देरत देसबी ॥ रक्षा क
 बीर हिरा ॥ बंद ससांगी सम दमें ॥ सो कंत हेरी जा
 जाइ ॥ देरत देरत देसबी ॥ रक्षा कबीर हिरा ॥
 समंद ससांगी बंद सों ॥ सो कंत हेर पाजाइ ॥ ४॥
 ॥ १८८॥ अंग ॥ ७॥ जरणां को अंग ॥ कबीर नारी क
 होत बड़ डरौ ॥ हलुका कहौ तौ ऊठ ॥ मै काजों तौ
 राम को ॥ नैं तौ कब हू न दीछ ॥ कबीर दीठा है
 तौ कस कहौ ॥ कस्यां न को पतियाइ ॥ हरि जे साहे
 ते सार हो ॥ तं हर धि हर धि गुन गाइ ॥ कबीर जे सा
 अद बुद्धि निकषे ॥ अद बुद्धि राखि लुकाइ ॥ नैद कु
 रां तौ गमिन दी ॥ कस्यां न को पतियाइ ॥ कबीर क
 रता की गति अगम है ॥ तं चलि अयगौ उन सांता ॥
 धुरै धुरै याव धुरै ॥ पड़ चौ गे निरवांता ॥ कबीर य
 द्ये गे तौ कहेंगे ॥ अब डेंगे वैं सवां ॥ अजरु मेरम
 मद सौ ॥ बोलि बिगचें कोइ ॥ ५॥ १८९॥ ५॥ हेरात
 नें अंग ॥ कबीर पंडित सेती कहिर हो ॥ कस्यां न
 मं नैं कोइ ॥ ओ अगाध पेका कहें नारी

[illegible]

न जगिष्यां तौ बडु जाणो क्या होइ ॥ एक तैं सब
 होत है ॥ सब तैं एक न होइ ॥ जल जग मगति स
 कां मता ॥ वडु लग निरख लसेव ॥ कहै कबीर ब्र
 को मिले ॥ निह कांसी निज देव ॥ कबीर आस
 एक जुरां मकी ॥ इजी आस निरास ॥ पांणी मां है
 घर करै ॥ तिजी मरे पिपास ॥ कबीर जे सत लाये
 एक सो ॥ तौ निरवा ल्या जाइ ॥ तरा डुं मुषि ब
 जगां ॥ न्याइ तमा चेसाइ ॥ कबीर कलि जुग
 आइ करि ॥ कीये बडु तजु मीता ॥ जिनि दिल
 बांधै एक सो ॥ ते सुष सो धेन चीत ॥ कबीर
 कृता राम का ॥ मुति पामे रानां ॥ गले राम की
 जेव डी ॥ जिते धे चेतित जां ॥ कबीर तो तो
 करै तबा डौ ॥ इरि डुरि करै जां ॥ ज्यं हरि राखे
 स्मर हौ ॥ जो देवै सो पां ॥ कबीर मन प्रतीति
 न प्रेम रस ॥ नांइ सत न मै दंग ॥ क्या जां रौं उम
 बसौ ॥ कै सै रह सारंग ॥ कबीर उस संमरथ
 का दास हौ ॥ कहे न होइ अक ज ॥ पति ब्रतान
 गार हौ ॥ तौ उम ही उरि मको लाज ॥ कबीर
 परि प्र मे स्वर पां ऊं ॥ सुगो मन ही दास ॥ षट
 रस भोजन भगति करि ॥ ज्यं क देन छा डौ पास
 ॥ १८ ॥ २९ ॥ अंग ॥ १० ॥ चिता वरां की अंग ॥
 कबीर नौ बति आ पगी ॥ दित दस ले डु बजाइ
 डुर पठन एगली ॥ बडु रित देवै आइ ॥
 जित के नौ बति बानवी ॥ मंगल
 कि हरि के नां ॥ उं बिन

कबीर दोलन मां मां डड बडो सहना प्रसंग
रि औसरि चले बजाइ करि हे कोरा घे फेरि
कबीर सातों सब दज बाजते घर घरि हो
तेराग तेम दिर घाली पड़े बेसण लागे काग
कबीर थोड़ा जीवणां माटे बडुत मंतां
सब ही ऊना मंतां रावर कमुलितान कबी
र एक दिन जैसा होना सब थै पड़े बिछोड़े रा
जा राणां छत्रपति सावधान किन होइ कबी
र पट्टा काखि पंच चोर दस घर जमरां तों गढा
मलिसी सुमिरि ले करतार कबीर कदाग्र बियो
इस जीवत की आस केस फले दिवस चारि ध्य
रमये पलास कबीर कदाग्र बियो देही देखि सु
रा बीबुडियां मिलिबोनही ज्यंका चली सुब
ग कबीर कदाग्र बियो ऊंचे देखि आस का
लिपस न्वलेटणा ऊपरि जामे घास कबी
र कदाग्र बियो चाम पलेटे हाड हेवर ऊपरि छ
त्र सिरि तेम दिवे मड कबीर कदाग्र बियो क
जग देकर केस नो जातों कदाग्र मरसा के घरि
परदेस कबीर प्रइ जैसा ससार है जैसा सैव
फल दिन सकें ब्योहार को ऊठेर गिन मूल
कबीर जामण मरया विचारि करि कंठे कांम
वारि जिति पंथी तुऊ चालणां सोइ प्रेयस वा
कबीर बिन रघु बाले बाहिरा चिडिये छा
त आक्षपरक्ष ऊबरे चेतिस के तो तैति
जलै जल कंदी केस जलै जल घास सब तन

तादेष्टिकरि मयांक। वीरउदास॥ कबीरमंदिरा
ठहियडया ईटमईसैवार कोईचेजाराविणिगाया
॥ मयातइजीवार॥ कबीरदेवलठहियडया ई
टमईसैवार करेचेजारेसोप्रीतडी ठहैतइजीव
र॥ कबीरमंदरलायका॥ जडियाहीरैलालि॥ दि
वसचारिकापेघरा॥ बिनसिजाइगाकालि॥ कबी
रधलिसकेलिकरि॥ उडीजुवांधीएहा दिवसचा
रिकापेघरा॥ अंतिवेहकीघेह॥ कबीरजेधक्षतो
धलि॥ बिनधंधेधलेनही॥ तेनरबिनवेमलि॥ जिनि
धधमैध्यायानही॥ कबीरसुपिनैरैणिकै॥ नय
डिआयेनैन॥ जीवपडयाबकुलटिमै॥ जागेतोले
यानदेरा॥ कबीरसुपिनैरैणिकै॥ पारसजीयमैछे
का॥ जेसोऊतोदोइजरा॥ जेजमोंतोएक॥ कबी
रइससंसारमै॥ घरोमनिषमतिदीरा॥ रांसनामजा
रोनही॥ आएटायादीरा॥ कबीरकहाकायाह
मआइकरि॥ कहाकहैगेजाइ॥ इतकेनयेनउतके
नालेमलगवाइ॥ कबीरआयाअगआयास
या॥ जेबकरतासंसारि॥ पडयामुलावागाफिलो
गएकबुधिरि॥ कबीरहदिकीसगतिबिन॥ ध
गजीवरासंसार॥ धवांकेराधोलहर॥ जातनलोरो
वार॥ कबीरजिहिदरिकीचोराकरी गऐरामगु
बमलि॥ तेविधनावागुलिकीये रहेअरधमुषिऊ
लि॥ कबीरमाटीमजलिकुंसारकी॥ घणीमहै
सिरजात॥ इहिओसरिचेत्यानही॥ चकचबकी
पात॥ कबीरइहिओसरिचेत्यानही॥

याली देह रामनाम जाणोनही ॥ अतिपडी मुषिप्रेह
कबीर रामनाम जाणोनही लागी मोठी घोडि
काया हांडी काठकी ॥ नाऊ चढे बहोडि ॥ कबी
रामनाम जाणोनही ॥ बात बिनगी मलि हरत
इहांही हरिया ॥ परतिपडी मुषिप्रेह ॥ कबीर
रामनाम जाणोनही ॥ पाल्यो कटक कुटब ॥ धंध
ही मै मरि गया ॥ बाहर ऊई न बूब ॥ कबीर मतिप
जमम डल महे ॥ देह न बारं बार ॥ तरवर थै फलज
डिप डिया ॥ बड रिन लागे डार ॥ कबीर हरिकी
मगतिक रि ॥ तजि बिधि पारम चौज ॥ बार बार तह
पाईये ॥ मतिप जमम की मोन ॥ कबीर यऊतन
जातहे ॥ मै कै तो ठा हर लाइ ॥ कै सेवा करि साधकी
कै गुंत गो बिंद के गाइ ॥ कबीर यऊतन जातहे
स कै तो लेऊ बहोडि ॥ नागे हाथो ते गये ॥ जित कै ला
ष करोडि ॥ कबीर यऊतन की चाकु महे ॥ चो
ट चऊ दि सिपाइ ॥ एकरा मके नाउ बिन ॥ जदि त
दिपर ले जाइ ॥ कबीर यऊतन का चाकु महे
लीयां फिरे या साधि ॥ ठब कालाणा फटि गया
कबुत आया हाथि ॥ काची कारी जिनिकरे
दित दिन बंधे बिपाधि ॥ राम कबीर रुचि मई ॥ या
दोष दि साधि ॥ कबीर अपणों जीवतै ॥ एदोइ
नै धोइ ॥ लोम बडाई कारणों ॥ अछलाम लन घो
कबीर ये माये कगयंद होइ ॥ क्ये करि बंधि
रि ॥ मानिकरै तो पीवनही ॥ पीवतो मानि निवा
कबीर दीन गवाया डनी सो ॥ डनी न चाला

वि. पाईलुहाडामारिया। गाफिलअपणोहाए॥१॥
पहुतनलोसबवनमया। करममयेकुहाडि॥आप
पकीकाटिहे। कहैकबीरबिचारि॥कबीरकु
लघोयांकुलऊबरे। कुलराध्यांकुलदाशरामनि।
कुलकुलमेटिले। सबकुलरहासमाश॥कबी
रइतियांकेधेधेसवा॥बलेजुकुलकीकांनि। त
बकुलकिसकालजसी॥जिबलेधस्याससांनि।
कबीरइतियांभांडाउषक॥मरीमुहांमुहसूख। अ
दयाअलहरामकी। कुरहेऊंगीकस॥जिहिजेव
डीजराबंधिया। तंजिनिबंधैकबीर। कैसीआटाले
गज्जं। सोनांसवोसरार॥कहतसुनतजगजात
हे। बिषेनसूकेकाल। कबीरप्यालेप्रेमके। मरि
मरिपीवैरसाल॥कबीरहृदकेजीवसौ। हिव
करिमुयांनबोली। जेलागेबेहदसौ॥तिनसोअंत
रबोली॥कबीरकेवलरामकी॥तंजिनिछोटे
बोट॥घणअहरणिबिचिलोहमूं॥घणीसहेसि
रिचोट॥कबीरकेवलरामकहि। सुधगरीबी
मालि। कूडबंडाईबडसी। मारीपडिसीकालि
॥कबीरकायामंजनक्याकरै। कपडधोइमधो
इउजलऊवांनबूटिये। सुषनीडुडीनसो॥१॥
कबीरउजलकपडोपहरिकरि। पोनसुपारीयां
हि॥एकैहरिकानाउंविन॥बांधेजमपुसिजांदि
॥कबीरस्तेरासंगीकोनही। सबखारधिवंधीले
इमनिपरतीतिनऊपजे। जिविबेसासनहोइ॥
कबीरमाइबिडांगीबापबिड। हमसीसंजिविड

धरपाकेरीनादज्यं संजोगैसिलिया ॥ कबीरस्त
रघरउतभर ॥ बाणजणआयेहाट ॥ करमकरा
गोबेविकरि ॥ उछिजुलागबाट ॥ कबीरस्त
तातीचितदे ॥ महरोमोलिविकाइ ॥ गहकराजार
महे ॥ औरनैडेआइ ॥ कबीरडागलऊपरिदोड
या ॥ सुपनीदडीनसोइ ॥ पुनैपापेव्योहडे ॥ ओकी
चोरनघोइ ॥ कबीरमैमैवडीबलाइहे ॥ सैकैतौ
निकसीसाजि ॥ कबलगराघोहेसघी ॥ रुईपलेटी
आगि ॥ कबीरमैमैमेरीजिनिकरो ॥ मेरीमूलबिना
स ॥ मेरीपाकांपेघडा ॥ मेरीगलकीपास ॥ कबी
रनावजरजरी ॥ कंडेबेवराहार ॥ हलकेहलकेति
रिगये ॥ बडेजिनिसिरिमार ॥ ६२॥ २०१॥ ११॥
ततकोजरा ॥ कबीरसनकोमतनचालिये ॥ छानि
जीवकीबांशि ॥ ताकंकरेसतज्य ॥ उलटिअपरा
आणि ॥ कबीरचिंताचितितिवारिये ॥ फिरिबजी
येनकोइ ॥ इंद्रीपसरेमिटाइये ॥ सहजमिलेगास
इ ॥ कबीरआसाकाइधणकरो ॥ मनसाकरोबि
भूति ॥ जोआफेरीफिलको ॥ पोचितनावेसति
कबीरमेरीसांकडी ॥ चंचलमनवाचोर ॥ गुण
गावेलैलीनहोइ ॥ कबूयेकमनमैऔर ॥ की
रमासुमनकं ॥ टूकटूककैजाइ ॥ बिषफीक
रीबोइकरि ॥ गुणव ॥ कहापछिताइ ॥ कब
इसमनकोबिसमिलकरो ॥ दीठाकरोअर्धाच
ज ॥ सिंदराघोआपया ॥ तोपरसिरिलोआगीव ॥ च
रमतजायोसबबात ॥ जोतातहीऔगुणक

कादेकीकुसलात। करदीपककंवेपडो॥७॥ कबीरदि
 रदासीतरिआरसी। मुखदेषणानजाइ। मुखतौतौपरि
 देखिये। जेसनबीडबिधाजाइ। कबीरमनदीयांम
 नपाइये। मनबिनमनहीहोइ। मनउगमनउसअ
 मज्ज। अनलिअकासांजोइ। कबीरमनगोरख
 मनगोविंदो। मनंदीऔघटुहोइ। जेसनराधेज
 तनकरि। तौआपैकरतासोइ॥१॥ कबीरएकजदो
 सतहमकीया॥ जिसगलिलालकबाइ। सबजगध
 बीधोइसरे। तौमीरंगनजाइ॥१॥ पांणीदीतैपलला
 धवांहीतैजोरा। पवनबेगितावला। सोदोसत
 कबीरैकीन्ह॥२॥ कबीरतुरायलांतिंया। बाबकली
 याहाथि। दिवसथकासोइमिलो। पीछैपडिहेराति
 कबीरमनवांतौअधरबस्या। बंकतकजोरांदो
 इ॥ आलोकतसचुपाइया। कबहुनन्यारासोइ॥
 ॥ कबीरसननसास्यामनकरि। सकैनयंवप्रहारसी
 लमाचसरधामही॥ इंदीअजहंउअरि॥३॥ कबीर
 मनबिकरेमटुया। गयास्वांदकेसाथि। गलकाया
 पावरजता॥ अबक्येआवेहाथि॥४॥ कबीरमनगा
 फिलनया॥ सुभिरगिलागैनांदि॥ घरांीसहेगासा
 सणा॥ जमकीदरिगाहमांदि॥७॥ कबीरकोटिक
 रमपलमेंकरे॥ यहुमनबिषियास्वांदि। सतगुरुस
 बंदनमानेइ॥ जनमगावायावादि॥८॥ कबीरमेमं
 तोमनमारिरे॥ घटहीमांदेघेरि॥ जबहीचालेपि
 विदे॥ अंकसदेदेकरि॥ कबीरमेमेतामनमरि
 रे॥ अंककरिकरियासातबसुषणदेसुंदरी
 ना

गंजे हरिको मिलौ मोमनि मोटी आस ॥ हरि विविधाले
तरा माया बडा बिसास ॥ कबीर माया मोदणी ॥ मो
दे जो गुरु जागा ॥ जातो ही छैटे नही ॥ नरि नरि मारै बाण
॥ कबीर माया मोदनी ॥ जैसी मोटी घोड ॥ सतगुरु का
दया भई नही तौ करती नाड ॥ कबीर माया मोदणी
॥ सब जग घाला घांणि ॥ कोई येक जन ऊबरे ॥ किंति
तोड़ी कुल की कांणि ॥ कबीर माया मोदणी ॥ मा
गी मिले न हाथि ॥ मन हउ तारी ऊच करि ॥ तब ल
गी डोलै साथि ॥ कबीर माया दासी सत की ॥ क
नी देखे सीस ॥ बिलसी अरु लातौ छडी ॥ सुमरि
सुमरि जग दीस ॥ माया मूर्ख न मन मूढा ॥ मरि म
रि गया सरीर ॥ आसा टूटाना मूर्ख ॥ यो कहि गक
कबीर ॥ कबीर आसा जी वै जग मरे ॥ लोग मरे मरि
जाइ ॥ सोई मये जे धन से चले ॥ सो ऊबरे जे पाइ
॥ कबीर सो धन से चिये ॥ जो आपो को होइ ॥ सीस
बटाये पोटी ॥ ले जात न देखी कोइ ॥ कबीर
टूटा टूटा पापणी ॥ तासो पीतिन जोडि ॥ पेडी च
टि पाछा पड़े ॥ लागे मोटी घोडि ॥ कबीर टूटा
सी चीना बुके ॥ दिन दिन बधती जाइ ॥ जबा साके
रूष ज्य ॥ धरा मे हांकु मिलाइ ॥ कबीर जग क
को कहै ॥ भोजन बडै दास ॥ पारब्रह्म पति छादि
करि करै मानि की आस ॥ कबीर माया तजीत
कामया ॥ जे मानित जी नही जाइ ॥ मानि बडे मु
दरगले ॥ मानि सब नि कोषाइ ॥ कबीर राम दि
घोडा जंणिकरि ॥ इतिया आगे दीन ॥ जीवो को

एक है मया के आधीन कबीर रजबी रज की
 कली तापरि साज्या रूप रांमतां भेबित बडि हे क
 नक कांफिनी कया ट कबीर माया तरवर त्रिविधिका
 साया डष संताप सीतल तासुपि नैनही फल की
 कात निताप १० कबीर माया फाकणी सब किसही
 कंषा ११ दांत उपाडौ पपणी जिस तौ ने डी जाइ ॥
 १२ कबीर नलनी साइर घर की या ॥ दो लागी बड
 तेणि ॥ जल ही माहे जल रुई ॥ सरब जनम लिखेणि
 १३ कबीर गुण की बादली तीतर वाणी छांदा बा
 हरिर हे ते ऊबरो ॥ नीगे मंदर मां हि १४ कबीर माया
 मोह की ॥ नई अधारी लोइ ॥ जे सुता ते सुमिली या
 र क्य बसत को रोइ १५ कबीर संकर लही थें सब ल
 हे मया १६ हि संसा रि ॥ ते क्य छूटै बाप डै ॥ बांधा
 सिर जन दारि १७ कबीर बाडि चटै ती बे लिज्य ॥
 उलकी आसा फध ॥ छूटै पर छूटै नही ॥ न १८ जुवा
 चाबंध १९ कबीर सब आसा ग आसा तगा ॥ ति
 स्वतिके को नाहि ॥ निरवृत्तिके निवेन दा ॥ प्र
 वृत्ति पंच मां हि २० कबीर १२ स संसार का ॥ फू
 ठा माया मोहा ॥ जिहि धरि जिता बंधा वणा ॥ तिहि
 धरि जिता अंदोह २१ कबीर माया हम संसृंक द्या
 तूं सति दे रे २२ और हमारा हम बल गया कबी
 रा रुति २३ कबीर बगुली नीर बिटालिया साय
 रं चंटा कलंक ॥ और पंखे रूपी गइ ॥
 चं च ॥ कबीर माया जिति मिले ॥
 दं नारद से मुतिय रगिले ॥ कि सो मरा ॥

लेनीहि मनिषनहीस्वानगति॥ बांध्याजमपु
रिजांदि॥ कबीरपदगांया मनहरधिया॥
साधीकदयांअनंद॥ सीततनोवनजांरिया
गलमैपडियाफेध॥ कबीरकरतादीसैंकी
रतन॥ ऊंचाकरिकरितंड॥ जागौबूफैककु
नही॥ येहीअंधारुखड॥ ५॥ २०२॥ १५॥ २०
तीतीहिलोकरता॥ दोनोपंरा॥ कबीरमैंजान्यो
पटिबोभलो॥ पटिबापैंभलो॥ जोगांमनाम
संप्रतिकरि॥ भलभलनीदो॥ लोग॥ कबीर
पटिबाहरिकरि॥ पुसतकदेइबहाइ॥ बांवन
अधिरसोधिकरि॥ रैममैंचितनाइ॥ कबीरप
टिबाहरिकरि॥ आधिपट्यासंसार॥ प्रीडनउ
पजीप्रीतिस्सं॥ तौक्यंकरिकरै॥ पुकारा॥ कबी
रपोधीपटिपटि॥ जगमूवा॥ पंडितनयानको
इएकैअधरपीवका॥ पटैसुपंडिनहोइ॥ ४॥
२०२॥ १६॥ कौतौतरदोचोवा॥ कबीरकोम
लिकालीनागली॥ तीन्ये॥ लोकमेंफारि॥ रामस
नेहीऊबरे॥ बिषइषायेफारि॥ कबीरकोमया
मीनीषांलिकी॥ जेचेडूं॥ तौघाइ॥ जेहरिचरणों
राधिया॥ तिनकैनिकटिनजाइ॥ कबीरपरन
रीराताफिरै॥ चोरीबिहताघोहि॥ दिवसचारि
सारहै॥ अतिसमूलाजांदि॥ कबीरपरनारीप
रसुंदरी॥ बिरलाबंदैकोइ॥ मोतामीनीषांडसो
अंतिकालिबिषहोइ॥ कबीरपरनारीकै
वतो॥ औगुणहैगुणनांदि॥ धारसमंद

नो केतावहिबहिजाहि कबीरपरनारिकुं
गो जिंसी लूसनकीषांनि सत्तोंवसिरवाइये
गटहोइदिवान ॥ नरनारीसबनरकहै न
लगादेहसकोम कहैकबीरतेरोमके जेसुमि
निकांम ॥ कबीरनारीसेतीनेह बुधिवमेकस
बहीहरे कोइगभांनदेह काइजकोइनांसरे
कबीरनांनांमोजनंस्वांदसुष नारीसेतीरंगवे
गिछाडिपछिताइगा केहैमरतिभंग ॥ कबीर
नारिनसावेतीनिसुष जानरपासैहोइ मगति
मुकतिनिजग्यानमें पिसिनसकेकोइ ॥ कबीर
एककनकअरुकांमनी ॥ बिषफलकीयेउपाइ
खेहीथेबिषचटे घायांसैमरिजाइ ॥ कबीर
एककनकअरुकांमनी ॥ दोऊअंगोंनिकीजाल
देखेहीतनप्रजले परस्पंदोइपेमाल ॥ कबीर
गकापीतडी ॥ केतेगएगढंत केतेअजहंजा
सी नरकिहमंतहसंत ॥ कबीरजोरुजव
नेजगतकी ॥ भलेबुरेकाबीच ततमतेसलगर
हैं निकटिरहैते नीच ॥ कबीरनारीकुंडनर
कका ॥ बिरलाथेभैवाग कोइसाधजनऊबरे
सबजगमनालाग ॥ कबीरसुंदरिथेस
जी ॥ बिरलाबचैकोइ लोहलिहालाअगतिम
नलिबलिकोइलाहोइ ॥ कबीरअ
गही कटेनसंसेसला औरगुनहोह
संसीहालनसल ॥ कब
पाइंसीकरैस्वादि हीराघोयाहाथथे

कबीरको सीकरीं सीन सावई विप्र
मोधि कुबधि न जाई जीवकी भावस्य भरही
मोधि कबीर बिषे बिलंबी आसमा ताका
कया पाध सोधि पांन अंकर ऊरि मां
जपर मोधि कबीर बिषे करम की कंचली प
रिऊ वानर नाग सिर को डैस जे नही कोआ
गला अभाग कबीरको सीक देन हरि मजे ज
पेन के सो जाय राम क ह्यांचे जलि मेरे को पूरि ब
ला पाय कबीरको सील ज्ञानां करे मन मां है
अहिलाद नीदन मागे साथ रा मृषन मागे स्वाद
कबीर नारि पराई आपली मुग त्यां नर कहि
जाई आगि आगि सब एक है तामें हाथ न ब
हि कबीर कहता जात है चेत न ही मव
बरागा गिही कहां को सी वारन पार कबी
पां नी तो नी डर मया मां नै नां हो सकाई
रब सिप डया न चै बिषे निसेक कबीर
मूल गवाईया आपण मये करता तायें
रोम ला मन मे रहे डरता ॥ २० ॥ ५२ ॥
सहज को ज्ञान कबीर सहज सहज सब
है सहजन बीके कोइ जिन्ह सहजें वि
तजी सहज कहि जे सोइ कबीर सह
ज सब को कहै सहजन बीके कोइ प
सरता सहज कहि जे सोइ सहजें स
गये सुत बित को मति को म पक मे व
पक कबीर राम कबीर सह

सहजन चीन्हें कोइ जिन्ह सहजें हरिजी कहि
सहज कहि जे सोइ ॥४॥ ४०॥ सात को सात
कबीरजी साहकी नजिनिषो दैवार, परी बिय
निहोइगी, लेखा देती बार, कबीर लेखा देगा
परहा जे दिल साच होइ, उस चंगे दीवान में
तपक डै कोइ, कबीर चितक्स किया कीया
यां नोइरि काइ थिका गदका टिया, तब दरी
हलेषा परी ॥ कबीर काइ थिका गदका टिया
बलेषी वारन पार, जब लग सास सरी में, तब
गारांस संभार ॥ कबीर यऊ सब फूली बंदगि
रियां पंचति वाज, साचे मोरे फूट पटि काजी
रेअ काज ॥ कबीर काजी स्वाद बसि ब्रह्म
ते तब होइ, बटि मसी तिरै के कहै, दरि कपसा
होइ, कबीर काजी मुलां नमियां चल्याइ
कै सपि दिल पे दीन बिसारिया ॥ करदल
जब दया थि ॥ कबीर जोरी करि जिब ह करे, क
ते हैं नह जाला, जब दफतर देखे गाइ, तब के
को ताह वाल ॥ कबीर जोरी की पाजून
मेदे ॥ मांगे न्या बूझाइ, घालिक दरि बंती
बडा ॥ मार मुहे मुहिषाश, कबीर सांसे ती चो
रिया, चोरां सेती गुफा जायें गारे ज बडा मार
पड़े गी तुफा ॥ कबीर सेष सखी बाहिर क्याह
जक ब्रै जाइ ॥ जिन्ह की दिल स्याब तिन ही, तिन
की कदा पुदाइ ॥ कबीर पूबषां गां हैषी चडी
माहि पंडे तु कलैण, हैडारी टीषाइ करि गला

कबीरमनमेसंवासीमंडिले केसौसुडेका
 कष्टुकीयासुमनिकीया केसौकीयानाहि कबी
 रमेरमुतावतदिनगए येजहुनभिलियाराम रा
 मनामकडक्याकरे मनकेऔरैकांस कबीरस्वा
 गपहरिसोरहामया धायपीयाबंदि जिहिसेती
 साधनीकले सोतौसेलीमंदि कबीरबेभ्रौभया
 तौकामया ब्रज्यानहीबमेक छीपातिलकबना
 इकरि दगाध्यालोकअनेक कबीरतनकोजो
 गीसबकरे मनकंबिरलाकोइ सबसिस्विसहजैपा
 द्वेये जेमनजोगीहोइ कबीरयहुतौएकहै प
 डदादीयातेष भरमकरमसबहरिकरि सबहीमा
 हिअलेषे कबीरसरमभागाजीवका अनतदि
 धरियातेष सतगुरपरचेबाहरा अंतरिरस्याअले
 ष कबीरजगतजहंदमराचिया फूटेकुलेकी
 लाज वनबिनसेकुलबिनसिहै गह्योनरामजि
 दाज २० कबीरपधलेबडीधियमी फूटेकुलकी
 लार अलखबिसाखानेघमें दंडेकालीधर २१
 कबीरचउराईहरिनामिलै ऐबाताकीबात ऐकनिस
 प्रेहात्रिधारका गाहकट्टनुननाथ २२ कबीरनवसत
 साजेकामनी तनमनरहासजोइ पीवकेमनिमानैनही
 पटवकायैक्याहोइ २३ कबीरजबलगपीवपरचान
 हा कन्याकवारीजाणि हथलेबाहौसैलीया मुसका
 लपडीपिछाणि २४ कबीरहरिकीसगतिका मनमें
 प्रगजुकास मेवासाताजेनही हनमतैनजदास २५
 कबीरमेवासा मोईकाया दुरिजनकाटेहरि राजपिय २६

रेसंगका जगद्वस्य भवप्रसन्न ॥ ४८ ॥
 कबीरनिमिसे बंद अकासकी
 पडिगरे सो भविकार मूल बिनवा नानदी ॥ बिन संग
 तिमठ छार ॥ कबीर मुखसंगत कीजिये ॥ जोहा
 जलिनतिराइ कदलीसी पनु वंग मुषि ॥ एक बंदति
 ऊंसाइ ॥ कबीर हरिजन सेती रूसणा ॥ संसारी संह
 त तेतरक देन नीपंजो ॥ ज्यंकांलर कावेंता ॥ कबीरमा
 गी मरु कुसंगकी ॥ केला काठे बेरि ॥ बोहाले वो चीरिये
 साधित संग न बेरि ॥ मेर निसांणी मी चकी ॥ कुसंगति
 ही काल ॥ कबीर कहै रे प्राणिप्रां ॥ बांणी ब्रह्म संता
 ज ॥ कबीर कहिनै करं बयो ॥ जगामिलता संसंग दी
 पक कै मां देन ही ॥ जलि जलि मरै पतंग ॥ कबीरमा
 षी गुड मी गदिरही ॥ पंघीर ही जपटाइ ॥ ताली पीटै सि
 रधुनै ॥ मीठे बोइ साइ ॥ कबीर ऊंचै कुल ॥ क्या जनमि
 या ॥ जेकरां ऊंचन होइ ॥ सो वन कलस सुरे मस्या ॥
 साक्षे नीत्या सोइ ॥ ४९ ॥ २५ ॥ सुरांगति को
 रा ॥ कबीर देषा देषी पाक डै ॥ जाइ अपर देखे छुटि ॥
 बिरला कोइ ठाहरे ॥ सतगुर सांझी मूठि ॥ कबीर
 देषा देषी भगति हे ॥ कदेन चटै रंग ॥ बियति पड्या
 ये छोटि सी ॥ ज्यं कंचली नुवंग ॥ कबीर करिये तैक
 रिजा गिये ॥ मारी घास संग ॥ नीर नीर लोइ पई ॥ तऊ
 न छाड्यारंग ॥ कबीर यऊ मन दीजिताम क ॥ सुठि
 से वग मल सोइ ॥ मिरऊ परिआरा सहे ॥ तऊ नइ जा
 ॥ ५० ॥ कबीर पांहन तां किन
 बह ॥ गायाराता मां नदी
 गो संप्रीत करि ॥ जो निरवाहि ॥

[illegible]

[illegible]

लाहोई कबीरपीलकदोहीसांईया जोगकहैये
रोग छांनेलंघयानितकैरे रांमपियारेजोगकंबी
रकांसमिनावेरांमकं जेकोजाणैराबिकबीरबि
चागक्याकरे जेमुषदेवबोलेसधि कबीर
कांसगिअंगविरकतसया रततपाहरिनांईसा
धीगोरबनाथज्यं अंमरनयेकलिमांहि२ कबीर
जहिद्विषेबियारीप्रीतिसं तबअंतरिहरिनांहि जे
बअंतरिहरिनांहि जबअंतरिहरिजीबसे तबबि
धियासं चितनांहि कबीरजिहिघटमेंसंभावसे
तिहिघटिरांमनजोई रांमसनेहीदासबिबि ति
गांनसंचरहोई कबीरस्वारथकासबकोसगा
जगसगलाहीजाणि बिनस्वांरथआदरकरे सो
हरिकी प्रीतिपिछांति कबीरजिहिहिरदेह
रिआइया सोकरेछांनांहोई जतनजतनकरिदा
बिषे तऊउजालाहोई कबीरफाटेदीदेमैफि
रूं नजरिनआवेकोई जिहिघटिमेरासांईया
सोकरेछांनांहोई५ कबीरसबघटिमेरासांईया
संतीसजनकोई भागतिकूंकोहेसधी जिहिघ
टिप्रगठहोई कबीरपात्रकरूपीरांमहै घटि
घटिरह्यासमाई चितचकमकलंगेनही ताथै
धुवाकैकैजाई कबीरपालिकजागिया और
नजागेकोई कोजागेबिषईबिषनस्या कैदांस
बदगीहोई१० कबीरचाल्याजाइया अमोधि
ल्याबुदाइ मीरीमुकसंयंकदा किनिफुसा
ईगाइ ॥ २१ ॥ ५१५ ॥ २२ ॥ साधुमहितांकोअं

कदीरचंदनकीकुटकीसली॥नबंवरकीअंबरांउ
वे॥सोकीछपरीसली॥नांसाधितकाबडगांउ॥क
वीरपुरपाटगोसूबसबसे॥आनंदगोयेठाशरांम
सनेहीबाहिया॥जजडमेरेमां॥२॥कबीरेंदिधरि
साधनप्रजिये॥हरिकीसेवानांदि॥तेधरसंडहट
सारिषे॥नतवसेतितमांदि॥कबीरहैगैगैवरस
धनधन॥छत्रधजाफररा॥तासुयतेंनिष्ठासली
हरिसुभिरतदिनजा॥२॥कबीरहैगैगैवरसधन
धन॥छत्रपतीकीनारि॥तासपठंतरनांतुले॥ह
रिजनकीपनिदारी॥५॥कबीरकचून्पनारीनीदि
ये॥कचून्पनिदारीकमांन॥वामांगसंवारेपीवकं
वावितउछिसुभैरेमां॥६॥कबीरधनितेसुंदरी॥
जितिजायाबैसनोपूत॥रांससुभरिनिरमैरूवा
सबजगयाऊऊत॥१॥कबीरकुलतोसोमला॥जि
हिकुलिउपजेदास॥जिहिकुलिदासनऊयजै॥सो
कुलआकपलास॥७॥कबीरसाधितबांनगामति
मितो॥वैसबोमिलीचंडाल॥अंकमालदेभैमि
टिये॥जांतमिलैगोपाला॥८॥कबीररांमजपतद
लि॥मला॥दूहीघरकीछांनि॥ऊचैमंदिरजादि
दे॥जहांमगतितसारगपांनि॥९॥कबीरभयाहै
कैतकी॥मवरभयेसबदास॥जहांजहांमगतिक
बीरकी॥तहांतहारांमनिवास॥११॥५२॥॥३॥॥
साधिकोआं॥कबीरमधुअंगिजेकोरहे॥तोति
रतनलागेवार॥३३३३अंगसंलागिकरि॥रू
बतहैसंसार॥कबीरइविधाहरिकरि॥क

कैलासि त्रुसी तलव डतपतिहे होऊकदि
आगिर कबीरचनल अकासां धरकीया मधि
नंतरिवास वसुधाधोम विगतारहे बिनवा
हरबिसवास वासुरिगमिनैतिगमि नासुप
नंतरंगम कबीरातहां बिलबिया जहांछांदडी
नधंस जिहियेडैपंडितगये अनियापहीबहार
र ओघटघाटीगुरिकदी तिहिचठिरह्याकबी
र कबीरसगनरकये हरह्या मतगुरकेपरसा
दि चरनकवलकीसौजमे रहिस्येअतिरआदि
कबीरहिहस्येरांमकहि मुसलमानबुदाइ
कहेकबीरसोजीवतां डंडमेकदेनजाइ कब
रडप्रियाम बाइयक सुप्रयासुषकंरि सदा
नदीरांमके जितिसुषइयमेलेइरि कबीरह
दीपीयरी चंताउजलताइ रांमसनेहीयमिले
इयंबरंगवाइ काबाफिरिकासी नया रां
भयारहीम मोवचनमेदासया बैचिकबीर
॥२०॥ कबीरधरती असमानबिचि दोइव
अबध ॥ द्यष्टदरसनसं सैप ड्या अरुचौरा
सिध ॥ ११॥ ३६॥ २॥ सारंग सीकोयरा
कबीरपीरकूपदरिनां जहे नीरआनबो
दसरूपकोई साधहे ततकाजागानहार
बीरसाधितकीनदी सबैबैश्यों जंशों ॥ ज
रांमनउचरे ताहातनकाहो ॥ २॥ ५३॥
॥ २॥ ५३॥ कबीररांमनांम सबकोकहे क
॥ २॥ ५३॥ सोईरांमसताकहे सोईकोतिग

[illegible]

मिले सुरतिसमानासन कबीरगृहीताचार
गी बेरागीतोसीष उऊंकात्याक्षिचिजीवहेदो
नैसंतोसीष कबीरबेरागीतोबिक्रतमलागि
चितउद्धारा उऊंचकारीतापडे तक्रवारन
कार कबीरजैसीउषजेपेडस तेसीनिबंदेकोरि कबी
तोपेकापेकाजोडता जुडिसीलाषकरोरि कबी
रहरिकेनाउस प्रीतिरहैइकतार तोमुषतेमोती
ऊडे हीरेवारनपार कबीरअसीबांगीबोल
ये मनकाआपाघोइ अपनातनसीतलकरे और
नकेसुषहोइ कबीरकोइएकरावेसावधान
चेतनिपहरेजागि वसंतवासनसूधसे चोरन
सकईलागि ॥१०॥ ॥५५॥ ॥३५॥ निसासुकोअंता
कबीरजितिनरजतरांह उदिकथेंप्रफ पाठ
कीयो सिरजेप्रवनकरचरन जीवजीममुषतास
यो उरक्षणअधैसीस बीसपंधांइमरधियो अं
नतहांजरे जहांतैंअनत चधियो इहिमांतिमय
नकउपमे उपनकवरूंछंछरे कलकरपाल
बीरकहि इबप्रतिपालक्यंकरे कबीरभ्रा
धाक्याकरे कहासुनावेलोग नाडाघडिजि
घदीया सोईपूरनजोग कबीरचरनदा
चीन्हिले घेबेकं कहारोइ दिलमेंदिरमै
रितांशिपछेचडासोइ कबीररांमनांम
बोहडा बांहीबीजअघाइ अंतिकालि
डे तोनिरफलकदेनजाइ कबीरवि
मनमैबसे सोईचितमैंआंश बिनचि

करे रहे प्रनूकी बांशि ॥ कबीर का वंचित वै का
 तरे च्यंता होइ ॥ आसन चिंता हरि करे जो तोहि ॥ क
 बीर जाके जेता निरमला ॥ ताके तेता होइ ॥ रती घटे
 ततिन बंधे ॥ जो सिर कटे कोइ ॥ कबीर चिंता न क
 रि अचिंतरु ॥ सोई है समग्र ॥ पस्यं घेरु जी बजत
 तिन की गांठी कि सांगरथ ॥ कबीर सुतन बांधेगा
 ठडी ये टिसमा ताले ॥ सोई सें सन मुख रहे ॥ जहां मा
 गे तहां देइ ॥ कबीर रामनाम सें दिल मिली ॥ जे महं
 म पड़ी बिरा ॥ मोहि भरो सा प्रष्टुका ॥ बंधान र किन ना
 ॥ कबीर तू का हे डरे ॥ सिर परि हरिका हाथ ॥ दस
 ती चटिन ही हो लैये ॥ ककर म सें जु लाय ॥ कबीर
 दसली चटिया गाने के ॥ सहज डली चाडारि ॥ स्वान
 के पसंसार है ॥ पडा सु सौ ज प्रसारि ॥ कबीर माता
 बाण म क करी ॥ नाति नातिकाना ज ॥ दावा किस ही
 कान ही ॥ चिन बिना इति बडराज ॥ कबीर माति महा
 तम प्रेम रस ॥ गदा न रा गुण नेह ॥ एस बही अह लग
 या ॥ जबर कट्या कटु देहा ॥ कबीर मा गण मरया मा
 न है ॥ बिरला बंचे कोइ ॥ कहै कबीर रघुनाथ स
 कबीर पाडु जयंजर मन नवर ॥ अरथे अतु पम वास
 यमना मसी च्या अमी ॥ फल लाग बेसास ॥ कबीर
 मेर निटी मुकता प्रा ॥ पाया ब्रह्म बिसास ॥ अब मे
 रे रज्जा को नही ॥ एक तु मारी आस ॥ कबीर जा की
 दिल में हरि बसे ॥ सो नर क लये कोइ ॥ एके लहरि सें
 मेद की ॥ उखंदा लिह सव जाइ ॥ कबीर पद गाये लै
 लीन के ॥ कटी तसं सै पास ॥ सबै पिछे ॥

कवितांवेसास, कबीरगाव्याहीमैरोजहैरो
व्याहीमैराग॥ १॥ कबीरगीमिहमै॥ २॥ कबीरहीही
वराग॥ कबीरगायातिनिपायानही॥ अणागांपा
पै॥ ३॥ जिनिगायाबिसदाससं॥ तिनरोमरदास
रपरि॥ ४॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥ ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥
कबीरसंपदमाहि समाईया॥ सोसाहिबनहीहो
॥ १॥ सकलमांडमैरभिरदा॥ साहिबकहियेसो॥
॥ २॥ रहैनिरालामांहडपै॥ सकलमांडतामाहि॥ क
बीरसेवैतासको॥ ३॥ जाकोईनाहि॥ कबीरनो
लेनलीषसमके॥ बडतकीयाबिसचार॥ सतागुरि
सरुबताईया॥ ४॥ परिबलासरतार॥ कबीरनाके
मुहमाथानही॥ नहीरूपकरूप॥ पुहुपबासये
पतजा॥ ५॥ ऐसांततअनूप॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥ ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥
कबीरमेरेमनमैपरिगई॥ १॥ ऐसाएकदर
र फाटाफटकपघोराज्जं॥ मिल्यानइजीवार॥ क
बीरमनफाटाबाइकबुरै॥ मिटीसगाईसाक॥ जै
परि॥ २॥ धतिवासका॥ ककटिरुवाआक॥ कबी
रचंदनभागागुणकरै॥ जैसैंचोलीपंत॥ दोइजन
भागोनांमिले॥ मोताहलअरुमन॥ ३॥ पासिबिनच
कपडा॥ कदेसुर॥ ४॥ गन होइ॥ कबीरत्यागोण
नकरि॥ कनककांमिनीदोइ॥ कबीरचितचे
नमैगरकके॥ चेतनिदेषैमंत॥ कतकतकीसलि
दिये॥ गलबलसहरअनंत॥ कबीरजाताहैस
जाणहै॥ तेरीदसानजाइ॥ छेवटयांकीनाबज
धयोमिलेगेआइ॥ कबीरनीरमिजाचंअक

किरो साधुधरधरबार जो वृषावतहाइगा साध
देगा ऊषमारि ॥ कबीरसतगांठी कोपीनहे ॥ साध
नमोनेसंक ॥ रामअमलिमातारहे ॥ गिणोइंद्रकोरं
क ॥ कबीरदावेदफणिहोतहे ॥ निरदावेतिर
संक ॥ जेनरनिरदावेरहे ॥ गियौइंद्रकोरंक ॥ क
बीरसबजगहंठिया ॥ मंदलकंधिचटाइ हरिबि
नअपनांकोनही ॥ सबदेषेओकिबजाइ ॥ १० ॥
५८ ॥ मंमरयाइकोअग ॥ नांकछुकीयानकरि
सक्या ॥ नांकरयो जोगसरीर ॥ जेकछुकीयासुह
रिकीया ॥ ताथैतयाकबीरकबीर ॥ कबीरकीया
कछूनहोतहे ॥ अनकीयासबहोइ ॥ जेकीयाक
छुहोतहे ॥ तोकरताओरैकोइ ॥ कबीरजिसहि
नकोइतिसहितं ॥ जिसहितंतिससबकोइ ॥ दरि
गहतेरीसांइया ॥ नामहरुमनकोइ ॥ कबीरप
एकषडेहीनांलहे ॥ औरषडाबिललाइ ॥ सांइमे
रासुलबना ॥ सुतांदेइजगाइ ॥ कबीरसातसमं
दकीमतिकरौ ॥ लेषनिसबबनराइ ॥ धरतीसब
कागदकरु ॥ तऊहरिगुणलिख्यानजाइ ॥ ५ ॥ क
बीरअबरनकोकाबरनिये ॥ मोंपेलख्यानजाइ
आपयांवांयांवाहिया ॥ कहिकहियाक्योमाइ
॥ कबीरफलबांवेफलदांहिये ॥ फलहीमाहि
व्योहार ॥ आगेपीछेफलमई ॥ राधेसिरजतहार
॥ कबीरसांइमेराबांठिया ॥ सहजिकरैव्योपार
॥ नडांडीबिनपालडे ॥ तोलेसबसंसार ॥ कबी
रवासानांवरि ॥ कीयाराइलुंग ॥ जिसहिचला
वैपयितं ॥ तिमहिनुलावेकरा ॥ कबीरकरणी

क्याकरे जेरांमम कैर महा ॥ जिहि जहि डाली प्रग
 धरे सोई न दिन दिजा ॥ कबीर जदिका मांझ
 नमिया ॥ करुं न पाया सुष ॥ डाली डाली में फिसा
 पातों पातों डब ॥ कबीर सांई संस बहोत है ॥ बंदे
 थैं कचुचां हि राई थैं परबत करे ॥ परबत राई मां हि
 ॥ १६॥ ६६॥ ॥ कुसबद को रंग ॥ कबीर अगो सु
 देली से लकी पडतां ले प्रसास ॥ चोट सहारै सबद
 की ॥ तास गुरु मै दास ॥ कबीर खंदन तो धरती सहे
 बाढया सहे बन राइ ॥ कुसबद तो हरि जन सहे ॥ ६
 जैस द्यान जाइ ॥ कबीर सीतलता तब जां गिये ॥
 समितार है समा ॥ पषछा डै निरषर है ॥ सब दिन ह
 प्या जाइ ॥ कबीर सीतलता मई ॥ पाया बदन गिया
 न ॥ जिहि बेसंदर जग जल्पा ॥ सो मेरे उदिक समा न
 ॥ १७॥ ६७॥ ॥ रस तद को रंग ॥ कबीर सबद सरी
 र मे ॥ बिन गुण बा जैतंति ॥ बाहरि नीतरि मरि रदा
 ता थैं छुटि नांति ॥ कबीर संती सां तोषी सा बक्ष
 न ॥ सबद नेद सुबिचार ॥ सत गुर के परमाद थैं स
 द जसी लमत सार ॥ कबीर सत गुर त्रै साचा हिये
 जैसा सिकली गर होइ ॥ सबद मसक ला के रि करि
 देह प्रपन करे सोइ ॥ कबीर सत गुर साचा सुरि
 वा ॥ सबद जु बा द्या एक ॥ लागत ही न्वे मिलि गया
 पड्या कले जे छेक ॥ कबीर हरि सजे जन बेधि
 द्या ॥ सर गुण सी गति नां हि ॥ लागी चोट सरी र मे
 कर क कले जे मां हि ॥ कबीर ज्यं ज्यं हरि गुन मां
 भल ॥ ह्यं ह्यं लागी तीर ॥ सांठी सांठी क डिब डी
 मलकार द्या सरी ॥ ज्यं ज्यं हरि गुन मां तल

तस्य नामें तीरा ॥ नामें धै भागन ही ॥ सां हन हा
 रक बीर ॥ सारा बडत पुकारिया पीठ पुकारे श्री
 रा ॥ नामी चोड सब दकी ॥ रक्षा कबीरा वोर ॥
 ॥ ५०१ ॥ जी बत बत क को रांग ॥ कबीर जी व
 त म त क कै रहे ॥ त जे जगत की आस ॥ त ब हरि से
 वा आ पण करे ॥ म ति डष पा बैदास ॥ ॥ कबीर मन म
 त क नया ॥ डर बल नया सरीर ॥ त ब ये डै लागा हरि
 फिरे ॥ कहन कबीर कबीर ॥ कबीर म रि म ड ह टि
 र द्या ॥ त ब को न ब के सार ॥ हरि आ द रि आ गें लीया
 ज्य ग क ब छ की लार ॥ कबीर घर जालें घर ऊ ब
 र ॥ घर राखें घर जा ॥ एक अंच मा दे षिया मंडा काल
 को षा ॥ ॥ मरतां मरतां जग म वा ॥ ओ स रि स् वान
 को ॥ कबीरा जै सें म रि स् व ॥ ज्य ब हरि न मर ना हो
 ॥ ॥ वेद म वा रो गी स् व ॥ म वा स क ल सं सार ॥ एक
 कबीरा ना स् व ॥ जिति के रां म अ धार ॥ ॥ कबीर म
 न मा स्या म फित मुद्रै ॥ अं हं य रै सब बू टि ॥ जोगी था
 सोर मि ग था ॥ आ स र ही वि न्ति ॥ कबीर जी व
 न थें म रि वी म ली ॥ जो म रि जां तो को ॥ मर नै प ह ली
 जे को म रे ॥ तो क लि अ ज रां व र हो ॥ ॥ कबीर घरी
 क ली टी रां म की ॥ षो टा टि के न को ॥ रां म क सो टी
 सो टि के ॥ जी जी व त म त क हो ॥ ॥ कबीर आ पा मे
 ट्यां ह रि मि लें ॥ ह रि मे ट गं सब जा ॥ कथ क हां नी
 पे म की ॥ क द्यां न को प तिया ॥ ॥ कबीर निर गु सां
 वां व हि जा ॥ जा के था धी नी ही को ॥ दी न ग र ही
 बी ब द गी ॥ कर तां हो सु हो ॥ ॥ कबीर दी न ग
 बी दी न कं ॥ इंदर कं अ भि मां न ॥ इंदर दि ल बि धे
 म री ॥ दी न ग री बी रां म ॥ ॥ कबीर चै रा सं त का द न
 स वि का प र द्या ॥ कबीरा जै सें कै र द्या ॥ ॥ ॥

करे जे रामन के सदा ॥ जिहि जहि डाली प्रग
सोई न दिन दि जा ॥ कबीर जदिका मां ह ज
मिया ॥ करुन पाया सुष ॥ डाली डाली मे फिसा
ता तो पातो डब ॥ कबीर साई से सब होत है ॥ बंदे
थे क चुनां हि राई थे परबत करे ॥ परबत राई मां दि
॥ ६७ ॥ कबीर अणी सु
हेली से लकी ॥ पडतां ले प्र उसास ॥ चोट सहारे सब द
की ॥ तास गुरू मै दास ॥ कबीर खं दन तो धरती सदै
बाठ या सदै बन राइ ॥ कुसब द तो हरि जन सदै ॥ ६
जे सदा न जा ॥ कबीर सीतल तात बजा गिये ॥
समितार है समा ॥ पष छा डै निरष र है ॥ सब दिन ह
षा जा ॥ ३ ॥ कबीर सीतल ता मई ॥ पाया बदन गिया
न ॥ जिहि बै सें दर जग जल्य ॥ सो मे रे उदिक समा न
॥ ७१ ॥ कबीर सब द तो जं ॥ कबीर सब द सर
र मै बिन गुण बी जेतं ॥ बाहरि नीतरि मरि र ह
ता थै छुटि जाति ॥ कबीर सें ती सां तो घी सा बंध
न ॥ सब द ने द सु बिचार ॥ सत गुर के परमा द थै ॥
हज सील मत सार ॥ कबीर सत गुर जै सा चा
जे सा सिकली गर होइ ॥ सब द मस क ला के रिच
देह प्रपन करे सोइ ॥ ३ ॥ कबीर सत गुर सा चा
वां ॥ सब द नु बा द्या एक ॥ लागत ही न्ने मिलि
पड्या कले जे छेक ॥ कबीर हरि सजे जन
चा ॥ सर गुणा सी गति नां हि ॥ लागी चोट सर
कर क कले जे मां हि ॥ कबीर जू जूं हरि गु
भल ॥ जू जूं लागी तीर ॥ मां ती सां वी क डि
॥ ७२ ॥ जू जूं लागी तीर ॥ जू जूं हरि गु न स

तुम्हारे नामों की। नामों में भाग नही। सां हन ह
रकबीर। सारा ब्रह्म तपुकारिया पीड़ुकोरे श्री
राम। नामी चौह सब दकी। रक्षा कबीरा वीर॥
॥ १०० ॥ जी तनिक न क को शो ग॥ कबीर जी व
त म त क कै र हे॥ त जै जगत की आस॥ त व ह रि से
वा आ पण करे॥ म ति ड ष पा वै दा स॥॥ कबीर मन म
त क न या॥ ड र ब ल न या स री र॥ त ब ये डै ला गा हे रि
पि रे॥ क ह न क बी र क बी र॥ क बी र म रि म ड ह टि
र द्या॥ त ब को ई न ब के सार॥ ह रि आ द रि आ गे ली या
जु ग क ब ल की नार॥ क बी र ध र जा ल ध र क ब
रे॥ ध र रा य ध र जा॥ एक अं चं मा दे षि या मं डं काल
को षा॥ म र तां म र तां ज ग म वा॥ औ स रि म वा न
को॥ क बी र औ स रि म वा॥ जु ब ह रि न म र नां हे
॥ बि द म वा रोगी म वा॥ म वा स क ल सं सार॥ एक
क बी र नां म वा॥ जि नि कै रां म अ धार॥॥ कबीर म
न मा स्या म भि त म डे॥ अं हं य ई सब बू टि॥ जो गी था
सो र भि ग था॥ आ स यां र ही बि न्ति॥ कबीर जी व
न ये म रि बौ म ली॥ जो म रि जां गे को ई॥ म र नै प द ली॥
जे को म रे॥ तो क लि अ ज रां॥॥ कबीर ध री
क सो टी रां म की॥ षो टा टि॥ को ई रां म क सो टी
सो टि कै॥ जो जी व न म त॥॥ कबीर आ पा मे
ट्यां ह रि म ले॥ ह रि मे ट ग॥ ब जा॥ क थ क हां नी
पे म की॥ क ट्यां न को प तिया॥॥ कबीर नि र गु सां
वां व हि जा॥ जा कै था धी नी ही को ई॥ दी न ग री
बी य द गी॥ क र तां हो ई सु हो ई॥॥ कबीर दी ना
वी दी न क॥ ई द र कं अ भि मां न॥ ई द र
न री॥ दी न ग री बी रां म॥॥
स चि का प र द स॥ कबीर औ ई

इसोमोवाजिया पड्यानिमानैधाव बेतबुहारैसरि
चै मुफ मरणैकाचाव कबीरमेरेसंसाकोनही
हरिसंलागाहेत कोमकोधसंजुकाण चौडेमा
सुधावेत कबीरसरैसारसंजाहिया पहसासह
जसंजोग अबकैग्यांनग्येदचटि बेतेपडनका
जोग कबीरसरैतबहीपरधियेनडेधणीकै
हेत उरजाउरजाकैपडे तऊनछांडेघेत क
बीरघेतनछांडेसरिया फूलेदेदलमाहि आ
साजीवणमरणकी मनमेंआरौनाहि कबी
रअबलौजूक्याहीबरो मुडिचात्याघरहरि सि
रसाहिवकंसौपिये सोचतकीजेसर कबीरअ
बतौमैसीकैपडी मनकासुचितकीरु मरने
कहाडराइये हाथिसिंधौरालीरु कबीरजि
समरनैचैजगडरे सोमेरेआनंद कबमरिह
कबदेबिहं सरनपरमानंद कबीरकाइरब
उतपमांव ही बहकिनबोलेसर कोमपड्या
हीजांतिवै किसकेमुखपरिनर कबीरजाइ
पूखोउसघाइले दिवसनपीडनिसजाग वा
हराहाराजांतिहै कैजांरौजिसलाग कबी
रघाइलधमैगहिवस्या राग्यारहेनओट जत
नकीयाजीवैनही बणीमरमकीचोट कबी
रऊंचाबिरषअकासफल पथीमयेफुरि बड
तसयानेपविरहे फलतिरमलपरिहरि कबी
रहरिमयातोकामया सिरदेनेडाहोइ जबल
गसिरसोपैनही कारिजसिधिनकोइ कबी

रम्यधरप्रमका॥यालोकाधरनाहि सीसउतारे
हाधिकरि॥सोपेसैधरमांदि॥१॥कबीरनिजधर
प्रमका॥भारगअगमअगाध॥सीसउतारिपगत
लिधरे॥तबनिकटिप्रमकास्वाद॥२॥कबीरप्रम
नयेतौनयजे॥प्रमनहाटिबिकार॥रजापरजा
जिसरुवै॥सिरदेमोलिजाइ॥३॥कबीरसीसकाटि
पासंगदीया॥जीवसरसरिलीनरु॥जोहिमादेसो
आइल्यो॥प्रमआधाहमकीनरु॥४॥कबीरसरैसी
सउतारिया॥छाडीतनकीआस॥आगेथेहरि
मुनिकिया॥आवतदेष्पादास॥५॥कबीरमगति
इहेलीरांमकी॥नहींकापरकाकांम॥सीसउ
तारेहाधिकरि॥सोलेसीहरिरांम॥६॥कबीरच
गितिइहेलीरांमकी॥जैसीघांढेकीक्षर॥जैडो
लेतौकटियडे॥नहींतौउतरेपार॥७॥कबीरम
गतिइहेलीरांमकी॥जैसीअगतिकीजाल॥डाकि
पडेतेऊबरे॥दाधेकोतिगहार॥८॥कबीरघोडा
प्रमका॥चेतनिचटिअसवार॥ग्यानघडगग
हिकालसिरि॥मलीमचारैमार॥९॥कबीरहीरा
वणिजिया॥महिरोमोलिअपार॥हाडगलेमाट
गली॥सिरसाटैब्योहार॥१०॥कबीरजैतेतारेरे
णिके॥तेतेबेरीमुकु॥धडसूलीसिरकंगुरे॥तऊ
मबिसारुतुऊ॥११॥कबीरजैहास्यातौहरिसव
जैजीत्यातौडाव॥पारबदनकोसेवतां॥जैसिर
जापुतजअधे॥१२॥कबीरसिरसाटैहरिसेविये
छाडिजीवकीबांणि॥जै

बुद्धा बिनसतनाहीवार ॥ कबीरपाणी केरा बुद्ध
बुद्धा इसी हमारी जाति ॥ एक दिना छिपि जाहिरो
तारे ज्यं परमाति ॥ कबीर यहु जग कछु नही बि
न घारा छिन मीठ ॥ कालि जु बेठे माडियो आजम
साणा दीठ ॥ कबीर मंदिरि आप्यो ॥ नितु नति क
रता आलि मड हट देषा डरपता सो चौडे दीन
जालि ॥ कबीर मंदिर माहि क बकती ॥ दीवा
के सी जोति ॥ हंस बटा ऊ चलि गया काठो घर की
छोति ॥ कबीर कंचा धो लहर साडी चित्री यो लि
एकरा म के नां तु बिन जंम पाड़े गारो लि ॥ कबीर
कदा ग बियो ॥ काल गहे कर के स नां जानू कदा मा
रि सी ॥ कै घर के पर देस ॥ कबीर जंत्र न बाजै ट
टिगई सब तार ॥ जंत्र बिचारा क्या करै चले बजा
वगहार ॥ कबीर धवणि धवती रदिगई बुकि
गण अंगार ॥ अहरतिर द्या तम कहु ज बउठि
चले लुहार ॥ कबीर पथी ऊ माप थ मिरि बुगचा
बांधा पीठि मरनां मुह आगे बडा जीव गाका म
बहुत ॥ कबीर यहु जीव आया हरथे अजो मी
जासी हरि बिचै के बासै र मिर ह्या ॥ काल र ह्या सर
पूरि ॥ कबीर राम क द्याति निकहि लीया जुफा
प्रहंती आइ मंदर लागी धारथे ॥ तब कछु काटणा
न जाइ ॥ कबीर बरिया बीती बल गया बरत पं
पलट्या और ॥ बिगड़ी बात न बा ऊ डै कर छिट
कै क बहोर ॥ कबीर बरिया बीती बल गया
अरु बुरा क माया ॥ हरि जिति छाडे हाथथे दिन ते

दुःखायो॥ कबीरहरिसूहेतकरि॥ कहेचितनला
 व॥ बांध्याबारिषटीकके॥ तापसुकितीएकआवे
 कबीरविषकेवनमेंघरकीया॥ अपरहेलंपटा
 ताथेंजीवरेडराद्या॥ जागतरेतिबिहाइ॥ कबी
 रसबसुषरांसहे॥ औरडुषांकीरासि॥ सुरंतरमुनि
 परअसुरसब॥ पडेकालकीयासि॥ कबीरका
 चीकायामनअधिर॥ धिरधिरकामकरंत॥ जंजं
 नरनिधडकफिरे॥ तूंत्पूंकालहसंत॥ ३० कबीररो
 दगहारेमीमये॥ मयेजलांवनहार॥ हाहाकरते
 तेमयेकासनिकरुं॥ ३१ कबीरजिनिहस
 जायेतेमये॥ हमसीवरणहार॥ जिहमकंअगे
 भले॥ तिनितीबंभानार॥ ३२ ॥ ३३ ॥ सतलित
 ॥ ३४ ॥ जहोजुजामरणाव्यापेतही॥ मवानसु
 गीयेंकोइ॥ चलिकबीरतिहिंदेसडे॥ जहांवेद
 बिधाताहोइ॥ कबीरजोगीबनिबस्या॥ धनिषायें
 कंदमूल॥ नांजातों॥ किसजडीयें॥ अमरमयाअस
 यल॥ कबीरहरिचरनूचल्या॥ मायामोहयेंटूटि
 गानमेंफलअसराकीया॥ कालगायासिरकटि॥
 कबीरयऊमनपटकिपछाडिले॥ सबआयाभि
 टिजाइ॥ पांगुलकैपीवपीवकरे॥ पाछेंकालनया
 ॥ ३५ ॥ कबीरमनतीषाकीया॥ बिरहलाइषरसां
 चितचरनोंमेंचुभिरह्या॥ तहांतहीकालकाया
 ॥ कबीरतरवरतासबिलंबिये॥ बारहमासफें
 जेत॥ सीतलछायागदरफल॥ प्रणीकेनिकरंत
 कबीरदातातरवरदयाफल॥ ३६

श्रीचलेदिसावरा विरघामुफलफेनंतः
 कबीरपाइपदारथये
 निकंरि केकरलीयाहाथि जोडीधिबुटीह
 सकी पड्याबंगकेसाथि कबीरयेकअचेमा
 द्विषिया हीराहाट्टिकाइ परिषयाहारेबाह
 रा कोडीबदले जाइ कबीरगुदड़ीवीपरी
 मोहरागायिकाइ घोटाचाध्मागाठड़ी इब
 कखुलीपानजाइ कबीरपैडेमोतीवीपरै
 आधनिकसमाआइ जोतिविनाजगदीसकी
 जगतनुंध्याजाइ कबीरयऊजगअक्षला
 सीअधीगाइ बछ्यायासेमरिगाया फनीचाम
 चटाइ ॥२३॥ मारबकोअंय ॥ कबीरजबगु
 नकोंगाहकभिले तबगुनलाषविकाइ जबगुन
 कोंगाहकनही तबकोबदलेजाइ ॥ कबीरल
 हरिसमेदकी मोतीबिषरेआइ बगुलामऊन
 जानई हंसचुरेंचुलिजाइ ॥ कबीरहरिहीराज
 नजौहरी लेलेमोडिमहादि ॥ जबरमिलेगापार
 य तबहीस्यांकीसाटि ॥३॥ ३४॥ उपजणिकी
 जता ॥ कबीरनाउंनजातौ गोउंका मारगिलाग
 जाउ काटिजुकोटानजिसी पहलीकूंनयंडा
 उं कबीरसीषभईसंसारथे चलेजुसाईपास
 अविनामीमोहिनेचल्या पुरईमेरीआस ॥ ६५
 लोकअचिरजमया बदनापड्याविचार कबी
 राचाल्पारांमये कोतिगहारअपार कबीर
 ऊंचाचढिअसमानक मेरउलेघेरुडि पमुप

बरु जीव जंतु सब रहे मेर मैं बडि ॥ सदा पांणी पा
 ताल का ॥ काटिक बीरापी व ॥ बासी पाव सपडि
 मये ॥ बिधे बिले बे जीव ॥ कबीर सुपिने हरि मि
 ल्या ॥ सुता नीया जगाइ ॥ अंधिन मी चंडरपता ॥ म
 तिसुपिता होइ जगाइ ॥ कबीर गोविंद के गुन बड
 तहे ॥ निवे जुहिर दे मां है ॥ मरता पांती तां पीऊं ॥
 मति वैधी ये जाहि ॥ कबीर अब तो ऐसा मया ॥ नि
 रमोलिक निज नां ॥ पहली काच कथी रथा ॥ कि
 रता गं वैवां ॥ मीस मंद विष जल तस्या ॥ मन
 नही बांधे धीरा ॥ सब लसने ही हरि मिले ॥ तब उ
 तरे पारिक बीर ॥ कबीर मला सुहे ऊत स्या ॥ पू
 रा मेरा भाग ॥ राम नां मनो का गह्या ॥ तब पांणी ॥
 पंकन लाग ॥ कबीर के सौ की दया ॥ संसाधाल्या
 पोइ ॥ जे दिन गये भगति बिन ॥ तिद न साले मोहि
 ॥ कबीर जाच ग जाइथा ॥ अमो मिल्या नू ॥ नूच
 लेवा ल्या घरि आया ॥ मारी पाया सचा ॥ १२ ॥
 ३५ ॥ दया निरबे दता दो अंत ॥ कबीर दरिया
 प्रज ल्या ॥ दाऊं जल थल फोल ॥ बसनां ही गो
 पाल सं ॥ बिन सै रतन असोल ॥ ऊंन बिआइ
 बादली ॥ बरसत लागे त्रेगार ॥ ऊठिक बीरा धा
 ह दे ॥ दागत है संसार ॥ दाध बली ता सब डुबी
 सुपी न देखे कोइ ॥ जहां कबीरा पग धरे ॥ तहां तु
 क धीर ज होइ ॥ ३५ ॥ लुटि को जग ॥
 कबीर सुंदरि सूक है सुगिह
 गगिले तुम आइ करि नह

बीरजेकोसुंदरी जाणिकरेबिनबीर
रुंआदरे परमपुखिनरतार कबीरजे
साईमजे तजेआंतकीआस ताहिनकबह
पुं प्रलकनछाडेपास कबीरइसमनक
कहं नांरुंकारिकरिपीसि तबमुषपावेसु
ब्रह्मफलकेसिमि कबीरदरियापारि
डोलनां मेल्पाकंतमचाइ सोईनारिसुलब
नितप्रतिफलयांजाइ ॥ १॥ २६२ ॥ कबीर
मिगंठटबनमाहिं ॥ ओसैघटिघटिगंमहे ॥ इति
यांदेवेनोहि ॥ कबीरकोईयेकदेवेसंतजन
जाकेपांचोदाधि ॥ जाकेपांचोबसिनही ॥ ताह
रसंगितमाधि ॥ कबीरसाईतनमेंबसे ॥ सप्प
नजांतोतास ॥ कबीरसंतरीकेमगज्जं ॥ फिरीफिरि
सुंदेघास ॥ कबीरखोजीरंगका ॥ ग्याजुसाध
लदीपि रामतोघटहीनतरिरमिरद्या ॥ जो
आवेपरतीति ॥ कबीरघटिबधिकहीनदे
धिये ॥ ब्रह्मरद्यानरपूरि ॥ जितिजान्यातिनि
कटिहै ॥ हरिकहेतहरि ॥ कबीरमैंजाए
हरिहरिहै ॥ हरिरद्यासकलनरपूर ॥ आप
छांतोबाहरा ॥ नेडाहीयेहरि ॥ कबीरति
केवोलेगंमहे ॥ परबतनरेभाइ ॥ सतगुरमि
परचासया ॥ तबहरिपायाघटमाहि ॥ क
रामनांमतिरुंलोकमें ॥ सकलरद्यानर
यकुचतुराईजाउजलि ॥ प्रोजलडोलेहं

कबीरे जंनै तैं तैं में पूतली ॥ त्पंछानिक घटमां हि
 मरिषी लोगन जां राही ॥ बाहरि दं दृग जां हि ॥
 १०१ ॥
 कबीर लोक बिचारा
 नो दई ॥ जिनहन पाया पांन ॥ रांमनां मरा तरहे
 तिनहन मो वै आंन ॥ १ ॥ कबीर दोष पराये दोष करि
 चत्पाह संत ह संत ॥ अपनै चितिन आवही ॥ जिन
 की आदिन अंति ॥ २ ॥ कबीर निंदक ते हारा धियो आ
 गशि कुटी बंधा ॥ बिन सावरा पां रां ॥ बिन ॥ निर
 मल करे सुभा ॥ ३ ॥ कबीर निंदक हरि न की जिये
 दीजे आदर माना ॥ निरमल तन मन सब करे ॥ बकि
 बकि आंन दिआंन ॥ ४ ॥ कबीर जे कोनी दै साधक
 संकुट आवै सो ॥ नरक मां हि जां में मरे ॥ मुकति
 बक बहू हो ॥ ५ ॥ कबीर घासन नी दिये ॥ जे पां दो
 तलि हो ॥ ६ ॥ उडिये जे आधि में मरा ॥ हेला हो ॥
 ७ ॥ कबीर आपन यौन सरा हिये ॥ परनिंदिये न
 को ॥ अजरुं लंघे व्योहडे ॥ नां जां रां का हो ॥
 ८ ॥ कबीर आपन सरा हिये ॥ और न कहिये रंक
 नां जां जां रां कि सवितलि ॥ कहा हो ॥ करं ॥
 ९ ॥ कबीर आठ गाइये ॥ और न वगिये को ॥ आपठ
 पां सुख ऊपजे ॥ और ठगो ॥ १० ॥
 ११ ॥ कबीर हरिया जां यों रूखडा ॥
 उमपां रां काने ह ॥ सका काठन जां रां ॥ कबहुं
 बस मेह ॥ १२ ॥ कबीर किरिमि रिकिरि ॥
 या ॥ पां हय ऊपरि मेह ॥ माटी गलि
 पां हन दोही तेह ॥ १३ ॥ कबीर

धड बांधी मिषराह सगुरां सगुरां चुनि लीये
कपडी निगुराह कबीर हरिर सखिया
हम गारि राह नीर निवाणी ठाहरो नाऊं
परदीह कबीर मुठकर मिषा नष सषा
रज्याह बाहन हो राका करे बाह गान लागे
पाह कबीर सुरये श्वपिलाइये श्वे विष हो
ह जाइ जे साकोई ना मिले संश्रये विष घाइ
कबीर जाले देव डपणा सरले ये दिष जरि
पेची छाहन बीसरो फल लागे ते हरि कबीर
ऊंचा कुल के कारने बस बधा अधिकार चेद
नवास मे देन ही जल्य सब परिवार कबीर
दन के बिडे नीवति चदन होइ बडा बंस बडा
इतां यंजि निबरे कोइ कबीर आब के जे साई मिले तो सब ड्य
आधो रोइ चरन ऊपरि सीस धरि कहं सकव
तां होइ कबीर साई तो मिलि दिगे पूछहि
गोकुसलात आदि अति की कहंगा उर अंत
की बात कबीर नलि बिगाडिया तं नांव
मेलाचित साहिब गार बाले डिपे नफर दि
नित कबीर करता करे बडुत गुन ओ
कोई नाहि जे दिल बो जे आयणी तो सब
शामुऊ माहि कबीर ओ सर बीताओ
पीवर ह्या परदेस कलेक उतारो के सब
संमंसे देस कबीर करत दे बीतती
बंद ऊपरि जोर होत है जम

गुसां॥ हजकाबैकैकैगया॥ केतीबारकवी
 र॥ सीरामुमैक्याघता॥ मुष्ठांतबोलैपीर॥ ६ क
 र॥ जंमनमेरातुमसो॥ यं जेतेराहो॥ तातालो
 हायंमिले॥ संधिनलपईको॥ ७ ॥ ७ ॥ राधा
 कवीर॥ कवीर॥ कवीर॥ कवीर॥ सकलमुद
 नपतिरा॥ सबहीकरिअलगारहो॥ सीविधि
 महिवता॥ १॥ कवीरजिहिवरियांसांइमिले ता
 सनजानैओ॥ सबकंसुषदेसबदकरि॥ आप
 णीअपणीवीर॥ २ कवीरमतकाबाहुला॥ ऊं
 डावहैअसोस॥ देवतहीदहमैंपडे॥ दईकिसा
 कोदोस॥ ३ ॥ ७ ॥ ७ ॥ कवीरअ
 बतौअसीकैपडी॥ नांतंबडीनबेलिजाल
 गआणीलाकडु॥ ऊठीकंपलमेलि॥ ४ कवी
 रआगेआगेदौजलै॥ पीछेहरियाहो॥ बलदा
 रीतावृच्छकी॥ जडुकाटयाफलसो॥ ५ कवी
 रजेकाटौतौडहडही॥ सीचंतौकुसिला॥ इस
 गुणवतीबेलिका॥ कछुगुणकह्यानजाइ॥
 कवीरआंगिनिबेलिअकासिफल॥ अणव्या
 वरकाइध॥ संसासीमकीकनहडी॥ रमेंबंक
 कापूता॥ कवीरकडईबेलडी॥ कडवाहीफ
 लहो॥ सीधनांवतवपाइये॥ जेबेलिविछोदा
 हो॥ ६ कवीरसीधमईतौकामया॥ चहुंदिमि
 फटीवास॥ अजहं व. अ.
 आस॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 पीसोकीया

कैकरिषेलिसं कदेबिछोहनहोइ कर
मिरजनदारबिन मेराहितनकोइ गुणअ
बिहडैतहो स्वारथिवंधीलीहो आदिमा
अरअंतलो अबिहडसदाअसंग कबीरउ
कतारका सेवगतजेनसंग

कुमंगलचार ॥ दसधरिआयेहोरांमभरतारटे
तनरतकरिमनरतकरिहं पंचततबराती
रांमदेवमारेपां कुनैआयेहो मैजोबनमेंमाती
रांमदेवसंगिनांवरिलेहं धनिधनिमागदमा
रांमदेवसंगिनांवरिलेहं धनियरसहेसअ
व्यासी कदेकबीरहमब्याहिलेहं पुरिष
पाये भागवडेधरिबैचैआये मंगलचारमा
मनराबो रांमरसंरिगारसनांचायो टिकेमें
मांहिमयाउजियारा लेसुतीअपनांप्रीव
रांमरनिगसीजेनिधिपाई हमहिकहे
तुमहिबडाई ॥ २ ॥ कदेकबीरमेंकखनकी
सषीसुहागरांममोहिदीनूं ॥ २ ॥ अब
जातनदेहं रांमपियरो ज्ञानावेत्यंहो
अकृतदितनकेबिछुरेहविपा

बहने प्रभु वैठै आये ॥ चरननिजा गिकरौ बरिया ॥
 प्रेस प्रीतिराधो उरफाई ॥ इतमनिसंदिहरहौ नि
 तचाधै ॥ कहै कबीर परकु मति धीवै ॥ ३ ॥ मनको
 मोहन मीतुना ॥ प्रकु मन लागो तोहिरे ॥ चरन कब
 लमत मानिया ॥ और न मानै तोहिरे ॥ टे ॥ बट द
 लक बलनिवासिया ॥ बकु कौं के रिमिला ॥ दकु
 कैवी चिसमाधिया ॥ तहां कालन पासे आइरे ॥ अ
 युक बलद जतीतरा ॥ तहां श्रीरंगके लिकराइरे ॥ स
 तगुर मिले तो पाइये ॥ नही तो जनम अकारथ जा
 इरे ॥ कदली ऊसमद जतीतरा ॥ तहां दस आंगुल
 काबीच ॥ तहां दबादस घो जिले ॥ जनम होइ नही
 मीचरे ॥ ब्रकनालिके अंतरै ॥ अछि सदि साकी बाट
 नीक रेऊ रे सै पीजिये ॥ तवर गुफा के घाटरे ॥ ॥ ॥ ॥
 बेगी मन दिनु वाइये ॥ सुरति मिले जो हाथि ॥ तहां
 नकि रिमध जोइये ॥ सनकादिक मिलहैं साधिरै ॥
 गगनगर जिमध जोइये ॥ तहां दी सै तार अनंत
 बिजुली चमकि घनवर पिदै ॥ तहां नीत तहैं सब स
 तरे ॥ घोड सक बल जव वेतिया ॥ तब मिलि गये
 श्रीबन दारि ॥ जुझा मरणा भ्रमना जिया ॥ उतर पिज
 नमति धारिरे ॥ गुरग से तो पाइये ॥ कंकि मरे जिति
 कोइ ॥ तहां कबीरार मिरहा ॥ सहज समाधी सोइ
 रे ॥ ४ ॥ गोकलनाइक मीतुना
 हिरे बकुतक दिन बिबुरे भये
 मोहिरे ॥ टे ॥ करम को
 ये की आस
 रहि प्यास रे ॥
 वस मोन ॥ इहि पदिन रह

दृष्टिमांतरे ताकतहू चलिजाइये नासिरि
लीजेमार रसनांसहिबिचारिये मारंगश्रीरा
क्षररे साधे सिधियेसीपाइये किवाहोइमा
होइ जेदितग्यातनऊपजे तौअहिरहेजिति
कोइ एकजुगतिएकेमिले किवाजोगिकिते
गहनहान्मफलपाइये रासनांससिधिजोगरे
धेममगतिजैसीकीजिये मुषिअमृतवरिये
चंद आपहीआपबिचारिये तबकेताहोइअन
दरे तुम्हजितिजांनौगातहै यऊतिजबदन
बिचार केवलकहिसमगाइया आतमसाध
नसाररे चरकवलचितलाइये रासनांसमु
नगाइ कहैकबीरससानही भगतिमुकति
गतिपाइरे ॥ ५ ॥ अबतमैपाइबोरेपाइबोबू
द्वग्यात सहजसमाधेसुखमैरहिबो कोटि
कल्पविश्राम टे गुरकपालकपाजबकी
नां हिरदैकवलबिगासा भागामदसोदि
समस्यापरमजोतिप्रकास मृतकउत्पाध
नककरलीये कालअहेडीभागा उदयास
रतिसकीयापयोना सोदततैजबजागा अ
बिगतअकलअनूपमदेया कहतांकहान
जाइ सैनकरैमनहीमनरहसै मंगैजांनिमि
ताइ यऊबिनाएकतरवरफलिया बिन
करतरबजाया नारीबिनांनीरघटभरिया
हजरूपसोपाया दैषतकाचमयातनके
न बिनबानीमनमाता उमाबिहंगमबीज
पाया ज्यजल लहिसमाना पूज्यादेदब
ऊरिनहै न्हायेउदिकनरुऊ भागा

मैं एक ही कहता ॥ आये वरुन निज आंखें ॥ १ ॥ आये
 मैं तब आया निरव्या अपन मैं आया सुखा ॥ आये
 कहत सुनत फुनि अपता ॥ अपन पै आया ब्रज
 ॥ ३ ॥ अपन पै रचै लागी तीरी ॥ अपन पै आया समा
 ना ॥ कहै कबीर जे आया बिचारे ॥ मिटि गया आब
 न जाना ॥ ४ ॥ ६ ॥ नरहरि सहजै ही जिनि जाना
 गत फल फल तत तरपलव ॥ अकरबी जन सा
 ना ॥ टेक ॥ प्रगट प्रकास गण न गुरम भिते ॥ ब्रह्म
 अगनि प्रजारी ॥ ससिहर सरहर हरि रंतरा ॥ ला
 गी जोग जुगतारी ॥ ३ ॥ उलटे पवन चक्र घट बेध
 मिर डंड सरपरा ॥ गगन गरजि मन सुनि समा ना
 बागे अनहद कर ॥ १ ॥ सुरतिसरीर कबीर बिचा
 री ॥ बिकुटी संगम स्वां मीय द आनंद काल थै ब्र
 ह्म ॥ सुख मैं सुरतिसमांती ॥ ३ ॥ ७ ॥ मन रे मन ही उल
 टि समांती ॥ गुर प्रसाद अकलि न हो के ॥ न ही
 तरथा बेगाना ॥ टेक ॥ नै रथै हरि हरथै तीरग ॥
 जिनि जैसा करि जाना ॥ ओ लौ तीका चटपावली
 है ॥ जिनि पीया तनि मोता ॥ ३ ॥ उलटे पवन चक्र
 घट बेध ॥ सुनि सुरतिले लागी ॥ अमर न मरे मरे न
 ही जीवै ॥ ताहि जो जैवै रागी ॥ १ ॥ अनैक पाक
 वत सक कहिये ॥ हे कोई चतुर बमे की ॥ कहै कबी
 र गुरि दीया पजीता ॥ सो फल बिरले देयी ॥ ३ ॥ ८ ॥
 हित तिरां मजय करे थोनी ॥ ब्रह्म अकथ कहानी
 हरिकता बहो प्रजा ऊपरि ॥ जागित रं निबि हानी
 ॥ टेक ॥ डोइ नि डारे सुनहां डोरे ॥ स्पंदर देवन धे
 रे ॥ पंच कुटंब मिलि कूज न लागे ॥ बाजत स
 वध मधे रे ॥ रोहै मग सुसावन धेरे ॥ पारधी बा
 गान मेले ॥ सागर जलै सकल वन दा के मधु अ

हरावले ॥ सोई पंडित सोत तग्यासा ॥ जो इह पद
दक्षि चारे ॥ कहै कबीर सोई गुर मेरा ॥ आया तेरे
मोहितारे ॥ ३॥ १॥ अर्ध ग्यात न हरिक रिमा
डीरे ॥ सब दअती तअना हदराता ॥ इह विधि
विश्वांशोडी ॥ टेक न के ससे समंद धर कीया
मछाव से पहाडी ॥ सुदपी वैष्णामरुगामतिवाला
फल लाग बिनवाला ॥ १॥ पादुबुलौ कोली में
बेगी न्वेष्टा मैसाडी ॥ तां गौ बां तो पडी अनवा
सी ॥ सतक है बुति गाडी ॥ कहै कबीर सुनई
रे संतो ॥ अगम ग्यात पद मांही ॥ गुर प्रसाद सूई
कै नाके ॥ दसती आवे जांही ॥ ३॥ १०॥ एक अवेना
देव्यारे साई ॥ माटा सिंध चरावेगा ई ॥ टेक पद
ले पूत पछे माई माई ॥ चेला के गुर लागेया ई ॥ १॥
जल की मछली तरवर व्याई ॥ एक डि बिलाई मुर
गोसाई ॥ बिलहि डारि गूनि धरि आई ॥ कंता कले
गई बिलाई ॥ ३॥ तलिक रि साक्षा ऊपरि करि मूल ॥
बहुत मांति जड लोग फल ॥ ४॥ कहै कबीर आप
दकं बूझै ताकती न्यत्रि मवन सूजे ॥ ५॥ १॥ हरिके
षारि बडे पकाये ॥ जिनि जरति निषाये ॥ ग्यात अवे
त फिरै नर लोई ॥ ताथे जनमि जनम डुहिकाये ॥
॥ ६॥ मोल मंद लिप्राबेल रबाबी ॥ कबवा ताल ब
जाके ॥ पहरि चोलना गादहनाचे ॥ मैसातिरतिव
रावे ॥ १॥ स्पष्ट वेठा पातक तरे ॥ घंसलौ रा लो
उंदरी बपरी मंगल गावे ॥ कछु एक आनंद सु
वै ॥ कहै कबीर सुनई रे संतो ॥ गडरी प्रबतया व
चकचावै सिअगार निगले ॥ समद अकासा क्षव
॥ १॥ १२॥ चरखा जिनि जरे ॥ कातौ गीह जरी कास
॥ १॥ १३॥ जल जाई पलि

जी॥ श्री नगर में आप॥ एक अचंसा दे दिया वि
टपा जायो बाप॥ बाबल मेरा व्याह करि कर
त्यम लेयाहि॥ जब लग बर पाये नही॥ वबल लख
व्याहिर॥ सुबधी के घरि लुबधी आया जो दह
के सा॥ चलै अगति बतार करि कल्ले जल
ठगा॥ सब जग ही मरि जायो॥ एक दह जल
निमरी॥ सब रांढ फि को साया॥ घर लल्ले दह
कबीर सो पंडित म्माता॥ जो पाप दह दह
हले पर से गुर मिले॥ तोयी छै सदन लल्ले
अब मोहिले वलित राव के वार॥ जल लल्ले
नये वति मिलि लकी है॥ कुसंग लल्ले
कगारी रमो गये तीवारी॥ जह लल्ले
सलो बिरही मेरी नीय जे॥ पद लल्ले
कबीर यहु अकथ कथा है॥ बल लल्ले
सद जसा जहि ऊय जे॥ तेर लल्ले
अब दम सकल कुसल करि लल्ले
गोव्ये दनाना॥ टेक दत में दे लल्ले
टिमई सुख सहज लल्ले
राम॥ उय बिस सल लल्ले
टिमये है सीता॥ लल्ले
आपा जा निउ लल्ले
ताप॥ अब लल्ले
जा ना जीवत लल्ले
जा के लल्ले
इयाई लल्ले

॥ मापारहे तबांधीरे ॥ टेक ॥ हितचितकी धैर्य
गी गिरांनी ॥ मोहवली डावटा ॥ त्रिआंछांतिपरी
परजंयरी ॥ कुबधिकारमांडाफटा ॥ जोगजुग
तिकरिसंततिबांधी ॥ तिरचुचबैपांनी ॥ कंडक
पटकायाकानिकसा ॥ हरिकीगतिजबजांगी ॥
आंधीपीळेजोजलवठा ॥ प्रेमहीरीजननीनांक
हेकबीरमानकौपरगटे ॥ उदितमयातमघोना
॥ १६ ॥ सबघटिपगटमयेरांमराई ॥ सोधिसरी
रकनककीनांई ॥ टेक ॥ कनककसोटीजैसेक
मिलेसुनारा ॥ सोधिसरीरमयोतनसारा ॥ उप
जतउज्जतबहुतउपाई ॥ मनधिरमयोतबैधि
तिपाई ॥ बाहरिघोजतजनमरांमाया ॥ उनम
नीध्यांनघटनीतरिपाया ॥ ३ ॥ बिनपचैतनक
चकपीरा ॥ परचैकचनमयाकबीरा ॥ १७ ॥
डोलनांतहांफूलेआतमरांम ॥ प्रेममगतिहि
लनां ॥ सबसंततिकोबिआंम ॥ टेक ॥ चेदसरव
पंचवा ॥ बकनांलिकीडोरि ॥ फूलेपंचप्रिया
तहांफूलेजीपमोर ॥ द्वादसगमकेअंतर
हांअंमत्कोरास ॥ जिनियुअंमत्तचाबि
सोठाकुरहमदास ॥ १ ॥ सहनसुनिकोनेद
गगनमंडलसिरिमोर ॥ दोऊकुलहमआ
जोहमफूलहिडोल ॥ ३ ॥ अरधउरधकीग
तां ॥ मूलकवलकोघाटा ॥ पटचक्रकीग
त्रिवेणीसगमबोट ॥ नादबंदकीनाक
नामकतिहार ॥ कहेकबीरगुणाराइले

उत्तमोपासना ॥ १८ ॥ कोवै सैवेमनागोरीमाई रांमरसा
इयमातेरीमाईकोबीने। टेकपाईयाइतंउतिहाई।
पाईकीतुरियावेदिघाई। पीमाईकोबीने ॥ येसेपाई
परविष्टुगई ॥ त्पंससआनिबानायोरीमाईकोबीने
॥ २ ॥ नाचैतानांनानाचैवानां ॥ मादेकचउरांनारीमा
ईकोबीने ॥ ३ ॥ करगहिबैठिकबीरानाचै ॥ वृहका
ट्यातांनारीमाईकोबीने ॥ ४ ॥ १८ ॥ म्बुनिकरिसि
गंसांहोराम ॥ नालिकमेंनहीऊवरे ॥ टेक ॥ दखेनक
टजवसुनहांनकातबदमसुगनबिचारा ॥ लरके
घकेसबजागतहै ॥ हमघरिचोरपसाराहोराम ॥ १ ॥
तानांलीलांनानांलीलां ॥ लीनेगोडकेपउदा ॥ स्त
उतवितवतकवदवलीलां ॥ मांडवलवनांडऊदा
होराम ॥ २ ॥ इकयागदोइयागत्रेयग ॥ संधेंसंधिमिला
ई ॥ करियरपंचमोटवभिआयो ॥ किलिकिलिसंदे
मिटाईहोराम ॥ ३ ॥ तांनानंतनिकरिवांनानुनिकरि
॥ नाकपरीमोदिध्यानां ॥ कदेकवीरमैबुनिसिरानां
॥ जानतहैनगवांनानहोराम ॥ ४ ॥ २० ॥ तननाबुननांत
ज्याकवीरा ॥ रामनांमलिखिलीयासरीर ॥ टेकजव
लगनरोनलीकाबेद ॥ तबलगाइटेरामसनेद ॥ ता
दोरोवैकवीरकीमाइ ॥ यलरिकाकूंजीवेंसुदाइ ॥
कवीरसुनजरीमाई ॥ घुरेनहाराविनवनराई ॥ २ ॥ २१
॥ जुगिद्यान्याइमरिमरिजाइ ॥ घरजाजरोबलीडोटेटे
ओलीतीडरराइ ॥ टेक ॥ मगरीतजोप्रातिपाठेसं ॥ डे
चोदेऊलगाइ ॥ छोकोछोडिउपर ॥ हेडोवांधो ॥ जंजुगि
जुगिरेहैसमाइ ॥ १ ॥ वैसिपसुहडीघरमुंदावो ॥ ल्याहै ॥

त घर घेरी ॥ जेवी क्षय सास रे पत दो ॥ ज्यं बं ड नि
आवे केरी ॥ ल डरी क्षय से बेकुल बोयो ॥ तब टि
गवे वन पाई ॥ कहै कबीर भागवत परी को ॥ किलि
किलि से बेचुकाई ॥ १२२ ॥ मन रे जातर हिये भाई ॥ ग
फिल ही प्रबसत म भिषो दो ॥ चोर मुं से घर जाई ॥ टेक
षट् चक्र की कनक को चडी ॥ बसत भाव है सोई ॥
ताला कबी कुल फ के लागे ॥ उघड़त वारन होई ॥
॥ ॥ ये चय हर वा सो प्रगये हो ॥ बसत जग गा लागी ॥
जुरफा मर्या व्यापै कुच्छ ना ही ॥ गगन संकुल जैला
गी ॥ करत बिचार मन ही मन व्यजि ॥ नांक ही गाया
न आया ॥ कहै कबीर संसा सब छटा ॥ रां मरत न ध
न पाया ॥ १२३ ॥ चलन चलन सब को कहै त है ॥ ना
जां तो बेकुंठ कहाँ हो ॥ टेक ॥ जो जत एक परमि ति न
ही जां नै ॥ बात नि ही बेकुंठ बघां नै ॥ जब लग है
बेकुंठ की आसा ॥ तब लगन ही हरिके चरन नि
वासा ॥ १ ॥ कहै सुनै के सै प्रति आइये ॥ जब लगत व
आपन ही जइये ॥ ३ ॥ कहै कबीर य ऊक हिये का
साक्ष संगति बेकुंठ हि आहि ॥ ४ ॥ ॥ २४ ॥ आपनै बिचा
रि अमचारी की जे ॥ सहज कै याइ दे पाव ज ब दी
॥ ॥ टेक ॥ दिमुदरा लगाम पति रां के ॥ सिकंली जी
गगन दोरां के ॥ ॥ चलि बेकुंठ तो हिले तारुं ॥ य
हित प्रेम ताज नौ मारुं ॥ १ ॥ जनक बीर श्री सा अस
वारा ॥ वेद के ते बंदरुं ध्ये न्यारा ॥ २ ॥ ॥ २५ ॥ आपनै
रंगि आपनयो जानै ॥ जिहिरंगि जाति ता ही क
न ॥ टेक ॥ अति अंतरि मन रंग समाना ॥ लो गं व

कबीरबीरानो॥ एगनं चीन्हें मरिखो जोई॥ जिदि
रंगिरदा सब कोई॥ १॥ जैरंग कबहुं आवे तज
२॥ कहै कबीर तिरिदास माझ ॥ २६ ॥ जग
रा एक न बेरो रास॥ जेतु मरुअपनै जनसंकोम
ते कबहुं बढा कि जितिरुउपाया॥ बेद बडा
कि जहां थें आया॥ ३॥ थें मन बडा कि जहां मन
मानै॥ रास बडा किरासहि जानै॥ ४॥ कहै कबीर
रुं धरा उदास॥ तीरथ बढे कि हरिके दास॥ ५॥
॥ दास रंमहि जानि हेरे॥ और न जानै कोई॥ टेक
काल देह सब कोई॥ चषिचाहन मां हि विना न
जिति लोइति मन मोहिया॥ ते लोइत प्रवान॥
॥ बडुत सगत भोसागरा॥ नां नां विधि नां नां
वा॥ जिहि हिरदै श्री हरि भेटिया॥ सो भेव कहुं क
हुं गंवा॥ दरसन स मित्रा की जिषे॥ जोगु न नही
दोत समांत॥ सीध वकर कबीर मिल्यो हे॥ फट
कत मिलैषांत॥ २॥ २७ ॥ कै से होइ गमिलावा
हरि सना॥ रेत बिषे बिकार न तजि मना॥ टेक
रतै जोग जुगति जांन्यां नही॥ तै गुरका सब द
सांन्यां नही॥ गंदी देही देषिन फलिये॥ संसार
देवित मूलिये॥ ३॥ कहै कबीर मन बडु गुनी॥ ह
रि सगति विनां डम फुन फुनी॥ ३॥ २८ ॥ गुरज
गुरु गोदी॥ का संक दिये सुनिरमां॥ तेरा मरु
न जानै कोइ जी॥ ४॥ २९ ॥ का स
दन छांतां होइ जी॥ टेक ए सब
या मरुइ जांमि॥ हियां न जी॥

पश्चिमा॥ जब देखाने न समान जा॥ रां मर सोइ रा
रसिक हें॥ अदबुद गति विस्तार जा॥ चमनिसा जो
गत कहे॥ ताहि मूकें संसार जा॥ २॥ सिधु सिनिका
दिक नारदा॥ बहिलीया निजवास जा॥ कहे कबी
र पद पंकजा॥ अब नै डार न निवास जा॥ ३॥ मेडो
रे डोरै जां ऊंगा॥ तौ मै बजरिन नौ जलि आं ऊंगा॥
४॥ टिक सत बज्र त कछु थोरा॥ तां थै लाइ लै कंथा डो
रा॥ कंथा डोरा लागा॥ तब जु फा मर गा नौ जागा॥ ज
हां सूत कण मन धेनी॥ तहां बसै इक मं नी॥ उस मं
नो संचित लो ऊंगा॥ तौ मै बजरिन नौ जलि आं ऊंगा॥
५॥ मेर डंड इक छाजा॥ तहां बसै इक राजा॥ तिसरा जा
संचित लो ऊंगा॥ तौ मै बजरिन नौ जलि आं ऊंगा॥ ६॥
तहां बज्र दीरा घन मोती॥ तहां तत लाइ लै जोती॥ ति
स जोति दिजेति मिला ऊंगा॥ तौ बजरिन नौ जलि आं
ऊंगा॥ ७॥ जहां ऊंगै सूर न चंदा तहां देख्यो एक अनंदा
ऊस आनंद संचित लो ऊंगा॥ तौ मै बजरिन नौ जलि
आं ऊंगा॥ ८॥ मोल बंध इक पादा॥ तहां सिधु गणेश्वर
राजा॥ तिस मूल हिमूल मिला ऊंगा॥ तौ मै बजरिन
नौ जलि आं ऊंगा॥ ९॥ कही राता लिव तोरा॥ तहां हेत
दरा गुर मेरा॥ तहां हेत दरा दित लो ऊंगा॥ तौ मै बज
रिन नौ जलि आं ऊंगा॥ १०॥ संतोष गाइया गा नति
नसिगाया॥ सब दम कहां समाई॥ एस सा मोहि निस
दन व्यापै॥ कोई कहे सम जाई॥ देख नही ब्रह्म
पंडित निनाही॥ पंचतत जीनाही॥ इलाय गुल सु
मन नाही॥ ऐ गुण कहां समाही॥ नही सिद्धार कहे

दीनद्विषा ॥ रचनहारधुनिनाही ॥ जीवनहारअती
 तसदासंगी ॥ एगुणतहांसमांही ॥ १॥ तैवधेवधेउ
 नितुंटे ॥ जेवतवहोइनबिनांसा ॥ तवकोठाकुरख
 कोसेवग ॥ कोकाकेविसदासा ॥ कहैकबीरयऊग
 गननबिनसे ॥ जोधगाउनमांनं ॥ सीधंसुनैपटेको
 होई ॥ जोनहींपडुहिसमांनं ॥ २॥ ३॥ तामनकोछोज
 करेसाई ॥ सनछूटेमनकहासमाई ॥ टेकसनक
 सनंदनजैदेवनांसा ॥ भगतिकरीमतउनऊनजां
 नां ॥ १॥ सिधबिरंचिनारदमुनीग्यांती ॥ मनकीगतिउ
 नहंनहींजांती ॥ २॥ धूपहिलादबभीषनसेवा ॥ तनमी
 तरिसनउनऊनदेवा ॥ ३॥ तामनकाकोईजांनैनेव
 रचकजीनमयेसुखदेवा ॥ गोरखतरशरीगोपीचंद
 तामनसौमिलिकैरैअनंदा ॥ ४॥ अकलनिरंजनसक
 लसरीरा ॥ तामनसौमिलिरद्याकबीरा ॥ ५॥ ३॥ मा
 ईरबिरलेदोसवकबीरको ॥ यऊततबारबारकासी
 कहिये ॥ भांनगाधडैरासंवारासंमरथा ॥ ज्पराधेत्य
 रदिये ॥ टेक ॥ आजमऊनींसेबेफिरिछोजी ॥ हरिन
 सकलअयांनं ॥ छंददरसनछयांनंदेपाघंडा ॥ आ
 कुलकिनहंनजांनं ॥ १॥ जयतपसंजमपूजाअरचा
 जीतियजगबीरांनं ॥ कागदलिधिलियिजगतमु
 लांनं ॥ मनहींमननसमांनं ॥ २॥ कहैकबीरजोगी
 अरुजंगम ॥ एसवजूवीआसा ॥ गुरप्रसादिरटौच
 निगंज ॥ निहंदेमगतिनिवासा ॥ ३॥ ३४॥ कितेकसि
 नसंकरगयेऊंठि ॥ रामसमांधिअंजहं
 टेकपरलेकलकहं कितेकभाषा ॥

रातरहेलौघ ॥ १ ॥ ब्रह्मायोजिपस्योगदिनाल कहेक
 वीरवेगमनिगल ॥ २ ॥ ३ ॥ अचंतचंतयेमाधोसोसबम
 हिसमानो ॥ ताहिछाडिजेआनमजेतहे ॥ तेसबअमिनु
 लोना ॥ टेकईसकंदेमैधाननजाने ॥ डलंतनिजएद
 मोदी ॥ रंचककरुणाकारणिकेसो ॥ नावधरणाकोतोही
 ॥ कहौधोसबदकदाथैआवे ॥ अरुफिरिकदासमाई
 ॥ सबदअतीतकामरमनजानै ॥ अमिनुलीडनियाई ॥ २
 पंडमुकतिकहौलेकाजे ॥ जोएदमुकतिनहोई ॥ पंडे
 मुकतिकहेतहैमुनिजन ॥ सबदअतीथासोई ॥ १ ॥ प्रगट
 गुपतगुपतफुनिप्रगट ॥ सोकतरहेलुकाई ॥ कबीरपरम
 नंदमनाये ॥ अकथकथ्यो नहीजाई ॥ १ ॥ शब्द ॥ सोऊछ
 बिचारऊपंडितलोई ॥ जाकेरूपनरेषवगीनहीकोई ॥ टे
 काउजेपंडप्रानकहैथैआवे ॥ मदाजीवजाइकदासमा
 वे ॥ ॥ इहीकहाकरदिबिआमा ॥ सोकतगयाउकहेता
 रामा ॥ २ ॥ पंचतततहांसबदनस्नाटे ॥ अलपनिंजनबि
 द्यानबाद ॥ १ ॥ कहेकबीरमनमनहिसमानो ॥ तबआप
 मनिगमकृतकरिजांनो ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥ जोपैंबीजरूपमग
 वांनो ॥ तोपंडितकाकथिमिगियांनो ॥ टेकनहीतन
 नहीमननहीअहंकार ॥ नहीसतरजतमतीनिप्रकार
 ॥ १ ॥ बिषअमृतफलफूलेअनेक ॥ बिदरबोधकहेतर
 एक ॥ २ ॥ कहेकबीरइहैमनमाना ॥ कहिधूकृतकवन
 उरकान ॥ ३ ॥ ४ ॥ पंडेकौनक्रमतितोहिलागी ॥ हरामन
 जपहिंआगा ॥ टेकबेदऊंगनपढतअसपांडे ॥ प्ररंच
 दनजसमारा ॥ रामभामततसमकतनाही ॥ अंतियडेमु
 छिछारा ॥ ॥ बिदपट्याकावऊफलपांडे ॥ सबघटिदेये

रासा जेनममरनेतैतौतबुटे सुफलहं हिंसवताम
१२। जीववधतश्चरुधरमकदेतदो॥ अक्षरमेकदादेम
ई आपनतो मुनिजेनकेबैते॥ कासनिकहो कसाई॥
नारदकदेव्यासयौताये॥ सुप्रदेवष्टो जाई कहेका
बीरकमतितबबुटे जेरहोरामलेोलाई॥ ३॥ ३४॥ पंडि
तबादबदैतेफरा॥ रामकस्यां इतियां प्रतिपावे
आंडुकस्यां मुषमीठा॥ टेकपावककस्यापावजे
दाजे जंजांकहिप्रिषाबुजाई॥ भोजनकस्यां भ
षजेनाजे तौसबकोईतिरिजाई॥ नरकैसाधि
सदाहरिबोले हरिपरतापन॥ जानै॥ जेकबहु
उडिजाइजंगलमें बंजरिनसुरतैंआनै॥ साची
प्रीतिविषैमायूसं हरिमगतितिसंहासी॥ कहै
कबीरपुमंतहीउपज्यो बाध्योजमपुरिजासी
॥ ४०॥ जोपेकरतावरणविचारै तौजनमतली
निडांडीकिनसारे॥ टेकउतपतिब्यंदकदांधैअ
या जोतिधरीअरुलागीमाया॥ नहीकोऊचा
नहीकोनीचा जाकापंडताहीकासीचा॥ जेत
वांमनवसनीजाया॥ तौआनबाटकेकहेनअ
या॥ जेतउरकतुरकनीजाया॥ तौभीतरिषता
कपेनकराया॥ कहैकबीरमधिमनहीकोई सो
मधिमजामुषिरांमनहोई॥ ४१॥ कहतावकता
सुरतासोई आपविचारैसोग्यनीहोई॥ टेकजेमैं
अगतिपवनकामेला॥ चंचल
नवदरचाजेदसंडवार ब
चार॥ देहीमाटीबोलेपवनां

इहो॥ कोईकहौकबीरकोईकहौरामराइहो
टेकनाहमबारबटनाहीदंसनाहसरेचिलका
इहो॥ परएनजोऊअरवानहीआऊं॥ सहजिरह
हरिआइहो॥ जुनहैतनिबुनिपांतनपावल फारि
बुचीदसठाइहो॥ त्रिगुणरहितफलरमिहमरा
न तबहमारीनाउंरामराइहो॥ जगमेंदेखौजग
नदेखैमोहि इहिकबीरकखुपाइहो॥ ५०॥ लो
काजांनिनसलोभाई घालिकघलकघलिकमें
घालिक सबघटरद्योंसमाई॥ टेकअलाएकेन
रतिपाया॥ ताकीकैसीनिंदा॥ तानूरधेंसबजगकी
या कौतभलाकौनसंदा॥ ताअलाकीगतिनही
जांती गुरिसुहुदीयामीठा॥ कहैकबीरमेंपराया
या सबघटिसाहिबदीठा॥ ५१॥ राममोहितारिक
हांलेजैहो॥ मोबैकुठकहोधकैसा॥ करियमाव
मोहिदेहो॥ टेकजेमेरेजीवदोइजांततहो॥ तौम
हिमुकतिबतावो॥ एकमेकरभिरह्यासबनिमें
तौकावेभूमावो॥ तारणातिरराजबैलगकहि
॥ तबलगाततनजांता॥ एकरामदेखासबदिनमें
कहैकबीरसनमांता॥ ५२॥ सोहंहंसाएकसमा
न कायाकेगुणआनहिआन॥ टेकमाटीएकस
कलसंमारा॥ बडविधित्ताडैघडैकुंभारा॥ पंचव
रनदसडहियेगाइ॥ एकइधदेखोपतियाइ॥ कंद
कबीरसंसाकविहरि॥ तिनबननाथरह्यामरंपू
॥ ५३॥ प्यारेराममनहीमना॥ कोसंकहंकहन

कौनोही ॥ शरजौरजनां ॥ टेक ज्येष्ठपतपतिव्यं
 देविंये आपदवाससोई संसौमिटवाएककौएके
 महापलेजबहोई ॥ जोरिऊं ऊं तोमहाकठिनहै
 बिनरिऊंयैयैसबघोटी ॥ कहैकबीरतरकदोई
 साधे ताकीसतिहैमोटी ॥ ५४ ॥ हमतोएकैकरि
 जांतां ॥ दोइकहैतितहीकौंदोजग तांदिनप्रदि
 चांतां ॥ टेकएकेपवनएकहीषांनी ॥ एकेजोतिसोसा
 रा ॥ एकहीषाकघडेसबमांडे ॥ एकहीसिरजनहा
 रा ॥ जिसैबाटीकघुदिकाटे ॥ अगतिनकादेकोई
 सबघटिअंतरितहोब्यापक ॥ धरैसरूपैसोई ॥ ५५ ॥
 यमोहैअरथदेधिकरि काहेकंग्रवांतां ॥ निमैस
 याकबूनदीब्यापे कहैकबीरदिवांतां ॥ ५५ ॥
 अरिमाईदोइकहांसोमोहिबतावो बिचिहीमर
 मकाभेदलगवो ॥ टेकजोनिउपाश्रवीधैधरनी
 एदीनएकबीचमईकरनी ॥ ५६ ॥ अंतरहीमजपतसुधि
 गई उनिमानाउनिनिसबीलई ॥ कहैकबीरचे
 तअरेमोई बोलनहारातुरकतंहि ॥ ५६ ॥
 जैसाभेदविगूचनिमारी बंदकतेबदीनअरु
 डनियां कौंतपुनिषकोननारी ॥ टेकएकेबंदए
 कैमलमुत्र एकचांसएकगह ॥ एकजोतिवैसबउ
 तपनां कौनबांरुनकौनसदा ॥ ५७ ॥ माटीकापंड
 सहजिउतपनां ॥ तादरुख्यंदसमांतां ॥ बिनसीग
 याधैकानांवधरिहो पटिगुनिमरमनजांतां ॥
 रजगुनबदनतमगुनसंकर ॥ सतगुनहरिहैसोई

कहेकबीरएकरामजपऊरे॥ दिइतुरकनको
॥ ३५५॥ रामकोटी॥ हमारेरामरहीमकराम
सौ॥ अलहरामसतिसोई॥ बिसमिलमेटिविस
एके॥ औरनइजाकोई॥ टेताइनकेकाजीमुला
रपैकधररोजापछिमनिवाजा॥ इनकेपरब
मादेबदिजपजा॥ ग्यारसिगादिवाजा॥ तुव
मसीतिदेऊरेदिइ॥ दुरुवांगमयुदाई॥ जहांमम
तिदेऊरांनोही॥ तहांकाकीठकुराई॥ हिंदूरक
दोकरहतूटी॥ फटीअरुकनराई॥ अरधउरध
दसोदिसजिततिन॥ परिरह्यारामराई॥ कहेक
बीरदामफकीरा॥ अपनीरहचलिमाई॥ दिइतुर
ककाकरताएके॥ तागतिलधीनजाई॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ काजीकोतकतेबबधाने॥ पढत
टतकेतेदिनबीते॥ गतिएकेनहीजाने॥ टे
कतिसनेहपकरिकरिसुनति॥ यऊनबंदरेमा
॥ जौरघुदाइतुरकमोहिकरता॥ तोआपैकटि
नजाइ॥ होतौतुरककीयाकरिसुनति॥ ओ
सौकाकहिये॥ अरधसरीरीनारिनचूटे
॥ धाहिंदरहिये॥ छोटिकतेबरांमकहिका
॥ बनकरतहोभारी॥ पकरीटेककबीरमग
नी॥ काजीरहेऊधमारी॥ ५४॥ मुलाकहांपु
हरिरामरहीमरह्यारामपरि॥ टे॥ यऊनौत्र
गानांही॥ रेषेवलकउनीदिलमांही॥ हार
गाइबंगमैदीन॥ कामकोधदोऊबिसमल

कोनो ॥ १ ॥ कहकवप्रयुक्तमुलना ॥ १ ॥ रामरहा ॥
सबनिमैदीठा ॥ ३ ॥ ध्या ॥ पहिलेकाजीवंगनिवाजा ॥ २ ॥
कमसातिवसौंदरवाजा ॥ ४ ॥ मनकरिमकाकदिला
करिदेही ॥ दोलनहारजगतगुरंही ॥ ५ ॥ तहांनदोजग
सिलमुकांसा ॥ ६ ॥ हीरामंदारहिमांसा ॥ ७ ॥ विसम
लतांसतरंमकंदरी ॥ ८ ॥ चंचलधिजुंदोइसहरी ॥ ९ ॥
कहेकवीरमेंसयादिवाना ॥ मनवांमुमिमुमिसदजि
समांसा ॥ १० ॥ ११ ॥ मुलांकरिल्योन्यावपुटाई ॥ यदिवि
धिजीवकात्रमनजाई ॥ १२ ॥ सकसीव्याणैदेदतिनांम
माटीविसमलकीता ॥ जोतिसरूपीदाधिनआया
कदोहलालक्याकीता ॥ १३ ॥ वेदकतेदकदोकांऊ
वा ॥ ऊठाजोनविचारी ॥ सबयटिगकगककरिनां
नै ॥ सीइजाकरिमारे ॥ १४ ॥ ऊकड़ीसांगठकरांसां
दकदककरिदोले ॥ सवेजपुमांइकेणारे ॥ १५ ॥
रऊगेकिसवोले ॥ १६ ॥ दिलनदीपालपालनदीनी
नां ॥ उस्ताखेजतजांसां ॥ कहेकवीरनिनचिटला
ई ॥ दोजगदीसनमांसां ॥ १७ ॥ १८ ॥ याकेंरातदनिदिक
मतितेरी ॥ घाळ्येकसंरतिवजुंदी ॥ १९ ॥ ऊगुद
गनमेंनारजमायां ॥ वकलतौतिकनिनचिटला
अवलिआटमपीरमुलांसां ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥
वांसां ॥ २५ ॥ कहेकवीरवजुंदीवजुंदीवजुंदीवजुंदी
वयारहमार ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥
तेरेहीनालिमुगेवरण ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥
बांसजलधेनदनीतोनिकन ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥
परिआमि तोरदेवक ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥
वीरजेवटिकयमांद ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

तबै सुष उपजा तनकी लपति बुझानी कहे कबी
रत वबंधन छूटे जोति दिजेतिस मानी ॥ ७१ ॥
छाकि प्रस्यो त्रात ममति वारा ॥ पीवत रंमर सकरत
बिचारा ॥ ७२ ॥ बहूत मोलि महे गे गुड पावा लेक
सा वरं मरा मचवावा ॥ १ ॥ तन घटन मै की रूप मारा
मोगि मोगि रस पावे बिचारा ॥ २ ॥ कहे कबीर फा
बी मति वारा ॥ पीवत रंमर सलगी सुमारा ॥ ३ ॥ ७२ ॥
बोलै साई रंम की उहाई इहिर सिमि वसन कादि
क माते पीवत अज कन अघाई ॥ ४ ॥ इला पंथु लासा
वी कीन्सी ॥ बुद्ध अगनि प्रजाली ॥ समिहर सरकार दस
मूदे लागी जोग जुग जाली ॥ १ ॥ मन मति वाला पीव रंम
रस इजां कुछ न सुहाई ॥ २ ॥ उलटी गंगनी रब दिआया
अमृत क्षर चुंवाई ॥ ३ ॥ पंच जने सो मरा करिली रं छल
त सुमारी लागी ॥ प्रेम प्रिया ले पीवन लागे ॥ सो वत
ना गिनी जागी ॥ ४ ॥ सहज सुनि मै जिनि रस दाषा
सत गुरथे सुधि पाई ॥ दास कबीर इहिर सिमाता क
बहु उछ किन जाई ॥ ५ ॥ ७३ ॥ रंमर सपाई पारे ता
थे बिमरि गयर सत्रोर ॥ ६ ॥ रंमर तेरा कोन ही
पै चिले इजिनि तार ॥ बिरबिब सेरा पधिया ॥ अस
माया जाल ॥ १ ॥ ७४ ॥ और मरत का रोखे ॥ जो आ पाधि
र नरहाइ ॥ जो उपजा सो बिन सिद्धे ॥ ताथे उप करि
मै बलाइ ॥ २ ॥ जहां उपजा तहां फिरि च्यारे ॥ पी
वत मदन लाग ॥ कहे कबीर वितचेतिया ताथे
रंम सुमरि बेराग ॥ ३ ॥ ७५ ॥ रंम चरन मनि ताथे
अस हरि जाऊ राड के करदा ॥ प्रेम प्रीति लोलां थैरे
॥ ४ ॥ ७६ ॥

गवेलीरे॥ द्विष्टुरचटिगद्यौरांडकोकरहा। मनह
 पादंकोसैलीरे॥१॥ कंकरकईपतालियनियों।
 सोनेबंदबिकाइरे॥ बजरपरोइहिमथुरानगरा
 कांरूपियासाजाइरे॥ २॥ एकदहिडियाटहीज
 मायौ॥ इसरीपरिगईमारीरो॥ न्निजिमांऊंअ
 पनौकरहा। छारमुनसकीदाफोरे॥ ३॥ इदिव
 निवाजैमदनसरिरे॥ उदिवनिवाजैइरा॥ इदि
 वनिघेलेराहीरुकमनि॥ उदिवनिकांरुअ
 होरा॥ ४॥ आसिपासिउरसीकोबिरवा। मां
 दिघारिकागोऊंरे॥ तहांमेरोठाऊंरामराइहै
 नगंतकवीरानोऊंरे॥ ५॥ ७६॥ धिरनरहैचित
 धिरनरहै। चिंतामणिउरुकारणिहो। मनमें
 लेमैंफिरिफिरिआइहो। उरुमुनजनउषविस
 रावनहोटक॥ प्रेमघटोलवाकसिकसिवांधो
 बिरहवानतिहिलागहो। तिदिवटियंऊंकरत
 गवसिया॥ अंतरितमवाजागहो॥ १॥ महरूमछा
 मारिनजाने॥ गहरैपैठांधइहो। दिनस्कमगर
 मछलेपैहैं॥ तबकोरछिदैबंधनसाइहो॥ २॥ महरू
 नाहरइयजाने॥ सबदनबूझैबोरा॥ चारैलास्स
 कलजगघायो॥ तऊनसेटिनिसहराहो॥ ३॥ जोम
 दाराजवाहोमहरइये॥ तोनाथैएमनबोराहो ता
 रीलाइकैसिधिविचारो॥ तवगदिसेटिनिसहराहो
 ॥ टिकुरासईकांरुकेकारणि॥ भूमित्रमितीरथ
 कीरुहो॥ सोपददेऊमोहिमदन रजिदि
 पदिहरिमेवांरुहो॥ ५॥ : क
 राहीकोईमदराहो॥ य

हारहोकि निऊ राहो॥६॥७८ बीनती एक रंम सु
 निथोरी॥ अवनन चाइ राधिपति मोरी॥ ६॥ ७९ जे मै मंद
 लावु मदि बजावा॥ तिमै नाचत मै डषपावा॥ ७९ जेम
 सिलागी सवै बुडावो॥ अवन मोदि जिनि बऊ रूप क
 लावो॥ १॥ कहे के बीर मेरी नाचत ठावो॥ उमारे
 चरन कवल दिखलावो॥ २॥ ७९ मन थिर रहे न घर
 के मेरा॥ इम मन घर जा रे बऊ तेरा॥ टंक॥ घरत जिव
 न बाहर की पोवासा॥ घर बन देखो दोऊ निरासा॥
 जहं जां ऊतहां सो गसंताप॥ जु काम रण को अधिक
 बियाप॥ २॥ कहे कबीर चरन तो दिवे दा॥ घर मै घर
 दे परमानंद॥ ३॥ ७९ कि सैन गरि करों ऊटवारी॥ चं
 चल पुरिष बिचषन नारी॥ टंक॥ बिल बियाइ गाइ स
 शबोऊ॥ बछराइ ऊतानं सांऊ॥ १॥ मकड़ी घरि माया
 छुछिदारी॥ मास पसारि चोल्सर खवांरी॥ २॥ मसा घेव
 टनाव बिलइया॥ मीडक सोवै सां पहरइया॥ ३॥ नित
 उठि स्माल संध संध के॥ कहे कबीर कोइ बिरला बके
 ४॥ ७९ साइरे दैन बिलंटां घाई॥ बाघनि संगे सई सब
 दिन के॥ घसमन से दल हाई॥ टंक॥ सब घर फोरि बिल
 टां घायो॥ कोइ न जाने तेदा॥ घसमनि पूतो आगणि म
 तो गंडन देइ लेव॥ १॥ पाडो मनि पनित ई बिरानी॥ मोहि
 ऊई घर घाले॥ पंच सषी मिलि मंगल गावै॥ यऊ डषया
 को सावै॥ २॥ देवै दीपक घरि घरि जोया॥ मंद सिमदा
 अक्षरा॥ घर घेव सब आपस वारया॥ बाहरि की या
 पसारा॥ ३॥ होत उजाड सवे कोइ जाने॥ सब काह म
 नित आवै॥ कहे कबीर॥ १॥ भिलौ ते सतगुरु॥ तोय जचूं न हू
 दावै॥ १॥ ७९ विषि बाजु जहं मुरति सुध आया॥ १॥

नदेइंहरिकेचरननिवास॥१॥ सुषमागेंडषपहली
 आवै॥ताथेंसुषमाग्यनहीसावै॥२॥जामुषेथेसिवहि
 रचिडरांन॥सोसुषहमकुसाचकरिजांन॥३॥सुष
 छाड्यातबसबडपसागा॥एकेसबदिमेरांलागा॥
 ४॥निसबामुरिबिषेतनांउपगार॥बिषईनरकिन
 जातांवार॥५॥कहेकवीरचंचलमतिथागी॥तबके
 बलरांमनांमल्योलागी॥५॥८२॥अम्हारइमेंबिष
 कामाता॥काहेनजिवावैमेरेअमृतयतांटेक॥संसा
 रसवंगमडसिलेकाया॥अरुडषतारनबापेते
 रीमाया॥१॥सापनियकपिठारेजागे॥अहनिमि
 सोवेताकंफिरिफिरिलागे॥२॥कहेकवीरको
 कोनहीराखे॥रोमरसांनजिनिजिनिचाखे॥३॥
 ३॥मायातजंतजीनहोजाई॥फिरिफिरिमायामो
 हिलपटाई॥टेक॥मायाआदरमायामान॥माया
 नहीतहांबुझगियांन॥१॥मायारसमायाकइजांन॥
 मायाकारहितजैपरान॥२॥मायाजपतंपमायाजो
 ग॥मायाबोधेसबहीलोग॥३॥मायाजलयलिआ
 याआकामि॥मायाआपिरहीवकुंपासि॥४॥माया
 मातामायापिता॥अतिमायाअसरीसुता॥५॥
 मायामारिकेरेव्याहार॥कहेकवीरमेरेरांमअ
 धर॥टेक॥गिहजिनिजोनांसूडोरेकंचनक
 लसउठाइलैमंदररांमकरेबिनधूरोरे॥१॥
 इन्प्रहमनडहकेसबहिनके॥काहुकोपस्यो
 नहोरो॥यजागणंरावछउपति॥जरितयसम
 कोहरोरे॥॥सबथेनांकासंतमंड
 नगमंतिसेरोरे॥गोविंदकेगुनबैठे

टोरी ॥ १ ॥ ॐ ये जानि ज्यो जगजीवन जमसंतिनको
 रो ॥ कहै कबीर रांमत जबे को ॥ ये कथाधके ईसरो
 ॥ १ ॥ परजसिमानदेवि ब्रजपाती ॥ कातलालकीषव
 रिनजानी ॥ टंक ॥ गारेयबो ओघटघाट ॥ सो जलछा
 डिबिकानो हाट ॥ १ ॥ बंधोनजानै जलउदमादि क
 है कबीर सब मोहेस्कादि ॥ १ ॥ ८६ ॥ काहे रे मनदहदि
 सिधोवे ॥ बिषियासंगिसंतोषनयोवे ॥ टंक ॥ जहां
 जहां कलयेत हांत हां बंधना ॥ रतनको थालकीयाते
 रंधना ॥ १ ॥ जो ये सुषय इत इत मांहां ॥ तो राजछाहि
 कत बनकं जाहां ॥ १ ॥ आनंदसहततजौ बिषिना
 री ॥ इबक्याऊ धै पतिततिषार ॥ १ ॥ कहै कबीर
 यज सुखदिनचारि ॥ तजि बिषिया तजि चरनमु
 राइ ॥ ४ ॥ ८१ ॥ जीयराजाहि गोमैं जाना ॥ जो देखा
 सो ब्रज रिनयेषा ॥ माटीसूलपटांना ॥ टंक ॥ बाऊ
 लबसतर कितापहरिबा ॥ कातप्रबनप्रमबा
 सा ॥ कदा मुगधरेयां हनयूजै ॥ काजलमोरैगा
 ता ॥ १ ॥ कहै कबीर सुरमुनिउपदेसा ॥ लोकाप
 थिलगाई ॥ सुनौसंतो सुमिरो लगताजन ॥ ह
 रिबिनजनमगवाई ॥ १ ॥ ८८ ॥ हरिगजगक
 वगौरी लाई ॥ हरिकैबिबो गिकै सेंजी ऊं मेरीमा
 ई ॥ टंक ॥ कौनपु रिषकोकाकीनारी ॥ अलिअ
 तरिउमलेड बिचारी ॥ १ ॥ कौनपूलकोकाको
 बाप ॥ कौनमरै कौनकरै संताप ॥ १ ॥ कहै कबी
 र वगसूं मनमाना ॥ गईवगौरी वगपहिचाना
 ॥ ३ ॥ ८९ ॥ साईसेरेसाजिदई एकनोली ॥
 लोकअरुमैतैबोली ॥ टंक ॥ इकऊऊर

तपतेला विष्णु वाक्चक्रं द्विसिडोला ॥१॥ पंचकहार
काधरमेनजां ॥ एकैकहा एकनहीमांता ॥ २॥ धन
२॥ धामउहारनछाता ॥ नेहरजातवज्जतडषयावा
॥ कहैकवीरवरवज्जडषमहिये ॥ रांमप्रातिकरिसं
गहंरहिये ॥ ४॥ ८० ॥ विनसिताइकागदकोगुडि
या ॥ जवलण्यवनतल्लेगउडियाटिकगुडिया
कोसबदअनाददबोले ॥ यममलीयैकरहोरीडोले ॥
॥॥ पवनथकोगुडियाषरांन ॥ सीसकनेकनिगे
वैषांन ॥ ३॥ कहैकवीररतिसारंगपीनी ॥ नहंतरेकै
हैयेचातांन ॥ ३॥ ८१ ॥ मनरेतनकागदकाउतरा ॥
लागेहृदविनसिताइछिनमो ॥ गवकरैक्याइतन
टंक ॥ माटीयोदहिंसीतिउसारो ॥ अधकहैघरमेरा
अवेतलबवाधिलेधाले ॥ बडरितकरिहैफेरा
॥१॥ घोटकघटकरियइधनतोको ॥ लेधरती
मैगाडो ॥ रोकोघटसासनहीनिकिसै ॥ गोरगोर
सबछाडो ॥ ५॥ कहैकवीरनटनाटिकाथाके ॥
मंदसाकोनवतावे ॥ गणपनिघाउऊराबाजा ॥
कोकाहुवैआवे ॥ ६॥ ८२ ॥ गृहेतनकंकहाग्रवा
ईये ॥ मरियतौयलनरिरहणनयईये ॥ टंक ॥ यी
रषामयतयमसंवारा ॥ प्रांगयेलेबाहरिजारा
॥१॥ चोवाचंदनचरचतअंग ॥ सोतनजैकाठके
संगा ॥ २॥ दासकवीरयज्जकैरुबिचारा ॥ इ
कदिनकैहैहालहमारा ॥ ३॥ ८३ ॥ देखजयजतन
जरताहै ॥ घडाघहरबिलबोरेसाईजरताहै ॥
॥ कहैकयताकीयापसारा ॥ पुज्जनजरिव

रिखरि कै हे छारा ॥ तब ननु दस लो गी आगी .
 मुगधन चेतै न घसिष जागी ॥ २॥ कोमै की धरु टं सर
 बिकारा ॥ आपदि आप जरे संसारा ॥ ३॥ कहे कबीर
 हम मृतक समानो ॥ राम नाम लूटे अतिमानो ॥ ४॥ १२४
 तन राघन दार को न हो ॥ उरु सो छि बिचारि देयो मन
 मांही ॥ टका ॥ जो रकुंटे बअप नो करि पास्यो ॥ मंडतो
 किले बांहरि जास्यो ॥ ॥ दगा बाज लूटे अरु रो वै जा
 रिगा डिघुरघो जदि घोवै ॥ १॥ कहत कबीर सुन जे
 लोई ॥ हरि विन राघन दार न कोई ॥ ३॥ १२५ अब क
 सोवै आइ बनी ॥ सिर पर साहिब रांम धनी ॥ टका ॥
 दिन दिन पाप बज्र तमै की न्यो ॥ नही गो बिंद की
 संकमनी ॥ लेट्यो तो मि बज्र त पछिता नी ॥ लाल
 चिला गो करत घनी ॥ १॥ बूटी फौज आनि गढ्ये स्यो ॥
 उरि गयो मंडर छाडित नी ॥ एक स्यो हंस जमले चाल्यो
 मंदर रोवै नारि घनी ॥ २॥ कहै कबीर रांम किन सुमि
 रत ॥ चारु तनादि न एक चिनी ॥ जब जाइ आइ
 पड्यो मीघे स्यो ॥ छाडि चल्यो न जिघुरिष पनी ॥ ३॥
 सुवरा डर पतर कुं मेरे ताई ॥ तिहि डर ई देत बि
 लाई ॥ तीनि बार रूंधै इक दिन मै ॥ कबरुं के घत
 घदाई ॥ ४॥ ॥ यामे जरी मुगधन मां नो ॥ सब ड
 यांड हकाई ॥ ५॥ कहत कबीर सुन जरे सुवरा
 उं बरे हरि मराई ॥ लाघो मां हतै लेत अचान
 कारु न देत दिपाई ॥ ६॥ १२६ कामांगुं कहुं शि
 नर हाई ॥ देषत नैन चल्या जग जाई टिका ॥ इक ल
 घत सवाल घनाता ॥ ता रांवन घरि दिवा न वा

लंकासाकोटसमेदसाधईतारावनकीष्वरिनयाई आत
तस्येनैजातसेगातीकहा सयौदरवांधेदाथी॥३॥
कहेकवीरश्रंतकीवारी हाणजाडिजेमैचलेजुवा
री॥४॥६॥ रामथोरदिननकोंकाधनकरनो धंधव
ऊननिहाइतिभरनां टक्का॥ कोडंधजसादहसतीव
धराजा क्रिपानकोंधनकोंनैकाजा॥१॥ धनकेगुति
रामनदीजाना॥ नागाकेजमपेगुदशना॥२॥ कहे
कवीरचेतकरेसाई दंसगयाकहूसंगिनजाई
॥३॥४॥ काहेकमायाडुषकरिजोरी हाथिरन
गजपावपछेवराटक्का॥ नाकोबंधनसाईसाथी बांधे
रहेउरंगमहाथी॥१॥ मैडीमदलबावटीछाजा छा
(डेंगधेसुवन्नपतिराजा॥२॥ कहेकवीररामल्योलाई
धरीरहीमायाकारूषाई॥३॥१०॥ मायाकारसखाएन
पाया नवलगजमबिलवाकेधवा टक्काश्रनेकज
तनकरिगाडिडुराई कारूसोवीकारूषाई॥१॥ तिल
तिलकरियऊमायाजोरी॥ चलतीबेरतिणंजंतोरी
कहेकवीररुताकादास मायामांहेरहेउदास
॥२॥१॥ मेरीमेरीडुनियांकरते मोदमछेरतनधरते
आगेमीरमुकदमहोते बेनिगय्योंकरते टक्का॥
किसकीममांचचापुनिकिसका॥ किसकापंगुडा
जोई यऊसंसारखजारमंछाहे जोनैगाजनकोई
॥१॥ मैपरदेसीकादिपुकारों इक्षानदीकोमेरा
जसेसारदंडिसवदेखा एकमेरोसातेरा॥२॥ मा
दिहलालहेरामनिवारै ॥ १॥
पंहरनतकामरमनजानै देऊ

ऊटवकारणिपापकमोदे नृजणैधरमेरा एम
बमितेआपमवारथ इहोनहीकोतेरा ॥ माय
रउतरोपंथसंतोरे बुरनकिसीकाकरणं कदे
कबीरमुनऊरेपंतो जावयसमकोतरणा ॥ ५१०
॥ रियामेंक्यामेराक्यातेरा लाजनमरदिकहत
घरमेराटेका ॥ चारिपहरनिमत्तोर जैसैतरदर
पंथिवसेरा ॥ १॥ जैसैबनियेहाटपसारं सबजग
कासोमिरजनहारा ॥ २॥ येलेजारैदेलेगाडे इदि
इदिइनिदोऊघरछाडे ॥ ३॥ कहतकबीरमुनऊ
रेलोई दमउम्बिनसिरहेगासोई ॥ ४॥ ५००॥ ३॥
नरजांनैअमरमेरीकाया घरघरवातडपहर
कीहायाटेक ॥ मारगछाकिऊमारगजोदे
ओरणामैओरकोरोवे ॥ १॥ कछुयेककीयक
छुयेककरणां ॥ मुगधनचैतैनिहटैमरणां ॥ २॥
जंजलहंदैसांसारा ॥ उपजतबिनमतलगेन
बारा ॥ ३॥ पंचपंचुरीएकसरीरा कलकवलद
लतवरकबीरा ॥ ४॥ ५००॥ ४॥ हडहडहडहडहसी
हे दिवांनपनांक्याकरतीहे आडीतिरछीफिर
तीहे क्याच्यौच्यौम्यौम्यौकरतीहे ॥ ५॥ क्या
रंगीक्यातंचंगी क्यामुपलोडेकीन्हा ॥ मीरमुक
दमसेरदिवांती जंगलकेरखजीना ॥ ६॥ नूलेभमि
कहाउम्भरांते ॥ क्यामडमातेमाया ॥ रोमरंगिस
दामतिवाले ॥ कायाहोइनिकाया ॥ ७॥ कहत
कबीरमुहागमुदरी हरिलजिकेनिसतार ॥ स
रावलकषरावकीयहे ॥ मानसकहाबिचारा ॥

॥ हरिकेशनां हरिजितिकरक ॥ रामनां मधितमुखा
 नधरक ॥ १ ॥ जेसे सती तजे स्यागर ॥ जेसे जीपराक्रमनि
 वार ॥ २ ॥ राग दोषदक्षमें एकन साधि कदाविउपेजे
 तो चितान राधि ॥ ३ ॥ नले विसरि गहर जो होई कहे
 कबीर क्या कसि हो मोहा ॥ ३६१ ॥ ६ ॥ मनरे कागदकी
 रिपराया ॥ कदातयो ब्योपारुं मारे कलतरबहे
 सवाया ॥ टेक बडे ब्योहरे सां ठौं दं ॥ ४ ॥ कलतरका
 द्योछोटे ॥ चारि लाष असु असाठी कहे जनमलिषो
 सब चोटे ॥ १ ॥ अबकी बिरन कागदकी स्थो तो धरम राइ
 संरटे ॥ प्रजावित डिवं दिले दैद ॥ तब कहे कौन के छूटे
 ॥ २ ॥ गुरदेव ग्यानी जयोलगनियां ॥ सुमिरन दीन्हो हीरा
 वेंडी भिसुरनी नां वरां मको चढि गयो कीर कबीरा ॥ ३ ॥
 ॥ ३५ ॥ धगा जूट्टे तूं जोरि ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ निहोइ गीरे ॥ नां ऊं
 मिले बहो रि ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ उरज्यो सत पांण नही लागे ॥ कंच
 फिरे सब लाई ॥ छिटे के पवन तारु बछटे ॥ तब मेरो क
 हाव साई ॥ ४० ॥ ४१ ॥ सुंरज्यो सत गुटी सब तागी ॥ पवन राधि
 नधीरा ॥ पंचतस्या जये सनमुखा ॥ तव यजपां न करीला
 ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ नां न्ही मै द्यापि लिई ॥ छोलि लिई द्वांरा ॥ कहे कबी
 र जेल जव मे ल्या ॥ छुनत न लागी बारा ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥
 ॥ श्री सरबजरिन आवे ॥ रंम मिले पूरा जन पावे ॥ ४७ ॥
 जनम अनेक गया अरु आया ॥ की बेगारिन साज
 पाया ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ अनेक ये कधे कै सो ॥ नां नां रूप धरे
 नद जे सा ॥ ५० ॥ ५१ ॥ दान ये कमा गो कवला कंत ॥ कबीरा
 के डष हरन अने ता ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ हरि जमनी
 नेरा काहे न श्री गुण वक सऊ मेरा ॥

धकरे दिन के ते जननी के चितिरहे न ते ते करग
दिके सकरे जो घाता तक न हेत उतारे मात
कहे कबीर एक बुध विचारी बालिक डघी डघी
महतारी ॥ १०४ ॥ गो बिंदे उम्पे डरौ तारी सर
णई आयो कंग दिये यक कोन बस उम्पारी टेक
धपदा ऊतें छाहत काई मति तरवर सच पाऊं न
रवर माई ज्वलानिक से तो काले डबुजाऊं ॥ ११ ॥
जेवन जलैत जल कं धवै मति जल सीतल होई जल
ही माहि अगनि जे निके से और नइ जा कोई ॥ १२ ॥ तारण
तिरण तिरण हं तारण और नइ जा जानो कहे कबीर
सरनाई आयो और न देवन ही मां नो ॥ १३ ॥ मे गुल
म मोहि बेचि गुसाई तन मन धन मे रां मजी कै ताई टि
क अनिक बीरा हाटि उताय सोई गाहक सोई बेचन
हा रा ॥ १४ ॥ बेचै रां म तो रां मे कोन रां मे रां म तो बेचै कोन
॥ १५ ॥ कहे कबीर मे तन मन जा स्या साहिब अपणा छि
नन बिसास्या ॥ १६ ॥ अब मोहि रां म सरो सो तो रो
और कोन को करो निहोरो दे क जा के रां म मरीष सा
हिब ताई सो कूं अनत पुकारे न जाई ॥ १७ ॥ जा सिरि तीनि
लोक को तारा सो कूं न करे जन की प्रतिपा ॥ १८ ॥ कहे
कबीर मे दो बनवारी सो चोपे डघी वै सब डारी ॥ १९ ॥
॥ २० ॥ जिय रां मे रां फिरे उदास रां म बिन निक सिन
जाई सास अजु कोन आप टेका जहां जहां जाऊं
रां म मिलावेन कोई कही म तो कै सैं जीवन होई ॥ २१ ॥
मरीष यक तन कोई न बुजावे अनल वदे नि सनीत
न आवै ॥ २२ ॥ चंदन घसि घसि अगिल गाऊं रां म वि

दासुनं दुष्योवां संतमंगतिप्रतमनां करिधोरा मदजिजां ।
 निरासा देते जेदिकदीरां ॥ ३॥ १॥ रांमककुञ्जक केतदि
 नां ॥ जवकंदेधानप्रतुतुमलीनां ॥ टक ॥ नाचमनअने
 कदिनगए ॥ उमदरसनगाविंदलिजननया ॥ १॥ नसेतु
 लिपम्यो नोसागरा ॥ कलुनवमाइवमोक्षरा ॥ २॥ कंदे
 कवीरउधचजगा ॥ कसेदयाडरितनिकंदनो ॥ ३॥ १॥
 हरिमरापीवमाइहरिमरापीघा ॥ हरिदिनरदनसके
 मराजीव ॥ टक ॥ हरिमरापीवमैहरिकीवडरिया ॥ राम
 वडुमैलूटकलडरिया ॥ कायासंगारमिलनेकेताई ॥ कोहेन
 मिलाराजागंमगुसाइ ॥ १॥ अबकीवेरमिलनजोपांऊ ॥ कंदेक
 वीरनोजनमिनआंऊ ॥ २॥ १॥ दिशंमवांनअनयालेतीरांजां
 हिलांमसोजांनेपीरा ॥ टक ॥ मनमनपोजोचोटवपांऊ ॥ आघ
 दिभूरीकहाघमिलांऊ ॥ एकहास्यदीसैसवन्यारा ॥ नाजां
 नूकोपिवहेप्यारा ॥ २॥ कंदेकवीरजामस्तकतागा ॥ नांजांनौ
 कदिप्रसुहागा ॥ १॥ १॥ आपनहीपूरियारे ॥ रांमबिनकोक्रम
 काटगाहारा ॥ टक ॥ जलसरजलप्रपूरता ॥ आत्रावितहक
 दासा ॥ मीराबिषमक्रमगतिकैपरी ॥ ताथेंपियापपियासा ॥ मि
 धमिलैमुधितांमिले ॥ मिलेमिलावेसोई ॥ सूरमिधतवनिटिधे
 तवउधव्यापेनकोइ ॥ १॥ विंदेजलजेसैमळिका ॥ उदरननई
 नीर स्तुम्भकारनिकेसवा ॥ जनतालावेलिकवीरा ॥ ३॥ १॥
 रांमधिनतनकीतापनजाई ॥ जलमेंअगनिउठाअधिकई
 ॥ टक ॥ कुम्भजलनिधिमेजलकरमांतां ॥ जलमेंरहैजलदिवि
 नपांनो ॥ १॥ उम्भपुंङ्गमैसुवनांतोरा ॥ दरसनटेऊजापव
 नमोरा ॥ १॥ उम्भसतागुरमैनौतमचेला ॥ कंदेकवीरगंमरमू
 अकेल ॥ ३॥ १॥ १॥ गोविदागुणागईयेरा ॥
 पन्मलिधान ॥ टक ॥ रिकारंजगाऊपजे ॥

अनहदचेनबजाइकरि॥रद्योंगगनमनछाइ॥१॥जैतजा
 दुहकाईयारे॥कात्रीवराकीआस॥रंगरभाईएतिनिपी
 या॥तिनकौबज्रिनलागीरेपीयास॥२॥अरधविनजीव
 नभला॥नगवंतनगतिसेहेत॥कोटिकलपद्मावनविरया
 नाहिनहरिसौहेत॥३॥संपतिदेपिनहरषिये॥विपतिदेपिनरो
 ज्यंसंपतित्येविपतिदे॥करताकरैसुहोइ॥४॥अगलोकनबांछि
 ये॥परिवेनमरकत्तिवाम॥हंतांथासोकैरहा॥मनजनकीजैऊ
 ठीआस॥५॥काजपकातपसंजमां॥कातीरथब्रतअश्रान॥जो
 पेजुगतिनजांनिये॥सावनागतिभगवान॥६॥सुनिमंकलमैसोधि
 ले॥प्रमजोतिप्रकास॥तजूरूपनरेबंदे॥विनफलनफल्योरे
 अकास॥७॥कहेकबीरहरिगुणागाइले॥सतसंगतिरिदामंऊ
 रि॥जोसेवगसेवाकरे॥तासंगरमैरेमुरारि॥८॥मनरेहरि
 ना॥जिहरिनजिभाई॥जादिनतेरकोईनाही॥तादिनरागसु
 हाईदेक॥तनजोनौमनजानूं॥जानूंसुंदरकाया॥मीरमलि
 कछत्रपतिराजा॥तिनीषायुमाया॥९॥बिदनजोनौनेदनजां
 नौ॥जानूंएकैरामां॥पंजितदिसिपछिदाराकीसी॥मुखकी
 नौ॥जितनांमां॥शराजाअंबरीककैकरनिचक्रसुंदरसनज
 ये॥दासकबीरकौठाकरैसौ॥संगतिकासरणिउबारे॥१०॥
 ११॥रामनगिरामनगिरामचिंतामणि॥नागबंदेपायोछा
 डैजिनि॥१२॥असंगसिंगजिनताइरेचुलाइ॥साधसंगतिमि
 लिहरिगुनगाइ॥१३॥रिदाकंवैलैमैरागलुकाइ॥प्रमगांतिदेज
 छटिनगाइ॥१४॥अरुसिधिनवनिधिनोउमंजारि॥कहेकब
 रप्रजिचरनमुरारि॥१५॥निरमलनिरमलरामगुनगावे॥सो
 नगतामैरेमनिजोवैदिक॥जिजनतेहरामकौनांम॥ताकी
 नेवलिहारीजोऊ॥१६॥जिदिधटिरामरहेतरयूरे॥ताके
 रमौकीधुरि॥१७॥जातिपुलाहोमतिकौधार॥हरिबिहरि

पारमेकंद्वार ॥ ४ ॥ १२२ ॥ जानरुं मन गति नही साधी ॥ सो जनम
 तं काहेन गुण अपराधी ॥ टक गरम मुचे मुचिन ई किन बांज ॥ न
 कर रूप फिरै कलि मांज ॥ ॥ जिहि अलि पुत्र वंशान विचारी ॥ वा
 बां कां विधवा कोहेन जई मंहंतारी ॥ कहै कबीर नर सुंदर सरू
 प ॥ राम न गति द्विन कचल करूपा ॥ १२३ ॥ राम विनां पिर गधि
 गनर नारी ॥ कहौ ते आइ कीयो संसारी ॥ टकर ज द्विनां के सोर
 ज पूत ॥ ज्ञान विनां फोकट अंधूत ॥ ॥ गन काको पूत पिता
 क सो काहे गुर विन च लौ ज्ञान न लै है ॥ किंवारी कि न्या क
 र सिंगार ॥ सो न न पावै विन भ्रतार ॥ ॥ कहै कबीर हंकर ता
 न रों ॥ सुषे वद कहै तौ मै क्या करौ ॥ ४ ॥ १२४ ॥ जे रिजां उं जे सा जी
 वनां ॥ रा जाराम सो प्राति न होई ॥ ॥ जनम अमोलिक जात है
 धेति न वैषे कोई ॥ ट व मुधु मापी धन संपदो ॥ मधिया मधुले
 जाई रे ॥ गं यो गयो धन मूढ जनां ॥ फिरि पां छे पछिताई ॥ ३ ॥
 विषिया सुषक करै नै ॥ जाइ गनिका मूं प्राति लगाई ॥ अंधै
 आगिन सूजई ॥ पटि पटिले कवु जाई ॥ एक जनम के का
 रै ॥ कत पूजौ देव सहै सो ॥ कोहेन पूजौ राम जी ॥ जा को न
 गत महै सो ॥ कहै कबीर चित चंचला ॥ सुनौ मति मोरी ॥ वि
 मिया फिरि फिरि आवै ॥ रां जाराम न मिलि हिव जरी ॥ १२५ ॥
 राम न ज पै क कदान ये अंधा ॥ राम विनां जम मै ले फंदां टक
 सुत दारा का कीया पसारा ॥ अंत की कर न ये बट पारा ॥ ॥ मा
 या उ परि माया मानी ॥ साधिन चले यो परी दां ॥ ॥ जौ पौरां
 मंजो अंति उचरै ॥ ठाटी बां ह कबीर धू कोरै ॥ ३ ॥ १२६ ॥ गम
 छादि मन दोरा ॥ आवै जे रे रे वनि आवै ॥ लीनो हाथि
 सिंधोरा ॥ ट ॥ होह नि संक मग नू के नां चो
 म्हा मो ॥ ॥ कह ॥ ॥ ५९ ॥ ॥
 लोक लज अल की मृजा दा ॥ ॥ ५९ ॥

[illegible]

होसंनारी॥ कहताजुपुकारा॥ रामनामअंतरिगतिनाही
तोजनमनुयासंहारी॥ एकमरुमूमाइफलिकरिवै॥ कां
निनिपहरिमनुसा॥ वाहरिदेहेहेहृत्पटांनी॥ नीतरिगोधर
मसा॥ १॥ गारवनगरीगांववसाया॥ हांमकांमअहंकारी॥ घा
लिरसरियाजवनमोपेचै॥ तबकापतिरहेउमारी॥ २॥ छानि
कपूरगांठिविषवांधो॥ मूजहूवानलाहा॥ मेरेरामकीअ
नेपदनगरी॥ कहैकवीरजुलाहा॥ ३॥ १३॥ कौनविचारकर
होपूजा॥ आत्मरामअवरनहीहजा॥ टंकविनप्रतीतेपातीतोहे
ज्ञानविनादेवलसिरफोहे॥ लुचरीछपसीआपसिघोरे॥ छोरै
वाडारामपुकारै॥ २॥ परआत्मजोततद्विचारे॥ कहैकवीरता
केबलिहारे॥ ३॥ १४॥ कदाज्योतिषकगैरजपमाला॥ मरमन
नैमिलगोपाला॥ टंकदिनप्रतिपसकैरहरिदाईगारकाठ
वाकीवांनिनजाई॥ १॥ स्वांगसेतकराणीमनिकाली॥ कहान
योगलिमालाछाली॥ २॥ विनहप्रिमकाहानयोरौद्रा॥ नीतरि
मलवाहरिकाधोइ॥ ३॥ गलगलस्वादजगतिनहीसाधी॥ ची
करचंदवाकहैकवीर॥ ४॥ १५॥ तिहरिकेआवकिदिहकासा॥
जनहीचीन्हैआत्मरामा॥ टंकचोरीजगतिवज्रतअहंकारा
असैनगतामिलहिअपायां॥ नावनचीन्हैहरिगोपाला॥ जान
किअरहटैगलिमाया॥ २॥ कहैकवीरजिनिगरेअनिमानं
तेजगताजगवंतसमाना॥ ३॥ १६॥ कदाज्योरचिस्वागवन
यो॥ अंतरजांमीनिकटिनआयो॥ टंकविषईपतिपैदिहा
गावै॥ रामनाममनिकवजनमोवै॥ १॥ पापीपरलेजाहिअ
नांग॥ अमृतछाकिविषेरसिलोगा॥ कहैकवीरहरिन
गतिनसा॥ ४॥ जगभूषिलगिमयेअपराधी॥ ३॥ १७॥ जोपे
सकेमनिनहीमाये॥ तोकापारोसनिक्कैजलगीयो॥ टंकक
दानरापाइलकमकारै॥ कदाज्योनेबनावनकाये॥ २॥

कदाकाजरम्पहरकेदोरे सोलहसिंगारकहानयोकीरे २॥
 जनमंजनकरेवगौरा ॥ कापविमैरनिगोडीवारा ॥ जोपैपतिब्रताके
 नारा ॥ कैमैदारहोसोपावहिपियारा ॥ तनमनजोवनसोपिसरा
 तादिसुहागनिर्कंदेकबीरा ॥ १४॥ हनरपनियामसोनजारी ॥
 धिकरषाहरिविननबुजारी ॥ टंककपरिनीरलेजतरिहारा ॥ कैमै
 नीरनरपनिहारी ॥ उधसोकरपवाटनयोनारी ॥ चलीनिगसपे
 पनिहारी ॥ २॥ पुरउपदेसतारीलेनीरा ॥ हरिबिहरिबिजलपीवक
 बीरा ॥ ३॥ कहोनाईयाअंबरकासुखागा ॥ कोइजानैगाजा
 ननहारसनागा ॥ टंक ॥ अबरिदीसैकेतातारा ॥ कौनचउर
 असतरनदारा ॥ जिउमदेधोसोयऊनाही ॥ यऊपदअगम
 अगोचरमाही ॥ ४॥ तीनहाथेएकअरुधारी ॥ ऐसाअंबरचीमों
 रेभाई ॥ कहैकबीरजेअंबरजानै ॥ ताहीसोमेरामनमानै ॥
 ॥ ५॥ तनषो जोनरकरोबनाई ॥ अतिबिनांतगतिक्लिप
 ईटेल ॥ एककहावतमुलकाजी ॥ रामबिनायवषोकरटब
 जी ॥ नवग्रहबानगानशातारासी ॥ तिनहौनकाटीजमकीपा
 सी ॥ कहैकबीरयऊतनकाचा ॥ सबदनिरंजनरामनामसाचा
 ॥ ६॥ जाअपरोहमारोकाकरिहै ॥ आपकरैआपेइपनरिहै ॥
 ऊहुजांतोबाटबताव ॥ जोनचलौतौबहुषपावे ॥ ७॥ अंधेकूप
 कदीघोबताई ॥ तरकिपरैपुनिहरिनपत्नीई ॥ ८॥ इन्दीस्वादबि
 परसिबहिहै ॥ पंचमषीमिलिमंतोउपायो ॥ जमकीपासीहंस
 बंधयो ॥ ९॥ कहैकबीरपरतीतिनआवे ॥ पाषंरुकरपटइहैजी
 यजावे ॥ १०॥ ऐसेलोगनिसंकाकहिये ॥ जेनरनयेनगतिथे
 न्यारे ॥ तिनथेसदादुरांतरहिये ॥ आपनदेहीचरखपाणी
 ताहिनिदेजिनिगंगाआणी ॥ ११॥ आपा ॥ बूझओरकौबोधा ॥ अ
 गनिलगाइमंदरमैसोवे ॥ १२॥ आयुनअंधओरककांनो ॥ तिम
 कौदेबिकबीरहरांभा ॥ १३॥ १४॥

फुनिगाँकेसैगरहुमपतेदे।देकअचिरजाएकदेवजसंसार।
 सुनदोपेदेऊअरअसबाग॥॥असाएकअचनोदेया॥जंवक
 करकेहरिसेत्येपा॥कहेकबीररामप्रतिनाई।दासअधमग
 तिकवजनपाई॥१४०॥हेहरिजनयेनूकपर॥जेऊछया
 हउमसोहरा।टकेमोरतोरजवलगमेकीनू।तवलगात्रास
 वजतउपटीनू॥॥सिसिसाधिककहेहमसिधियाई।रामना
 मदिनसैवावाई॥१॥जिवरागीआसपियासी॥तिनकीमा
 याकदेननासी॥३॥कहेकबीरमेदासउमारा।मायापंक
 नकरेहमाया॥४॥४॥सवउनीमयानीमैवौरा।हमबिगरेबिग
 रोजिनिओरा।टकेमेनदोबौरारामकीपाबौरा।सटगुरजति
 गपान्नममौरा॥॥विद्यानपदूवादनहीजांतू।हरिगुनकथत
 सुनतबौरांतू॥१॥कामक्रोधदोकनयेविकारा॥आपदिआ
 पजरेसंसार॥३॥नीवाकहाजाहिजोनावे॥दासकबीरराम
 सुनगावे॥४॥४॥रमनजाहिजहांतोहिनावे।अवनकोइतैरैअं
 ऊसलवैदेक।जहांजहोजाइतहांतहांरामा॥हरिपदचीन्कि
 कीयाबिष्णोमा॥॥तनसंजिततवेदेषियतदोइ॥प्रगटरोज्ञा
 नजहांतहांसोइ॥१॥लीननिरंतरबपुविसराया॥कहेकबी
 रसुषसाग्रपाया॥३॥४॥अऊरिहमकहेकौआवहो॥बिबु
 रोपंचततकीरचना॥तवहमरामहिपविगे॥टकप्रथीकागुन
 पानीसोघ्या॥जानतिजमिलावो॥तेजपवनमिलिपवनसवद
 मिलि।सहजसमाहिलगावो॥॥अमेहंपलोकवेदकेबिबुरे
 सुनही।माहिसमावो॥१॥अंसंजजहितरंगतरंगनी॥अंसह
 मदि।एलावो॥३॥कहेकबीरराममीसुषसंगमा।हंसहिहंसमि
 लावो॥४॥४॥कबीररामंतनदोगयोवहिरे।वाटीमाइक
 रोरटेर।हेकोइलावोवहिरे।देक
 निहा॥चरित्रअमृतधारा॥समातार

नमः शिवाय ॥ जहां बहिलोगे संचक संनंदन ॥ रुद्र ध्यान धरे वै
ते ॥ मुंघ प्रकास आनंद वने कमें ॥ घन कंबार कै पैवे ॥ १४ ॥
अत्रध का मधे न गहि बांधीरे ॥ नाडानंजन करै सब दिन का ॥ क
छून मुखे आधीरे ॥ दिऊ जो बाँदे तो हृदय न देखी ॥ जाना अमृत
सरवे ॥ कोली घाल्या बीड़ रिचाले ॥ जूधेरुत एखे दे ॥ १५ ॥ तिहे
धे ने ये अम्बा पूगी ॥ पाक डिपूट बांधी ॥ ग्वादो मै है आनंद
पनी ॥ पेट दो ऊँचा धी ॥ २ ॥ सोई साईसा स पुनि साई ॥ साई घर
की नारी ॥ कहै कबीर प्रेम पद पाया ॥ संतौ लेऊ बिचारी ॥ ३ ॥
॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

कलौजीलाहन्पकरिहो॥ गुरुसबदगुडकीनां॥ कामक्रोध
 मोहमदनह्वरन॥ कटिकाटिकसदीनां॥ मवनचउरदसभा
 वीपुरई॥ ब्रह्मअगनेपुतारी॥ मूदेमंदरसहजकनिउपती॥ मु
 षानपोतनदाई॥ १॥ जीजरजरेअमोरसनिकसै॥ तिहिमदिरा
 बलछोकी॥ कहकचीरयजंवासविकटअति॥ ज्ञानगुरु
 लेबांकां॥ २॥ अकथकहांनीप्रेमकी॥ कछकहीनताई॥ ग
 गेकेरीसरकरावैमुसकाई॥ टफनमिविनांअरुबीनविनात
 रवरएकनाई॥ अनेतफलपकासियागिरिदीपावताई॥ मन
 थिवसिविचरियाशंमदिल्योलाई॥ कवीअनेभैविसतरी॥ स
 वयोयीवाई॥ कहैकबीरसकतिबुनाही॥ गुरमायासहाई
 यांवाणांजांमिदिगई॥ सतमनहीममाई॥ २॥ सतमोअन
 नेनदगहिये॥ कलाअतीतआदिनिधिनिरमल॥ ताकौंसदा
 वितारतरह्यो॥ ३॥ सोकाजीजकौंकालनबापे॥ सोपेकितप
 दवै॥ सोब्रह्माजोब्रह्मविचारे॥ सोजीगाजगसपै॥ उदअ
 स्तसरनहीसमिहर॥ ताकौंनयनतनकरित्तीता॥ कायाथैक
 छइरेविचारे॥ तासगुरुमनधीजे॥ ४॥ जासोतैरनकाद्योसपै
 उत्तिपतिपरनआवै॥ निराकारअषडमंडलमै॥ पांचौतत्स
 गावै॥ ५॥ लोचनअछतसबैअंधियारा॥ बिनलोचनजगस
 पै॥ पददापोलिगैलेहरताकौं॥ जोयाअथदिवलै॥ ६॥
 आदिअनेतउनपपुनिरमल॥ दिदिनेदेप्राजाई॥ जालाउठीअ
 कासप्रजल्यो॥ सीतलअधिकसमाई॥ ६॥ एकनिगंधवासना
 प्रगट॥ जगथैरहैअकेला॥ प्रानपुरसकायाथैबिछुरे॥ रापि
 लेऊपुरचला॥ ७॥ जागाअमनयामनअस्थिर॥ निद्रानेहन
 सोनं॥ घकाजेतिजगतंप्रकाशा॥ ८॥
 कनानिजसभिकरिगोपेति॥ ९॥
 रक्षनिलहरिप्रगटी॥ १०॥

गोव्यं दपट्टया धमिता । तेरा कौन गुरु कौन धेला । अपने रूप को आप
 दिगो नै । आपै रदे अकेला । टंक बांज का पतवा पविन अया ।
 ऊत रवर चटि आया । अस विन पांषर गज विन पुट्टिया । विन पांषे
 संघां मजुट्टिया ॥ १॥ दीज विन अंकर पे मविन तरधर विन साषांतर
 वरफ लिप्या । रूप विन नांरी पुट्ट पविन परमल । विन नीरे सरवर स
 रिया । ३॥ द्विध विन टेट्टु रापत्र विन पूजा ॥ विन पंषां नवरा विन वि
 यां सरा होइ सप्रम पद पावे ॥ कोट पतंग होइ सव ज रेया ॥ ३॥ दी
 पक विन जोति जोति विन दीपक ॥ हट्ट विना अनहट्ट सब दवागा
 चेतनां होइ सुदेति लीजे ॥ कबीर हरि कै अंगि जागा ॥ ४॥ पि
 डत होइ सुपट्ट दिवि चोरे ॥ मूरिष नां दिन बजे ॥ विन हाथ तिपा
 इन विन कांतिने । विन लोचन जग सजे ॥ ५॥ विन मुखिषा इचर
 न विन चोले ॥ विन जिना गुण गावे ॥ आठुर हठोर नही छोले
 दहट्टि सिद्धि फिरे आये ॥ ६॥ विन हीता लांता लबजीवे ॥ विन म
 दिर पट्टा ला ॥ विन ही सब द अना हट्ट बांजे ॥ तहां निरंत नहे
 गोपाला ॥ ७॥ विनां लोचन विनां कंठकी ॥ विन दी संग संग हो
 ई ॥ दास कबीर ओ सरन लदया ॥ जो नगा जन कोई ॥ ८॥ हे
 कोई जगता प्रज्ञानी ॥ उलटि वेद बूके ॥ पांनी मै अगति जरे ॥ अ
 धरे कस जे ॥ ९॥ एक निदां इरियां पंच मुखा ॥ गाइना हूर
 पायो काटिकाटि अंगा ॥ १०॥ बकरा निघार पायो हरि न पायो
 चीता ॥ कागल गरफा धिया ॥ बने रे बाज जीता ॥ ११॥ मूस मंजार
 पायो ॥ स्याल पायो स्नाना ॥ आदिकं आदे सकरा ॥ कहे कबी
 र ज्ञाना ॥ १२॥ ५॥ ऐसा अट्ट बुद मेरे गुरे कथा ॥ मेर द्या न मेरे मूस
 हस्ती सौ लड़े ॥ किई बिरला पेषे टिक ॥ मूस पावा बांधि मे ॥ लारसा
 पसि धाई ॥ उलटि मूस सां पणि गिली ॥ थक अचिर जनाई ॥ १३॥ चो
 टी परबत ऊषा पाले राया चौड़े ॥ मुरगा मित की सौ लड़े ॥ डेल
 पाणा दोड़े ॥ १४॥ मुरही चूष बडुतलि बछाइ धऊतारे ॥ ऐसा नव

अगुणीनया। सारहृत्तहिमोरे॥४॥ नीलनुक्तावनवीजमे स।
 सासिरमोरे॥ कहे कवीरतागुरकरो॥ जो पदद्विचारे॥५॥
 अंधजागतनीदनकीजे॥ कालनपाइकलपनहीव्यापे दे
 हीनुकानहीजे॥ टंक उलटीगंगसंमद्रहिसोपे॥ ससिहरमूर
 रांसे॥ नौग्रहमारोगियोदेवा॥ जलमे विंवप्रकासे॥१॥ माल
 गद्यांथमूननसोपे॥ मूलगद्याफलपावा॥ बवईउलटिप्रारपकोला
 गा॥ धरणिमहारसपाया॥ बठिगुफामेसंतजगदेया॥ बाहरिकुल
 नसोपे॥ उलटेधनकिपारधीमासो॥ यजुअचिरनकोईवोपे
 २॥ ओषधदानजलमेमूवे॥ मक्षामूनरिनरिया॥ जाकंयजुजग
 धिणकरिचाले॥ तापरिसादिनिसतरिया॥३॥ अंबरवरसधरती
 मांजे॥ यजुजांणोंसबकोई॥ धरतीवरमेअंबरनीजे॥ वूजेविरल
 कोई॥ गांवणहाराकदेसावे॥ आगबोल्यानितंगावे॥ नव
 वरेपेपेपिनांपेया॥ अनहदवेनबजोवे॥५॥ कहंगीरहाणीनि
 जततजांणों॥ यजुमवअकथकहांगी॥ धरतीनुलटिअकासदिग
 से॥ यजुपुरिसाकीवांतां॥६॥ बांरुपियालेअमृतसोप्या॥ नद
 नरनरिराया॥ कहेकवीरतेविरलाजोगी॥ धरणिमहारस
 चाया॥७॥ रामगुणानेनद्वारे॥ अंधगोरखनांथजांणों॥ न
 तिसरूपनछांपाजाके॥ विरधिकरविनपांणों॥ टंकबेल
 दुयांकेअपाणीपकती॥ गानपकतीसेली॥ सहजिवेलिनवफ
 लनिलारी॥ मालीकलमेली॥१॥ मनऊनरजाइबाडीविलेव
 सतगुमबाहविली॥ पंचसापीमिलेपवन॥ यंप्या॥ बाडीपांणों
 ली॥२॥ काटतेबेलीकपलमेली॥ सीचतडांऊमलोनी॥ व
 देकंनीरतेविरलाजोगी॥ सहजतिरंतरिजांणों॥३॥ रामर
 प्रअंगतिविगतिनजांने॥ क
 धमिगमनति॥ उहमि॥ प्रथमिप्रचु
 मपमेने॥ तिप्रमपमिपमम

धमेप्रानकिपिकप्रथमेप्रन प्रथमेरकितकिरेत प्रथमे
रषकिनारिप्रथमिप्रन प्रथमेबीजकिषेत २॥ प्रथमि
वसकरैणोप्रथमिप्रन प्रथमियाएकिपुनि ॥ कहैकबी
जहाबसऊनिरजन ॥ तहांकछअहेसुनि ॥ ३॥ १२॥ अबधुसे
जोगापुरमेरा ॥ जोगापदकाकरैनबेरा ॥ टेकातरवरएक
पवबिनगढा ॥ बिनफूलनफलवागा ॥ साधापत्रकछ
नहीचाकै ॥ अष्टाएनमुषबागा ॥ १॥ घेरबिननिरतिक ॥
राबिनबाजै ॥ जिम्माहोतागावै ॥ गावणाहारिकैरूपनरे
षा ॥ सतगुरहोइलषावै ॥ पंषीकाषोजमीनकामारिग
कहैकबीरबिचारी ॥ अपरमपारपारपरसोतम ॥ वाम
रतिकीबलिहारी ॥ २॥ १३॥ अबमैजानिबोरैकवलराइक
कहाणी ॥ मऊजोतिरांमप्रकासैपुरगमिबाणी ॥ टेकातरव
एकअनंतमूरतिसुरतालेऊपिछाणी ॥ साधापेडफूलफल
॥ १॥ ताकीअमृतवाणी ॥ १॥ पुहपवासनवरएकराता ॥
॥ १॥ लेउरिधरिया ॥ सोलमऊपवनऊकोले ॥ आकारेफ
फलिया ॥ २॥ सहजसमाधिविषायऊसीचा ॥ धरती ॥
हरसोषा ॥ कहैकबीरतासमैचेला ॥ जिनियऊतरव
॥ ३॥ १४॥ राजारामकवनरौ ॥ जैसैप्रमलपुहपसंगै ॥ टे
ततकीनूबंधानु ॥ चौरासीलषजीवसमान ॥ १॥ बिगर
रराधिलेजावै ॥ ताथैकीनूआपकौंवावै ॥ २॥ जसैपाव
जनबसेष ॥ घटअनमानकायाप्रवेसा ॥ ३॥ कहाचा
कहानजाइ ॥ जलजीवकैजलनहीबिगयाइ ॥
आत्मावरतैजे ॥ छलबलकौंनबचीनबसे ॥ ४॥ ची
चीकिएतचीनिलसे ॥ तिहिचीन्हियलक्षकाक
आपाप्रमबाकसमान ॥ तबदमपादापदनुंवाग
हैकबीरमनिनयासंतोष ॥ मिलेजातंमरिहै

पदेन ॥ १५ ॥ अंतरगत अनि अनि वंणी ॥ शायन गुपत स भक्त कर म भयी
 वतं मुगति रे स सिद्ध जांणि ॥ टेक च गुण विविधित लपत ति मरात न
 तती ततं मिलांणि ॥ १॥ ज्ञो ज्ञर म ज्ञो येन ज्ञे ज्ञारी ॥ विधि विर चि सु
 पि ज्ञांणि ॥ २ ॥ दशन पदन अवर विधि पां वकु ॥ अरुल अमर मे रे पांणि
 रदिस सि मु नगर हि भ रिस व धटि ॥ संवद सु नि थित्प मा ह्ती ॥ ३ ॥ संकट रा
 कति सकल मु षो ॥ ३ ॥ दिध म थ त स ब हरे ॥ कं हे क बीर अ ग म पुर
 पुर पटा ॥ प्रगट सुरा त न जारे ॥ ४ ॥ दी ला ॥ धौ है क ब ला धौ है ॥ तां
 का पार प को न ल है ॥ अ वानो क अ क ल अ वि नां सी ॥ घटि घटि आ
 पर है ॥ टेक तोल म मोल मा प क छं नां ही ॥ गिन ती ज्ञान न हो ॥
 नां सो नारी मां सो ह ल व ॥ ता की पार प ले षे न को ई ॥ १ ॥ ज्ञो मे ह
 म सो ई ह म ही मे ॥ नीर मिले जल एक जवा ॥ ए ज्ञो तो को ई
 न म र्हे ॥ दिन ज्ञो थै व क्त म वा ॥ ३ ॥ टा म क वी रे प्र म र स
 या ॥ पी व न हं र न पां कं ॥ वि ध नां व च न पि छा णा त नां ही ॥ कं हो
 कां कां रि दि पां क ॥ ३ ॥ हरि हरि रै रै अनंत कत चा हो ॥ नूले
 न म उ नी क त बा हो ॥ टेक जग प्र मो ध त न रा बा ली ॥ करते उ द र उ
 पा या ॥ आ त्म रां म न ची न्हे सं तो ॥ कं र मिले रां म रा ॥ १ ॥ लो प्या स
 नीर सो पी व ॥ दिन ज्ञो न ही पी व ॥ पो ज त त मिले अ दि नां सी ॥ वि
 न यो जे न ही ज्ञी व ॥ २ ॥ कं हे क बीर क वि न य क क र णा ॥ त्रि सां पां ने
 की धा रा ॥ उ ल टी च टी चाल मिले व द्या कं ॥ सो स ह यु र्हे न मा
 ॥ १ ॥ १८ रे म न व वि किते नि न जा सी ॥ हि रे दे न रो रै रै अ वि नां न
 टेक का या म धे को टि ती र थ ॥ का या म धे का हां व द्या म ध्ते
 वं ला प ती वै क्त व या सी ॥ १ ॥ उ ल टि प व न प ट र्हे न्हे न्हे न्हे न्हे
 ज्ञो म त र वां सी ॥ २ ॥ गे ग न ॥ ड ल वि सि म ट र्हे न्हे न्हे न्हे न्हे
 लां गि कि व या ॥ १ ॥ कं हे क बीर न र्हे न्हे न्हे न्हे
 दो नि रा रा ॥ १ ॥ रां म वि न न न न न न न
 म र्हे न्हे न्हे न्हे न्हे न्हे न्हे न्हे न्हे

तजवक सकल सुष सुषकारा ॥ अतः शुनिरदिस सिद्ध मित्र ॥
कल पुरिष पल नारी ॥ १ ॥ अंतरंग गन होत अंतर भूमि ॥ विन सां स
निहै मोई ॥ चोरत सब दस संगल सब घाट ॥ बिटन बंदे कोई ॥ २ ॥ पो
ली पवन अव निन ति पावक ॥ तिन संगि सदा बसेरा ॥ कौदे कबीर म
न मन करि बिधा ॥ बज्र नि कीया फेरा ॥ २० ॥ नरे ही बज्र नि बाई
ये तापे हरि विहरि विगुन गाइये देक जे मन नही तजे बिकारा ॥
तौ कंति स्थि मोपारा ॥ जव मन बा फुटलाई ॥ तब आइ मिले रां म
राई ॥ १ ॥ जंजां मां जंजे मेशां ॥ यछि ता वा कंन कर नां ॥ जांति मरे
कोई ॥ तौ बज्र नि सरनां होई ॥ गुर बचनां सं किम मावै ॥ तब रां मनां
मल्यो लावै ॥ जव रां मनां मल्यो लागा ॥ तब नर मगाया जौ जागा ॥ २ ॥ रि
सहर सूर मिलावा ॥ तब अनहद बेन बजावा ॥ जव अनहद बाजावा
जै ॥ तब सांई संगि बिराजै ॥ ३ ॥ होइ संत जन के संगी ॥ मन राखि रह
रिं गी ॥ धरो चरन कंचल विसवासा ॥ ४ ॥ होइ अनिरै पद वसा ॥ य
जवा चाषेल न होइ ॥ जन भरत भेलै कोई ॥ जव भरत भेल मचा
वा ॥ तब आगत मं फल मठ छावा ॥ ५ ॥ चित चंचल निहचल कीजै
तब रां मर साइं न पीजै ॥ जव रां मर सांई गपीया ॥ तब काल मिट्या
जन जीया ॥ यदा सक बी राग वि ॥ तापे मन को मन समजोवै ॥ जव
मन हो समजाया ॥ तब सत गुर मित्या सचु पावा ॥ ६ ॥ अवध अग
निजर के काठ ॥ प्रछौ पंफित जोगी सित्यासी ॥ सत गुर चीनो
बाटा टेक ॥ अगनि पवन मै पवन कवन मे ॥ सब दशान के पवन
निराकार प्रभु अदि निरंजन ॥ कतर वते सवते पवनो ॥ १ ॥ उति
पति जोति कवन अधि वारा ॥ घन बादल कां बरिषा ॥ प्रगट्यो न
धरनि अति अधिकै ॥ पा रत्न ह्रीं ही दिंषा ॥ मरनां मरै ना रिस के
मराणां इरि नेरा ॥ वाद सदा सस मुष देष ॥ आपे आप अकेला
२ ॥ जे बांधाते छंद मुकतां ॥ बांधन हारा बांधायां
कता बांधा ॥ तिन पार बड़ा हरि लाधा ॥ ३ ॥ जे जाताते

रई प्रतेकि निग्या ॥ अमृतस्योना विषमै जांनो ॥ विषमै अ
 मृतस्य चोपा ॥ ५ ॥ कहे कबीर विचारि विचारी ॥ तिलमै मेरस
 मोनो ॥ अनेक जनम का गुरगुर करता ॥ मत गुरत घने टांनो ॥ ६ ॥ २२
 अवध असा ज्ञान विचारो ॥ जेरे चेटे मुअध धर बूझे ॥ निरा धारन
 यपारो टिका ॥ ऊचट चले मुन गरि पडंते ॥ वाट चले ते लूटे ॥ ऐ
 कजे बूढ़ी सब लपटांने ॥ के बांधे के प्रछे ॥ १ ॥ मंदरम सिधु
 दिस नीरो ॥ या हरि रहे ते सूका ॥ सरिमारे ते मदा सुधारो ॥ अनमा
 रे नये दृष्टा ॥ २ ॥ दिनै नैनन के सब जग देधे ॥ लोचन अछत अंधा
 कहे कबीर कछु समजि परोहे ॥ यऊ जग देषा धंधा ॥ ३ ॥ २३ ॥ ज
 गंध धरे जगंधा ॥ सब लोक न जाने जगंधा ॥ लोचन सोहे बूढ़ी
 छपटांती ॥ बिन ही गांठि गहो फंधा ॥ टिका ॥ ऊचै टावै मंच वस्त
 हे ॥ सुंसा बैसे जलमांही ॥ १ ॥ परबत उपरिलोक नू विमूवां ॥ नीर मूवां
 भूकांही ॥ २ ॥ जले नीरतिन पटु ॥ सब करै ॥ वैमंदरै सींचे ॥ ऊपरि मु
 ले फूल तिन नीतरि ॥ जिन जा न्या जिन निकै ॥ कहे कबीर ज्ञान ही
 ज्ञाने ॥ अन ज्ञान त ज्ञानारी ॥ हारी वाट व डीऊ जनी त्या ॥ ज्ञानत की
 बसि हारी ॥ ३ ॥ २४ ॥ अवध वदं गते धरि जाई ॥ काहे गुतेरी वछ रियाळी
 नी ॥ कहा चरो वेगाई ॥ टिका ॥ ताल चुगे वन तीतर लउवा ॥ परबत च
 रै सोरो मछा ॥ वन को हिरनी कहै बियानी ॥ ससा फिर अकासा ॥ १ ॥ ऊ
 ट मरि मेचो रेलवा ॥ हंसती तरं मत्ता देई ॥ बादर का उरिया वन सी
 लेह ॥ सीधे रानं किनं किषाई ॥ २ ॥ आवे के चोरे चरहल करहल दि
 बिगालि कुलिषाई ॥ मोर झांग निदाष दरी बल ॥ कहे कबीर सम
 जाई ॥ ३ ॥ २५ ॥ कहा करी कसे तिरौ ॥ मो जल अति नारी ॥ उमसरन
 गति नै सदा ॥ राशि राशि मुरारी ॥ टिका ॥ घरत जिन वन पंज जाईये ॥ घी
 न पाई कंद विप विकारन छुटिई ॥ असामनांदा ॥ १ ॥ विष विषिप
 की बासनां ॥ जंतु जनीन जाई ॥ अन काम
 निरुद्धाई ॥ जीव जंतु तजो कंत गोपा ॥ क

तज्ज्वल सकल सुषुप्तकारः॥ अतश्च निरविमिश्र मित्रं भव
कलपुत्रिषपत्नारी॥१॥ अंतरंगन होत अंतरंगिनि॥ विनसा
निहेमोई॥ घोरतसवदसंमंगलसवधाट॥ विदितबंदेकोई॥२॥ पा
लीपवन अवनिनत्तिपावक॥ तिनसंगिसदावसेरा॥ कहेकबीरम
नमनकरिवेधा॥ बज्ररिनकीयाफेरा॥३॥२०॥ नरदेही बज्ररिनघाई
ये तापेदहिरिषिहिरिषिगुनगाईदेक जेमनतहीतजेविकारा॥
तौकंतिस्थेमौपारा॥ जबसनबाहुकटलाई॥ तबआइमिलेरा
राई॥१॥ जंजांमागाजंमेरा॥ यछितावाकचूनकरना॥ जांतिमरे
कोई॥ तौबज्ररिनमरनाहोई॥ गुरबचनांमेकिसमावे॥ तबरांमना
मल्लोलावे॥ जबरांमनांमल्लोलागा॥ तबनरमगायनो ज्ञागा॥२॥ सि
महरसरमिलावा॥ तबअनददबेनबजावा॥ जबअनददबाजावा
जे॥ तबसांईसंगितिराजे॥३॥ होदमंतजनकेसंगी॥ मनराखिरऊह
रिरंगी॥ धरोचरनकंचलविसवासा॥४॥ जंहेअनिमैपद्वसा॥ य
ऊवाचाषेलनहोई॥ जनमरतमषेलकोई॥ जबमरतमषेलमचा
वा॥ तबागनमफलमठछावा॥५॥ चितचंचलनिहचलकजे
तबरांमरसाइनपीजे॥ जबरांमरसांईगापीया॥ तबकालमिदया
जनजीया॥ यदासकबीरागावे॥ तापेसनकौमनसमजावे॥ जब
मनहीसमजाया॥ तबसतगुरमित्यासचुपावा॥६॥२१॥ अवधआ
निजरकेकाठ॥ प्रहोपंकितज्ञागीमित्यासी॥ सतगुरचीनो
बाटाटेक॥ अगनिमवनमैपवनकवनमे॥ सबदशानकेमवन
निराकारप्रभुअदिनिरंजन॥ कतरवतेनचतेमवना॥७॥ उति
पतिजोतिकवनअधिया॥ घनबादलकावरिषा॥ प्रगटोत
धरतिअतिअधिके॥ पारब्रह्महिहीदिषा॥ मरनांमरेनादेसके
मरणाइरिननेरा॥ वादसधादससमुषदेष॥ आपेआपअकेला
२॥ जेबाध्यातेछछदमुकतां॥ बांधनहारावाध्या॥ या
भक्तताबाध्या॥ तिनपरब्रह्महरीलाधा॥३॥ जेजातहे

रक्षेयते किं निगम्या ॥ अमृतसमाना विषमे जांनं ॥ विषमे अ
 मृतस्य चान्धा ॥ ५ ॥ कहे कबीर विचारि विचारी ॥ तिलमे मेरस
 जांनं ॥ अनेक जनम कायुरगुर करता ॥ सतगुरु तब नेटांनं ॥ ६ ॥ २२
 अवधे असा ज्ञान विचारां जे रचे सुअधधर खे ॥ निराधार स
 यपारां टेक ॥ ऊबट चले मुनगरि पड़ते ॥ वाट चले ते लूटे ॥ ऐ
 कजे वडी सब लपटांने ॥ के बांधे के ॥ ७ ॥ २३ ॥ मंदर पसि चहु
 टिस नीरो ॥ आहरि रहे ते सूका ॥ सरि मोरे ते सदा सुघारे ॥ अनसा
 रे नये दृष्टा ॥ २ ॥ बिन तेन न के सब जग देखै ॥ लोचन अछुत अंध
 कहे कबीर कछु समझि परोहे ॥ यऊ जग देखे धंधा ॥ ३ ॥ २४ ॥ ज
 गंधधरे जांधध सब लोक न जौने जगंधध ॥ लोचन मोहे जे वृद्ध
 लमरांन ॥ बिन हीरांगि गेहो फंधा ॥ टेका ऊचै दावे मछ बस्त
 हे ॥ ससा बसे जस मांही ॥ १ ॥ परबत उपरिलोक नू बिभूवां ॥ नीर मूवां
 धूकांही ॥ २ ॥ जले नीरतिन पड सब करै ॥ वेसं दरलै सौचै ॥ ऊपरि मु
 ल फूलति न नीतरि ॥ जिन जात्याति न निकै ॥ कहे कबीर जांनही
 जांने ॥ अनजानत ऊपनारी ॥ हारी बाट बडही ऊजीत्या जांनत की
 बसिहारी ॥ ३ ॥ २५ ॥ अवधु बल पतै धरि जाई ॥ काहे जु वेरी बछरिया छी
 नी ॥ कहा चरावे गाई ॥ टेका ताल चुगे बनती तरल उवा ॥ परबत च
 र सौरां मछा ॥ बन कांहरि नी कहै बियानी ॥ ससा फिर अकासा ॥ १ ॥ ऊं
 टम रिमै चारै लवा ॥ हंसती तरं मता देई ॥ तां बुरका डरिया बनसी
 लेह ॥ सीधे राखे किन किषाई ॥ २ ॥ आवकै चौरै चरहल करहल ति
 बिया फल फलियाई ॥ मोरे आंगनि दाप दी बल ॥ कहे कबीर समा
 जाई ॥ ३ ॥ २६ ॥ कहा करै कसे तिरौं ॥ जौ जल अति नारी ॥ उमसरनां
 गति कै सदा ॥ राशि राखि पुरारी ॥ टेका घरत जिन धंध जाईये ॥ धा
 न पाई कंदा बिष विकार न छुटिई ॥ असामनां ददा ॥ १ ॥
 कीबासनां ॥ ततेत जीन जाई

रसगासोपरहस्या विदुराताप्योरे। आस्तिकतनोदेषिह। दिननामधुम
 रे॥१॥ साचीसागईरंगका। मुनिआत्ममेरे नरकिपेदेनूरबापुडेगाहकन
 मेतेरे। ॥२॥ संसुदुजाचितचालिया। सगपनकछताही। माटीसौमाटीनलिक
 रि। पीछेअनबांही। ॥३॥ कहेकबीरजगअंधला। कोईजनसारा। जिनहिसरमन
 जांगिया। तिनकीयापसारा। ॥४॥ माधोमैअसाअपराधी। तेरीनगतिहेत
 नहीसाक्षा। ॥५॥ कारनिंकवनआगेज्जातनम्मा। जमेनमिकवनसचुपाया। ओ
 जलतिरागचराविंतामस्यो। ताचितघड़ीनलाई। ॥६॥ परनिद्यापरधनपरदा।
 रा। परअपवादसूरा। ताथेआवागवनहेतफुनिफुनिताप्रसंगतिचुरा। ॥७॥ का
 मकोधमायासदमंछर। एमंतहिदममाही। दयाधरमज्ञानगुरसेवा। येप्रच
 सुधिनेनाही। ॥८॥ नमकपालदयालदसोदर। नगतिबछलजोहरा। कहेक
 बीरधरमतिरोपोज। सामतिकसै। हंसारी। ॥९॥ रामराइकासनिकरोमु
 कारा। अमेनुमसाहिबजाननेदारा। टेकइंरीसबलनिबलमेंनाधौ। ब
 क्तकरैबरयपई। लैधरिजोहिंनहांइषपर्ये। बुधिवलंकछनबलाई।
 ॥१०॥ मेवपुरोकाअलषमूढमति। कहांज्योनेलूटे। मूनिजनसतीसिधअत्त
 साधिक। तेऊनयापेकूटे। ॥११॥ जोगीजतीपतपीसन्नासी। अहनिमबोजवा
 या। सैमेरीकरिबकृतविगुते। बिषबाषजगुयाइ। एकतछाकिजाहि
 घरघरनी। निनजीबकृतउपाया। कहेकबीरकछसमकिनपरई। बिष
 मउमारीमाया। ॥१२॥ माधोचलेबुनोवतमाही। जगजीतिजाइनुचाहा। टे
 वनवगजदसगजगजगनीसा। पुरियाऐकतनाई। सातसूवेगंडबहत
 रि। पाटलकीअधिकई। ॥१३॥ उलहनतोलीगजहनमापी। पहजनसेरअटाई। अ
 होईमपोवेघटे। तोकरकजकरैवजदाई। ॥१४॥ दिनकोबरेषोसमकीजे। अ
 रनुलगीतहांही। जागीपुरियाघरहाछानी। चलेजुलाहरिसाई। छोछीन
 लाकांमिनहीआवे। लपटिरहीउरकाई। ठाहिपसारे। रामकहिबोरे। कहे
 कबीरसमकाई। ॥१५॥ बोतेजंबजावेगुनी। रामन। मबिनचलीइंती।
 ॥१६॥ रजगुनसतंगुनतमगुनतान। पंचनतलेसाज्याबीन। ॥१७॥ तीमलोकपरा
 पेबनां। नांचनचावेऐकजनं। ॥१८॥ कहेकबीरसंसाकरिइरि। निनवन

नः परह्योजर परे। २। ४०। जंत्री जत्र अनेपम बाजे। ताका सबद गंगन मै
 गाजे। देह मृतका नालि सुरति कारूबा। सतपुर साज वनया। सुरनराणा
 गंदरप ब्रह्मादिक। सुरविनतिन हनन पाया। १। जिप्पाता तिना सिक्का क
 रह। साधा कामता लगाया। गमाबती समोर राणां पांचो। नोका साज वन
 या। २। जंत्री जंत्र जैन ही बाजे। तब बाजे जव बाजे। कहै कवीर सोई जना।
 साचा जंत्री सौ प्रीति लगाये। ४१। अवधुन दवि दगाग स्यामो। सब दअ
 नाद देवो ले। अतरगतिन हो दै निडा। दूत वन वन डोले। टिक साखी
 रंग सत जं सिव पूजं। सिर ब्रह्मा काकाट। साधु रफो डिनीर मकलोजा क
 वासिलो देपाटू। १। चंद सूर दोष्टं वा करिहू। चित चेतन की डांडी। सुंष
 मन तंती बाज गलागी। इहि बिधि रश्मि नां पांडी। प्रमत्त आक्षर मेरे
 सिद्ध नगरी धर मेरा। काल हिमं मौषी च विहं मौ। चक्र रिन करिहू मेरा।
 २। जपूत जा पहन हरी गाल। पुस्तक लेन म्पठांक। कहै कवीर परम प
 द पाया। नही आंक नही जांक। ३। धरा वापे कछाफि समझाली लागे
 गूढे जंत्र अनागो सोइ सोइ सब रागि विहाणी। मोर नयौ तब जागे। टिक
 देवल जांत देब दिष्ट। तीरथ जांत मोगी। वोढी बुधि अगोचर बाणी
 नही परम गति जाणी। १। साधु पुकारे समजत नही। आन जनम के सुते
 बांधेनु अरहट कोटी दुनिया। आवत जात विगुते। २। गुरविन इहि जागे
 कौन नरो सा। काकै संगि कैर हिये। गनिका के धरि बैठा जाया। पिता
 नांव किस कहिये। ३। कहै कवीर याज चित्र विरोधा। बूजी अमृत बा
 णी। ४। ४३। मूली मालनी हे गोबंद जागतौ जागे देव। स्वर किस को स
 वाटेक मूली माल निपाती तेहै। पाती पाती नीव। जाम्बर तिकै पाती ते
 डे। सो मूरति नर जीव। १। पट न्वाग दारा लंचिया। देहांती उमरि पाव।
 जे मूरति सकल दे। जो घटु पाहमे कौं पाव। २। लाहूला वागला पसी प
 जाचे टेअपार। पूषि पूजा मालिगया।
 साधु हम विसन। मूल फल महा देवा। ३।
 कीमेव १२

सकवीरा जाकेरंगमअधारा॥ धि॥ सज्जनसमजिससप्रसरन॥ ता
जाकीआदिअतिमधिकोईनपावे॥ कोटिकारिजसरेदेहुनसबजो
नेकजोनावपतिव्रतआवे॥ टेक आकारकीबोटआकारनहीउबर
सिवधिरंचिअरुविसनतां॥ जासकोमेवातासकोपाइदे॥ प्रहकोछा
निअगोनजाहा॥ १॥ गुणमश्मूरतियेविसबनेषमिलि॥ निरगुण
निजरूपछिआसनाही॥ २॥ अनेकजुगबंदगीबिबधिप्रकारकी अ
तिगुणकागुणहीसमाही॥ ३॥ पाचतततीनगुणजुगतिकरिसानिया
अष्टबितहोतनहीक्रमकाया॥ पापपुनिबीजअंकरजोमेमरे॥ उपा
जबिवसेप्रबमाया॥ ४॥ कतमकरताकहे॥ प्रमपदकालहे॥ भूति
जरमपदुगलोकसारो॥ कहैकवीररंगसरमतांजो॥ कोईएकज
नगएततरिपारा॥ ५॥ ५॥ मरंगइतेरागतिजाइनजाणी॥ जो जसकरहे
मोतषइहे॥ राजारंगमहेआई॥ टेक जेसीकहेकरेजोतेसी कोतिरत
नलोगेबारा॥ काहताकहिगया सुगातासुगिगया॥ करणाकतिन
अपारा॥ १॥ सुरहातिगाचरिअश्रुतसरेवे॥ लिरनुवंगहिपाई॥ २॥ अनेक
जतनकरिनिपकोजे॥ विषैबिकारनजाई॥ ३॥ संतकरेअसंतकीसंग
ति॥ तामोंकहाबसाई॥ कहैकवीरताकेध्रमछटे॥ जेरहेरंगमलोला
ई॥ ४॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥ ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

[illegible]

सदासुरिमनरहेनदासा ॥ जौतचात्रागीरषिवासा ॥ २ ॥ कहैकबीरअ
तिआत्रतांई ॥ देमकौबेजिमिलैरांमराई ॥ १॥ १॥ मैसुखियायागुन
हनेआई ॥ सांईसांसाधनहीपूगी ॥ गयौजोवनसुपिनाकीनांई ॥ टे
पंचजनांमिलिमनपुछावौ ॥ तीनजनांमिलिलगनगिनांई ॥ मंघोस
हलीमंगलगोचै ॥ उमसुषमोथेहलदहदाई ॥ ॥ नानांरंगीनांबुरिफेरी
गांदिजारीबोधिपतितांई ॥ प्रसिदागनयोबिनहलद ॥ आकैकैर
मधस्यासोपेघाई ॥ अपनोपुषिषमुपकबहूदेणो ॥ सतीहोतमनकी
समाकाई ॥ कहैकबीरमैसलरन्धिमरिह ॥ तिरुंकतलेसरवजाई ॥ २
॥ २० ॥ हरिसुखैऔरसैवेइवमाई ॥ काकहिऐककककदानजाई ॥ दे
संबलडालफूलडफूले ॥ मधकरदेषिकवलजुमचूले ॥ ॥ जेमेकवना
लिकेफलकीके ॥ बाघतजहरनजरकेनीके ॥ कहैकबीरहरजाकासर
नां जावनांइवमाचैदमरनां ॥ १ ॥ १॥ मनकोमेलोबाहरिजल्लेकिमोरे
षांछाकीधरजनकोधरमईमोरे ॥ देहहिरदाकोबिलावनननवध्यानी
असीनगतिनहोएषांनी ॥ ॥ कपटकीनमार्तिकरेजिनिकेइ ॥ अंतिकेब
रवजातइपहोई ॥ २ ॥ छानिकपटनजोरांमराई ॥ कहैकबीरिहोदौक
बमाई ॥ १ ॥ २२ ॥ चौषोबिनजबोपारकरीओ ॥ आयैनेदिसावरिरामज
पिलाहोलीजेदेह ॥ जबलगदेषोहाटपसारा ॥ बेगोबेगोबणियारेक
रिलेबणिजसंतारोरे ॥ ॥ बेगेहोउमलादलदोनां ॥ ओघटघाटारेच
लनांहरिपयानारे ॥ २ ॥ धरानोघाटानांपरिषानां ॥ लाहाकारनिरेस
वमूलहिरांनारे ॥ ३ ॥ सकलजुनिमैलौनपियारा ॥ मूलजुरापैरेसो
इबनिजार ॥ ॥ दिसनलौपणिलोगबिराणां ॥ जनवैचरिनरेषू
साधसंयांनारे ॥ ॥ साइरतीरावारनपारा ॥ कहिसमकोवैरेकबीरा
बणिजारोरे ॥ १ ॥ २३ ॥ जौमैग्यानबिचारइपाया ॥ नौमैयहजनस
गुमाया ॥ ॥ यऊसंसारहाटकरीजानौ ॥ सबकोबनिजनआया
चेतिसकैनौचेतौरेमाई ॥ मूरिषमदगवाया ॥ ॥ थाकैनेनबै
नजीथाके ॥ पाकीमुदरकाया ॥ जामागमराराएधैथाके ॥ एक

नयकी माया ॥ २ ॥ चित्तिचेति मेरु न चंचल ॥ जवलगघटमेसासा ॥
भगति जावपति ॥ नावन जहू हरिके चरण निवासा ॥ ३ ॥ जितन जनि
जप जग जीवना ॥ निनका ग्यान नना सी ॥ कहै कबीर ते कबहू न दारे ॥
जे जो निहारया सी ॥ ४ ॥ २४ ॥ प्राणी कोहे कै लो न लागे ॥ रतन जन्म मषो यो
बज्रि हीरा हाथिन आवै रांम बिनांगे यो ॥ ॥ ॥ निनि बंदये जल पंढ
बांधा ॥ अगनि कुडर हाया ॥ २ ॥ एक पल जीवने की मृग प्रसंदा ॥ जमि
न हरे सासा ॥ बाजी तार संसार कबीरा ॥ जांनि दारो पासा ॥ ३ ॥ २५ ॥ जा
दरे दिन ही दिन देहा ॥ करि लै बीरी रांम सनेहा ॥ टेका बाला पन गये जो
बन जासी ॥ जु फ्रा मरा जौ संकुट आसी ॥ ॥ पलटे के सनयन जल छ
या ॥ मुखे चेति बुढा पौ आया ॥ २ ॥ रांम कहत लज्जा कं की जौ ॥ पलप
ल आवै घटत न छी जौ ॥ २ ॥ लज्जा कहै हू जन्म की दासी ॥ एक हाथि मु
गधर हू जौ हाथि पासी ॥ कहै कबीर ति नू सब हास्या ॥ रांम नांम जन
हू न बिसास्या ॥ ४ ॥ २६ ॥ मिरि मिरि करत जन्म मगये ॥ जन्म मगये पंति
हरि न कहा ॥ टेके बार दवर स बाला पन गये ॥ बीस बरस कछूत पन
कीये ॥ तीस बरस कछूत मन सुमये ॥ फिरि पछिताने विरध सये ॥
॥ ॥ सकेसर वर पालि बंधे ॥ छुने घेत ठिवाडि करे ॥ आयो चोर उरंग
मुसिले गये ॥ मोरी राय तमरा धफिरै ॥ सीम चरन कर के पन लागे ॥
जे न नीर अस राल चहै ॥ जिमा बंचन सुधन ही आवै ॥ तब सुकित की ब
त कहै ॥ ३ ॥ कहै कबीर सुनौरे संतो ॥ धन संचा कछू संगन चले ॥ आ
ईत लव गोपाल राइ की ॥ मेढा मंदर छा फिचले ॥ ४ ॥ २७ ॥ जाही जंताना
वन लीया ॥ फिरि पछिताने गोरी जीया ॥ टेक छधौ करत वरन कर घांठ
दि दूषटी तन छीना ॥ विषे विकार बज्रत रुचि मानी ॥ माया मोह चित
दी नारे ॥ जागित प्रगिन दकाहे सौवै ॥ सो प्रसो प्रक बत मारे ॥ जव घट
जीत विचोर पड़े ॥ तो अंचलिकि स कै लागे ॥ कहै कबीर सुनौरे
संतो ॥ करि ल्यो जे कछू करणा ॥ चौरासी लष जो निफिरोगे ॥ बिना
रांम के सरनौरे ॥ ३ ॥ २८ ॥ माया मोहि माहि हित की न्या ॥ तापे मेरो ग्या

नधनहरितीत ॥ टिक जगजीवनसोसाधुपिनेजेसा ॥ जीवनसुगिनस
मोने ॥ साचकरिनरागविबांधो ॥ ठामिप्रमनिधन ॥ ५ ॥ नेनेहपतंग
ऊपलसे ॥ पंमुनेषैअंगि ॥ कालपासिजुमुगधवांधो ॥ कनककाम
णितागि ॥ २ ॥ करिखिरचारविकारप्रहरि ॥ तिरागारागसोई क
हेकबीरगमनामनजि ॥ ३ ॥ तिनांदिनकोई ॥ ३ ॥ ऐसातेराजूवा
मीठाकास ॥ तायेसाचैसैमनजागा ॥ टिक ऊठेकैधरिऊठाआया
ऊठापाणपकाया ॥ ऊठीसनकऊठाबाह्या ॥ ऊठेऊठाषाया ॥ ऊ
ठाउठाऊठाबैठा ॥ ऊठीसबसगाई ॥ ऊठाकैधरिगऊठाराता
सांचकोनपतिगाई ॥ २ ॥ कहैकबीरअलहेकापुगडा ॥ सांचैसौमनसा
वे ॥ ऊठेकेरीसंगतियागी ॥ मनबहुतफलपावे ॥ ३ ॥ ३० ॥ कौणाकौ
रागयारांमकौणाकौजासी ॥ पडसीकावाषटमाटीथासी ॥ टिकइंस
सिप्रेगएनरकोडी ॥ पांचोपांडुसरीबीजोडी ॥ ॥ धरुवचलनहीरह
सीतारा ॥ चंदसुरताआवसीबारा ॥ कहैकबीरजगदेखिसंसार ॥ पड
सीधरहसनिराकारा ॥ २ ॥ ३१ ॥ तायेसैजानारांइराणां ॥ प्रभुमेरोनंदन
याकरनां ॥ टिकजोउमूषिडतपटिगुनिजांनो ॥ बिद्याबाऊसो ॥ तन
मनसबैऔषदिजाणो ॥ अतितउमराणां ॥ १ ॥ रजपाटसिघासनआस
न बजसुदरिमाणां ॥ चंदनचीरकपूरविराजत ॥ अतितोउमराणां
॥ ३ ॥ जोगजतीतपीसिन्हासी ॥ बजंजारथन्तमाणा ॥ लुचितमकित
मनिजटाधर ॥ अतितउमराणां ॥ ४ ॥ सोचिबिचारिसबैजगदेष्या ॥
कहूंनउबराणां ॥ कहैकबीरसराणां ॥ ५ ॥ आये ॥ मिटिजनममराणां
॥ ३२ ॥ पांडेनकरिसिवादेबिबाद ॥ पांडेहीबिनसदनखादे ॥ टिक
अषमब्रह्मउषंडनीमाटी ॥ माटीनोनिधिकाया ॥ माटीषोजनसतगु
रपायातिनकछअलप्रलषाया ॥ जीवमाटीमुवांजीमाटी ॥ दोष
गानबिचारी ॥ अतिकायमाटीमैबासा ॥ लैटैपावंपसारी ॥ ॥ मा
टीकाचत्रपवनकायंजा ॥ चंदसंजोगिउपाया ॥ सांनघेडैसंदार
सोई ॥ यज्जोगबिदकीमाया ॥ ३ ॥ माटीकामंदरजानकोदीपक ॥ प

वनवःतिउजियारा। तिहिउजियारसबज्यासुके कहरग्यानाचचारा
।३३। चितनदेखे रेजगधधा। रांमनांसकासरमनजाने। मायाके
रसिअंधीटिकजनमतहीरकहालेआयो। मरतकहालेजासी।
जैसेतरवरखतपेपेहू। दासचारिकेबासी। ॥ आपायापिअवरन
हीजाण्यो। जनमतहीजडुकाडुकांटीहरिकीजगतिबिनांयऊदे
ही। धबलौटैहीफाटी। ॥ शोकांमकोधमोहमदमंछू३। अलखवादन
भुगिरी। कोहेकबीरसाधकीसंगति। रामनांमंगुणंजसियो। ३। ३४।
अरेहमनांहिनैदेवोपारी। जिधरहीजगतिउमारी। टेक। वसुधकछानि
वणिजनिजकीनै। लोदोहरिकीनांजा। रांमनांमकीगुणिलयाऊं द
रिकेराहुंजाऊं। ॥ जिनैकअहंअगिवांसीकहिएत। सोपूजाहंमयासा
अबत्रमाराकबसनांह। कोहेकबीरादासा। २। ३५। मीयाउमहसोबो
ल्यबनिनहीआवे। हंममसकीनपुदाईबंदो। तुम्हाराजसंमनिजावे। टेक।
अलहअवलिदीनकासाहिब। जोरमहीफुरमाया। मुरिसिदपारवमहारे
हको। कंदोकाहंथेआया। ॥ राजाकरनिमांजगुजारे। कलैमनिस्तनही
ई सतरिकाबाइकदिलनीतरिजिकरिजानैकोई। १। मसपिछांनितरसक
रिजीयेमैं। मालमनीकरिफीकी। आपाजानिअवरकोजाने। तोकेनितसरा
को। ३। मांटाएकनेधरिमांन। तौमंब्रह्मसमातां। कोहेकबीरनिस्तछिबका
ई। देजगहीमनमांन। ॥ ३६। रिदिलघोजिदिलहरयोनि। नषप्रियेरांनोमां
हि। महजमलआजीजदे। कोदस्तगारांमांहि। टेक। पारांमुरांदांकाजियां। मु
लांअरदरवेस। कहांथेंउमकिनकीया। अकलिदेसबनेस। कुरांतांक
तेबबां। असुपटिपटिफिकारयानहीजाइ। हुकदमकराशेकरे। हाजिरा
मुरमुदाइ। ॥ दपोगांबकोबकिहंदिशुमिया। जेअकलिबकलिबकदि
धुंवांदि। मचुसाचुमलयालिफ्रा। मैलपुरतिमांदि। २। अलापाकतूनांपा
ककं। ५। हसरनांहीकोइ। कबीरकरमकरीमका। कुराणीकरेजोरोको
इ। ३। ३७। मालिकहरिकहेदरहाल।
जिहंन। ॥ जनांजाकांजहरजगमजाल। ॥

समा। पुरदासमाविमियार। हमतमी अस्मान्पालिक
ल। काल। २। अस्मान्मानेनहंगदरिया॥ गुरुत्कारदावदक
फिकरददसालकजसम॥ जहांसुतदा मुजौद॥ ३। हमनिबदनि
पालक। गरकहममुफेस।

निस। ४। ३। अलहरांमजीऊतेरेनेक। बदेप्रमेहरकरोमरेसाइते
कालिंहीहीत्तैसंपटेको। क्वाजलदेहीनूवाद्ये॥ जोरकरेमसकीन
संतोवै। मुनहीरदृष्टिपाये। रोजाकरनिवाजगुजार। क्वाहजकाबे
ये। १॥ बांनरापाविमिकरैचौवसौ॥ काजीमईहंजांन।
मांसकहौकांषाली॥ एकहिंसाहिंसमांन। २। जोरमुदाश्मसीतिब
सदे। ओरमुलिकरकेसकेस। तीरथमूरतिरांमनिवासा।
कंहनहेर। ३। पूरबदेसहरीकाबासा। पछिमअलदमुकांमा
दलहीषोनिदिलदिलजीतरि। इहारांमरहमांन। ४। जितीओरति
मरदांदीसै। यऊसबरूपउम्पारा॥ कबीरपुगाराअलदेरांमका
रिगुरपीरहमारा॥ ५। ३। मेबडुमेबडुमेबडुमांटी
दसगांती॥ टेकमेघाबाकौजोधकहांऊ। अमणीमारीगीदचला
ऊ। १। इदिअहंकारधोघरधाले। नाचतकरतजमप्रचाले।
रकदताकीबली॥ एकपलकमेराजबिराजी॥ २
रांमविसास्यो॥ किहिविधिरहरीरुं। दयालसेजैरुं
यजुषकसौकरुं। टेकसासंकीडपीमुसरकीपारी॥ जिवकेतरसिम
रूरे। नणदमेहलीगरबाहेली। दिवरकेबिरहजूरु॥
कोकरैलराई॥ मायादसमतिवारी॥
पियाहाप्यारी॥ १। सोचिविचारदेबोमनमाही॥ ओसरसाइबनरु॥
कहैकबीरसुनैमतिमुदवि। राजारांमरमुरे॥ ३। दांजी
कांमनकरैरांमगुनागवैटका॥ एकसरयीमोदस।
चूल्हटिकरियारहननपावै॥
रियोबाट॥ १। पुनमुडवैराधेचौटी॥

गहरदनिमोटी। ३। गोटीबीसपकारती। ४। एमुद्रिअमंरंय। बरादीस।
 ५। सोकलेऊजबमीसापोवा। विरहोननयेमुद्रियनकौरोवा। ६। आ
 पुनसंतमिहरीधरिसाकत। मुद्रियनदेविहरनजैसैडाकत। ७। मि
 हरीनहोतीतौमुगसलेधोती। एकैएकैमुद्रियेचारिचारिलवती।
 ८। कहेकबीरमुनऊरेलोई। एनमुद्रियनबिननगतिनहोई। ९। धर
 राजारामबिनातरेकतीधोधो। रामबिनांनरकंऊरेऊरेऊरेऊरेऊरेऊरे
 नगधोधोधोटिक। मुद्रापहसांजोगनहोई। १०। घटकाटासतीन
 कोई। ११। मायाकेसंगिहिलिमिलिआया। फोकटसाटेजनमगंवा
 या। १२। कहिकबीरजिनिहरियदचीन। मलिनपंडुथेनेमलकी
 न। १३। १४। अवधूअसाज्ञानबिचारी। नोथैचरुपुरषयेनारी टिक
 १५। नोहोबाहीनाहंकवारी। पूतनगोदोहारी। कालीमुद्रिकोको
 इनहोमो। १६। अजरुअकनकवारी। १७। बांजाकंबजोटीकदि
 य। जोगीकैधरिचेल। कलमांपटिपठिनइवरका। १८। अजरुंफिरौ
 अकेली। १९। पीहरिजाऊनरुंसासैरे। पुरषैअंगिनलांक। कहेक
 बीरमुनैरेसैते। अंगेअंगिछुडाऊ। २०। २१। धरैधरैषाश्वौअनतन
 आबौ। रामरामरमिदो। टिक। पहलीपाईआईमाई। पीछेपहंसगा
 जवाई। २२। पायाटेबरयायातेठापायासगा। सुपराकोधेट। २३। पायाप
 चपटगकाले। कहेकबीरतवपायाजोग। २४। २५। नोथैमनला
 गोरामतोही। करौक्रिपाजिनिबिसरौमोही। टिक जननीजबुरबजत
 उघनारी। सोसक्यानहीगईहमारी। २६। दिनदिनतनछोजैजुराजगां
 वे। केसगहेकालमिदंगबजोवै। २७। कहेकबीरकसागमैआगे। २८।
 मारीक्रिणवितविपतिनजागे। २९। ३०। मीठीमीठीमायारेतजानीन
 जाई। अज्ञानीपुरशकौसोलेसोलेपाईटेक। विमुगाअमुगानारी
 संसारपियारी। लखिमगात्यागीगोरखनिचारी।
 मायारहीसमाई। ३१।
 बीपदलेऊबिचारी। संसारिआईमायाकि

जोगाजोकेसनमेमुजा। रातिदिवसनरनकरै
 रामनेमेरहणा। मनकाजपतमनसैरहणा। १॥ मनसैषपरम
 नमैसीगी। अनहदबेनबजोवेरगा। २। पंचप्रजालिपत्रसमकरि
 बका। कहेकबीरसोकरैसा। ३॥
 ल्यावे। मासबजोगोमतिआवेकता। टिकउरतितापुर
 चबिगोबहुहिहूगोसोई। सोम्यावजकिनमोरैकता। जाकेर
 गतरमांसनहोई। १। बेलीपारकेपारधी। ताकीध्याहीपुणिचन
 हारे। ताबेलीकोहकोमिगलौ। तामिगकेसीसनहारे।
 कबीरस्वामी। नमारेमिलनको। बेलीहैपणोपातनहारे। ३
 ॥ जोगीयातनको। जेबजजाई। जेतैराआवागधनबिलाई।
 तकरितांतिधरसकरिडांड। सकुकीसारलमाई। मनकरिनिहंच
 ल। आसगानहचलरसनारसउपजाई। १॥ चितकरिबटवाउ
 चामेषली। असमै। ससमचटाई। तजियाषंडपांचनिगदकरिपि
 जिपरमपदपाई। २। हिरदसोगीग्यानगुणबांधो। मोजिनिरंजसक
 चाकहेकवीर। ३॥ ५॥ ॥ अचरागलोरे। ॥ हसिकोनांवलेजा
 वारा। कसोचचारवारा। टिकपंचचौरगहमेकागदलूटेदिवसअ
 रूसंका। जोगदपतिमबलाहोई। तोलूटिनसकेकोई। १। अधिया
 रदीपकैचहिए। तबवस्तअगोचरलहिए। तबवस्तअगोचरपा
 ई। तबदीपकरह्यासमाई। २। जौदरसनदेषाचहिए। तौदरसनमेज
 तरहिए। जबदरयनलागेकाई। तबदरसनकाधानजाई। ३।
 टिकागुनिगेकाबेदपुरांनासुनिगे। पटगुनेमतिहोई। मेसहनेपा
 यासोई। १। कहेकबीरसैजांना। मेसांनामनयतियांना
 जोनपतीजो। तौअंधेककाकोजे। ५॥ १॥ अंधेवरिबिनकोतेरा। को
 नसौकहेमेरीमेरा। टिकतजिकलाकरमअनिमा। जूठेनरसिक
 हारेमुलांनो।
 जेनिमषमाहिजुरिजाई।
 जबलममनहिबिकाश

रिजानां॥ तव त्रिमलमां हिसमां॥ २॥ ब्रह्म अगनि ब्रह्म सोई॥ इव
 हरे विने और न कोई॥ पाप पुनि न मजारी॥ तव जेयो प्रकास घुरारी
 २॥ कहै कवीर हरि कोसा॥ जहां जे सांतहां तेसा॥ जले मग परै जिति
 कोइ॥ राजा रांम करै सुदोई॥ २॥ मनरे ससौ तये कोकाजा॥ ताथे
 जेयो न रूख पतिराजा॥ टेक बिद पुरांन मुनि तगुन पटिकरी॥ पटिगु
 निमर मन पाया॥ संज्या गावत्री अरुषट क्रमा॥ त्रि विधेई शिक्षती वै॥
 १॥ बिनये मिजाई बफुत तपकां॥ कंद मुल धनिषावा॥ ब्रह्म गिया नी
 अधिक धियान॥ जम के पै टलिषावा॥ १॥ रेजा करै निवाज गुजारे॥ बा
 दे जो कमुनाई॥ हिरद कपट मिलै कांसां॥ कोहे जे कोबे जाई॥ १॥ पद सांका
 ल स कल जग अपरी माहि लषि सवगानी॥ ५॥ कहै कवीर ते न घषाल सै
 रांम जगति जिनि जानी॥ ३॥ ५॥ मनरे जब तेरांम कदोरे॥ पाछै कहै के
 कछ न रदारे॥ टेक कांम को धदो जे नरे॥ ताथे गुर प्रसादिस बजरे॥ ॥
 का जो घज गित पंदानां॥ जौ तेरांम न मनही जाना॥ १॥ कहै कवीर॥ मन
 सी॥ संजारांम मिलै अविनांसी॥ २॥ धंम राइ ज्यै सो अनूप अनूपम
 तेरांम न सैथेति रिया॥ टेक जे तुम कपा करौ जग जावन॥ नौ कत कू
 लिन परिये॥ टेकाल हरि पद कृत न अगम अगोचर॥ कथिया गुरा मि
 विचार॥ जाकार गिंहं मूढत फिरै॥ आयिन सौ संसारा॥ १॥ प्रगटी
 जोति कपाट्यो लिदे॥ दग धेजन मंडुध दारा॥ प्रगटे विस्वनाथ जग जे
 ना॥ हिंम पाया एकरत बिचारा॥ २॥ दिषत एक अनकंनो तैदो लेपत तति
 अजाती॥ ३॥ कहै कवीर कसरांमै कोया॥ तेरांम लिया बज्र विस्तारा
 रांम के नां॥ परंम पद पाया॥ छटे विषन विकास॥ ४॥ ५॥ रांम राइ को
 सौ बैरागी॥ हरि न जिरै हम न बिषयागी॥ टेक ब्रह्म एक जिनि सिद्धि
 उपां॥ ॥ ५॥
 पारन पाया॥ ४॥ तव वर एक नां विधि
 जे जल नू लिर द्यारे प्राणा॥ सो फल वदेन चाया॥
 रवंच नू देत कसि॥ ओइत नू निघा अर्थ॥

गतिताहिपरमपदपाया॥५॥७॥उमधरिजाऊहंमारीवंत॥विषला
गेउमारे॥नादिअजनहाफिनिरजनरातोनाकिमहीकादेना॥
लिजाऊताकीधुमपवाई॥एकमाएकबहाना॥१॥रातीषडीदेषिक
बीशदेषिहंमारपिगारो॥अरगलोकमोहंमचलिआई॥कराक
बीरन्नतारो॥२॥मराजोकोमेकाउषपदियाउमरुआईकलिमाही
जातिबुलाहानावकबीराअजहंपतीजेनांनाही॥३॥तहाजाऊतह
पाटपटवर॥अगरचंदनधसिलीना॥आईहंमारैकहाकरोगा॥हं
नोजातिकमीना॥४॥साहिबमेरालेषामोगेलेषाककरिदिजे॥जिउ
मजतनकरोऊबऊतेरा॥तोपोहोनाोनसीजे॥जिनिहंमसाजेसा
जनिवाजे॥बांधेकाचेधोगेजिउमजतनकरोबऊतेरा॥तोपोणीआ
गिनवागे॥५॥जाकाभंसी॥हिसोमेरामंडा॥सोमेरारघवाल॥दु
केकउमरुस्वाथलागाकतौरातारोमविसाल॥६॥जातिबुलाहाना
मकाबीरा॥बनिबनिफिरैउदासी॥आसियासिउमफिरिफिरिवैवो
एकमाइएकमासी॥७॥८॥रिमुषमोहिविषैजरीलागे॥इहिमुषमोद
केमोटमोटहुप्रपतिगमा॥ऊपजेबिनसैजाइबिलाई॥सुपतिकारु
मेसंगिनजाई॥इवधनतोबनारखोमसारा॥यऊतनजिबखिहैदे
गया॥॥चरनकतुलमनराखिलेधारा॥रोमरममसुषकहैहो॥कबीरा
॥१॥प्रचनरहोमाटीकेघरमै॥इवमैजाइरुमिलिहरेमै॥देवर
॥नहरघरअरुजिरहरटाटी॥धनपरजतकंपैतमेरो॥हाता॥दसो

इति स्तुतिगिरिस्ता ॥ इति गवनेश्वरस्योत्तमः ॥ १५ ॥ अथ दिसेवै
 वेचरिषेदेव ॥ अथ गवनेश्वरस्योत्तमः ॥ १६ ॥ कहेतकवीरमुन
 ऊरेलोई ॥ ज्ञानाधदुगसंतारणासोई ॥ १७ ॥ कवीरविगसोरा
 मझहोई ॥ उमजितिविगरोमरेनाई ॥ टेकचंदनकादिगविरषमुहो
 इला ॥ विगविगविगसोचंदनमईला ॥ १८ ॥ पारमकौजेलोहलिंदेला
 विगविगविगसकंचननेला ॥ १९ ॥ गाकौजेनीरमिखगजखिगवि
 विगविगविगविगसोईला ॥ २० ॥ कहेकवीरनेरामकहेगा ॥ विगविगवि
 गसोरोमहिंदेला ॥ २१ ॥ रामराजनईविक्रमतिमोरी ॥ केयऊऊनी
 दितावीतेरी ॥ टेकजिपूजाहरिनदी ॥ जौवे ॥ सोपूजादास्वहावे ॥ जिहि
 जाहरिजलमानैसोपूजादास्वहावे ॥ २२ ॥ नावमेमकीपूजा ॥ थेंनयोदेनये
 क्पाकजेबहुतपसारा ॥ पूजाजेपूजादास्वहावे ॥ २३ ॥ कहेकवीरमैगावामैगावा
 आपलयावा ॥ नोइहिपदमोदिसमाना ॥ सोपूजादास्वहावे ॥ २४ ॥ राम
 राजनईविक्रमतिमोरी ॥ नलेइजगणननयेमसारा ॥ २५ ॥ एकतफ्तीरथत्रोगो
 इकसंनमंदतकौचोदे ॥ इकमैमेरीमैवीजे ॥ इकअदमेवमैमेजे ॥ २६ ॥ इ
 थिकथिन्नमलगावे ॥ संमितामीबलनपावे ॥ कहेकवीरक्काकाजे
 हरिसुमैसोअजनदोने ॥ २७ ॥ २८ ॥ कायामंजसिकौनगुना ॥ देघटनीत
 मलघणा ॥ टेक ॥ मदीअत्रसिधितोरथकाई ॥ कडुचापणकदेनजाही ॥
 जेउरिदमुधमनपांनी ॥ तोकहाविरोलेपांनी ॥ २९ ॥ कहेकवीरविचारी
 सोसागरतारिमुरारी ॥ ३० ॥ ३१ ॥ कैसेउहरिकोदासकाहोये ॥ करिबड
 जेधरनमंगवायो ॥ टेक ॥ सुधबुधहोनज्यानहीसाई ॥ काछास्यन
 उदरकतई ॥ ३२ ॥ हिरदकपटहरिसोनहीसाचै ॥ काहानयोजेअनह
 नाचै ॥ ३३ ॥ कहेफोकटकलूमंजारा ॥ रामकहोतेदासनिनारा ॥ ३४ ॥
 गतिमोहदीमगनसरीरा ॥ इहि ॥ विधिजोतिरिक्केकवीरा ॥ ३५ ॥ ३६ ॥
 मराइइहिसवनलमानै ॥ जेकोइरामनोमततजोनेये ॥ कहाविनूति
 दपटवाधि ॥ कालुलपेसिजतासंचसाधे ॥ निरकहापयालेकाय
 योअनकाइइजोआगा ॥

वीरत्रिलोकपियार ॥ १६ ॥ ग्रहविधिगमसौत्योला ॥ धरनपाप
 निरतकरि ॥ जिन्नाबिनागुनगा ॥ टेका ॥ जहांस्वभविबंदनसीपसा ॥
 २ ॥ सदासोनीरुहि ॥ उनमोतिरनमनीरयोयो ॥ पवनअंवरको ॥ १ ॥ मह
 धरणिबरसैगाननजि ॥ चंदसरजमिलेदो ॥ महलतहांजुडगालो ॥
 हंसाकरहेकेलि ॥ २ ॥ बिरमसीतरेनदीचाली ॥ कनककससंसा ॥
 चमखेटाअइमे ॥ उंदनईवनरा ॥ ३ ॥ जहांकोबिछुरेतेहांलागे ॥ ग
 गनबठोआ ॥ जेनकवीरबटाऊवा ॥ जिनिमारिगलायोचाइ ॥
 ताथेमोहिनाचबोनआ ॥ मेरोमनमदलानबजावै ॥ ४ ॥ ऊनरथ
 तसुनरिसरिया ॥ जिप्रनांगागरिफूटी ॥ हरिचिंतमेरोमदला ॥
 नरगचुयनगयोछटी ॥ ५ ॥ ब्रह्माअगनिमजारीनुमंभता ॥ पाषंऊअरु
 अतिमाना ॥ कामचोतनांअयापुगना ॥ मोपैहोइनआना ॥ ६ ॥ जेवृजस
 पकीयातेकीया ॥ अबबऊरूपनेहोई ॥ थाकीसौजसंगकेबिछुरे ॥ रा
 मनांसमिधिसोई ॥ ७ ॥ जिथासचलअचलकेथाके ॥ करतेबादबिबाद
 कहैकवीरमेपरापाया ॥ जयारांमप्रसाद ॥ ८ ॥ अबकाकीजेअनधि
 चारा ॥ निजनिरखतगतबोदारा ॥ टेका ॥ जचगवृक्षाएकपाया ॥ धन
 दीयाजाइनपाया ॥ कोईलेनरिसकेतसका ॥ अरनिपेजांनाचका ॥ ति
 सदाऊनिजीवनजाई ॥ अमिलतोघालेबाई ॥ दोजीवनमलाकहाई ॥ बि
 नंमंवांजीवनमांही ॥ ९ ॥ घसिचंदनंबलषंनबोला ॥ बिनैनेननिरुयते
 दाला ॥ तिहिपूतबाएकजाया ॥ बिनगाहरनप्रबसाया ॥ १० ॥ को
 ईजीवतहोमरिजांने ॥ तोपंचसयलमुषमाने ॥ कहिकवीरसोपाया
 प्रचूनेटतआपगंवाया ॥ ११ ॥ अबमेपारेरांमसनेही ॥ जाबिनऊपमा
 वेमेरोदेही ॥ १२ ॥ विदपुरांनकहतजाकीसापी ॥ तीरथवृत्तनद्वैज
 पासी ॥ १३ ॥ जाथेजेनेसलहतनरआगे ॥ पापपुनिदोऊसुर्मलागे
 ॥ १४ ॥ गुरुप्रचंडजबकाहे ॥ कोआगेकोदिनदसपाहे ॥ १५ ॥ कहैक
 वीरकोईततजागा ॥ मनन्यामंमानप्रेसरसलागा ॥ १६ ॥ तिरह
 फिरेहोनाथअक्षरा ॥ उपजीबिनांकहुसंसजितपरेई ॥ १७ ॥

जौनैपारा। टेक थावम बिधा सोई चुल जौनै। रांम बि रहसि सिमा शी के
 सो जौनै नि नि प्रकृष्टाई। कै जनि चोट म हारी ॥ ॥ संग की बिकरी मि
 लनन पावै। सो चकै रस करौ है। जतन करै अरु गुति बिचारे। रटै रा
 म कौ चो है। २। दान नई दे जे सधि धन कौ। केई मो दिगंम मिलो वै।
 दाम कबीरानी न जंत लै। मेले जल स चुपावै। ३। २१। तेरा हरिनां। दमे जुलाहा
 भरां मरमाग काजु लाहा। टेक दस सै सुत्र की पुरिया पुरी। त्वं दसूर दे
 साधा। अननन वगिणि लई मजरी। दिरदा कं वलै मौरापी ॥ ॥ सुरति सुमि
 त दोइ पटी कीन्ही। आरन की पावैं मेकी। गमन तत की वली न राई। बुण
 ते सात्मा पेधी ॥ अबिनं सीधन लई मजरी। परी थापणी पाई। रन बंन सोधि
 सौ बिसव अणे ॥ निकटै दीया बत आई। २। मन सध कौ कंचुकी पौ है। गमन
 बिधारी पाई। जाव की गांठि गुठी सब जगरी। जहां कात दालो लाई। ३। बि
 ठिबे गरबुराई थाकी। अने चै पद प्रकासा। दाम कबीर बुणत सु चुपाया। ५
 प्रसंसात वनां सां। ४। २१। नाई रसक जत तं गि बुलिले जे। पाँठें रांम न दे
 जे न दे जरे। टेक करग दि एक विनं नी। ताजी तदि पंच धै परं नी ॥ तामा है
 एक उदासी। तिलिंत निबुनि सेवे विनां सी। जे रे चो सठि बरियां धवा। नई
 हो पंच सौं मिलावा। जौ ते पा सैं छे सैं तां नी। तौं सुष सं रे है परां नी। ६। पहल
 तनिये तां नी। पाँछे बुनिये तां नी। जब तनि बुनि मुरख कान्हा। तब संसरा
 पूरा दीन्हा। २। राठ नरत नई मंकां। तारुणी त्रयामे नं वंका। कहै कबीर
 बिचारी। अब छो की नही हं मारी। ३। २१। वेकं का सी ते जे हिं मुरारी। तेरी
 सेवा चोरन्यो बनवारी। टेक जोगी जती तपा सिन्यासी। मंदे देवल वसिष्ठ
 मेकासी ॥ १। चराग बिड दकामी कौ न दहल। कहै कबीर नल नर कहिं जे
 हं। २५। तब काहे न लौ बैणि जारे। अब आयो चो है संग हं मारे। टेक जब
 मवै लो जौ लोग सुपारी। तब ते काहे न बैन जी मारी ॥ १। जब हं मवै न जी प्रम
 ल कसरी

नल नर कहिं जे गंवाया ॥ ३

हंमारी ॥ टेक लवानी लितंत इक मंभिकरि ॥ जत्र एक नल साजा ॥ सति
असति कछ नही जानू ॥ जे सैव जायो ते सै बाग ॥ १ ॥ भुंउ सुहार उमारा
आग्या ॥ मुसियत नय उमारा ॥ इन के गुन हंम हंका पकरौ ॥ का अप
राध हंमारा ॥ २ ॥ मेइ उमसेइ हंम एकै कहियत ॥ जब आपा प्रनही जाना ॥
जंजल में जल पे सिन निकसे ॥ कहै कबीर मन मंगना ॥ ३ ॥ २४ ॥ गेजी व
आइ से कहा कीधौ ॥ मोहि बेराग नयो ॥ टेक पंचत तले काया कीन्ह
तत कहल कीन्ह ॥ करम वसिय ऊजीव कहै तेहे ॥ जीव करम कै नि
दीन्ह ॥ १ ॥ आकास गंगना गाता लरागना रहाइले ॥ आनंद मूल सदा प्रसो
तम ॥ घट खिने सै गंगन जईले ॥ हरि मैतन हेतन मैह रिहै ॥ दृप्रनाही सो
ई ॥ कहै कबीर रामना मन छाडौ ॥ सहज होइ सुहोई ॥ २ ॥ हंमार कौन
दसि रिमौरी ॥ सिर को सोना सिरजन हारा ॥ टेक टिही पाग बड जूर ॥ ज
रिने पे ससम काकरा ॥ १ ॥ अनहद की गरीवागी ॥ तब काइ छि नौ नगी
कहै कबीर रामराया ॥ हरि के रंगे मूड मूडया ॥ २ ॥ धन धन धन सो
सब ॥ माया मिथ्या बाद मांग ॥ नीर दिख जय ॥ हरिनां वदिनां अपदा
टेक ॥ इकरां मनाम निज साचा ॥ चित चेत चतुर घट काचा ॥ इन घम
भूले मिचोली ॥ विधनां की गति ओली ॥ १ ॥ जीव ते कं सारा धावै ॥ म
ते कौ बेगि जीलावै ॥ जाके रुहिज मे सेवरी ॥ सो कं सो वनी दघोरी
॥ २ ॥ जिहि नो गेनी दउपावै ॥ तिहि सो बकौन जगावै ॥ जल जंतन देष
प्राणी ॥ सब दीस जूवनि दाना ॥ ३ ॥ तन देवल जंम धज आछे ॥ पडिया
छितावै पाछे ॥ रामनां मनिज सादे ॥ माया लागिन मोइ ॥ अंतिकाल सि
पौटली लेजात न देषो कोइ ॥ ४ ॥ कोइले जात न देषो ॥ बिल बिअम नो
ग्रश्रा ॥ काहु के संगिन राषी ॥ दसै बीसल की साषी ॥ ५ ॥ जब हंम पवन लो
भेले ॥ मस सोहाट कजब सेले ॥ मां निषजन मअवतारा ॥ ६ ॥ नो कुकै
रं बारा ॥ कबहु के किसा बिहांगा ॥ तरमंष जेम ऊहांगा ॥ ७ ॥ मरि
मां निषजन मंगवारा ॥ नर कौ डो जंम उह काया ॥ जिहि तन धन जरा
नाया ॥ जगारो प्रहर माया ॥ ८ ॥ जल अंजरी जीवने जेसा ॥ हाका कं

मोनरोसा। कहै कबीर जगंधध। कोहेनचेतऊअंध। ॥३॥ रेचितच्ये
 सेच्यंतलेतोही। जान्यंततआपाप्रनाही। टकहरेहिरदएकज्ञाननया
 तोयेद्विगईसबमांण। जहांनादतबिंददिवसनहीराती। नहीनरना
 नहीकलजाती। ॥॥ कहै कबीर श्रवसुषदाता। ॥ श्रवमतअलषअनेदविधा
 ॥४॥ पुंनकीपीरांजारांमतेलतांनै। कहौकाहिकोसांनै। ॥ टकनेनकाहु
 बेनजांनै। बेनकाहुषश्रवां। प्यंडकाहुषप्रांजां। कंणाकाहुषमरा
 ताचासैकाहुषप्यासजां। प्यासकाहुषनीरायसगतकाहुषरांमजां। ॥
 दासकबीरा। ॥२॥ ४॥ रातोसैदु। ॥ असाध्यांनधरौनरहरी। सबदअना
 च्येककरी। टकापहरीघोत्रोपंचौबाइ। बाइबिंदलेगानसंसासाइ। गग
 जेतितहंविजुटीसंधिरबिसिसपवनांसेलैंबंधि। ॥१॥ मनथिरहोइतौ
 बलप्रकास। कंवलामाहिनिरंजनवांस। सतगुरसंपटमोलिदिपावै। नि
 राहोइतकहाइतोवै। ॥१॥ सहजलखिनलेतजोउपाधि। ॥ आसातदिटनिप्र
 णिसाधि। प्रऊपपदतहांहीरांमणी। कहै कबीर तहांविजवनधाणी। ॥३॥
 प्रहेबिंधिसऊश्रीनरहरी। मनकीहुविधामनप्रहरी। टकाजहांनहीज
 नहीतहाऊछजांणि। जहांनहीतहांलेऊप्रच्छाणि। ॥॥ नांदेपिनज
 यसाजि। ॥ नांदीतहांरहिएलागि। ॥१॥ कसिमंतमेजनदसेवेडवारि। गंग
 संधेबिचरि। नांदहिबिंदकाबिंदहीनांदा। नांदहिबिंदमिलैगोबांदा।
 दीवीनदेवापूजातजाप। ॥॥ जाईवंधंमाईनहीबाप। गंगाअतीतजैसैनि
 गुणाआप। ॥॥ मजेवडीजगकीयोसाप। ॥॥ तननाहीकबजबमननां
 मनप्रतातब्रह्ममनमाहि। परहरिबंऊलापहिगुणोफर। निरषिदेधि
 धवारनमार। ॥६॥ मनकरिपूजामनकरिधूप। गनहीसेदीसहजसरूप
 मनआत्मनन्दहैबिसिजाइ। नमनरहतौकमलनषाइ। ॥७॥ कहै कबी
 गुरप्रमैगियाने। सुनिमंडलमधरोधियाने। ॥ प्यंडपरेजीवैजैदेनहां। ॥
 तहीलेराषौतहां। ॥८॥ ॥ तहांजोरांमनांमल्यौलागे

पदमंडलमीदितमंड। श्रीअस्थानकरत्रीयापात अमअगोचरअनेअंत
रा ताकोपारनपातधरणीधरा। २ अरधउरधबिबिस्तइत्येअकास त
अवाजोतिकोप्रकास। दासादरनआवेजाइ सहुअमुनिमैरदो समाइ
३ अवरणावरणम्यापनहसित। हांरुजाहिनगावगित अनहंदसब
दसवेजांकार। तहांप्रनैबैवो श्रीगोपाल। ४ कंदलीदीपपजपपर
कास। रिदकंदलमैलीघोनिवास। दादसदलअतिअंतरिमात। तहां
प्रनुयाइसकरिखेचीत। ५ अमलनिमललिघामनहोछाया। दिवतन
रातिनैहीहै। तहां तहांनऊमैरनचंद। आदिनिरंजनकरआनंद।
ब्रह्मनसोपंडजाणि। मानसरोवरकरिअसनांन। सोहूहंसजकेजा
प। ताहिनलैपेपुनिनपाय। ७ कायामधेजनैकोइ। जिबोलैसोअपेहो
इ। जोतिमहिजेमनपिस्कैरे। कहैकबीरसोईप्राणतिरै। ८ ३ एक
अचनाअसाजया। करणीयेकारणमिटिगया। टिक। करणीकोपाक
रसकानास। पजपमाहिपावकप्रकास। पजपमाहिपावकप्ररर। त
वपामपुनिअसदोऊजर। १० ऊमजीवासवासनांधेइ। ऊलप्रगद्यो
ऊलघाल्योषोइ। उमजीअंतचंतामिटिगइ। जैचमजागोअसीनइ
११ उलटीगंगमेरकोचली। धरताउलटिआकासहिमिली। दासक
बीरततैअसाकहै। मसिहरउलटिराहैकौगइ। १२ दैदजदिक्याइ
रिवतवे। उंदरबांधेसुंदरपावे। टिका। सोमसलमानजुननसौलरे। अ
निसकालचक्रमतिरै। कालचक्रकामरदमान। ताहुसलमानको
सदासलाम। सोकजीजोकायाबिचारे। अलिमिब्रह्मआनिपरजारे। मु
पिनैबंदनदेहीअरेना। ताकजीकौजुरानमरना। १३ जोसुलिताननुदेसु
रतानै। बाहरितातामातरिआनै। गगनममलमैलसकरकरै। सोसुलित
नकुप्रसिरेधरे। १४ जोगीभोरप्रगोखकरै। दीइरामरामउचरे। मुसल
मानकैएकपुदाइ। कबीराकोस्वामीघटघटरहो समाइ। १५ लो
गकहैगोवरधनधर। ताकामोहिअचमोसारी। देवा। अहकरीवर
बतताकेपगकीरचना। सौतौसाधरअंजननैना। १६ योचोपस्त

केति एकवैपै। अनेकमेरनपउपसिरोपै। २। धरणिअकासअधरजिनि
 पी। हाकोमुगधरुहेनहीसाणी। ३। मिठबिरेचिनारदजसगावै। कोहेकदी
 ताकोपारनपौवै। ४। अंजनअलपनिअंजनमारा। ५। दिचीन्निनरकरऊविच
 ६। अंजनअतिपतिबरननहो। शबिवांनिरंजनमनुतेनिहो। ७। अंजनअवै
 प्रजनजाइ। निरंजनसबघटिरहो। सां। ८। जोगध्यानतपसवैविकार
 कोहेकदीरमेरेरामअधर। ९। एकनिरंजनअलहमेरा। हीधुतुरकड
 जनहैनैरा। १०। राधोबरतनमहरमजांन। तिसहीमुमरुखुरहेनिदांन।
 ११। पूजाकरैनिनिवाजयुजासुं। एका। निराकारहिरदैनमसकार। १२। न
 हजनाउनतीरथपूजा। एकपिछ्यापापातौओरक्याहजा। १३। कोहेकाबी
 जैरमसबजागा। एकनिरजनसौमनजागा। १४। तहांमुज्जारीबकाकोपु
 दरावै। मजलसिहरिमहलकोपवै। टेकसतसिहंससितारजाकै। असीला
 प्रपेकंवरताकैसिधुकहिएसहंसअगासी। छपनकोटिषेलिविषासी। १५।
 कोटितेसीसौअरुलिषेलपानां। जौरासीलषफिरदिवांन। बाबाआदेम
 केअंजबिदिलाई नबीनिमिघोराणाई। १६। मुहसाहिवहंमकहांमिपारी।
 देतनुबाबाहोतबजगारी। जंनकबीरतेरीपंहंनसंमानां। निस्तनजीकि
 रधिरदिमांन। १७। जौजाचनौकेवलरांम। आनदेवसौतांहीकांस। टेक
 जाकेसूरिनकोटिकरप्रकास। कोटिमहोदेवगिरकंखिलास। चर्याकोटि
 वेदउचरै। उरगाकोटिजाकेसरदनकरै। कोटिचंद्रमागहैचिराक। १८। मु
 रतेतीसौजीवैपाका। नौघटकोटिठाटेदरबार। धमराइपौलीप्रतेहार। १९।
 कोटिमेरजाकेनरभंरै। लपमीकोटिकरैसागागर। कोटिपापपुनि।
 बौहारै इंद्रकोटिजाकीसेवाकरै। २०। मजगिकोटिजाकदरबार। गंधुपा
 कोटिकरैनेकार। बिद्याकोटिसबगुणकहै पारब्रह्मकोपारनजहै।
 २१। बौसेगकोटिसेऊबिसतरे। पवनकोटिसौवारैफिरै। कोटिसंधंदरज
 केपणिहारि। रोमावलीअवारजार। असंधिकोटिजाकेजंमावली।

बूझोपैलैतिकराल अंततकलानंदवगोपाल ॥ ५ ॥ कदयकाहुत
केलावैनिकरै ॥ घटघटभीतरमेंसाहै ॥ दासकबैरसजिसाराग्यो
निदेऊअनैपदमागौदाना ॥ १० ॥ मननकिगतधैतननडरई केव
लंगमरहेह्योलाइ ॥ अतिअथाहजलाहरांजीर बांधिजंजीरा
लिबोहिहैकबीर ॥ जलकीतंगउठिकटेहेजंजीर हरिसुमिरा
तटिबलिहैकबीर ॥ कहैकबीरमेरेसंगनसाथ ॥ जलथलमेराषेउ
गनाथ ॥ ११ ॥ प्रलतीदोमलनीदोमलनीदोसोलो ॥ टिकतननन
रांमपियारेजोगि ॥ १२ ॥ मैबोरीमेरेरांमसरतार ॥ ताकारनिभुरिकरौसिग
रा ॥ १३ ॥ जैमैधुबरियाजलमैधौवै ॥ हरतपरतसवनपदकषौवै ॥ १४ ॥ निद
कमेरेमाईबाप ॥ जनमजनमकेकोटैपाप ॥ १५ ॥ निदकमेरेप्रांनअंकी
रविनबेगाखिचलावसार ॥ १६ ॥ कहैकबीरनिदकबलिहारी ॥ आप
हैजंनपारिउतारी ॥ १७ ॥ जैमैबोराजोरांमतेरा ॥ लोकमरंमकोजैमो
रा ॥ १८ ॥ मालातिलकपहरिमनमांमां ॥ लोकनिरांमभिलौनांनानां
॥ १९ ॥ प्योराजगतिबहुतअहंकारा ॥ असेनगतमितंहिअपारा ॥ २० ॥ लो
कहैकबीराबोरांन ॥ कबीराकामरंमरांमनलैजंनो ॥ २१ ॥ हरि
नहंसदसालीएडोलै ॥ निमलनांवचवैअसबोलै ॥ २२ ॥ मानसरोवर
टकेवासी ॥ रांमनरेणचितआनउदासी ॥ २३ ॥ सुकताहलबिनच
नलावै ॥ मूनिगहैकैहसिगुणागवै ॥ कहैकबीरसोईजंतरेरा ॥ २४ ॥
नीरकाकरनबेरा ॥ २५ ॥ मतिरांमसप्तपुरकीसेवा ॥ पूजोरांमनि
नदेवा ॥ २६ ॥ जलकमंजनजोगतिहोई ॥ मीनानितहीकौवैजा
नांनैमानरा ॥ फिसिफिरिजानीआवै ॥ २७ ॥ मानमैमैलातीरथक
निवैकुठनजोनां ॥ पाषणकरिकरिजातसुलानां ॥ २८ ॥ नाहितरां
यानां ॥ २९ ॥ हिरैकठोरमरबागारसी ॥ नरकनबेच्यानाई ॥
दासमजेमगहरासेनांसकलतिराई ॥ पाठपुरांनवेदनहै
ततहोबुसैनिरकार ॥ कहैकबीराकहीध्यावै ॥ बावलि
ननिगोवांदन ॥ लिजिनिजा ॥ ३० ॥ मनिपाजंनमवै

लाहं देव प्रसेवा करि न गतिक माधि नौ नैम निपादे ही पाई ॥ या देही को
 लोचं देवा रीष्टे ही करि हरि की सेवा ॥ १॥ जब लग जु को रोग न ही आया
 जब लग का लख सी न ही काया ॥ जब लग ही पाये न ही बाणी ॥ तब ल
 ग जिल सारंग घांणी ॥ २॥ अब न ही न ज सी ज न सिन बसाई ॥ आव
 गा अंत ज्यौ न ही जाई जिक बु करै सोई सब सारे ॥ फिर पछिं ता को
 दारन पारै ॥ ३॥ सिद्ध ग सो जे लाग सेवा ॥ तिन ही घायो निरंत न देवा गुर सि
 लितिन के पुले क पाट ॥ बजरिन आवे जो नी बाट ॥ ४॥ यज तेरा ओ स
 यज तेरा बारा ॥ घट ही नी तरि सो चि दि चारि ॥ कहै कबीर जी ति भाव
 रि ॥ बज विधिक द्यो उका सुकारि ॥ ५॥ ॥ ६॥ ॥ ७॥ ॥ ८॥ ॥ ९॥ ॥ १०॥
 ॥ ११॥ ॥ १२॥ ॥ १३॥ ॥ १४॥ ॥ १५॥ ॥ १६॥ ॥ १७॥ ॥ १८॥ ॥ १९॥ ॥ २०॥
 ॥ २१॥ ॥ २२॥ ॥ २३॥ ॥ २४॥ ॥ २५॥ ॥ २६॥ ॥ २७॥ ॥ २८॥ ॥ २९॥ ॥ ३०॥
 ॥ ३१॥ ॥ ३२॥ ॥ ३३॥ ॥ ३४॥ ॥ ३५॥ ॥ ३६॥ ॥ ३७॥ ॥ ३८॥ ॥ ३९॥ ॥ ४०॥
 ॥ ४१॥ ॥ ४२॥ ॥ ४३॥ ॥ ४४॥ ॥ ४५॥ ॥ ४६॥ ॥ ४७॥ ॥ ४८॥ ॥ ४९॥ ॥ ५०॥
 ॥ ५१॥ ॥ ५२॥ ॥ ५३॥ ॥ ५४॥ ॥ ५५॥ ॥ ५६॥ ॥ ५७॥ ॥ ५८॥ ॥ ५९॥ ॥ ६०॥
 ॥ ६१॥ ॥ ६२॥ ॥ ६३॥ ॥ ६४॥ ॥ ६५॥ ॥ ६६॥ ॥ ६७॥ ॥ ६८॥ ॥ ६९॥ ॥ ७०॥
 ॥ ७१॥ ॥ ७२॥ ॥ ७३॥ ॥ ७४॥ ॥ ७५॥ ॥ ७६॥ ॥ ७७॥ ॥ ७८॥ ॥ ७९॥ ॥ ८०॥
 ॥ ८१॥ ॥ ८२॥ ॥ ८३॥ ॥ ८४॥ ॥ ८५॥ ॥ ८६॥ ॥ ८७॥ ॥ ८८॥ ॥ ८९॥ ॥ ९०॥
 ॥ ९१॥ ॥ ९२॥ ॥ ९३॥ ॥ ९४॥ ॥ ९५॥ ॥ ९६॥ ॥ ९७॥ ॥ ९८॥ ॥ ९९॥ ॥ १००॥

१॥ ॥ २॥ ॥ ३॥ ॥ ४॥ ॥ ५॥ ॥ ६॥ ॥ ७॥ ॥ ८॥ ॥ ९॥ ॥ १०॥

॥ ११॥ ॥ १२॥ ॥ १३॥ ॥ १४॥ ॥ १५॥ ॥ १६॥ ॥ १७॥ ॥ १८॥ ॥ १९॥ ॥ २०॥

धषाधराषेसा॥ कदेकावा॥ नचांचमो॥ आपेणतिअरकातर
१॥ हरिकेविलोवनेविलोइमेरापाई॥ अमेविलोवनेमेतनजाई॥
२॥ तनकदिमटकासनदिविलोइ॥ तामटकासपवनसंसाई॥ इलापिउ
लासुषसनतारी॥ बगिविलोइवाढीछडिदारा॥ ४॥ कहैकबीरगुजरीदि
रानी॥ मटकाफटजोतिसमासी॥ ५॥ २॥ आसनपवनकोएदिदिरऊरे॥ म
नकामेंलाछुदिदेवोरटक॥ कासंगासुत्राचमकाये॥ क्वाबितिसव
अंगेलाए॥ १॥ सहीइसोसुसलमान॥ जाकाहरईसहेइमान॥ दनिबस
जोकयेवदगियाना॥ ३॥ कहैकबीरककआननकोजे॥ रामनांमनधि
लाहालीजे॥ ४॥ २॥ तपेकदिऐलोकानारा॥ बटकेवकयेबहारा॥
देकनपरिवारिकरिआवेषेहातकनछोनेप्रातिसनेहा॥ १॥ जीवपित्रदि
रङगा॥ गुंवापित्रदिवालगा॥ २॥ कहैकबीरमोहिअचिरजअघे
वाषापित्रकसेपये॥ ३॥ १॥ बापरांमसुनिबीनतीमोरी॥ गुम्सोप्र
लोगनसौंचेरी॥ टिकफहलीकांसमुगधमतिकीया॥ तातैकपुम्स
या॥ १॥ रांमराइमेराकह्यामुगिलीजे॥ पहलैवकसिइबलसंल
हैकबीरबापरांमराया॥ अबहुंसरणिउफारीअया॥ ३॥ २॥ अ
चैकसेदसमतोरा॥ बिनदरसनमनमानैकोमोरा॥ टिकदम
निगकिउम्हदीअजात॥ दऊमैदोसकऊकिरंसा॥ १॥ उम्हकहिया
पतिराजा॥ मनबछितपुरदोसबंकाजा॥ २॥ कहैकबीरहसि
षावो॥ हुंमदिबुलावोकेउम्हचलिआवो॥ ३॥ ६॥ आऊंगानज
गानजीवोंगा॥ पुरकेसबदमैरिमिरिङगा॥ टिकआपक
री॥ आपेपुरषआपेनरी॥ आपेसादफलआपेनीव॥
नआपेहिइ॥ आपेमछकंछआपेजाल॥ आपेजीवर
२॥ कहैकबीरहुंमनांहीरेनाही॥ नांहुंमजीवतनसूये
पाणीतैप्रगटनईचउरई॥ पुरप्रसादेप्रमनिधिपाई॥
३॥ १॥ एकपाणीपाणीकोमोहै॥
२॥ २॥ कपाणीमैपिंडुउपाय

गाया। ॥ २ ॥ मैत्राणां नाकावां नगावां। जनी संकुटवेनी आणपाटे
उतपतिवंदे अहंते आणपा। जोतिधरी अरुणा आया। ॥ नदीका ऊचन
कोऊनाचा। जाकां पिडता हा कामीचा। २। जेइवां नगावं नगाणीया
शानदाटके काहे आया। काहे कबीरमधिमनं ही कोई। मधिम आमुप
मन होई। ३। अला अलपनिजने देवा। किन विधिकरौ उमारी सेव।
कविहो मोई जाको विस्तार। सोई किछ जिनि कायों ससार। गेवें देते
रहदांगे। सोई रंगजेनु गिजु गिरहे। अला सोई जिनि कमति आया। दर
दर पोले सोई पुढाई। लवचौरा सीख प्रवारी। सोई करी मजो इतिकरै। २।
गोरख सोई गानां। मिकहे महादेव सोई मन कीलेहे। सिध सोई जो साधे
नी। नय सोई जो त्रिजुग धपती। ३। सिध साधु पंकवरूवा। जपे सुहेक
प्रेष बुता जुवा। अपरं मपरका नांग अनंत। काहे कबीर सोई नगवंत। ४।
० हंम सब मोहि सकल हंम माही। हंम ये और हंम रानां ही। टंक तीन ले
कमै हंमारा पसारा। आवागवन सब पेल हंमारा। घट दरसन कहिएत
हंमनेषा। हंम ही अतीतरूपत हीरेषा। २। हंम ही आप कबीर कहा
वा। हंम ही आपां आप लयावा। ३। अहंम ही हिहं अपनौ करि करि
लोनी। प्रेम जगति मेरो मन जनी। टंक जर सरीख संगत हंमोरो। घान ज
इतौ नेहने तोरू। १। अंतम गुण कृपा आमे तोली। मन देरं मलो यो निरमो
ली। २। ब्रह्मा वा जत जनम गुसायो। सोई रंगम घट नीतरियाया। ३। काहे
बीर छटी सब आसा। मिल्यो राम उपनै विमयासा। ४। ३। जाइ हो कंव
लेने नराजारं मेके पहाऊ। मागत दान देत ऊछ अनेने। सो प्रसाद ले आं
देक नीत विमहल जेत कंव लायति। तदा जो सैगावा। सो वतये प्रनुचम।
उवा। १। कोई दाम बंदगी आवा। करि मनु हरि मं हंमो सौ पतवा। कद्व
सकौंद जे। हंसना ही स्वारथ केलो जी। जाति दान मोहि दीजे। २। बाह्य
रिची तरिले आवा। सब अस्थान दिषावा। जगति कबाइतिल कदम
न। ३। न कबीर वदिरावा। ४। ५। ६। ७। ८। ९। १०। ११। १२। १३। १४। १५। १६। १७। १८। १९। २०। २१। २२। २३। २४। २५। २६। २७। २८। २९। ३०। ३१। ३२। ३३। ३४। ३५। ३६। ३७। ३८। ३९। ४०। ४१। ४२। ४३। ४४। ४५। ४६। ४७। ४८। ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७। ५८। ५९। ६०। ६१। ६२। ६३। ६४। ६५। ६६। ६७। ६८। ६९। ७०। ७१। ७२। ७३। ७४। ७५। ७६। ७७। ७८। ७९। ८०। ८१। ८२। ८३। ८४। ८५। ८६। ८७। ८८। ८९। ९०। ९१। ९२। ९३। ९४। ९५। ९६। ९७। ९८। ९९। १००।

कायामेदिरमनसायन ॥ अण्डमृनिमिसमिषाजाइ ॥ अनददवन
सदजमेवाइ ॥ सोमवारममिअंनतये ॥ चाषतयेगिसेवेबिसनरे
सांगीरोक्यारदेइवार ॥ मनमतिदारापावणावार ॥ मंगलवारांले
माहीव ॥ पंचलोकाक्रीछी ॥ मृदुरिति ॥ घरठामेदिनिबाहरिजाइ
नहीतौमौरिसावराइ ॥ बुधिदाराकरिबुधिपरकास ॥ रिदापंक
जमेहरेकावस ॥ पुरांमिदोकाएकसंमिकरे ॥ उरधपंकजतेसके
धरे ॥ बिसपतिविषयादेश्चदाइ ॥ तानदेवपकैसंगिलाइ ॥ तो
निनदीइमत्रिकुटीमाटि ॥ कुसमलधौवैअनिसन्हाइ ॥ सुकृतसु
धालेइद्विब्रतेचेदे ॥ अनिसआपआपसौलरे ॥ सुरभीपंचराषामेव
तोइजादिहिनैपैमैकबै ॥ ॥ शावरथिरिकरिघटमैसोइ ॥ जोतिदी
वटीमैदेजोइ ॥ वादरिधीतरिनयाप्रकास ॥ तहोतयासकलकरै
मकानांमे ॥ ॥ जबलपराघटमैइजीआणा ॥ तबलगमदिलेनला
जेजांगा ॥ समितारांससौलारेगा ॥ कहैकबीरतेनंसलअंरा ॥ ॥ ॥
रांमजैजेसोजांगिरेजेआवुरनांदी ॥ सुषसंतोषलोहरैहै ॥ धंरुमं
नमाहीदे ॥ तेनकौकांमओधव्यापनही ॥ विज्ञानजलावे ॥ प्र
फुलतआनंदमैगोबंदगुणभावे ॥ ॥ जेनकौप्रनिद्यातावेनही ॥ अ
सअस्तिनामामै ॥ कालकलपनामेदिकरि ॥ चरनौचितराषे ॥ ॥ जं
नसंसदिसितीतलमदा ॥ इबिंधीनहीअंते ॥ कहैकबीरनादास
सौमेरामनमानै ॥ ॥ माधोसोनमिलतासौमिलिरहिये ॥ नाकार
गिबरुंडुपसहो ॥ ॥ अमअगोचरलषानजाइ ॥ जहोक्तप्रहो
जफिरितहांसमाइ ॥ कहैकबीरफूवाअतिमान ॥ सेउमसेहंमए
कसंमान ॥ ॥ ॥ अहोमेरगोबंदउकारजोर ॥ काजीबकिबाहसी
तार ॥ ॥ बांधिजुजाजलकरिडास्यो ॥ हस्तीकोपिमुडुमेमस्यो ॥ जा
जाहसतीचीसामरी ॥ वामरैतिकोमैबलिहारी ॥ ॥ माहततौकोमा
रोसाटी ॥ इमदिमरांकमारोकाटी ॥ हस्तानतोरैधरेविधान ॥ कंकदि
येहोमैजगंमंत्र ॥ ॥ अयाअपराधतहोकोमा ॥ बांधियोहोके

रकोंदानीं॥ ऊँजरपोटबकुवदनकरै॥ अजहूनचेतकाजीअंधरे॥ ३१
 नबारंपतिदाराहीनां॥ मनेकठोरअजहूनपतिनां॥ कहैकवीरदे
 मोसोवांदा॥ चौथांपदमैजनकाज्यदा॥ ४॥ कुसलपेमअरुसदास
 मति॥ ऐकैकोकोदीनरो॥ आवतजातडकुघालरे॥ प्रबतंतहरिलीन
 रे॥ देवमाघामोदमदमैपाया॥ मुगधकहैयकमैरोरे॥ दिवसंचारि
 छेमनैरनौ॥ यऊनाहू॥ किसकेरी॥ ॥ सुरनमुनिजनपीरअतलिय
 मारापैदाकोनरो॥ कोटिकजयेकहुंलौवरनौ॥ सबनिपैयानोदी
 रे॥ ३॥ धरतीपवनअकासजाइगा॥ चंदजाइगासुरो॥ हंसनोहीनु
 नाहैरनाही॥ रहेगंमजरपूरो॥ ३॥ कुसलदित्सलकरतजगभीन
 पंडाकालनैपागोरे॥ कहैकवीरमैवैजुगवित्त्या॥ रहेगंमअति
 सोरो॥ ४॥ ३॥ मनवैणिजाराजागिरनसोइ॥ लाहाकारणिमूखनपे
 टेकालाहोदेपिकहुंगरवांनो॥ ग्रवनकीजैमुरिषअयांनो॥ ॥ ६॥
 निधनसंचमोपछितांनो॥ साथीचलिगयेहंसनीतांनो॥ २॥ नि
 अधिवारीजीगजबंदे॥ छूटालागेसबहीसंधे॥ ३॥ किसकाबंधकिस
 जोइ॥ चल्याअकेलासंगनकोइ॥ ४॥ दिगंगमंदरदूदेवसामकेसर
 उडिगयेहंसा॥ ५॥ पंचपदारथनारिदेवेही॥ जरिवैरिजाइगीकंचनस
 देहा॥ ६॥ कहैकवीरमुनकरेलोइ॥ रंगनामखिनऔरनकोइ॥ ७॥ ४॥
 नपतंगचेतनही॥ जलुअंजुरीसमानं॥ विषियालागिखिगुचिहै॥ द्या
 हेनिदांनो॥ ७॥ ४॥ कोहैनैनअनदिएजेसूकेतनाही॥ आगि॥ जनमअव
 रणघोइरा॥ सांपणिसंगिलागि॥ १॥ कहैकवीरचितचंचला॥ गुरकह
 सम्पकाइ॥ जगतिहीनतरेही॥ जरे॥ नौवैतहांजाइ॥ १॥ ५॥ स्वादपतंगपरज
 जाइ॥ अनददसौमैराचितनरहाइ॥ टेकमायाकेमदिचेतिनदेया॥ ५
 ध्यामोहिएकनहीपेया॥ ॥ १॥ जेमअनेककीयेध्वजकीनां॥ अक
 रसएकनहीबीना॥ २॥ कितेमूरामैरगेकेते॥ कितेकमुगधअजहूनही
 ३॥ जेमनसबवोषदिमाया॥ कितलरंगकबीरदिपटाया॥ ३॥ ५॥

गेवे उसरूपवाला और तेहने सवाले का हो इबिनास उतहिनरक
 इतजोगबिलास ॥ सुहागनिगलि सौहेहार ॥ संतबिबिबिलससं
 सार ॥ पीछेलामी फिरैपचिहरी ॥ गुरकसबदोमासोदरे ॥ साबितके
 वापिंडपरांन ॥ हमारी दिहिपरेवाफाईइन ॥ २ ॥ इबहंमइसकापायाजि
 वे ॥ होइकपालमिमुरदेव ॥ कहैकबीरइबबाहरियरी ॥ संसारीके
 आंचलेटिरी ॥ ३ ॥ पोरैसनिमोगेकंतहंमार ॥ पियकांबोरीमिलिह
 उक्षरा ॥ टेकमासामोगैरतीनदेऊं ॥ घटेमेरापवतौकासंनिलेऊं ॥ रा
 बियेरोसनिलरकामेरा ॥ जेऊछपांउसआधतोर ॥ १ ॥ बंनबंनहूँनैनन
 रिरांऊ ॥ पावनमिलतौबिलपिकरिगेऊ ॥ २ ॥ कहैकबीरइसहजसहंमार
 बिरलसुहागनिकंतपियार ॥ ३ ॥ ॥ रायवसंत ॥ मोजेपीजाकेसह
 जसाइ ॥ अंकलप्रातिकाजीष्याषाइदिक् ॥ सवृअनाहदसीगीनाद ॥ का
 मओधबिबियानबाद ॥ मनमुंजुजीकेगुरकोपांन ॥ त्रिकटीकोट
 मधरेधियान ॥ १ ॥ मनहंकरणाकैकैरखान ॥ गुरकोसबलेधरेधि
 यान ॥ कायाकासीषोजैवास ॥ जोतिसरूपनयोप्रकास ॥ २ ॥ ग्यांनमे
 षलीसहजसाइ ॥ बंकनालिकैरसंवाइ ॥ जागमूलकैदेइबंद ॥ कहैक
 बीरपिरिहोइकंद ॥ १ ॥ मेरोहारहरांनोमैलजाऊ ॥ ससझासतिपी
 वडरांदिक् ॥ दारगहोमेरोरामत्यागि ॥ बित्तिबित्तिमानिकएकलाग
 रतनपवालेप्रमजोति ॥ १ ॥ नाअंतरिअंवरिलोगेमेति ॥ १ ॥ पंचसपीमिलि
 देसुजानै ॥ चलऊवतरांवेनीकोए ॥ न्हाएधोइकैतिलकदीन्ह ॥ ना
 जानोहारकिनहूंलीन्ह ॥ २ ॥ हारहरांनोजनबिलमकीन्ह ॥ मेरोआ
 हिपारोसनिहारलीन्ह ॥ तीनजोककीजानैपीर ॥ सबदेवसिरोमनिक
 हेकबीर ॥ ३ ॥ नदीछामोंबाबारांमनांस ॥ मोहिऔरपवनसौकुनका
 स ॥ प्रह्लादपधरेपढासात् ॥ संगसषालीयेबहुतवाल ॥ मेहिकहा
 पढावआलजाय ॥ मेरीपीटमिलिबिदेशीगोपाल ॥ १ ॥ तबसांफांमुरगा
 कह्योजाइ ॥ प्रह्लादबंधयौबेगिबाइ ॥ ३ ॥ रांसकदेगाकीछाफिको
 गि ॥ बिगिछुकाऊमेरोकह्यामांनि ॥ १ ॥ मोहिकहामेरोचैदाइका

निजलथलगिरकोकपौप्रहार रामतजौमेरेगुरदिगारि जरिबारे
मोदेभारिहिरि॥ २॥ अठकटिपट्टाकोपारिसा ५ तेरोराघाहरोमो
दिबताइ। यंनमाहिंप्रगट्टागिलारि। हरनांकसमास्यानपदिगारि॥
॥ ६॥ माहापुरसदेवातेदेवा निनिजगतिहेतधस्यानरसिधसेवा॥ कहैकचो
रकोइलेहेनपार॥ घहजादनुबासोअनेकवार॥ ५॥ ३॥ हमिकौनावत
तत्रिलोकसार लैलीजनयेतअरुदिकइकजंगमइकजटाधार॥ इक
अंगमनूतकरैअपार॥ इकमुनियरइकमनाली॥ असैहोतहोतजुगज
तपीन॥ १॥ इकअराधेमकतसीवइकप्रदादेबेधेजीव॥ एककुलदेव
नौजपेजाप॥ त्रिजुवनपतिनूलेविबिधिताप॥ २॥ इकअनहेछाडिकरिप
वेहइधजाकैहरिन॥ मिलैबिनहेदेसूदि॥ कहैकबारकोलेहेनपार॥ घ
लावनद्वारोअनेकवार॥ ३॥ ॥ ४॥ हरिकौनावततत्रियलोकसारा॥ ले
नयेसेउतरेपार॥ इकइकजंगमएकजटाधार॥ इकअंगिवित्तिकरअ
पार॥ इकमुनिएरएकमनहली॥ असैहोतहोतजगजतपीन॥ १॥ ५
रुअराधेमकतसीवएकपट्टादोदेबेधेजीव॥ इककुलदेवको
पजाप॥ त्रिजुवनपतिनूलेविबिधिताप॥ २॥ इकअनहेछाडिकरिप
हध॥ हरिनमिलैबिनबिदसुधा॥ कहैबीरअसाविचार रामबिनकोउ
रपसा॥ ५॥ ॥ ६॥ हरिबालिसुत्राबारबार॥ तेरीदिगामीनीकछकरिपूक
रुदिकअंजनमजनतजिबिकारामतपरसमझायांतसार॥ १॥ साध
तिमिलिकरिषसंत॥ सौबंधनछटजुगिजुगत॥ २॥ कहैकबीरमिलिन
आनद॥ हरिमिलैराजारसघंट॥ ३॥ ॥ ४॥ बंनमालीजानैबंनकीअ
द रामनामबिनजनमबादि॥ इकफुलजुफूलेसूतिबसंत॥ मोहि
सबजीजंत॥ १॥ फूलनिमैजसैपकुपवास घटिघदिगोविंदहरिनि

रमयादौ सगिलान तीनजागती कतराये चलोवेनिजवावेनिजवा
 रि॥ तनजमुदामौ पूजा दट॥ बाहुदहदिसिगयो छटि॥ २॥ कहेकबीरय
 यजननमबादि सदनसमानौरहालाय॥ ३॥ माधौदरनउषसदान
 जाइ मेरीचयलबुधितासौ कटुद्वाराइ दननमनजीतरिवेसैमद
 नचौर॥ ग्यानरतनहरिली॥ नमौर॥ मैअनाथप्रभूकस्तकाहि अनेक
 विरतेमैकोअदि॥ १॥ सनकसनंदसिवमुकादि आपनिकंवलपति
 नरव्यादिकंवे जोगीजोगमजतीजटाधार॥ अपनऔसहिसवराये
 हरि॥ २॥ कहेकबीरऊसंगसाथ॥ अनिअतस्तिरिसौकरौबाज॥ म
 मापानजानिकरि करिबिचार॥ रामरमतजौतिरिबोपार॥ ३॥ उकरा
 डरकंतकरगुहरि॥ उदिवेनपंचाननश्रीमुरारिदि॥ तनजौतेबिब
 समदनचौर॥ तिनिप्रबरसुलनौ छोरिमोर॥ ममोदेइनबिनैमानै॥
 तकितारेरिदामै॥ कामबान॥ १॥ मैकिदिगुहरांकंआपलागि॥ उकरा
 डरबनेगयलागि॥ ब्रह्माबिहअरुसुरमयंक॥ किहिकेदिनहालावा
 कलेक॥ २॥ जपतपसंजममुचिधान॥ बटिपेरसबसहितग्यान कहे
 कबीरउबरदैतीन॥ जाग्रोबदकेपाकन॥ ३॥ असौदेविचरितम
 नमोदौमोर॥ ताथेनिसबासुगुनरम॥ तिरैक एकपट्टेदिपट्टक
 चमउदास॥ इकनिगननिरंतरैरेउदास॥ इकजोगजुगतितनहोइ
 घन असैरामनाममेगिरैनलीन॥ १॥ इकहृदिदीनइकदेइदान इ
 ककरैहिकलापामुरायान॥ इकतेनमनऔषदिबान॥ सकलसिधराये
 आपमान॥ २॥ इकतोरथब्रतकरिकायाजीत॥ रामनामसकरतप्राति
 इकधूमघोटितनहृदिस्पाम॥ मुकतिनहीबिनरामनाम॥ ३॥ सतगुर
 ततकदोबिचारि॥ मगदौअननैवितार॥ जुझामरयाथेनपणी
 २॥ रामकपातइकहेकबीर॥ ५॥ १०॥ सबमदिमतिकोईमजांग
 ताथेसंगहिचोरघरमुसनलागैक॥ पंडेमातेपटिपुरांनजोगीमाते
 धरिधियान॥ न्यासीमातेअहमेव॥ नपाजुमातेतपकेमेव॥ ३॥
 गेमुषनधोककर॥ हणवतजामेलेलगर॥ संकरजागेचरनहेक

लितगोनां मांते देवा । यज्ज अतिमानं सुवमनको काम । यज्ज अतिमानं
 नहारदगो धाम । अत्तरांमको मन विप्राम । ताथैकैहकवीरनजिरां
 मतांम ॥ ३॥ ११॥ ॥ पांगंदारे । सारमुषणई एरे । मिरंमज्ज आत्तरांम
 बनहंमं वसेकाक कियो । जो मननही तजे बिकार । परै बदनतत संमजे
 किया । ते बिरला संसार । टक्क जटा जंम मेलि पनकीये । कहा गुंफा सेवा
 सा । धन जात्या जागी । तिये जि विषियार है उदास ॥ १॥ कहे कवीर किर
 पा २३ ईश्वर ग्यान कटो । समका इहिर देखा हरि नेटियो । जंतन अनंतैम
 होजा ॥ २॥ १॥ चलो सध जई एतहा । जहंगोणा इय रेमानंद । ॥ १॥ कया
 जे मन आंसा हंमो । मिरौत नही जैनित जाइ । चिंता मणि चित चोरियो
 ताथै कवन मुहाइ ॥ मुनि सपी मुपि नां को गति ऐसी । हरि आरहं सपा
 स । सो बत हीर जगईया । जागत है मनेय उदास ॥ १॥ चलो सध बिलंमनकी
 जिये । न बला सा संसार । मिलि रहिये रजारांम सा । ये कैहिदा सकवीर ।
 २॥ २॥ मेरे तन मन लागी तोट सवारी । विमो ग्यान बुधिस बनावी । नई बिक
 लति बारी । ॥ १॥ देह बदेह गलित गुन तीव । चलत अचलत एवौरी । इतउत
 जित कित छाद सचित वता । यजन ईश्वर पतवौरी । ॥ १॥ सो ईपै जो नै पीर हम
 री । जा सरीर यज्योरी । जेन कवीर गगन पादे सापरी । मुन्यं समंती तो
 री ॥ २॥ ३॥ बलिया लूक बदे पांगी तोहि । अनिसि आठर सनकारे नि
 ऐसी आये मोहि । ॥ १॥ जेन हमारे तुम को चोहे रतीन माने हारि । बिरद
 अगलित न अधिकतरावै । असो लेज बिचारि ॥ १॥ सुनो जहमारी दादि
 गुमाई । अब जिनिकरो बंधरो । तुम सीर जेमे आठर स्वामी को चेना डेनीर
 ॥ २॥ बजत दिन न के बिहारे साधो । मन नही बांधे धरा । दिह कितो तुम मि
 लो जि जे पाकरि । आरति वंत कवीर ॥ ३॥ ॥ बाला आवहं मारे पेदे
 उम बिन धिया देहे । टक्क सब को कहै तुमारी मारी । सो को एह अदे
 री । एक मे कंधे से तन सोले । सब लगे के साने हेरे ॥ १॥ अनन भावनी
 दव सोवे । गिह बंन धरेन धीरे । जंकांमी को कामिय बरा । नृपा सेवे

तनाहीगंवार जोजलअधपरथाकिरेहरे बडेबजतअपार मोहि
आगादईदयालदयाकरि काहुकंसमजाइ कहेकबीरमेकहिक
विदासो इबमोहिदोसनलाइ ॥ १५ ॥ एककोसबनिमिलोननिमला
बजतंकजातिकरफुरमाइस दैअसवारअकेलादेव जोरतकदनु
घरतघरतसदागद करतबजेलीजला जोखिटकराठोरियातसा
पेलचत्पाराकषेला ॥ १६ ॥ कबसूकामजोगकेघरमे कबएकदोस
पयाना आसतिगुधिबिभूतिसाधिदेऊ निलेमंडाउडाना ॥ १७ ॥ पाजो
गीकीजुगतिजुगमे सोसतापुरकाचला कहेकबीरउनगुरकीके
पाये तिनिसबत्तमपछेला ॥ १८ ॥ बदिनकबआवैरोमाइ जाकोराग
हेमदेहधरीदे मिलबोअंगिलाइ ॥ १९ ॥ हुजागोजेहिलिमेलिबेलो
तनमनप्रानसेमाइ याकामनाकरोप्रपूरा संप्रथहैरागराइ ॥ २० ॥ मा
हिउटासीमाधौचाहे चितउत्तरैनिबिहाइ सेजहमारसिधनईहे न
बसोउतबषाइ याअरदासदासकीसुनिइ तनकोतपतिबुझाइ
कहेकबीरमिलेजसाई मिलिकरिसंगलाइ ॥ २१ ॥ हैदरिसंजनके
प्रवान नीचपावकचपटई बाजतैतिसागा ॥ २२ ॥ सजनकोप्रतापअ
सोतिरेजलपाषाणा अधमनीलअजातिगिनिका चडेजातखिवान
नवलषताराचलेसफल चलेसिहरनागा दासधूकोअटलयटई
गामकेदिवाण ॥ २३ ॥ निगमजाकासाखिबोलै कहेसंतमुजाणा कहे
कबीरतेरेसरतिआयो राखिलेनगवान ॥ २४ ॥ रमनगमनामदि
जांनि थारहरीथनीयस्यामरदन सुतोषटीतोनि ॥ २५ ॥ सनितेरीको
नसेसके जीनयकरीआनि पान्चगजदोवटीमाणा चतुदीनहोसोनि
बसंदरखोषरीहाडी चत्पौलादिपलानि नाजबधेबोलाइबजरे
काजकीनोआनि कहेकबीरयामैज्वनाही लोफिजीयेका
नि गमनामनिसकनजिरे नाकरिकुलकीकोनि ॥ २६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
मनारेगमसुपरिसमसुपरिगमसुपरिसाई गमनामसुभिरनादिन
नदतअधिकई ॥ २७ ॥ दासुतेनेहमे संपतिअधिकई ॥ २८ ॥ पास

कछुनाहिते। कालअवधिआई। १५ अनामेलानगतेकापति
 करमकीसा। तेनुतरियागिगये। रामनाममहामो। २। सोनसुकरका
 गकीने। तोउलाअमआई। रामनामअमृतछाडि। कोहेबिषपाई।
 तजिअमकमविश्विनेषे। रामनामयेई। जतकबीरपुरप्रसादि। राम
 करिसेनेही। ३। १ रामनामहिरेदेधरि। निमोलिकहीरा। सोनविहूली
 कतिमरताइ। विविधियापाटे। विश्वानेलोनहरेष। कामकोधनीरा
 मदमछरमेछकछहरयसोकतीरो। १। कामनीअस्त्कनंकनुंदन
 बिरावजतबीरा। जतकबीरनवकाहरिषेवृटगुरकीरा। २। चलिमे
 णमपीदे। बोलगाणरामराया। जवतबकालबिगांसैलौकाया। टे
 जबलगलोतमेहकादासी। जीरथबूननछटनमपासा। ३। आवैगे
 जमकेषालेरोबाटी। यतजतनजरिवरिहोइगामाटी। ४। कहैकबी
 जहरिगाराता। यथौरानारामप्रमपददाता। ५। रागगट। ६। ॥
 ७। ॥ ८। ॥ ९। ॥ १०। ॥ ११। ॥ १२। ॥ १३। ॥ १४। ॥ १५। ॥ १६। ॥ १७। ॥ १८। ॥ १९। ॥ २०। ॥
 २१। ॥ २२। ॥ २३। ॥ २४। ॥ २५। ॥ २६। ॥ २७। ॥ २८। ॥ २९। ॥ ३०। ॥
 ३१। ॥ ३२। ॥ ३३। ॥ ३४। ॥ ३५। ॥ ३६। ॥ ३७। ॥ ३८। ॥ ३९। ॥ ४०। ॥
 ४१। ॥ ४२। ॥ ४३। ॥ ४४। ॥ ४५। ॥ ४६। ॥ ४७। ॥ ४८। ॥ ४९। ॥ ५०। ॥
 ५१। ॥ ५२। ॥ ५३। ॥ ५४। ॥ ५५। ॥ ५६। ॥ ५७। ॥ ५८। ॥ ५९। ॥ ६०। ॥
 ६१। ॥ ६२। ॥ ६३। ॥ ६४। ॥ ६५। ॥ ६६। ॥ ६७। ॥ ६८। ॥ ६९। ॥ ७०। ॥
 ७१। ॥ ७२। ॥ ७३। ॥ ७४। ॥ ७५। ॥ ७६। ॥ ७७। ॥ ७८। ॥ ७९। ॥ ८०। ॥
 ८१। ॥ ८२। ॥ ८३। ॥ ८४। ॥ ८५। ॥ ८६। ॥ ८७। ॥ ८८। ॥ ८९। ॥ ९०। ॥
 ९१। ॥ ९२। ॥ ९३। ॥ ९४। ॥ ९५। ॥ ९६। ॥ ९७। ॥ ९८। ॥ ९९। ॥ १००। ॥

मोतिश्नहोचौकपूराइ रातकरौनौछावरी मिलिहोमोदिनापतिरा
आंगिवांछुरेलची कौलैनागरबेलि अतिअनंतनुनपाऊणें
मारादिण्डारेकंपलमेकि विप्रबिनरलिघाँवनी स्तौरेजमुनाकौ
सहजैगउचरावतौ मुषाबजावैवेन ब्यप्रबनसबदहूतौ हूदजउमु
नौकौनारंगमिललाकैकरणें जनपोततपोतफिरकबीर नति
पछिताचोगेअंधा चैतिदेखिनलजमपुखिहै कांबिससागोबंदी
गुप्त। कुंदनलजबिस्ता उरधध्यानलौलाइ उरधध्यानमिमतमनि
लआया नरहरिनाचचुलाया बाबबिनोदछहरमनीना छिन
छिनमोहबियापै बिषअमृतपछाननलागौ पांचनातिरसचायै तर
नेतेजपरप्रियमुषजौवै समअपरसहोजानै अतिउदिमादिमहासहिता
पापपुनिनपछानै पंडुरकेसकुसुममैयमुषधौला मेतपलदिगईचाबी
गधेघोकोधमनज्योनुपास कामपियामप्रदानी दहीणहिदयाधरमउपज्यो
कायाकवलऊमिलाना मरतीबेरबिभुरागलाग। फिरियेछैपछितना
कहैकबीरमुनौरसतौ धनमायाकछसंगिनाया आइतलबोयालराइ
की धरतीसैनभाया नकछरेनकछुरासबिना परारधरकीइदीप्रम
ति साधसंगतिरहना मंदरचतमासदमलगे बिनस्तएकछिना ऊवैस
पकेकारनिघानी प्रपंचकरतधना तातमातमुतलोककुंतबमै फुलै
फिरतमना कहैकबीरगंमनजिबैर छाफिसकलप्रमना लोकारे
तिकेतोरारे जोकासीतनतजकबीरा तैसामकिहैकौननिहोरा जे
पेसगतिनगतिदरिजानै मिलैतौअचिरजकहारे जैसैजलदिजलहुरिमि
यो यदुरिमिलियाजुलाहरे कहैकबीरगंमंजानू अमिचूलोली
कोई तसकासीतसउसरमगहर। ज़िदैरगंमजौहोइरे पातीयांच
असीआरतीप्रितवनतारै तेजपुजतहंपांउधारे पकरीपूजा
देवनिंजनऔरनह तनमनसीसमुसरपनकांन। प्रमपुखत
टोतितहोअप्रसलीना दीपकज्ञानसबुधनिघटा प्रमपुखत
पसपकाससकलउजियारे कहैकबीरमेदासमुसारा

५ गोपालराज्ञे आरती ए कहे सन ज्योत्ना जट्टे वसन करि घृत काया
करि पाटी ॥ अद्भुत ज्ञान करि बाति ॥ पंचत तले दाप कजोपा ॥ खले है अ
पम सदितराति ॥ ॥ ॥ चित संचंदन ध्यान मुगंधना ॥ अनहद घंट बजा
झा ॥ अजपा धुनि जाद करि सो ज्ञान मेन सा भोगा त्याहा ॥ २ ॥ चंदर सप
वना ॥ अष्टतंग वंदना नंद कपटाल गाहा ॥ नीतरि द्वारि पूजे प्रभे स्वार ॥ अ
त्मपञ्चपत्र ॥ ॥ ॥ प्रसंभ सुदं गाहर धुनि उपजे ॥ अनहद बाजे बिन
ब्रह्मा बिसन मेहे सवर नारद ॥ सकल साधत्यो लीन ॥ ५ ॥ काल रि
कंदन सुरनर मं मन ॥ सत निप्रोण आधार ॥ कहैत कबीर जगति
रामांगी ॥ आवागंदन निवारि ॥ ५ ॥ ६ ॥

